M. T. Adam
1821

Bible. Hindi. N.T. [n.d.]
Gospels.

मंगल समाचार मत्ती रचित

१ पहिला पर्ब्ब

१ ईसा मसीह की बंसावरी जो संतान दाऊद का संतान
२ इबराहीम का। इबराहीम से इसहाक उत्पन्न ऊआ और
इसहाक से याकूब उत्पन्न ऊआ और याकूब से यहूदा
३ और उसके भाई उत्पन्न ऊऐ। और यहूदा से फारिस
और जराह तामर के पेट से उत्पन्न ऊऐ और फारिस
से यसरून उत्पन्न ऊआ और यसरून से अरम उत्पन्न
४ ऊआ। और अरम से अमीनादाब उत्पन्न ऊआ और
अमीनादाब से नआशून उत्पन्न ऊआ और नआशून से
५ सलमन उत्पन्न ऊआ। और सलमन से बोआज रहाब
से उत्पन्न ऊआ और बोआज से ओबेद रूत से उत्पन्न
६ ऊआ और ओबेद से यस्सी उत्पन्न ऊआ। और यस्सी से
दाऊद राजा उत्पन्न ऊआ और दाऊद राजा से सुलैमान
७ औरिया स्त्री के पेट सों उत्पन्न ऊआ। और सुलैमान
से रहबाम उत्पन्न ऊआ और रहबाम से आबिया उत्पन्न
८ ऊआ और आबिया से आसा उत्पन्न ऊआ। और आसा

से यहूशाफात उत्पन्न हुआ और यहूशाफात से यूराम उत्पन्न
८ हुआ और यूराम से ऊजियास उत्पन्न हुआ। और
ऊजियास से योआताम उत्पन्न हुआ और योआताम से
आकाज उत्पन्न हुआ और आकाज से हिजकिअ उत्पन्न
१० हुआ। और हिजकिअ से मनस्सा उत्पन्न हुआ और
मनस्सा से अमून उत्पन्न हुआ और अमून से यूसियास उत्पन्न
११ हुआ। और यूसियास से यूकानिअ और उसके भाई
१२ उत्पन्न हुए जिन दिनन में वे बाबुल में गये थे। और उन्हों
के बाबुल को पहुंचने के पीछे यूकानिअ से सलताईल उत्पन्न
१३ हुआ और सलताईल से जोरबाबुल उत्पन्न हुआ। और
जोरबाबुल से अबयूद उत्पन्न हुआ और अबयूद से
इलीयाकिम उत्पन्न हुआ और इलीयाकिम से आजूर उत्पन्न
१४ हुआ। और आजूर से सादुक उत्पन्न हुआ और सादुक
से आकिम उत्पन्न हुआ और आकिम से इलियूद उत्पन्न
१५ हुआ। और इलियूद से इलियाजर उत्पन्न हुआ और
इलियाजर से मत्तन उत्पन्न हुआ और मत्तन से याकूब
१६ उत्पन्न हुआ। और याकूब से यूसफ उत्पन्न हुआ जो
मरियम का स्वामी था जिस्से ईसा उत्पन्न हुआ जिसको
१७ मसीह कहते हैं। सो सब पुरषन इबराहीम से दाऊद लों
चैादह हैं और दाऊद से बाबुल में पहुंचाए जाने लों चैादह
पुरषन हैं और बाबुल में लेवाए जाने से मसीह लों चैादह
१८ पुरषन। अब ईसा मसीह का जन्म इस रीत से हुआ कि

अब उसकी माता मरियम यूसफ से बचनदत्त ऊई उसे पहिले कि वे एकट्ठे होवें बुह धर्मात्मा से गर्भिणी पाई गई।
१९ तब उसका पति यूसफ ने सज्जन होके इच्छा न किई कि उसे प्रगट में कलंकिनी करे उसको चुपके से छोडने को मन
२० किया। परंतु उसके यह चिंता करते देखो ईश्वर के दूत ने सपन में उसको देखाई देके कहा हे दाऊद के पुत्र यूसफ अपनी स्त्री मरियम को अपने वहां लावने से भय मत कर क्योंकि बुह जो उसके गर्भ में पडा है धर्मात्मा से
२१ है। और बुह एक पुत्र जनेगी और तू उसका नाम ईसा रखना क्योंकि बुह अपने लोगन को उनके पापन से बचा
२२ वेगा। अब यह सब ऊआ कि जो ईश्वर ने आगमज्ञानी
२३ के ओर से कहा था संपूर्ण होवे। कि देखो एक कुआंरी पेट से होगी और एक बेटा जनेगी और उसका नाम अम्मानुएल रखा जायगा जिसका अर्थ यह है कि ईश्वर हमारे
२४ संग। तब यूसफ ने नींद से उठ के जैसी ईश्वर के दूत ने उसको आज्ञा किई थी वैसा किया और अपनी स्त्री को
२५ अपने यहां ले आया। और उसको न जाना जब लों बुह अपना पहिलोंठा पुत्र न जनी और उसका नाम ईसा रखा।

२ टूसरा पर्ब्ब

१ अब हीरुदीस राजा के समय में यहूदिया के बेतुल्लहम में जब ईसा का जन्म ऊआ देखो पंडितों ने पूरब से यिरोशलीम

२ में आके कहा। कि यहूदिअन का राजा जो उत्पन्न
हुआ कहां है क्योंकि हमों ने पूरब में उस के तारे को देखा
३ है और उसकी पूजा करने को आये हैं। जब हीरूदीस
राजा ने सुना वुह और सारे यिरोशलीम उसके संग व्याकुल
४ हुए। और जब उसने लोगन के सब प्रधान याजकन
और अध्यापकन को एकट्ठे किया उसने उन्हों से पूछा कि
५ मसीह कहां उत्पन्न होगा। तब उन्हों ने उसे कहा
यहूदिया के बैतुल्लहम में क्योंकि आगमज्ञानी ने ऐसा लिखा
६ है। और हे यहूदादेश के बैतुल्लहम तू यहूदा के
प्रधानों में छोटा नहीं है क्योंकि तुझ से एक प्रधान निकलेगा
७ जो मेरे इसराईल लोगन को चरवेगा। तब हीरूदीस
ने पंडितों को चुपके बुलाके बिवेक से उन्हों को पूछा कि तारा
८ किस समय में दिखाई दिया। और उसने उन्हों को बैतुल्लहम
में भेजके कहा कि जाओ और बिवेक से बालक को ढूंढो
और जब तुम पाओ तब मुझ को संदेश पहुंचाओ कि मैं भी
९ आकर उसकी पूजा करों। जब उन्हों ने राजा की सुनी वे
चले गये और देखो वुह तारा जो उन्हों ने पूरब में देखा था
उनके आगे आगे चला गया यहां लों कि जहां वुह बालक
१० था आके ऊपर ठहरा। जब उन्हों ने उस तारे को देखा वे
११ बहुत बड़े आनंद से आनंद हुए। और जब वे घर में
आये उन्हों ने उस बालक को उसकी माता मरियम के संग
देखा और नीचे गिरके उसकी पूजा किई और उन्हों ने अपने

धन को खोलके उस को सोना और लोबान और गंधरस
११ भेंट दिये। और ईश्वर से सपन में सेंचेत ज़ए कि वे
हीरूदीस के पास न फिरें वे दूसरे पंथ से अपने देश को चले
१२ गये। और जब वे जाचुके देखो ईश्वर का दूत सपन में यूसफ
के दिखाई देके बोला कि उठ और बालक को और उसकी
माता को लेकर मिसर को भाग जा और वहीं रह जब लें मैं
तुझे संदेश न पज़ंचाओं क्योंकि हीरूदीस इस बालक को मारने
१४ के लिये ढूंढेगा। तब वुह उठ के बालक और उसकी माता
१५ को लेकर रातेरात मिसर को चलागया। और हीरूदीस के
मरने लें वहीं रहा तो कि जो बात ईश्वर ने आगमज्ञानी के
ओर से कही थी कि मैं ने अपने पुत्र को मिसर से बुलाया
१६ संपूर्ण होय। फेर जब हीरूदीस ने देखा कि पंडितों ने उस
पर निंदा किई अति क्रोधी ज़आ और लोगन को भेज कर
बैतुल्लहम और उसके सब सिवाने के बालकन दोबरस के
और छोटे लें जैसा उसने पंडितों से बिवेक से पूछा था सब
१७ को मारडाला। तब वुह जो इरमी आगमज्ञानी ने कहा
१८ था पूरा ज़आ। कि रामा में एक शब्द सुना गया जो हाहा
कार और रोना पीटना और अति बिलाप कि राहील अपने
पुत्रन के लिये रोती थी और शांत न होती थी क्योंकि वे
१९ नहीं हैं। परंतु जब हीरूदीस मरगया देखो ईश्वर के दूत
२० ने मिसर में यूसफ को सपन में दिखाई देके कहा। उठ
और उस बालक और उसकी माता को लेकर इसराईल के

देश में जा क्योंकि वे जो बालक के प्राण के खोजी थे मर
२१ गये। तब वुह उठ के बालक और उसकी माता को लेकर
२२ इसराईल के देश में आया। परंतु जब उसने सुना कि
अरकिलाऊस अपने पिता हीरुदीस के बदले यहूदिया में
राज्य करता है वुह उधर जाने को डरा तिसपर भी सपन में
२३ ईश्वर से चेंचेत होके वुह जलील के ओर चलागया। और
उसने आके नासरः नगर में बास किया तो कि वुह जो
आगमज्ञानिअन के ओर से कहा गया था कि वुह नासरी
कहावेगा पूर्ण होय।

३ तीसरा पर्ब्ब

१ उन्हीं दिनन में यहूदिया के बन में यहिया स्नानकारक ने
२ आकर उपदेश करते कहा। कि पछताओ क्योंकि
३ स्वर्ग का राज्य निकट है। क्योंकि यह वुह है
जिसके विषय में यशिया आगमज्ञानी ने कहा कि बन
में एक पुकारनेवाले का शब्द है कि तुम ईश्वर के मार्ग
४ को सुधारो और उसके पंथन को सीधा करो। और
वही यहिया ऊंट के रोम का कपडा पहिनता और
चमडे का पटका अपनी कमर में बांधता था और
५ उसका भोजन टिड्डी और बन की मधु थी। तब
यिरोशलीम और सारे यहूदिया और यर्द्दन के आसपास
६ के सब रहनेवाले उसके पास निकल आये। और

अपने अपने पापन को मान लेकर यर्दन में उस्से
७ स्नान पये। परंतु जब उसने देखा कि बहुत से फरिसी
और सादूकी उसके स्नान को चले आये उसने उन्हें कहा हे
सांपों के बच्चो आवनेवाले क्रोध से भागने को तुम्हों को किस
८ ने चेताया। इस लिये फल जो पछताने के योग्य है
९ लाओ। और अपने अपने मन में मत कहो कि हमारा
पिता इबराहीम है क्योंकि मैं तुम्हों से कहता हों कि ईश्वर
सामर्थी है कि इन पत्थरों से इबराहीम के लिये बालक
१० उत्पन्न करे। और अब कुल्हाडो भी पेडन के जड पर लगी
है इस लिये जो जो पेड अच्छा फल नहीं लावता काटा
११ जाता और आग में झोंका जाता है। ठीक मैं तुम्हें पछतावने
के लिये जल से स्नान देता हों परंतु वुह जो मेरे पीछे
आता है मुझ से सामर्थी है जिसकी जूती उठाने को मैं योग्य
नहीं हों वुह तुम्हों को धर्मात्मा और अग्नि से स्नान देगा।
१२ उसके हाथ में एक सूप है और वुह अपने खरिहान को
अच्छी रीत से साफ करेगा और अपने गोहूं को खत्ते में
एकट्ठे करेगा परंतु भूसे को अनबुझनहारे अग्नि से जला
१३ वेगा। तब ईसा गालिली से यर्दन के किनारे पर यहिया
१४ के पास आया कि उस्से स्नान पावे। परंतु यहिया ने यह
कहके उसे रोका कि मुझ को तुझ से स्नान पावने की लालसा
१५ है और तू मुझ पास आता है। तब ईसा ने उत्तर देके उसको
कहा कि अब होने दे क्योंकि सकल धर्म पूरा करने को

हमको यों हीं चाहिये तब उसने उसे वैसा होने दिया।
१६ और ईसा स्नान पाके तुरंत पानी से निकल आया और देखो उसके लिये स्वर्ग खुल गये और उसने ईश्वर का आत्मा कबूतर के समान उतरते और अपने ऊपर ठहरते देखा।
१७ और देखो स्वर्ग से यह कहते एक शब्द आया कि यह मेरा प्यारा बेटा है जिसमें मैं अति प्रसन्न हों।

४ चौथा पर्ब्ब

१ तब ईसा आत्मा के सहाय से बन में गया कि शयतान से
२ परीक्षा होवे। और जब वुह चालीस दिन और चालीस
३ रात उपास कर चुका उसके पीछे वुह भूखा हुआ। तब परीक्षक ने उस पास आके कहा जो तू ईश्वर का पुत्र है तो
४ आज्ञा कर कि ये पत्थर रोटी बनजाय। परंतु उसने उत्तर देके कहा यह लिखा है कि मनुष्य केवल रोटी से नहीं परंतु हरएक बात से जो ईश्वर के मुंह से निकलती है
५ जीता रहेगा। तब शयतान उसको पवित्र नगर में लेगया
६ और मंदिर के एक कलश पर बैठाया। और उसको बोला जो तू ईश्वर का पुत्र है तो अपने को नीचे गिरा दे क्योंकि लिखा है कि वुह तेरे लिये अपने दूतन को आज्ञा करेगा और वे हाथन में तुझे उठालेंगे नहो कि तेरा पांव पत्थर
७ पर लगने पावे। ईसा ने उसको कहा यह भी लिखा है कि
८ तू अपने प्रभु ईश्वर की परीक्षा मत कर। फेर शयतान

उसको एक बक्रत ऊंचे पहाड़ पर लेगया और उसको जगत्
९ का समस्त राज्य और उनका बिभव दिखाया। और उसको
कहा कि यह सब बस्तुन मैं तुझे देऊंगा जो तू नीचे झुक
१० के मुझे पूजा करे। तब ईसा ने उसको कहा कि हे
शयतान यहां से दूर हो क्योंकि यह लिखा है कि तू अपने
प्रभु ईश्वर की पूजा कर और केवल उसी की सेवा
११ कर। तब शयतान ने उसे छोड़ा और वहीं दूत
१२ आये और उसकी सेवा किये। और जब ईसा ने सुना
कि यहिया बंदिगृह में डाला गया वुह जलील को
१३ चलागया। और नासरः को छोड़कर कुफ़ानाहूम में
जो समुद्र के तीर पर जाबूल और नफ़ताली के सिवाने में
१४ है आके रहा। ताकि यिशैया आगमज्ञानी ने जो बात
१५ कही थी संपूर्ण होय। कि जाबूल और नफ़ताली
देश समुद्र के मार्ग में यर्दन के पार अन्यदेश के जलील
१६ में। लोग जो अंधियारे में बैठे थे बड़ी ज्योति देखी
और उन्हों पर जो मौत के छाया के देश में बैठे थे उंजिआला
१७ उदय हुआ। उस समय से ईसा उपदेश करते और
यह कहते आरंभ किया कि पछताओ क्योंकि स्वर्ग का
१८ राज्य निकट है। और ईसा जलील के समुद्र के किनारे
फिरते फिरते दो भाइअन को शमऊन जो पितरस कहावता
है और उसके भाई अंद्रियास को समुद्र में जाल डालते
१९ देखा क्योंकि वे मछुए थे। और उसने उन्हें कहा कि

मेरे पीछे चलेआओ और मैं तुम्हें मनुष्य का धीवर
२० करूंगा। तब वे तुरंत जालों को छोड़के उसके पीछे
२१ होलिये। और वहां से आगे बढ़के उसने और दो
भाइअन को जबदी के बेटे याकूब और उसके भाई
योहन्न को अपने पिता जबदी के संग नाव पर अपने
जालों को सुधारते देखा और उसने उन्हें बुलाया।
२२ तब वे तुरंत नाव को और अपने पिता को छोड़के
२३ उसके पीछे होलिये। और ईसा सारे जलील में फिरता
और उनकी मंडली में उपदेश करता राज्य का मंगल
समाचार सुनावता और लोगन के सकल रोग और दुर्बलता
२४ चंगा करता गया। और उसकी कीर्ति सुरिया के सर्वत्र
फैली और उन्हों ने सब दुखिअन को और भांति भांति
के रोगिअन और पीड़ितन और उन्हों को जो देव से
ग्रस्त थे और मिरगीवालन को और अरधंगिन को उस
२५ पास लाये और उसने उन्हें को चंगा किया। और
जलील से बहुतसी मंडली और दिकापोलिस और
यिरोशलीम और यहूदिया और यर्दन पार के रहनेवाले
उसके पीछे होलिये।

५ पांचवां पर्व्व

१ और वुह मंडलिअन को देख के एक पहाड़ पर चढ़ गया और
२ जब वुह बैठा उसके शिष्य उस पास आये। तब उसने

अपना मुंह खाल के उन्हों को सिखावने की रीति पर कहा।
३ धन्य वे जो मन में सूधे हैं क्योंकि स्वर्ग का राज्य उन्हीं का
४ है। धन्य वे जो शोक करते हैं क्योंकि वे शांत किये जायंगे।
५ धन्य वे जो कोमल हैं क्योंकि वे पृथिवी के अधिकारी होंगे।
६ धन्य वे जो सत्य के भूखे और पियासे हैं क्योंकि वे संतुष्ट
७।८ होंगे। दयावंत धन्य हैं क्योंकि वे दया पावेंगे। धन्य वे
जिनका अंतःकरण पवित्र है क्योंकि वे ईश्वर को देखेंगे।
९ मिलाप करनहारे धन्य हैं क्योंकि वे ईश्वर के पुत्र कहावेंगे।
१० धन्य वे जो सत्य के लिये सताए जाते हैं क्योंकि स्वर्ग का
११ राज्य उन्हीं का है। धन्य हो तुम जब मनुष्य मेरे लिये तुम
को निंदा करेंगे और सतावेंगे और तुम पर समस्त रीति की
१२ बुरी बात झुठाई से कहेंगे। आनंद हो और अति प्रसन्न
हो इस कारण कि स्वर्ग में तुम्हारा बडा फल है क्योंकि तुम्हों
से आगे वे आगमज्ञानीअन को इसी रीति से सताये थे।
१३ तुम पृथिवी के लोन हो परंतु जो लोन का स्वाद बिगड जाय तो
किससे लोना किया जायगा वुह फिर किसी काम का नहीं
परंतु कि फेंका जाय और मनुष्यन के पांव तले लताड़ा जाय।
१४ तुम जगत के उंजेरे हो जो नगर पहाड पर बना है छिप
१५ नहीं सकता। और मनुष्य दीपक को बार करके नांद के
नीचे नहीं रखते परंतु दीअट पर और वुह सबको जो घर
१६ में हैं उंजेरा करता है। इसी रीति से तुम्हारा उंजेरा मनुष्यन
के सन्मुख चमके कि वे तुम्हारे भले कर्म्मों को देखें और

१७ तुम्हारे पिता की जो स्वर्ग में है स्तुति करें। तुम यह मत
समझो कि मैं तौरेत और आगमज्ञानिअन को नाश करने को
आया हों मैं नाश करने को नहीं परंतु संपूर्ण करने को
१८ आया हों। क्योंकि मैं तुम से सच कहता हों कि जब लों
स्वर्ग और पृथिवी टल नजाय तौरेत में से एक बिंदु अथवा
एक बिसर्ग किसी रीति से टल न जायगा जब लों सब संपूर्ण
१९ न होले। इस कारण जो कोई इन आज्ञां में से सब से
छोटी को भंग करेगा और मनुष्यन को ऐसाही सिखावेगा
वुह स्वर्ग के राज्य में बहुत छोटा कहावेगा परंतु जो कोई
माने और सिखावेगा सोई स्वर्ग के राज्य में बड़ा कहावेगा।
२० इस कारण मैं तुम से कहता हों कि जो तुम्हारे धर्म फरीसिअन
और अध्यापकन के से अधिक न होय तुम स्वर्ग के राज्य
२१ में किसी रीति से न पहुंचोगे। तुम सुनचुके हो कि
अगले लोगन से कहा गया है कि तू खून मत कर और जो
२२ कोई खून करेगा न्याय का दोषी होगा। परंतु मैं तुम से
कहता हों कि जो कोई अपने भाई पर बिना कारण क्रोध
करेगा न्याय का दोषी होगा और जो कोई अपने भाई को रका
कहेगा सभा में दंड के योग्य होगा परंतु जो कोई कहेगा
२३ कि तू बौड़हा है नरक की अग्नि के योग्य होगा। इस कारण
जो तू अपने दान को यज्ञस्थान में ले आवे और वहां चेत
२४ करे कि तेरे भाई का कुछ बैर तुझ पर है। तो यज्ञस्थान के
पास अपना दान छोड़के चलाजा पहिले अपने भाई से

२५ मिलाप कर और तब आके अपने दान को दे। जबलों तू अपने बैरी के संग मार्ग में है तुरंत उससे मिलाप कर न होवे कि बैरी तुझको न्यायी को सौंपे और न्यायी तुझे दंडकारी को २६ सौंप दे और तू बंदिगृह में डाला जाय। मैं तुझसे सत्य कहता हों कि तू जबलों टुकरा टुकरा नभर दे तू २७ किसी रीति वहां से न छूटेगा। तुम सुनचुके हो जो अगिलों से कहा गया है कि तू परस्त्री गमन मत कर। २८ परंतु मैं तुम से कहता हों कि जो कोई स्त्री पर इच्छा करके २९ देखता है वुह अपने मन में उससे व्यभिचार कर चुका। और जो तेरी दहिनी आंख तुझे ठोकर खिलावे उसे निकाल के अपने पास से फेंक दे क्योंकि तेरे अंगन में से एक का नष्ट होना भला है कि तेरा समस्त देह नरक में डाला जाय। ३० और जो तेरा दहिना हाथ तुझे ठोकर खिलावे उसे काटडाल और अपने पास से फेंक दे क्योंकि तेरे अंगन मेंसे एक का नाश होना तेरे लिये भला है कि तेरा सर्व देह नरक में ३१ डाला जाय। यह कहा गया है कि जो कोई अपने स्त्री को ३२ त्याग करे वुह उसको त्याग पत्र देवे। परंतु मैं तुम्हें कहता हों कि जो कोई परगमन बिना अपने स्त्री को त्याग करे वुह उसको व्यभिचार करवाता है और जो कोई उससे जो त्यागी गई है बिवाह करेगा वुह व्यभिचार ३३ करता है। यह भी तुम सुनचुके हो कि अगलों से कहागया है कि तू झूठी किरिया मत खा परंतु परमेश्वर

३४ के कारण अपने किरिअन को पूरा कर। परंतु मैं तुमसे कहता हों कि किसी रीति से किरिया मत खा न तो स्वर्ग
३५ की क्योंकि वुह ईश्वर का सिंहासन है। न तो पृथिवी की क्योंकि यह उसके चरण की चौकी है न तो यिरोशलीम
३६ की क्योंकि वुह महाराज का नगर है। और अपने सिर की किरिया मत खा क्योंकि तू एक बाल को उजाला अथवा
३७ काला नहीं कर सकता। परंतु तुम्हारी बात चीत हां हां नहीं
३८ नहीं होय क्योंकि जो इससे अधिक है बुराई से होता है। तुम सुन चुके हो कि कहा गया है कि आंख के बदले आंख
३९ और दांत के बदले दांत। परंतु मैं तुम से कहता हों कि बुराई का सामना मत कर परंतु जो कोई तेरे दहिने गाल
४० पर थपेडा मारे उसको दूसरा भी फेर दे। और जो कोई चाहे कि तुझे बिचार के स्थान में ले जाय और तेरा अंगरखा उतार
४१ लेवे दोहर भी उसे लेने दे। और जो कोई तुझको आध
४२ कोस बेगार लेजाय उसके संग कोस भर चलाजा। जो तुझसे मांगे उसको दे और तुझसे जो ऋण मांगे उससे तू मुंह मत
४३ मोड। तुम सुन चुके हो कि कहा गया है कि तू अपने
४४ परोसी को प्रेम कर और अपने बैरी से बिरोध। परंतु मैं तुम्हें कहता हों अपने बैरी पर प्रेम करो जो तुम्हें सराप देवे उन्हें आशीस देओ जो तुम से बैर करे उनका भला करो। और जो तुम्हारी निंदा करे और तुम्हें संतावे उनके लिये
४५ प्रार्थना करो। कि तुम अपने पिता के जो स्वर्ग में है

संतान होओ क्योंकि वुह अपने सूर्य्य को भले और बुरेन पर उदय करता है और न्यायी और अन्यायी पर मेंह
४६ बरसाता है। क्योंकि जो तुम उन पर प्रेम करो जो तुम्हें प्रेम करते हैं तुम्हारा क्या फल है क्या पटवारी भी ऐसा
४७ नहीं करते। और जो तुम केवल अपने भाइअन को नमस्कार करो तो तुमने अधिक क्या किया क्या पटवारी भी
४८ ऐसा नहीं करते। इस कारण तुम ऐसा शुद्ध बनो जैसा तुम्हारा पिता जो स्वर्ग में है शुद्ध है।

६ छठवां पर्व्व

१ सावधान हो कि तुम मनुष्यन के सन्मुख उनको देखावने के कारण अपना दान मत देओ नहीं तो तुम्हारे पिता के पास
२ जो स्वर्ग में है तुम्हारा कुछ फल नहीं। इसलिये जब तू दान करता है अपने सन्मुख तुरही न बजाया कर जैसे कि कपटिअन मंडलिअन में और गलिअन में मनुष्यन के स्तुति के कारण करते हैं मैं तुम से सत्य कहता हों कि वे
३ अपना फल पाचुके। परंतु जब तू दान करे तेरा बायां हाथ
४ न जाने जो तेरा दहिना हाथ करता है। कि तेरा दान गुप्त में होय और तेरा पिता जो गुप्त में देखता है आपही
५ तुझ को प्रगट में फल देगा। और जब तू प्रार्थना करे कपटिअन के समान मत हो क्योंकि वे मनुष्यन को देखावने के लिये मंडली में और मार्गन के कोणन में खड़े होके

प्रार्थना करने को प्रीति रखते हैं मैं तुमसे सच कहता
६ हों कि वे अपने फल पाचुके। परंतु जब तू प्रार्थना करे
अपने कोठरी में पैठ और द्वार को मूंद के अपने पिता की
जो गुप्त में है प्रार्थना कर और तेरा पिता जो गुप्त में देखता
७ है तुझ को प्रगट में फल देगा। परंतु जब तुम प्रार्थना
करो व्यार्थ बकबक मत करो जैसे अन्य देशी करते हैं क्योंकि
वे सोचते हैं कि उनके अधिक बोलने से उनकी सुनी
८ जायगी। इसलिये तुम उनके समान मत होओ क्योंकि तुम्हारा
पिता तुम्हारे मांगने से आगे जानता है कि तुम किन किन
९ बस्तुन के आधीन हो। इस कारण तुम इसी रीति से प्रार्थना
करो हे हमारे पिता जो स्वर्ग में है तेरा नाम पवित्र होय।
१० तेरही राज्य आवे तेरी इच्छा जैसी स्वर्ग में है पृथिवी में
११ होय। हमारे दिन दिन की रोटी आज हम को दे।
१२ और हमारे ऋणन को क्षमा कर जिस रीति से हम अपने
१३ रिणीअन को क्षमा करते हैं। और हमें परीक्षा में न डाल
परंतु हम को बुराई से बचाव क्योंकि तेरा राज्य और पराक्रम
१४ और माहात्म्य सदा लों हैं आमीन। क्योंकि जो तुम
मनुष्यन के अपराध को क्षमा करोगे तुम्हारा स्वर्ग बासि पिता
१५ भी तुम को क्षमा करेगा। परंतु जो तुम मनुष्यन के अपराध
को क्षमा न करो तुम्हारा पिता भी तुम्हारे अपराध को क्षमा
१६ न करेगा। और जब तुम ब्रत करो कपटिअन के समान
उदास मुंह मत होओ क्योंकि वे अपने मुंह को मलीन

करते हैं कि लोग उन्हें ब्रती जानें मैं तुम से सत्य कहता हों
१७ कि वे अपने फल पाचुके। परंतु जब तू ब्रत करे अपने सिर
१८ को चिकना कर और अपने मुंह को धो। कि मनुष्य तुझे
ब्रती न जानें परंतु तेरा पिता जो गुप्त में है और तेरा पिता
१९ जो गुप्त में देखता है प्रगट में तुझे फल देगा। अपने लिये
पृथिवी पर धन मत बटोरो जहां कीड़ा और मुरचा बिगाड़ता
२० है और जहां चोर सेंध देते हैं और चोराते हैं। परंतु
अपने कारण स्वर्ग में धन बटोरो जहां न कीड़ा न मुरचा
बिगाड़ता है और जहां चोर सेंध नहीं देते न चोराते हैं।
२१ क्योंकि जहां तुम्हारा धन है तहां तुम्हारा मन भी लगा रहेगा।
२२ शरीर का दीपक आंख है इसलिये जो तेरी आंख निर्मल हो
२३ तेरा सारा देह उंजिआला होगा। परंतु जो तेरी आंख बुरी
हो तेरा सारा देह अंधकार होगा इसलिये जो यह
उंजिआला जो तुझ में है अंधकार हो जाय क्या बड़ा
२४ अंधकार होगा। कोई मनुष्य दो स्वामी की सेवा नहीं कर
सकता क्योंकि वुह अथवा एक से बिरोध रखेगा और दूसरे
से प्रेम अथवा वुह एक का पक्ष करेगा और दूसरे की निंदा
२५ करेगा तुम ईश्वर और धन की सेवा नहीं कर सकते। इस
कारण मैं तुम्हें कहता हों अपने जीवन के कारण चिंता मत
करो कि हम क्या खायेंगे अथवा हम क्या पीवेंगे न अपने
देह के कारण कि हम क्या पहिनेंगे क्या जीवन भोजन से
२६ अधिक नहीं और देह बस्त्र से। आकाश के पंक्षिअन

को देखो क्योंकि वे न बोते हैं न वे लावते हैं न खरिहान में एकट्ठे करते हैं तिस पर भी तुम्हारा स्वर्ग बासी पिता उनको पालन करता है क्या तुम उन्हों से अधिक भले नहीं हो।
२७ तुममें से वुह कौन है जो चिंता करके अपने डोल को एक
२८ हाथ बढ़ा सके। और वस्त्र के लिये क्यों चिंता करते हो जंगली सोसन के फूलों को सोचो वे क्योंकर बढ़ते हैं वे
२९ परिश्रम नहीं करते न वे कातते हैं। तिसपर भी मैं तुम से कहता हों कि सुलैमान भी अपने सारे बिभव में इन
३० में से एक के समान बिभूषित न था। इसलिये हे अल्प बिश्वासियो जो ईश्वर खेत के घास को जो आज है और कल भट्ठी में झोंकी जायगी ऐसा पहिरावता है क्या तुम्हें
३१ अधिक न पहिरावेगा। इसलिये कुछ चिंता मत करो कि हम क्या खायेंगे अथवा हम क्या पीवेंगे अथवा हम क्या
३२ पहिनेंगे। क्योंकि इन वस्तुन की चिंता अन्य देशी करते हैं परंतु तुम्हारा स्वर्गबासि पिता जानता है कि तुम इन
३३ वस्तुन के आधीन हो। परंतु पहिले तुम ईश्वर के राज्य और उसकी सच्चाई को ढूंढो और यह सब वस्तु तुम्हारे
३४ लिये अधिक किई जायगी। इस कारण कल को सोच मत करो क्योंकि कल अपने वस्तुन के लिये आपही सोच करेगा दिन का दुख उसी दिन के लिये बहुत है।

१ दोष मत देओ कि तुम पर दोष न दिया जाय।
२ क्योंकि जिस दोष से तुम दोष देते हो तुम पर भी दोष दिया जायगा और जिस नाप से तुम नापते हो वैसा ही तुम्हारे
३ लिये फेर नापा जायगा। और उस किरकिरी को जो तेरे भाई की आंख में है काहे को देखता है परंतु उस लट्ठा को
४ जो तेरी आंख में है चिंता नहीं करता। अथवा तू अपने भाई को क्यों कहता है कि ला उस किरकिरी को जो तेरी आंख में है निकाल दो और देख तेरी ही आंख में एक
५ लट्ठा है। हे कपटी पहिले अपने ही आंख से उस लट्ठा को बाहर कर और तब तू फरछाई से देखके अपने भाई
६ की आंख से उस किरकिरी को निकाल सकेगा। जो बस्तु कि पवित्र है कुत्तन को मत देओ और अपने मोतीअन को सूअरन के आगे मत फेंको तो नहो कि वे अपने पांव से
७ उन्हों को रौंदे और फिरके तुम्हीं को फाड़ें। मांगो और तुम्हें दिया जायगा ढूंढो और तुम पाओगे खटखटाओ और
८ तुम्हारे लिये खोला जायगा। क्योंकि जो कोई मांगता है लेता है और वुह जो ढूंढता है पावता है और उसके लिये जो
९ खटखटाता है खोला जायगा। अथवा तुममें कौन मनुष्य है जो उसका पुत्र उससे रोटी मांगे क्या वुह उसे एक पत्थर
१० देगा। अथवा जो वुह मछरी मांगे क्या वुह उसे एक
११ सांप देगा। इसलिये जो तुम अधम होके अपने पुत्रन को अच्छा दान देने जानते हो तो तुम्हारा पिता जो स्वर्ग में है

क्या उन सभन को जो उससे मांगते हैं अधिक भली बस्तु न
१२ देगा। इस कारण जो इच्छा तुम करते हो कि मनुष्य
तुम से करें तुम भी उन्हों से वैसा करो क्योंकि तौरेत और
१३ आगमज्ञानी यही हैं। तुम छोटे द्वार से पैठो क्योंकि बड़ा
है वुह द्वार और चौड़ा है वुह मार्ग जो नाश को पहुंचाता
१४ है और बहुत हैं वे जो उसी से पैठते हैं। इस कारण कि
वुह द्वार छोटा है और वुह मार्ग सकेत जो जीवन को
१५ पहुंचाता है और वे थोरे हैं जो उसे पावते हैं। झूठे
आगमज्ञानिअन से सचेत रहो जो भेड़न के भेष में तुम्हारे
१६ समीप आवते हैं परंतु मन में फाड़नेवाले हुंडार हैं। तुम
उन्हों को उनके फलन से पहिचानोगे क्या मनुष्य कांटों से
१७ दाख एकट्ठे करते हैं अथवा ऊंटकटारेन से गूलर। इसी
रीति से हारएक अच्छा पेड़ अच्छा फल फलता है परंतु बुरा पेड़
१८ बुरा फल फलता है। अच्छा पेड़ बुरा फल नहीं फल सकता न
१९ बुरा पेड़ अच्छा फल फलसकता। जो जो पेड़ अच्छा फल
नहीं लावता काटा जाता और आग में झोंका जाता है।
२० इस कारण तुम उन्हों को उनके फल से जानोगे।
२१ हारएक जो मुझ को प्रभु प्रभु कहता है स्वर्ग के राज्य में न
पैठेगा परंतु वुह जो मेरे पिता की जो स्वर्ग में है इच्छा
२२ करता है। बहुतेरे उस दिन मुझे कहेंगे कि हे प्रभु हे प्रभु
क्या हम ने तेरे नाम से आगम की बातें नहीं किईं और
तेरे नाम से क्या देवन को नहीं भगाया और तेरे नाम से क्या

२३ बहुतेरे अचरज काम नहीं किये। और तब मैं उन्हों को कहोंगा कि मैं तुम्हों को कबही नहीं जाना तुम सब जो
२४ कुकर्म्म करते हो मेरे समीप से दूर होओ। इसलिये जो कोई मेरी यह कथा सुनता है और उन्हें मानता उसको मैं ऐक बुद्धिमान से उपमा देउंगा जिस ने पत्थर पर अपना
२५ घर उठाया। और मेंह बरषा और बाढ़ आये और आंधियां चलीं और उस घर पर बे झार लगा और वुह न गिरा क्योंकि
२६ वुह पत्थर पर उठाया गया था। और जो कोई मेरी यह कथा सुनता है और उन्हें नहीं मानता सो ऐक बावरे मनुष्य से उपमा दिया जायगा जिसने अपना घर बालू पर
२७ उठाया। और मेंह बरसा और बाढ़ आये और आंधिया चलीं और उस घर पर बोझार लगा और वुह गिरा और उसका
२८ गिरना धड़ाम से हुआ। और ऐसा हुआ कि जब ईसा ने यह कथा को समाप्त किया तब वे लोग उसके उपदेश से
२९ आश्चर्य्य हुऐ। क्योंकि उसने उन्हों को सामर्थी के समान सिखाया और अध्यापकन के समान नहीं।

८ आठवां पर्ब्ब

१ जब वुह उस पहाड़ से उतरा बहुत सी मंडली उसके
२ पीछे होलियां। और देखो ऐक कोढ़ी ने आके उस को दंडवत करके कहा हे प्रभु जों तू चाहे तो मुझे
३ पवित्र कर सकता है। तब ईसा ने हाथ बढ़ा के उसको

छूके कहा मैं चाहता हों तू पवित्र हो जा और
४ तुरंत उसका कोढ़ जाता रहा। तब ईसा ने उस को
कहा देख किसी से मत कह परंतु जाके अपने को
याजक को दिखा और जो दान मूसा ने आज्ञा किई
५ है दे कि उनके निकट साखी होय। और जब ईसा
ने कुफ़रनाहूम में प्रवेश किया ऐक सेनापती ने उसके
६ समीप आके बिनती किई। और कहा कि हे प्रभु
मेरा सेवक अर्द्धंग के रोग से अति पीड़ा से घर में पड़ा
७ है। तब ईसा ने उस को कहा मैं आके उसको चंगा
८ करोंगा। उस सेनापती ने उत्तर देके कहा हे प्रभु
मैं जोग्य नहीं कि तू मेरे छत तले आवे परंतु केवल
९ बचन कह और मेरा सेवक चंगा होजायगा। क्योंकि
मैं ऐक मनुष्य दूसरे की आज्ञा में हों और सेना
मेरे बश में है और मैं ऐक को कहता हों कि जा
और वुह जाता है और दूसरे को कि आ और वुह
आता है और अपने सेवक को कि यह कर और वुह
१० करता है। ईसा ने सुनकर आश्चर्य्य किया और उन्हों
को जो उसके पीछे थे कहा मैं तुम्हों से सत्य कहता
हों कि मैं ऐसा बड़ा बिश्वास इसराईल में भी नपाया।
११ और मैं तुमसे कहता हों कि बहुतेरे पूरब और
पच्छिम से आवेंगे और इबराहीम और यिसहाक और
१२ याकूब के संग स्वर्ग के राज्य में बैठेंगे। परंतु इस

राज्य का संतान बाहर अंधियारे में डाले जायेंगे जहां
१३ रोना और दांत किचकिचाना होगा। तब ईसा ने उस
सेनापती से कहा कि जा और जैसा बिश्वास तूने
किया है वैसा तेरे लिये होय और उसका सेवक उसी
१४ घड़ी चंगा होगया। और जब ईसा पितरस के घर में
आया उसने उसकी सास को ज्वर से दुखी पड़ी देखा।
१५ और उसने उसका हाथ छुआ तब ज्वर ने उसको छोड़ा और
१६ वुह उठके उनकी सेवा किई। जब सांझ भई वे उनके
निकट बहुत से देव ग्रस्तन को लाये और उसने बचन से
अपबित्र आत्मन को दूर किया और सबन को जो रोगी थे
१७ चंगा किया। तोकि जो यिशाया आगमज्ञानी ने कहाथा संपूर्ण
होवे कि वुह आप हमारी दुर्बलता को लेलिया और रोगन
१८ को उठा लिया। पर जब ईसा ने अपने आस पास बड़ी
मंडलिअन को देखा उसने उस पार जाने की आज्ञा किई।
१९ और कोई एक अध्यापक ने आके उसको कहा कि हे
२० गुरु जहां कहीं तू जाय मैं तेरे पीछे चलोंगा। तब
ईसा ने उस को कहा लोमड़िअन के लिये मांदे और
आकाश के पंछिअन के खोते हैं परंतु मनुष्य के पुत्रके
२१ सिर धरने का स्थान नहीं है। और उसके शिष्यन में से
एक ने उसको कहा हे प्रभु मुझ को जाने दे कि पहिले
२२ अपने पिता को गाड़ों। परंतु ईसा ने उस को कहा
मेरे पीछे चला आ और जानेदे मृतक अपने मृतकन

२३ को गाड़ें। और जब वुह नाव पर चढ़ा उसके शिष्य
२४ उसके पीछे होलिये। और देखो समुद्र में एक बड़ी
आंधी उठी यहां लों कि लहरन से नाव ढंप गई परंतु वुह
२५ नींद में था। तब उसके शिष्य ने समीप आयके उसको
जगाके कहा कि हे प्रभु हमें बचाउ हम नष्ट होते हैं।
२६ तब उसने उन्हों को कहा कि हे अल्प बिश्वासियो तुम सब
क्यों डरते हो। तब उसने उठ के बयार और समुद्र को डांटा
२७ और बड़ा चैन होगया। परंतु लोग अचंभा करके बोले
कि यह किस भांति का मनुष्य है जिस के बश में बयार
२८ और समुद्र भी हैं। और जब वुह पार जर्गसीन के देश में
पहुंचा दो देव ग्रस्त समाधिन से निकलके उसको मिले जो
यहां लों अतिभयंकर थे कि उस मार्ग से कोई न जा सकते
२९ थे। और देखो उन्हों ने चिल्लाके कहा कि हे ईश्वर के
पुत्र ईसा हमें तुससे क्या काम है क्या तू यहां आया है कि
३० समय से आगे हमों को पीड़ा देवे। और उससे दूर
३१ सूअरन का एक झूंड चरता था। तब देवन ने उसकी
बिनती करके कहा जो तू हमें दूर करे तो हम को जाने दे
३२ कि उन सूअरन के झूंड में पैठें। तब उसने उन्हों को
कहा कि जा और वे निकल के सूअरन के झूंड में पैठें
और देखो कि सूअरन के सारे झूंड कड़ारे पर से
छूट समुद्र में जा गिरे और जल में डुब के नष्ट
३३ हुए। तब उन्हों के चरवाहे भागे और नगर में गये

और समस्त समाचारन को जो देवग्रस्त पर बीता था
३४ कहा। और देखो सारे नगर ईसा के मिलने को बाहर
निकल आये और जब उन्हों ने उसको देखा तो
बिनती किई कि उनके सिवाने से बाहर जाय।

९ नवां पर्ब्ब

१ तब वुह नाव पर चढ़के पार पहुंचा और अपने नगर
२ में आया। और देखो उन्हों ने एक अर्द्धंगी को
खाट पर लेटा हुआ उसके निकट लाये और ईसा ने
उनका बिश्वास देखके उस अर्धंगी को कहा कि हे
३ पुत्र आनंद हो तेरे पाप क्षमा किये गये। और देखो
कई अध्यापकन मेंसे अपने अपने मन में कहा कि
४ यह पाखंड बकता है। और ईसा ने उनका बिचार
जानके कहा तुम सब किस कारण अपने अपने मन में
५ बुरा बिचार करते हो। क्योंकि क्या कहना सहज है कि
पाप क्षमा किये गये अथवा कहना कि उठ और
६ चल। परंतु कि तुम जानो कि मनुष्य के पुत्र को पृथिवी
पर पाप क्षमा करने का सामर्थ है तब उसने उस अर्द्धंगी
को कहा उठ अपनी खाट उठा और अपने घर को जा।
७ तब वुह उठा और अपने घर को चला गया।
८ परंतु जब मंडली ने देखा वे आश्चर्य्य करके ईश्वर की
स्तुति किई जिसने ऐसा सामर्थ मनुष्यन को दिया है।

९ और जब ईसा वहां से चला उसने बेहरी लेने के स्थान में एक मनुष्य को जिसका नाम मत्ती था बैठे देखा और उसने उस को कहा मेरे पीछे आ तब वुह
१० उठा और उसके पीछे होलिया। और यों हुआ कि जब ईसा घर में भोजन करने को बैठा देखो बहुत से पटवारी और पापी आये और उसके और उसके शिष्यन के संग बैठ
११ गये। और जब फरीसिअन ने देखा उन्हों ने उसके शिष्यन को कहा तुम्हारा गुरु पटवारिअन और
१२ पापिअन के संग क्यों भोजन करता है। परन्तु जब ईसा ने सुना उसने उन्हों को कहा कि वे जो चंगे हैं वैद्य
१३ का प्रयोजन नहीं रखते परंतु वे जो रोगी हैं। पर तुम जाओ और इसके अर्थ को सीखो कि मैं क्रिया चाहता हों और बलिदान को नहीं क्योंकि मैं सत्यबादिअन को बुलावने नहीं आया परंतु पापिअन को कि पछतावे।
१४ तब यहिया के शिष्यन ने उस पास आके कहा कि हम सब और फरीसिअन क्यों बरबार ब्रत करते हैं परंतु
१५ तेरे शिष्य ब्रत नहीं करते। तब ईसा ने उन्हों को कहा कि जब लों दूलह संग है क्या बराती शोक कर सकते हैं परंतु वे दिन आवेंगे जब दूलह उन्हों से अलग किया जायगा
१६ तब वे ब्रत करेंगे। कोई मनुष्य नये बस्त्र का पैबंद पुराने बस्त्र पर नहीं लगावता क्योंकि वुह जो उसमें लगाया गया है कि बंद करे बस्त्र से खैंचता है और फटा अधिक होता है।

१७ मनुष्य पुराने कुप्पे में नई मदिरा नहीं भरता नहीं तो कुप्पे फटते हैं और मदिरा बही जाती है और कुप्पे नष्ट होते हैं परंतु वे नये कुप्पे में नई मदिरा भरते हैं और दोनों
१८ जतन से रहते हैं। जब वुह उन्हें को यह कह रहा था देखो कोई एक मुखिया ने आके उसकी बिनती करके कहा कि मेरी बेटी अभी मर गई परंतु आ और अपना हाथ उस
१९ पर रख और वुह जीएगी। तब ईसा उठा और अपने शिष्य
२० समेत उसके पीछे हो लिया। और देखो एक स्त्री जिसको बारह बरस से लोहू गिरने का रोग था पीछे आके उसके
२१ बस्त्र के खूट को छूई। क्योंकि उसने अपने मन में कही
२२ जो मैं केवल उसका बस्त्र छूवों में चंगी हो जाउंगी। परंतु ईसा पीछे फिरा और जब उसने उसको देखा तो कहा हे पुत्री सावधान हो तेरे बिश्वास ने तुझे चंगा किया और वुह
२३ स्त्री उसी घड़ी चंगी होगई। और जब ईसा उस मुखिया के घरमें आया और बजनिअन और लोगन को धूम मचाते
२४ देखा। उसने उन्हें को कहा कि किनारे हो क्योंकि यह कन्या मर नहीं गई परंतु सोती है और वे उस पर निंदा
२५ करके हंसे। परंतु जब लोग बाहर निकाले गये उसने भीतर जाके उसका हाथ पकड़ा और वुह कन्या उठी।
२६ और यही कीर्ति उस समस्त देश में फैल गई। (२७) और जब ईसा वहां से चला गया दो अंधे चिल्लाते और यह कहते उसके पीछे होलिये कि हे दाऊद के पुत्र हम पर

२८ दया कर। और जब वुह घर में आया वे अंधे उसके समीप आये और ईसा ने उन्हों को कहा तुम बिश्वास करते हो कि मैं यह कर सकता हों उन्हों ने उसको कहा हां
२९ प्रभु। तब उसने उनकी आंखें छूके कहा कि तुम्हारे
३० बिश्वास के समान तुम पर होय। और उन की आंखें खुल गईं और ईसाने उन्हों को चेताके कहा कि देखो कोई
३१ न जाने। परंतु वे वहां से निकल के उसकी कीर्त्ति उस
३२ समस्त देश में फैलाये। जब वे बाहर गये देखो लोग एक
३३ देव ग्रस्त गूंगे मनुष्य को उसके समीप लाये। और जब देव निकाला गया वुह गूंगा बोला और मंडलिअन आश्चर्य होके कहने लगीं कि ऐसा इसराईल में कभी न देखा गया।
३४ परंतु फरीसियन ने कहा कि वुह देवन के राजा के सहाय से
३५ देवन को दूर करता है। और ईसा ने समस्त नगरन में और गांवन में जाके उनके मंडलिअन में राज्य का मंगल समाचार सिखावते और लोगन के हरएक रोग और हरएक दुख
३६ दूर करते सर्बत्र फिरे। और जब उसने मंडलिअन को देखा वुह उन पर दयालु हुआ इस कारण कि वे थके पड़े थे और उन भेड़न के समान बिखरे थे जिन का गंडेरिया
३७ नहीं है। तब उसने अपने शिष्यन को कहा ठीक पक्की
३८ हुई खेती तो बहुत हैं परंतु लवनहार थोरे। इस कारण तुम खेती के स्वामी की प्रार्थना करो कि वुह अपने खेती में लवनहारन को भेजे।

१ और जब उसने अपने बारह शिष्यन को बुलाया उसने उन्हें को अपवित्र आत्मन पर सामर्थ्य दिया कि उन्हें दूर करें और समस्त प्रकार के रोग और अनेक रीति के दुःख को चंगा करें।
२ अब बारह शिष्यन के नाम यह हैं पहला शमऊन जो पितरस कहावता है और उसका भाई अंद्रयास और जबदी
३ का पुत्र याकूब और उसका भाई योहन्ना। फैलबूस और बरतूलमा तूमा और मत्ती पटवारी और हलफा का पुत्र
४ याकूब और लबी जो सदी कहावता है। शमऊन किनानी और यहूदा अस्करयूती जिसने उसे पकड़वाया भी।
५ ईसानें इन बारह को भेजा और उन्हें आज्ञा करके कहा कि अन्य देशियन के ओर मत जाओ और सामरियन के
६ नगर में प्रवेश मत करो। परंतु पहिले इसराईल के घर
७ के खोए हुए भेड़न के पास जाओ। और तुम चलते हुए
८ उपदेश करते कहो कि स्वर्ग का राज्य निकट है। रोगिअन को चंगा करो कोढ़ियों को पावन करो। मृतकन को जिलाओ देवन को दूर करो बिन मोल से तुम पाए हो बिन मोल से
९ देओ। अपने थैली में न सोना न रूपा न पीतल बटोरो।
१० न चलने के कारण झोला अथवा दो बस्त्र अथवा जूता अथवा लाठी लेओ क्योंकि बनिहार अपने भोजन के
११ योग्य है। और जिस किसी नगर अथवा गांव में तुम प्रवेश करो ढूंढो कि उस में योग्य कौन है और जब लों
१२ वहां से न निकलो वहीं रहो। और जब तुम किसी घर

१३ में जाओ उस पर आशीस देओ। और जो वुह घर योग्य होय तुम्हारा कल्याण उस पर पहुंचे परंतु जो वुह योग्य न होय तो तुम्हारा कल्याण तुम्हीं पर फिर आवेगा।
१४ और जो कोई तुम्हें ग्रहण न करे और तुम्हारी बातें न सुने जब तुम उस घर से अथवा नगर से बाहर जाओ
१५ अपने पांव की धूर झाड़ो। मैं तुम से सत्य कहता हों कि उस नगर की दशा से सदूम और अमूरः देश की बिचार के
१६ दिन में अधिक सहज होगी। देखो मैं तुम्हें भेड़न के समान हुंडारन के बीच में भेजता हों इस कारण तुम सांप के समान बुद्धिमान और कबूतर के समान सूधे होओ।
१७ परंतु मनुष्यन से सचेत रहो क्योंकि वे तुम को सभा में सौंपेंगे और वे तुम को अपने मंडलिअन में कोड़े मारेंगे।
१८ और तुम मेरे कारण अध्यक्षन और राजन के आगे किये जाओगे कि उन पर और अन्यदेशिअन पर साक्षी होओ।
१९ परंतु जब वे तुम्हें सौंप देवें चिंता मत करियो कि हम किस रीति से अथवा क्या कहें क्योंकि उसी घड़ी जो तुम
२० कहोगे तुम्हें दिया जायगा। क्योंकि तुम नहीं हो जो कहते हो परंतु तुम्हारे पिता का आत्मा जो तुम में है कहता
२१ है। और भाई भाई को और पिता पुत्र को मरने के कारण सौंपेंगे और बालकन माता पिता के बिरोध में उठेंगे और
२२ उन्हें मारडलवावेंगे। और मेरे नाम के कारण सब तुम से बिरोध करेंगे परंतु वुह जो अंत लों सहता है त्राण

२३ पावेगा। परंत जब वे तुम्हें इस नगर में सतावे तुम दूसरे को भाग जाओ क्योंकि मैं तुम से सच कहता हों कि तुम इसराईल के नगरन में सर्बत्र न फिरोगे जब लों मनुष्य का
२४ पुत्र न आवे। शिष्य गुरु से बड़ा नहीं है न सेवक अपने
२५ स्वामी से बड़ा। यह बहुत है कि शिष्य गुरु के समान और सेवक अपने स्वामी के समान होय जो उन्हों ने घर के स्वामी को बालजबूल कहा है कितना अधिक उसके घर
२६ के लोगन को कहेंगे। इसलिये उन्हों से मत डरो क्योंकि ऐसी कोई वस्तु छपी नहीं है जो प्रगट न होगी और
२७ छिपी जो जाना न जाय। जो मैं तुम को अंधियारे में कहता हों तुम उजिआले में कहो और जो तुम कान
२८ में सुनते हो तुम कोठों पर सुनाओ। और उन्हों से मत डरो जो देह को मार डालते हैं परंतु आत्मा को मार नहीं सकते पर उससे पहिले डरो जो आत्मा और देह को
२९ नरक में नाश करने को सामर्थ रखता है। क्या ऐक अधेले को दो चिड़ियां नहीं बिकतीं और उन में से ऐक भी तुम्हारे पिता के बिना पृथिवी पर नहीं
३० गिरेगी। तुम्हारे सिर के बाल भी सब गिने हुऐ हैं।
३१ इसलिये तुम मत डरो क्योंकि तुम बहुतेरे चिड़ियन से
३२ अधिक मोलके हो। इस कारण जो कोई मनुष्यन के सन्मुख मुझ को अंगीकार करेगा उसको मैं भी अपने
३३ पिता के सन्मुख जो स्वर्ग में है अंगीकार करोंगा। परंतु

जो कोई मनुष्यन के सन्मुख मुझसे मुकर जायगा उससे मैं भी अपने पिता के सन्मुख जो स्वर्ग में है मुकर जाउंगा।
३४ यह मत समझो कि मैं पृथिवी पर मिलाप करवाने आया हों मैं मिलाप करवाने को नहीं आया परंतु तरवार चलावाने को।
३५ क्योंकि मैं मनुष्य को उसके पितासे और कन्या को उसकी माता से और पतोह को उसकी सास से फूट करवाने
३६ आया हों। और मनुष्य के शत्रुन उनके घर के लोग होंगे वुह जो माता अथवा पिता को मुझसे अधिक प्रेम
३७ करता है मेरे योग्य नहीं। और वुह जो बेटा अथवा बेटी को मुझसे अधिक प्रेम करता है मेरे योग्य नहीं।
३८ और वुह जो अपने क्रूस को न उठा ले और मेरे पीछे न आवे
३९ मेरे योग्य नहीं। वुह जो अपने प्राण को बचाता है उसे गवांवेगा और वुह जो मेरे कारण अपना प्राण गवांता है
४० उसे पावेगा। वुह जो तुम्हारा आदर करता है मेरा आदर करता है और वुह जो मेरा आदर करता है उसका
४१ जिस ने मुझे भेजा आदर करता है। वुह जो आगमज्ञानी के नाम से आगमज्ञानी का आदर करता है आगमज्ञानी का फल पावेगा और वुह जो सत्यबादी के नाम से सत्यबादी का आदर करता है सत्यबादी का फल पावेगा।
४२ और जो कोई इन छोटों में से एक को शिष्य के नाम से केवल एक कटोरा शीतल जल पिलावेगा मैं तुम से सत्य कहता हों वुह किसी रीति से निष्फल न रहेगा।

१ और ऐसा हुआ कि जब ईसा अपने बारह शिष्यन को आज्ञा करचुका तुह वहां से चला गया तो कि उनके नगरन
२ में सिखावे और उपदेश करे। और जब यहिया ने बंदिगृह में मसीह का कर्म सुना उहने अपने शिष्यन में से दो
३ को भेजा। और उसको पुछवाया कि क्या तुह जो आवनेवाला
४ था तू है अथवा हम दूसरे की बाट जो हैं। ईसा ने उत्तर दिया और उन्हों को कहा जाओ और जो कुछ तुम
५ सुनते और देखते हो यहिया को कहो। कि अंधे दृष्टि पावते हैं और लंगड़े चलते हैं और कोढ़ी पवित्र होते हैं और बहिरे सुनते हैं मृतक जिलाये जाते हैं और कंगालन
६ को मंगल समाचार सुनाया जाता है। और धन्य तुह जो
७ मेरे कारण ठोकर न खावे। और जब वे चलेजाते थे ईसा यहिया के बिषय में मंडलिअन को कहने लगा कि बन में तुम क्या देखने को निकले क्या ऐक नरकट पवन से हिलता
८ हुआ। परंतु तुम क्या देखने को बाहर निकले क्या महीन बस्त्र पहिरे हुऐ मनुष्य को देखो वे जो महीन
९ पहिनते हैं राजा के घरों में हैं। परंतु तुम क्या देखने को बाहर निकले क्या ऐक आगमज्ञानी हां मैं तुम्हों से
१० कहता हों कि ऐक आगमज्ञानी से बड़ा। क्योंकि यह तुह है जिसकी अवस्था में यह लिखा है कि देखो मैं अपना दूत तेरे सन्मुख भेजता हों जो तेरे मार्ग को तेरे आगे
११ सुधारेगा। मैं तुम से सत्य कहता हों कि उन में से जो

स्त्रीगन से उत्पन्न हुए यहिया स्नानकारक से कोई भी बड़ा
प्रगट नहीं हुआ परंतु वुह जो स्वर्ग के राज्य में सब से
१२ छोटा है उससे बड़ा है। और यहिया स्नानकारक के दिनन
से अब लों स्वर्ग का राज्य प्रबलता उठाता है और बलवंत
१३ उसे बल से लेते हैं। क्योंकि सारे आगमज्ञानी और तौरेत
१४ यहिया लों आगम कहा है। और जो तुम ग्रहण किया
१५ चाहो तो यह इलियास है जो आवनहार था। जिस किसी
१६ के कान सुनने के लिये हों वुह सुने। परंतु मैं इस समय
के लोगन को किससे उपमा देउं वे उन बालकन के ऐसे हैं
जो हाटों के स्थान में बैठके अपने मित्रन को पुकारते हैं।
१७ और कहते हैं कि हम तुम्हारे कारण बांसुरी बजाये किये
और तुम न नाचे हम तुम्हारे कारण बिलाप किये और तुम
१८ न रोये। क्योंकि यहिया न खाता न पीता आया और वे
१९ कहते हैं कि उसके संग एक देव है। मनुष्य का पुत्र
खाता और पीता आया है और वे कहते हैं कि देखो एक
भोजनी और मद्यप पटवारिअन और पापिअन का मित्र
२० परंतु ज्ञान अपने पुत्रन से सत्य ठहराया गया है। तब
वुह उन नगरन को जिन में उसने सब से बहुत अचरज
काम किया था ओलाहना देने लगा क्योंकि वे न पछताये
२१ थे। हे कोरजीन हाय तुझ पर हे बैतसैदा हाय तुझ पर
क्योंकि जो अचरज काम तुझ में किये गये थे जो सूर
और सैदा में किये जाते तो बहुत दिन से टाट पहिन कर

२१ और राख लगाके पछताते। परंतु मैं तुम से कहता हों कि बिचार के दिन में सूर और सैदा के कारण तुम से
२२ अधिक सहज होगी। और तू हे कफ़रनाहूम जो स्वर्ग लों बढ़ाया गया है नाश लों गिराया जायगा क्योंकि जो अचरज काम तुझ में किये गये थे जो सदूम में किये
२४ जाते तुह आज लों रहता। परंतु मैं तुझसे कहता हों कि बिचार के दिन में सदूम के देश के लिये तुझसे अधिक
२५ सहज होगी। उस समय में ईसा ने उत्तर देके कहा हे पिता जो स्वर्ग और पृथिवी का ईश्वर है मैं तेरी स्तुति करता हों इस कारण कि तूने इन बस्तुन को ज्ञानीअन और चतुरन से गुप्त किया और उन्हें बालकन पर प्रगट किया।
२६ हां हे पिता ऐसा होने में आप को अच्छा लगा।
२७ समस्त बस्तु मेरे पिता से मुझे सौंपी गईं और कोई पुत्र को नहीं जानता केवल पिता न कोई पिता को जानता केवल पुत्र
२८ और जिस पर पुत्र प्रगट किया चाहे। हे समस्त लोग जो थके और बड़े बोझे से दबे हो मेरे पास आओ और मैं तुम
२९ को सुख देंगा। मेरा जूआ अपने ऊपर लेओ और मुझसे सीखो क्योंकि मैं कोमल और मन में आधीन हों और तुम
३० अपने प्राण में सुख पाओगे। क्योंकि मेरा जूआ सहज और मेरा बोझ हलका है।

१२ बारहवां पर्ब्ब

१ उस समय में ईसा इतवार के दिन अन्न के खेतों में होके चला जाता था और उसके शिष्य भूखे होके अन्न के
२ बालन को तोड़ तोड़ खाने लगे। परंतु जब फरिसिअन ने देखा उन्हों ने उसको कहा देख तेरे शिष्य कुछ कार्य्य करते
३ हैं जो इतवार के दिन में करना योग्य नहीं। परंतु उसने उन्हों को कहा क्या तुम ने नहीं पढ़ा कि दाऊद ने जब कुछ भूखा था और उन्हों ने जो उसके संग थे
४ क्या किया। कुछ किस रीति से ईश्वर के घर में प्रवेश किया और भेंट की रोटी जो उसको और उसके संगिअन को खाना योग्य न था परंतु केवल याजकन को
५ था खाया। अथवा क्या तुमने तौरेत में नहीं पढ़ा कि याजक इतवार के दिनन में मंदिर में क्योंकर सबत् का
६ आदर नहीं करते और निर्दोष हैं। परंतु मैं तुम से कहता हों कि इस स्थान में एक मंदिर से भी बड़ा
७ है। परंतु जो तुम इसका अर्थ जानते कि मैं दया चाहता हों और बलिदान नहीं तो तुम निर्दोषिअन
८ को अपराधी न ठहरावते। क्योंकि मनुष्य का पुत्र इतवार
९ के दिन का भी प्रभु है। और जब कुछ वहां से चला
१० कुछ उन्हों की मंडली में गया। और देखो वहां एक मनुष्य था जिसका हाथ सूख गया था और उन्हों ने उस को दोष देने के कारण उससे यह कहके पूछा क्या

११ इतवार के दिनन में चंगा करना योग्य है। तब उस ने उन्हें कहा तुममें कौन ऐसा मनुष्य है जिसके एक भेड़ हो और जो वुह इतवार के दिन में गड़हे में गिर पड़े
१२ क्या वुह उसे पकड़ के बाहर न निकालेगा। फेर मनुष्य भेड़ से कितना भला है इस कारण अतवार के दिनन में
१३ भला करना योग्य है। तब उसने उस मनुष्य को कहा कि अपना हाथ बढ़ा तब उसने बढ़ाया और वह दूसरे
१४ के समान चंगा हो गया। तब फरीसिअन ने बाहर आकर उसके बिरोध में सभा किई कि वे उसको किस रीति से
१५ नाश करें। परंतु जब ईसा ने जाना वुह वहां से चलागया और बड़ी बड़ी मंडली उसके पीछे गईं और उसने उन सब
१६ को चंगा किया। और उन्हें आज्ञा किई कि मुझको प्रगट
१७ मत करो। कि जो यिशैया आगमज्ञानी ने कहा था
१८ संपूर्ण होय। कि देखो मेरा सेवक जिसको मैंने चुना है मेरा प्रिय जिसपर मेरा मन अति प्रसन्न है जिसपर मैं अपना आत्मा रखोंगा और वुह अन्यदेशिअन पर न्याय प्रगट
१९ करेगा। वुह न झगड़ा न धूम मचावेगा न मार्गन में कोई
२० उसका शब्द सुनेगा। वुह कुचले हुए नरकट को न तोड़ेगा और धूआं उठते हुए सन को न बुझावेगा जबलों
२१ वुह न्याय को जय लों न पहुंचावे। और उसके नाम पर
२२ अन्य देशी आसरा करेंगे। (२२) तब उसके पास एक देव ग्रस्त अंधा और गूंगा को लेआये और उसने उसे चंगा

किया यहां लों कि वुह अंधा और गूंगा देखा और बोला।
२३ और समस्त लोग आश्चर्य्य किये और कहने लगे क्या यह
२४ दाऊद का पुत्र नहीं है। परंतु जब फरीसिअन ने सुना
वे बोले कि यह देवन को बाहर नहीं निकालता परंतु
२५ बालजबूल के सहाय से जो देवन का राजा है। और ईसा
ने उनका बिचार जानके उन्हों को कहा जो जो राज्य
अपने बिरोध से दो भाग होय उजाड़ होता है और जो जो
नगर अथवा घर अपने बिरोध से दो भाग होय स्थिर न
२६ रहेगा। और जो शैतान शैतान को दूर करता है वुह
२७ अपना बैरी हुआ फेर उसका राज्य कैसे स्थिर रहेगा। और
जो मैं बालजबूल के सहाय से देवन को दूर करता हों तो तुम्हारे
पुत्र किसके सहाय से दूर करते हैं इसलिये वे तुम्हारे न्यायी
२८ होंगे। परंतु जो मैं ईश्वर के आत्मा से देवन को दूर करता
२९ हों तो ईश्वर का राज्य तुम पास आया है। अथवा कैसे कोई
एक बलवंत के घर में पैठ सकता है और उसकी चीज बस्त
छीन ले जबलों पहिले वुह उस बलवंत को न बांधे और तब
३० वुह उसके घर को लूटेगा। वुह जो मेरे संग नहीं मेरा बैरी
है और वुह जो मेरे संग एकट्ठा नहीं करता बिथरता है।
३१ इस लिये मैं तुम को कहता हों कि मनुष्यन के लिये सब
प्रकार का पाप और पाखंडता क्षमा किई जायगी परंतु
मनुष्यन की पाखंडता जो आत्मा के बिरुद्ध है नहीं क्षमा
३२ किई जायगी। और जो कोई मनुष्य के पुत्र के बिरोध

में बात कहेगा कुछ उसके कारण क्षमा किया जायगा परंतु
जो धर्मात्मा के बिरोध में कहेगा कुछ उसके कारण क्षमा न
३३ किया जायगा न इस लोक में न परलोक में। या पेड़
को अच्छा करो और उसके फल को अच्छा अथवा पेड़ को
नष्ट करो और उसके फल को नष्ट क्योंकि वृक्ष फल से जाना
३४ जाता है। हे सांपों के बंश तुम बुरे होके क्योंकर भला
कहि सकते हो क्योंकि मन के भरपूरी से मुंह कहता है।
३५ उत्तम मनुष्य मन के उत्तम भंडार से उत्तम बस्तु बाहर
निकालता है और अधम मनुष्य मन के अधम भंडार से
३६ अधम बस्तु बाहर निकालता है। परंतु मैं तुमसे कहता
हों कि हरएक व्यर्थ बचन जो मनुष्य कहते हैं वे बिचार
३७ के दिन में उसका लेखा देंगे। क्योंकि तू अपने बचन से
सत्यवादी ठहरेगा और तू अपने बचन से दोषी किया जायगा।
३८ तब कई एक अध्यापक और फरीसियों ने उत्तर देके
कहने लगे हे गुरु हम तुझसे एक लक्षण देखने की इच्छा
३९ रखते हैं। परंतु उसने उन्हों को उत्तर देके कहा इस
समय के बुरे और परस्त्रीगमन लोग एक लक्षण ढूंढते हैं
परंतु केवल यूनस आगमज्ञानी के लक्षण को छोड़ उन्हें कोई
४० लक्षण नहीं दिखाया। क्योंकि जिसरीति से यूनस तीन
रात दिन मछली के पेट में था उसी रीति से मनुष्य का पुत्र तीन
४१ रात दिन पृथिवी के भीतर रहेगा। नीनीवी के लोग न्याय
के दिन में इस समय के लोगन के संग उठेंगे और उन्हें

दोषी करेंगे क्योंकि वे यूनस के उपदेश से पछताये और
४२ देखो यूनस से भी एक अति बड़ा यहां है। दक्षिण की
रानी इस समय के लोगन के संग न्याय के दिन में उठेगी
और उन्हें दोषी करेगी क्योंकि वुह पृथिवी के सिवाने से
सुलैमान का ज्ञान सुन्ने को आई और देखो सुलैमान से
४३ भी एक बड़ा यहां है। जब अपवित्र आत्मा मनुष्य से
निकल जाता है वुह सूखे स्थान में बिश्राम ढूंढता फिरता है
४४ और कहीं नहीं पावता। तब वुह कहता है कि मैं अपने
घर में जहां से निकला हों फेर जाउंगा और जब वुह
आता है वुह उसे सूना और झाड़ा बोहारा पावता है।
४५ तब वुह जाता और अपने संग और सात आत्मा जो उससे
अधिक दुष्ट हैं लेता है और वे भीतर जाके बास करते हैं
तब उस मनुष्य की पिछली दशा अगिली से अधिक बुरी
होती है इसीरीति से इस समय के दुष्ट लोगन की भी होगी।
४६ जबलों वुह लोगन से कहि रहा था देखो उसकी माता और
भाइअन बाहर खड़े हुए उससे बात करने की इच्छा
४७ रखते थे। तब एक ने उसे कहा कि देख तेरी माता और
तेरे भाइअन बाहर खड़े हुए तुझसे बात करने की इच्छा
४८ रखते हैं। वुह उत्तर देके उसे जिसने उसे कहा था बोला
४९ कौन है मेरी माता और कौन हैं मेरे भाई। तब उसने
अपने शिष्यन की ओर अपना हाथ बढ़ा के कहा देख मेरी
५० माता और मेरे भाइअन। क्योंकि जो कोई मेरे पिता का

जो स्वर्ग में है इच्छा पर चलता है सोई मेरा भाई और बहिन और माता है।

१३ तेरहवां पर्व

१ उसी दिन ईसा घर से निकलकर समुद्र के तीर पर जा
२ बैठा। और बड़ी मंडलिअन उसके पास एकट्ठी हुईं यहां लों कि वुह एक नाव पर चढ़ बैठा और समस्त मंडली
३ तीर पर खड़ी रही। और उसने उन्हों को बहुतसी बातें दृष्टांतन में कहीं कि देखो एक बोवनहार बोने को
४ निकला। और जब उसने बोया कुछ मार्ग के किनारे
५ पर गिरे और पंछिअन ने आकर उन्हें चुग लिये। कुछ पत्थर की भूमि पर गिरे जहां उन्हों ने बहुत मट्टी न पाई और तुरंत उनके अंकुर निकले इस कारण कि वे गहिरी
६ मट्टी न पाये। और जब सूर्य उदय हुआ वे जल गये
७ इस कारण कि वे जड़ न रखते थे मुरझा गये। और कुछ कांटों में गिरे और कांटों ने बढ़ के उन्हें दबा लिये।
८ परंतु और अच्छी भूमि में गिरे और बालें लाये कुछ
९ तो सौ गुने कुछ साठ कुछ तीस गुने। जिस के कान
१० सुनने के लिये होय सो सुने। तब शिष्यन ने आके उससे कहा कि तू उन्हों को दृष्टांतन में क्यों कहता है।
११ उसने उत्तर देके उन्हों को कहा इसलिये कि तुम्हें स्वर्ग के राज्य का भेद जानने को दिया गया है परंतु उन्हों को

१२ वुह नहीं दिया गया। क्योंकि जिस पास कुछ है उसे दिया जायगा और उसको अधिक बढ़ती होगी परंतु जिस पास कुछ नहीं है उससे वुह भी जो कुछ उसके पास है
१३ फेर लिया जायगा। इस कारण मैं उन्हों को दृष्टांतन में कहता हों क्योंकि वे देखते हुए नहीं देखते और सुनते
१४ हुए नहीं सुनते न वे समझते हैं। और उन पर यिशीया की आगम कही हुई बातें संपूर्ण हुईं कि सुनते हुए तुम सुनोगे और न समझोगे और देखते
१५ हुए तुम देखोगे और न सूझेगा। क्योंकि इन लोगन का अंतःकरण मोटा होगया और कानों से ऊंचा सुनते हैं और अपनी आंखें उन्हों ने मूंद लियां हैं तो न हो कि वे कबही आंखों से देखें और कानों से सुनें और अंतःकरण से समझें और फिर जायें और मैं उन्हें
१६ चंगा करों। परंतु धन्य तुम्हारी आखें क्योंकि वे देखती हैं
१७ और तुम्हारे कान कि वे सुनते हैं। परंतु मैं तुम से सच कहता हों कि अनेक आगमज्ञानिअन और सत्यबादिअन ने इच्छा किई कि जो कुछ तुम देखते हो देखें और न देखा और जो कुछ तुम सुनते हो सुनें और न सुना।
१८ अब तुम बोवनहार का दृष्टांत सुनो। (१९) जब कोई उस राज्य का वचन सुनता है और नहीं समझता तब वुह दुष्ट आता है और जो कुछ कि उसके मन में बोया गया था छीन लेता है यह वही है जो मार्ग के किनारे पर बीज

२० पाया। परंतु वुह जो बीज, को पत्थर के भूमि में पाया यह वही है जो बचन को सुनता है और तुरंत आनंद से
२१ मान लेता है। तिस पर भी उस में जड़ नहीं होती परंतु वुह छिण भर ठहरता है क्योंकि जब उस बचन के कारण ताड़ना और दुःख में पड़ता है तुरंत वुह रुक जाता है।
२२ वुह भी जिसने बीज को कांटों में पाया वुह है जो बचन को सुनता है और इस संसार की चिंता और धन की भर्मना बचन को दबा लेती है और वुह निसफल होता है।
२३ परंतु वुह जो बीज को अच्छी भूमि में पाया यह है जो बचन को सुनता है और समझता है उस में फल भी लगता है कितनों में सौगुने कितनों में साठ कितनों में
२४ तीस। उस ने उन्हें और एक दृष्टांत कहा कि स्वर्ग का राज्य एक मनुष्य से उपमा है जिसने अपने खेत में चोखा
२५ बीज बोया था। परंतु जब लोग सोगये उसका शत्रु आया
२६ और गोहूं में कड़ुआ दाना बोके चला गया। पर जब अंकुर निकले और बालें लाये तब कड़ुआ दाना भी दिखाई
२७ दिआ। तब उस गृहस्थ के सेवकन ने आके उसको कहा कि हे स्वामी क्या तू ने अपने खेत में अच्छे दाने
२८ नहीं बोए थे फेर उस में कड़ुवे कहां से आये। उसने उन्हों को कहा कि एक शत्रु ने यह किया है सेवकन ने उसको कहा तेरी इच्छा होय तो हम जाके उन्हें एकट्ठे
२९ करें। परंतु उसने कहा कि नहीं ऐसा न हो कि जब

तुम कड़ुअन को एकट्ठे करो तुम उसके संग गोहूं भी
३० उखाड़ लेओ। लवने लों दोनों को मिले हुए बढ़ने देओ
और लवने के समय में मैं लवनहारन को कहोंगा कि तुम
पहिले कड़ुअन को एकट्ठे करो और जलावने के कारण
उन का गट्ठा बांधो परंतु गोहूं को मेरे खत्ते में एकट्ठे करो।
३१ उसने उन्हों को एक और दृष्टांत कहा कि स्वर्ग का राज्य
एक सरसों के बीज से उपमा है जिसे एक मनुष्य ने लेके
३२ अपने खेत में बोया। वुह ठीक सब बीजन से छोटा है
परंतु जब वुह बढ़ा तरकारिअन से बड़ा होता है और ऐसा
पेड़ होता है कि आकाश के पंछी उसके डारन पर आके
३३ बसेरा करते हैं। उसने उन्हों को एक और दृष्टांत कहा
कि स्वर्ग का राज्य खमीर से उपमा है जिसे एक स्त्री ने लेके
तीन सेर आटे में छिपाया यहां लों कि सब खमीर होगया।
३४ यह सब बातें ईसा ने मंडली को दृष्टांतन में कहा और
३५ बिना दृष्टांत वुह उन्हों से न बोलता था। तो कि वह जो
आगमज्ञानी से कहा गया था संपूर्ण होवे कि मैं अपना मुंह
दृष्टांतन में खोलोंगा मैं उन बस्तुन को जो जगत के आरंभ
३६ से गुप्त थीं प्रगट करोंगा। तब ईसा ने मंडली को बिदा
किया और आप घर को गया और उसके शिष्यन ने उसके
समीप आके कहा कि खेत के कड़वे दाने के दृष्टांत का अर्थ
३७ हम को कह। उसने उत्तर दिया और उन्हें कहा वुह
३८ जो अच्छा बीज बोता है मनुष्य का पुत्र है। वुह खेत

जगत है अच्छी बीज उस राज्य के बालक हैं परंतु कड़ुवे
३९ दाने दुष्ट के पुत्र है। वुह शत्रु जिसने उन्हें बोया
शैयतान है लवने का समय जगत का अंत है और
४० लवनिहार दूत हैं। इस लिये जिसरीति से कड़ुवे दाने
एकट्ठे किये जाते हैं और आग में जलाये जाते हैं इसी
४१ रीति से इस जगत के अंत में होगा। मनुष्य का पुत्र
अपने दूतन को भेजेगा और वे उसके राज्य से उन सबन
को जो ठोकर खिलावते हैं और उन लोगन को जो बुराई
४२ करते हैं एकट्ठे करेंगे। और उन्हों को एक अग्नि के कुंड
४३ में डाल देंगे वहां रोना और दांत पीसना होगा। तब
सत्य बादी अपने पिता के राज्य में सूर्य के समान प्रकाशित
४४ होंगे जिसके कान सुनने के लिये हैं वुह सुने। फेर
स्वर्ग के राज्य की उपमा उस धन से है जो खेत में छिपा है
जब मनुष्य उसे पावता है छिपावता है और उसके आनंद
से जाता है और जो कुछ वुह रखता है बेचता है और
४५ उस खेत को मोल लेता है। फेर स्वर्ग के राज्य की उपमा
एक बेपारी के समान है जो अच्छी मोतिअन को ढूंढता
४६ है। जिसने जब बड़े मोल की एक मोती पाई जाके अपने
४७ समस्त बस्तु को बेंचा और उसको मोल लिया। फेर
स्वर्ग के राज्य की उपमा एक जाल के समान है जो समुद्र
४८ में डालागया और हरएक प्रकार का बटोरा। जब वुह
भरगया वे तीर पर खैंच लाये और बैठ के उत्तम को बासनन

४९ में एकट्ठे किये परंतु नकारेन को फेंक दिये। इसीरीति से जगत के अंत में होगा दूत निकलेंगे और सत्य बादिअन
५० में से दुष्टन को अलग करेंगे। और उन्हें अग्नि के कुंड
५१ में डाल देंगे जहां रोना और दांत पीसना होगा। ईसा ने उन्हों को कहा क्या तुम यह सब कुछ समझे उन्हों ने उस
५२ को कहा कि हां प्रभु। तब उसने उन्हों को कहा कि इस लिये हरएक अध्यापक जो स्वर्ग के राज्य के कारण उपदेश पाये हैं एक गृहस्थ पुरुष के समान हैं जो अपने भंडार
५३ से नई और पुरान वस्तु निकालता है। और ऐसा हुआ कि जब ईसा ने इन दृष्टांतन को समाप्त किया वुह
५४ वहां से चला गया। और जब वुह अपने देश में आया वुह उनकी मंडली में ऐसा उपदेश किया कि वे अचंभा कर के बोले यह ज्ञान और आश्चर्य कर्म इसको कहां
५५ से मिला। क्या यह बढ़ई का बेटा नहीं क्या उसकी माता का नाम मरियम नहीं और उसके भाई याकूब
५६ और यूसा और शमऊन और यहूदा। और उसकी बहिनें वे सब क्या हमारे संग नहीं फेर इसने यह सब
५७ कहां से पाया। और वे उससे ठोकर खाये तब ईसा ने उन्हों को कहा कि आगमज्ञानी का अनादर नहीं है केवल
५८ अपने देश में और अपने घर में। और उसने उन्हों को अविश्वास के कारण वहां बहुत आश्चर्य कर्म नहीं किया।

१ उस समय में हीरुदीस ने जो राज्य के चैाथाई का मालिक
२ था ईसा की कीर्त्ति सुना। और अपने सेवकन को कहा
कि यह यहिया स्नानकारक है वुह मरके जी उठा
है इस कारण आश्चर्य कर्म उससे प्रगट होते हैं।
३ क्योंकि हीरुदीस ने अपने भाई फैलबूस की स्त्री
हेरेदियास के कारण यहिया को पकड़ के बांधा और
४ बंदिगृह में डालदिया। क्योंकि यहिया ने उसको कहा
५ कि उसे रखना तुझे योग्य नहीं है। और जब उसने इच्छा
किई कि उसको मार डालें वुह मंडली से डरा इस कारण
६ कि वे उसे आगमज्ञानी जानते थे। परंतु जब हीरुदीस
के जन्मगांठ का आनंद होने लगा हीरुदियास की बेटी
उन के मध्य में नाची और हीरुदीस को प्रसन्न किया।
७ तिसपर उसने किरिया खाके बचन दिया कि जो कुछ
८ वुह मांगेगी उसको दूंगा। और जैसा उसकी माता ने आगे
से उसको सिखाया था बोली कि यहिया स्नानकारक
९ का सिर एक थाल में मुझे देओ। तब राजा पछताया
परंतु किरिया और उन्हों के कारण जो उसके संग भोजन
१० में बैठे थे आज्ञा किई कि देवें। और उसने भेजके
११ बंदिगृह में यहिया का सिर कटवाया। और उसका
सिर एक थाल में ले आये और उस कन्या को दिया
१२ और वुह अपनी माता के पास ले गई। और उसके
शिष्यन ने आकर धड़ को उठाके उसे गाड़ दिया और

१३ जके ईसा को संदेस दिया। जब ईसा ने सुना वुह बन्हां से नाव पर होके एक बन के स्थान में अलग गया और जब लोगन ने सुना वे नगरन से निकल कर पैदल
१४ उसके पीछे चले गये। और ईसा ने निकलकर एक बड़ी मंडली को देख के उन पर दया किई और उसने उनके
१५ रोगिअन को चंगा किया। और जब सांह हुई उसके शिष्यन ने उसके समीप आके कहा कि यह बन का स्थान है समय भी बीता मंडलिअन को बिदा करो कि वे
१६ गावंन में जाके अपने कारण भोजन मोल लेवें। परंतु ईसा ने उन्हें कहा कि उन के जाने का प्रयोजन नहीं तुम
१७ उन्हों को खाने को देओ। तब उन्हों ने उसको कहा कि हमारे पास यहां केवल पांच रोटियां और दो मछलियां
१८ हैं। उसने कहा उन्हों को मेरे समीप लाओ।
१९ तब उसने मंडली को आज्ञा किई कि घास पर बैठें और पांच रोटियां और दो मछलियां को लेकर उसने स्वर्ग की ओर देख के आशीस दिया और रोटियां तोड़ के शिष्यन को
२० दिईं और शिष्यन ने मंडली को। और वे सब खा के संतुष्ट हुये और वे चूरचार से जो बच रहे थे बारह
२१ टोकरियां भरीं उठाईं। और वे जो खाये थे पांच सहस्र
२२ के प्रमाण पुरुष थे स्त्री और बालकन को छोड़ के। तब ईसा ने तुरंत अपने शिष्यन को आज्ञा किई कि नाव पर चढ़ो और मेरे आगे उस पार जाओ जब लों मैं मंडलिअन

२३ को बिदा करें। और जब वुह मंडलिअन को बिदा करचुका वुह प्रार्थना करने को ऐक पहाड़ पर अलग चढ़
२४ गया और जब सांझ ऊई वुह वहां अकेला था। परंतु नाव समुद्र के बीच में लहरन से डगमगाती थी क्योंकि
२५ बयार सन्मुख की थी। और रात के चैथे पहर में ईसा
२६ समुद्र पर चलते उन्हें के समीप आया। और जब शिष्यन ने उसको समुद्र पर चलते देखा वे घबरा के कहने लगे कि
२७ वुह ऐक आत्मा है और मारे डर के चिल्लाये। तब ईसा ने तुरंत उन्हें को कहा स्थिर होओ मैं हों भय मत करो।
२८ तब पितरस ने उत्तर देके उसको कहा कि हे प्रभु जो तूही है मुझ को आज्ञा कर कि पानी पर तुझ पास
२९ आओं। तब उसने कहा कि आ और जब पितरस नाव पर से उतरा वुह पानी पर चलने लगा कि ईसा पास जाय।
३० परंतु जब उसने देखा कि बयार बड़ी है वुह डर गया और जब डूबने लगा यह कह के चिल्लाया कि हे प्रभु मुझ को
३१ बचाओ। तब ईसा ने तुरंत हाथ बढ़ाया और उसको पकड़ के कहा हे अल्पबिश्वासी तू ने क्यों संदेह
३२ किया। और जब वे नाव पर आये बयार थम गई।
३३ तब वे जो नाव पर थे आके उसको दंडवत करके कहने लगे
३४ कि तू सचमुच ईश्वर का पुत्र है। और जब वे पार गये वे
३५ जनेसर के देश में पहुंचे। और जब वहां के मनुष्यन ने उसको जाना वे उस देश के चारों ओर भेजे और वे

३६ समस्त रोगिअन को उसके समीप लाये। और उसकी बिनती किई कि केवल उसके बस्त्र का खूंट छूवे और जितनों ने छूऐ भले चंगे होगये।

१५ पंद्रहवां पर्ब्ब

१ तब यिरोशलीम के अध्यापकन और फरीसिअन ने ईसा
२ के समीप आके कहा। कि तेरे शिष्य प्राचीनन के व्यवहार को क्यों उलंघन करते हैं क्योंकि जब वे रोटी खाते हैं
३ हाथ नहीं धोते। तब उसने उन्हों को उत्तर देके कहा कि तुम सब भी क्यों अपने व्यवहार से ईश्वर की आज्ञा
४ को उलंघन करते हो। क्योंकि ईश्वर ने यह कहके आज्ञा किई कि अपने माता और पिता का सन्मान कर और वुह जो माता अथवा पिता को दुर्बचन कहे
५ प्राण से मारा जाय। परंतु तुम कहते हो कि जो कोई पिता अथवा माता को कहे जो कुछ तुम को मुझ से प्राप्त
६ होय भेंट किया गया। और अपने माता अथवा पिता का सन्मान न करे कुछ चिंता नहीं इसरीति से तुमने अपने व्यवहार से ईश्वर की आज्ञा को टालदिया।
७ हे कपटीअन यिशिया ने तुम सब के बिषय में ठीक आगम
८ कहा। कि यह लोग अपने मुंह से मेरे समीप आवते हैं और ओठन से मेरा सन्मान करते हैं परंतु उन्हों का
९ मन मुझसे दूर है। पर वे बृथा मेरी सेवा करते हैं कि

मनुष्यन के आज्ञा को उपदेश ठहरा के सिखावते हैं।
१० तब उसने मंडली को बुला के उन्हन को कहा कि सुनो
११ और समझो। वुह जो मुंह में जाती है मनुष्य को अपवित्र
नहीं करती परंतु वुह जो मुंह से निकलती है मनुष्य को
१२ अपवित्र करती है। तब उसके शिष्यन ने आके उसको
कहा तुम जानते हो कि फरीसिअन यह बात सुनके
१३ क्रोधी ऊए। परंतु उसने उत्तर दिया और कहा कि
हरएक पैाधा जो मेरे स्वर्गबासि पिता ने नहीं लगाया
१४ उखाड़ा जायगा। उन्हें रहने देओ वे अंधे अंधों के अगुआ
हैं और जो अंधा अंधे का अगुआ होय दोनों गड़हे में
१५ गिर जायेंगे। तब पितरस ने उत्तर दिया और उसको कहा
१६ कि इस दृष्टांत के अर्थ हम से कह। तब ईसा ने कहा
१७ कि क्या तुम भी अब लों बेसमझ हो। क्या अब लों तुम
नहीं बूझते कि जो कुछ मुंह में डाला जाता है पेट में
१८ पड़ता है और गड़हे में फेंका जाता है। परंतु जो बस्तुन
मुंह से निकलती हैं अंतःकरण से बाहर आवती हैं
१९ और वे मनुष्य को अपवित्र करती हैं। क्योंकि बुरा बिचार
खून पर स्त्री गमन व्यभिचार चोरी झूठी साखी पाषंडता।
२० ये हैं वे बस्तुओं जो मनुष्य को अपवित्र करती हैं परंतु
बिन धोए हाथन से भोजन करना मनुष्य को अपवित्र नहीं
२१ करता। तब ईसा वहां से जाके सूर और सैदा के
२२ सिवाने में गया। और देखो एक किनानी स्त्री उस सिवाने

से निकलकर चिल्लाके उसको बोली कि हे प्रभु दाऊद के पुत्र मुझ पर दया कर मेरी बेटी एक देव से अति दुखी है।
२३ परंतु उस ने उसको उत्तर में कोई बचन न कहा और उसके शिष्यन ने आके उससे बिनती करके कहा कि उसको बिदा
२४ करे क्योंकि वुह हमारे पीछे चिल्लाती है। तब उसने उत्तर दिया और कहा कि मैं नहीं भेजा गया परंतु केवल
२५ ईसराइल के बंश के खोए हुए भेड़न के समीप। तब वुह आई और उसको प्रार्थना करके बोली कि हे प्रभु मेरा सहाय
२६ कर। परंतु उसने उत्तर दिया और कहा कि यह उचित नहीं है कि बालकन की रोटी लेके कुत्तन को डाल देवें।
२७ तब उसने कहा सत्य है प्रभु तो भी कुत्ते चुरचार जो उनके
२८ स्वामिअन के मंच से गिरते हैं खाते हैं। तब ईसा ने उत्तर दिया और उसको कहा कि हे स्त्री तेरा बड़ा बिश्वास जो तेरी इच्छा है तुझे होय और उसकी बेटी उसी घड़ी
२९ चंगी हो गई। और ईसा वहां से जाके जलील के समुद्र के
३० किनारे आया और एक पहाड़ पर चढ़ के वहां बैठा। और बड़ी मंडलिअन जिनके संग लंगड़े अंधे गूंगे टुंडे और बहुत से और थे उसके समीप आईं और उन्हों को ईसा के चरण
३१ पास डाल दिईं और उसने उन्हों को चंगा किया। यहां लों कि जब मंडली ने देखा कि गूंगे बोले टुंडे अच्छे हुए लंगड़े चले और अंधे देखे वे आश्चर्य होके इसराईल के
३२ ईश्वर की बड़ाई किये। तब ईसा ने अपने शिष्यन को

बुलाके कहा कि मंडली पर मुझे दया आवती है क्योंकि वे तीन दिन से मेरे संग हैं और भोजन के कारण नहीं रखते हैं और मैं उन्हें उपवासा नहीं बिदा करूंगा न हो वे
३३ मार्ग में निर्बल हो जायें। तब उसके शिष्यन ने उसको कहा कि इस बन में हम इतनी रोटी कहां से लेआवें कि
३४ ऐसी बड़ी मंडल को संतुष्ट करें। तब ईसाने उन्हन को कहा कि तुम कितनी रोटी रखते हो वे बोले कि सात और
३५ थोड़ी छोटी मछलिअन। तब उसने मंडली को आज्ञा किई
३६ कि वे भूमि पर बैठ जायें। और उसने उन सात रोटियां और मछलियां लेके स्तुति करके तोड़ीं और अपने शिष्यन
३७ को दिईं और शिष्यन ने मंडली को। और वे सब खाके संतुष्ट हुए और उन्हों ने चुरचार से जो बच रहे थे सात
३८ टोकरियां भरी उठाईं। और जिन्हों ने भोजन किया वे चार सहस्र मनुष्य स्त्रीअन और बालकन को छोड़के थे।
३९ तब वुह मंडली को बिदा करके नाव पर चढ़ा और मजदल के सिवाने में आया।

१६ सोलहवां पर्व्व

१ तब फरीसिअन भी सादूकिअन के संग उसके पास आये और परीक्षा करके उससे चाहे कि हमको स्वर्ग से एक
२ लक्षण दिखाओ। उसने उत्तर दिया और उन्हों को कहा जब सांझ होती है तुम कहते हो कि फरछा होगा क्योंकि

३ आकाश लाल है। और भोर को कि आज आंधी चलेगी क्योंकि आकाश लाल और भयंकर है हे कपटी तुम आकाश के स्वरूप का विचार जानते हो परंतु समय के
४ चिन्ह को नहीं जानते। एक दुष्ट और परस्त्रीगामी लोग लक्षण ढूंढते हैं परंतु उन्हें कोई लक्षण न दिया जायगा
५ केवल यूनस आगमज्ञानी के लक्षण। और जब उसके
६ शिष्य उस पार पहुंचे वे रोटी लेने को भूल गये थे। तब ईसा ने उन्हों को कहा सौचेत रहो और फरीसिअन और
७ सादूकिअन के खमीर से अलग रहो। और वे आपस में बिचार करके कहने लगे कि यह इस कारण है कि हम
८ रोटी न लाये। जब ईसा ने जाना उसने उन्हों को कहा कि हे अल्पबिश्वासियो तुम क्यों आपस में बिचार करते हो
९ कि हमारे रोटी नहीं लावने के कारण है। क्या तुम आबलों नहीं समझते और चेत नहीं करते उन पांच सहस्रु की पांच रोटियां और तुम ने कितनी टोकरियां उठाईं।
१० और न चार सहस्र की सात रोटियां और तुमने कितनी
११ टोकरियां उठाईं। यह क्योंकर है कि तुम नहीं समझते कि मैं ने तुम को रोटी के कारण नहीं कहा परंतु कि तुम
१२ फरीसिअन और सादूकिअन के खमीर से अलग रहो। तब वे समझे कि उसने रोटी के खमीर से नहीं परंतु फरीसिअन
१३ और सादूकिअन के उपदेश के बिषय में कहा। जब ईसा कैसरिया फैलबूस के सिवाने में आया उसने अपने

शिष्यन से यह कहिके पूछा कि मनुष्य क्या कहते हैं कि
१४ मैं मनुष्य का पुत्र कैान हों उन्हों ने कहा कि। कितने
कहते हैं कि यहिया स्नानकारक कितने यिलियास और
१५ कितने यिरमीया अथवा ऐक आगमज्ञानिअन मेंसे। उस
ने उन्हों कों कहा परंतु तुम क्या कहते हो कि मैं कैान
१६ हों। तब शमऊन पितरस ने उत्तर देके कहा कि तू
१७ मसीह जीवते ईश्वर का पुत्र है। तब ईसा ने उत्तर
दिया और उसको कहा कि हे शमऊन यूनस के पुत्र तू
धन्य है क्योंकि मास और लोहू ने इस बात को तुझ पर
प्रगट नहीं किया परंतु मेरे पिता के आत्मा ने जो स्वर्ग
१८ में है। और मैं भी तुझसे कहता हों कि तू पितरस है
और इस पत्थर पर मैं अपना मंदिर बनाऊंगा और नरक के
१९ द्वारे उस पर बलवंत न होंगे। और मैं स्वर्ग के राज्य की
कुंजियन को तुझे देऊंगा जो कुछ तू पृथिवी पर बांधेगा
स्वर्ग में बांधा जायगा और जो कुछ तू पृथिवी पर खोलेगा
२० स्वर्ग में खोला जायगा। तब उसने अपने शिष्यन को
चेता दिया कि वे किसी मनुष्य से न कहें कि यह ईसा
२१ वुह मसीह है। उस समय से ईसा ने अपने शिष्यन को
बतावना आरंभ किया कि किसी प्रकार से मुझे अवश्य है
कि यिरेशलीम में जाओं और प्राचीनन और प्रधान याजकन
और अध्यापकन से अनेक कष्ट उठाओं और मारा जाओं
२२ और तीसरे दिन फेरजीओं। तब पितरस उसको लेकर

भूंहला के उसको कहने लगा कि हे प्रभु तुझ पर कृपाल
२३ होय तेरा ऐसा कधी न होगा। परंतु उसने फिरके पितरस
को कहा कि हे शयतान मेरे पीछे हो तू मुझे ठोकर
खिलाता है क्योंकि तू ईश्वर के वस्तु का बिचार नहीं करता
२४ परंतु वुह जो मनुष्य का है। तब ईसा ने अपने शिष्यन
को कहा कि जो कोई मेरे पीछे आवने की इच्छा करे
वुह अपनी इच्छा को छोड़े और अपने क्रूस को उठावे
२५ और मेरे पीछे आवे। क्योंकि जो कोई अपने प्राण को
बचावेगा वुह उसे खोवेगा और जो कोई मेरे कारण अपने
२६ प्राण को खोवेगा उसे पावेगा। क्योंकि मनुष्य को क्या बड़ी
है जो वुह समस्त जगत को बश में करे और अपना प्राण
गंवावे अथवा मनुष्य अपने प्राण का बदला क्या देगा।
२७ क्योंकि मनुष्य का पुत्र अपने दूतन के संग अपने पिता के
ऐश्वर्य में आवेगा और तब वुह हरएक मनुष्य को उसके
२८ कर्मके समान देगा। मैं तुम से सत्य कहता हों कि कई
एक यहां खड़े हैं कि जब लों मनुष्य के पुत्र को अपने
राज्य में आवते न देख लें मृत्यु का स्वाद न चीखेंगे।

१७ सतरहवां पर्ब्ब

१ और छः दिन के पीछे ईसा पितरस और याकूब और उसके
भाई योहन्ना को संग लेके एक ऊंचे पहाड़ पर अलग चढ़
२ गया। और उनके सन्मुख उसका स्वरूप बदल गया

और उसका मुंह सूर्य्य के समान चमका और उसके बस्त्र
३ उंजिआले के समान स्वेत हुए। और देखो मूसा और
४ इलियास उस्से बात करते दिखाई दिये। तब पितरस ने
उत्तर देके ईसा को कहा कि हे प्रभु हमारे यहां रहना
अच्छा है जो तेरी इच्छा होय हम तीन डेरा यहां बनावें
एक तेरे लिये और एक मूसा के लिये और एक इलिआस
५ के लिये। जो वुह कहि रहा था देखो एक उंजिआला
मेघने उनपर छाया किया और देखो उस मेघ से एक
शब्द हुई जो कहा कि यह मेरा प्यारा बेटा है जिससे
६ मैं अति प्रसन्न हों तुम उसकी सुनो। और जब शिष्यन
७ ने सुना वे औंधे मुंह गिरे और बहुत डर गये। तब ईसा
ने आके उन्हों को छूआ और कहा कि उठो और मत
८ डरो। और जब उन्हों ने अपनी आंखें ऊपर उठाईं वे
९ ईसा को छोड़ किसी को न देखे। और जब वे पर्वत से
उतरे ईसा ने उन्हों को आज्ञा देके कहा कि यह दर्शन
किसी मनुष्य को मत कहना जब लों मनुष्य का पुत्र मृतकन
१० मेंसे फेर न उठे। तब उसके शिष्यन ने उसको यह कहके
पूछा तो अध्यापक किस कारण कहते हैं कि पहिले
११ इलियास का आवना अवश्य है। तब ईसा ने उत्तर
दिया और उन्हों को कहा इलियास पहिले आवेगा
१२ ठीक और सब बस्तु को सुधारेगा। परंतु मैं तुम्हों
को कहता हों कि इलियास आचुका है और उन्हों ने

उसको नहीं जाना परंतु उन्हों ने जो चाहते थे उससे किया
१३ इसी रीति से मनुष्य का पुत्र भी उनसे दुख पावेगा। तब
शिष्यन ने समझा कि उसने यहिया स्नानकारक के विषय
१४ में उन्हों को कहा। और जब वे मंडली के निकट आये
एक मनुष्य उसके समीप आकर घुटना टेकके बोला।
१५ कि हे प्रभु मेरे पुत्र पर दया कर क्योंकि वुह बावला और
बड़ा दुखी है और वुह बार बार आग में और पानी में गिर
१६ पड़ता है। और मैं उसे तेरे शिष्यन के पास लाया परंतु वे
१७ उसे चंगा न कर सके। तब ईसा ने उत्तर दिया और कहा
कि हे अबिश्वासी और कुमार्गगामी लोग मैं कब लों तुम्हारे
संग रहोंगा मैं कब लों तुमको सहोंगा उसको यहां मेरे समीप
१८ लाओ। और ईसा ने देव को घुरकी दिया तब वुह उससे
निकल गया और वुह बालक उसी घड़ी से चंगा होगया।
१९ तब शिष्यन ने ईसा के पास अलग आके कहा कि हम
२० सब उसको दूर क्यों न करसके। ईसा ने उन्हों को कहा
तुम्हारे अबिश्वास के कारण क्योंकि मैं तुम से सत्य कहता
हों तुम एक राई के बीज के समान बिश्वास रखो तुम इस
पहाड़ को कहोगे कि यहां से टलके वहां जा और वुह
जायगा और तुम्हारे कारण कुछ भी अनहोना न होगा।
२१ तिस पर भी इस प्रकार का नहीं निकलता परंतु केवल
२२ प्रार्थना और व्रत से। और जब वे जलील में थे ईसा ने
उन्हों को कहा कि मनुष्य का पुत्र मनुष्यन के हाथ में

२३ सौंपा जायगा। और वे उसको मार डालेंगे और वुह तीसरे
२४ दिन फेर उठेगा तब वे उदास ज़ुए। और जब वें
कुफरनाहूम में पज़ुंचे कर लेनेवाले आके पितरस को
२५ बोले क्या तेरा गुरु कर नहीं देता। उसने कहा कि
हां और जब वुह घर में आया ईसा ने आगे होकर उसे
कहा हे शमऊन तू क्या सोचता है पृथिवी के राजा किन से
शुल्क अथवा कर लेते हैं अपने पुत्रन से अथवा
२६ परदेशिअन से। तब पितरस ने कहा परदेशिअन से
२७ ईसा ने उसको कहा तो बालकन छूटे हैं। तिस पर भी
ऐसा नहो कि वे हमारे कारण ठोकर खावें तू समुद्र को
जा और बंसी फेंक और जो मछली पहिले आवे उसको
ले और उसका मुंह खोल तू एक रुपैया पावेगा उसे लेकर
मेरे और अपने लिये उन्हों को दे।

१८ अठारहवां पर्व्व

१ उसी समय शिष्यन ने ईसा पास आके कहा कि स्वर्ग के
२ राज्य मे कौन सब से बड़ा है। तब ईसा ने एक बालक को
३ अपने समीप बुलाके उन्हों के बीच में बैठाया। और
कहा कि मैं तुम से सत्य कहता हों कि जो तुम मन फिराके
न जाओ और नन्हे बालक के समान न बनो तुम स्वर्ग के
४ राज्य में प्रवेश न करोगे। इस कारण जो कोई अपने को
इस बालक के समान आधीन करेगा वही स्वर्ग के राज में

५ सब से बड़ा है। और जो कोई ऐसे ऐक बालक को मेरे नाम के कारण आदर करे मेरा आदर करता है।
६ परंतु जो कोई ऐक को इन छोटों में से जो मेरा बिश्वास करता है ठोकर खिलावे यह उसके कारण अति भला था कि ऐक चक्की का पाट उसके गले में लटकाया जाता और
७ वुह समुद्र के गहिरे में डुबाया जाता। ठोकरों के कारण जगत पर हाय है क्योंकि ठोकर का आवना अवश्य है परंतु उस मनुष्य पर जिसके कारण ठोकर लगते हैं हाय
८ है। इस कारण जो तेरा हाथ अथवा तेरा पावं तुझ को ठोकर खिलावे उन्हें काट डाल और अपने पास से फेंक दे तेरे कारण अति भला है कि लंगड़ा अथवा टुंडा जीवन में प्रवेश करना कि तेरे दो हाथ अथवा दो पांव होवे और
९ तू अनन्त अग्नि में डाला जाय। और जो तेरी आंख तुझे ठोकर खिलावे उसे निकाल डाल और अपने पास से फेंक दे कि जीवन में काना प्रवेश करना तेरे कारण उससे भला है कि तेरी दो आंखें रहते तू नरक के अग्नि में डाला
१० जाय। सचेत रहो कि तुम इन छोटों में से ऐक की निंदा न करो क्योंकि मैं तुमसे कहता हों कि स्वर्ग में उनका दूत
११ मेरे स्वर्गबासी पिता का मुंह सदा देखते हैं। क्योंकि
१२ मनुष्य का पुत्र आया है कि खोऐहुऐन को बचावे। तुम क्या बिचारते हो जो ऐक मनुष्य के सौ भेड़ होंय और उन में से ऐक खोजाय क्या वुह निनानवे को नहीं

छोड़ता और पहाड़न में जाता और उस खोएहुए को
१३ ढूंढता। और जो ऐसा हो कि वुह उसे पावे मैं तुम से
सत्य कहता हों कि वुह उसके कारण अति आनंद होता
१४ है कि निनानवे से जो खोए न गई थी। इसी रीति से तुम्हारे
स्वर्गबासी पिता की इच्छा नहीं है कि इन छोटन मेंसे
१५ ऐक का नाश होय। और जो तेरा भाई तेरी बुराई करे
जा और उसके संग अलग होके उसको उसका दोष कह जो
१६ वुह तेरी सुने तू अपने भाई को पाया। परंतु जो वुह न
सुने ऐक अथवा दो को अपने संगले ताकि दो अथवा तीन
१७ साक्षी के सन्मुख हरऐक बात स्थिर होजाय। और जो
वुह उनको न सुने मंडली को कह परंतु जो वुह मंडली को
न माने तो जाने दे कि वुह तेरे समीप जैसे अन्यदेशी और
१८ पटवारी होय। मैं तुम से सत्य कहता हों कि जो कुछ तुम
१९ पृथिवी पर खोलोगे स्वर्ग में खोला जायगा। फेर मैं तुम
से कहता हों कि जो तुम में से पृथिवी पर दो मिल के कोई
ऐक बस्तु मांगे वुह उनके कारण मेरे पिता से जो स्वर्ग में
२० है किया जायगा। क्योंकि जहां दो अथवा तीन मेरे
२१ नाम पर ऐकट्ठे हों वहां मैं उनके बीच में हों। तब
पितरस ने उस पास आके कहा कि हे प्रभु कै बेर मेरा
भाई मेरा अपराध करे और मैं उसको क्षमा करों क्या सात
२२ बेर लों। ईसा ने उसको कहा कि मैं तुझसे सात बेर लों
२३ नहीं कहता परंतु सत्तर गुणे सात बेर लों। इस कारण

स्वर्ग का राज्य कोई एक राजा के समान है जो अपने
२४ सेवकान से लेखा चाहता था। और जब वुह लेखा लेने
लगा एक उसके पास लाया गया जो उसका दश सहस्र तोड़ा
२५ धारता था। परंतु इस कारण कि वुह देनेको कुछ न
रखता था उसके स्वामी ने आज्ञा किई कि वुह और उसकी
स्त्री और लड़केबाले और सब जो उसका था बेंचा जाय और
२६ भर दिया जाय। इस लिये उस सेवक ने गिरके उसकी
बिनती करके कहा हे प्रभु मुझ पर संतोष कर और मैं
२७ मुझ को समस्त भर देउंगा। तब उस सेवक के स्वामी को
दया आई और उसको छोड़ दिया और उसका ऋण क्षमा
२८ किया। परंतु वही सेवक बाहर गया और अपने एक
संगी सेवक को पाया जो उसकी सौ सूकी धारता था और
उसने उस पर हाथ डाला और नरेटी पकड़ के कहा जो
२९ तू धारता है मुझे दे। तब उसका संगी सेवक उसके पांव
पर गिरा और उसकी बिनती करके बोला कि मुझ पर
३० संतोष कर और मैं तुझे सब देओंगा। पर उस ने न माना
परंतु जाके उसको बंदिगृह में डाल दिया जब लों वुह ऋण
३१ भर देय। सो जब उसके संग के सेवकन ने जो कुछ कि
हुआ था देखा वे अति सोच किये और आकर जो कुछ
३२ कि बीत गया अपने स्वामी को सुनाये। तब उसके
स्वामी ने उसको बुलाके कहा कि हे दुष्ट सेवक मैंने तुझे
वुह सब ऋण क्षमा किया इस कारण कि तू ने मेरी बिनती

३३ किई। मैंने जैसी तुझ पर दया करी वैसी क्या अपने दास पर तुझे दया करनी उचित न था। तब उसके स्वामी ने
३४ क्रोध करके उसको पीड़ा देनेवालन को सौंपा जब लों समस्त
३५ ऋण जो वुह उसका धारता था भर देवे। सो इसी रीति से मेरा स्वर्गबासी पिता भी तुम को करेगा जो तुम अपने मन से अपने भाइअन का अपराध क्षमा न करोगे।

१९ उन्नीसवां पर्व्व

१ और ऐसा हुआ कि जब ईसा ने यह कथा समाप्त किया वुह जलील से चला गया और यर्दन के उस पार यहूदिया
२ के सिवाने में आया। और बड़ी बड़ी मंडली उसके पीछे होलियां और वहां उसने उन्हों को चंगा किया।
३ फरीसिअन भी उसको परीक्षा करते उसके समीप आके कहने लगे क्या योग्य है कि मनुष्य हरएक कारण से
४ अपनी स्त्री को त्याग करे। तब उसने उत्तर दिया और उन्हों को कहा क्या तुम्हों ने नहीं पढ़ा कि जिसने आरंभ
५ में उत्पन्न किया उन्हें नर और नारी बनाया। और कहा कि इस कारण मनुष्य अपने माता पिता को छोड़ेगा और अपनी स्त्री से मिला रहेगा और वे दोनो एक
६ देह होंगे। इस लिये वे अब से दो नहीं परंतु एक देह हैं इस कारण जो कुछ ईश्वर ने जोड़ा है मनुष्य
७ उसे अलग न करे। उन्हों ने उसको कहा तो मूसा ने

किस कारण आज्ञा किई कि त्यागपत्र देके उसे छोड़ देना।
८ उसने उन्हों को कहा कि मूसा ने तुम्हारे अंतःकरण की कठोरता के कारण तुम्हें अपनी स्त्री को छोड़ने दिया परंतु
९ आरंभ से ऐसा न था। और मैं तुम्हें कहता हों कि जो कोई केवल व्यभिचार बिना अपने स्त्री को त्याग करे और दूसरी से बिबाह करे व्यभिचार करता है और जो कोई
१० उस त्यक्त भई से बिबाह करे व्यभिचार करता है। उसके शिष्यन ने उसको कहा जो स्त्री के संग मनुष्य को यह
११ व्यवहार है तो बिबाह करना ठीक नहीं। परंतु उसने उन्हों को कहा कि सब कोई यह ग्रहण नहीं कर सकते
१२ परंतु केवल जिन को दिया गया है। क्योंकि कितने खोजे हैं जो माता के गर्भ से ऐसे उत्पन्न हुए और कितने खोजे हैं जिन्हें मनुष्य ने खोजा किया है और कितने खोजे हैं जिन्हों ने स्वर्ग के राज्य के कारण अपने को खोजा बनाया
१३ जो कोई ग्रहण कर सकता है वुह ग्रहण करे। तब उसके समीप बालकन को लाये कि वुह उन पर हाथ रखे
१४ और प्रार्थना करे तब शिष्य उन पर झुंझलाये। परंतु ईसा ने कहा कि बालकन को मेरे समीप आवने देओ और उन्हें मत रोको क्योंकि स्वर्ग का राज्य ऐसोंही का है।
१५ और उसने हाथ उन पर रखा और वहां से चला गया।
१६ और देखो कि एक ने आके उसको कहा कि हे उत्तम गुरु मैं कौन सा अच्छा कर्म करें कि अनंत जीवन को प्राप्त होंं।

१७ तब उसने उसको कहा तू मुझे क्यों उत्तम कहता है उत्तम तो कोई नहीं परंतु केवल एक ईश्वर पर जो तू जीवन में प्रवेश करणे को इच्छा रखता है तो आज्ञा को मान।
१८ उसने उसको कहा कौनसी आज्ञा ईसा ने कहा कि तू खून मत कर तू व्यभिचार मत कर तू चोरी मत कर तू झूठी साक्षी
१९ मत दे। अपने माता पिता का सन्मान कर और तू अपने
२० परोसी को अपने समान प्रेम कर। उस तरुण मनुष्य ने उसको कहा कि मैं ने लड़काई से इन सबन को माना अब
२१ मुझे क्या चाहिये। ईसा ने उसको कहा कि जो तू पूर्ण होने की इच्छा रखता है तो जा और जो कुछ कि तेरा है बेंच डाल और कंगालन को दे और मेरे पीछे चला आ
२२ और तू स्वर्ग में धन पावेगा। परंतु जब उस तरुण मनुष्य ने यह बचन सुना वुह उदासीन चला गया क्योंकि वुह
२३ बड़ा धनी था। तब ईसा ने अपने शिष्यन को कहा मैं तुम से सत्य कहता हों कि धनमान मनुष्य को स्वर्ग के राज्य
२४ प्रवेश करना अति दुर्लभ है। और फेर मैं तुम से कहता हों कि सूई के नाके से ऊंट का पैठना अति सहज है कि एक धनमान मनुष्य ईश्वर के राज्य में प्रवेश करे।
२५ जब उसके शिष्यन ने सुना वे अत्यंत अस्चर्य्य होके बोले
२६ तब कौन त्राण पा सकता है। परंतु ईसा ने देखा और उन्हों को कहा कि मनुष्यन के समीप यह अन होना है
२७ परंतु ईश्वर से सब कुछ होनहार है। तब पितरस ने

उत्तर दिया और उसको कहा कि देख हम सब समस्त छोड़के और तेरे पीछे होलिये इस कारण हम को क्या मिलेगा।
२८ ईसा ने उन्हों को कहा कि मैं तुम से सत्य कहता हों कि तुम सब जो नये जन्म में मेरे पीछे आये हो जब मनुष्य का पुत्र अपने ऐश्वर्य के सिंहासन पर बैठेगा तुम भी बारह सिंहासन पर बैठके इसराईल के बारह बंश के न्याय करोगे।
२९ और जिस किसी ने घर अथवा भाई अथवा बहिन अथवा माता अथवा पिता अथवा स्त्री अथवा लड़केवाले अथवा भूमि मेरे नाम के कारण छोड़ा है सैगुना पावेगा और अनंत
३० जीवन का अधिकारी होगा। परंतु बहुतसे पहिले पिछले होंगे और पिछले पहिले।

२० बीसवां पर्व्व

१ क्योंकि स्वर्ग के राज्य की उपमा एक गृहस्थ मनुष्य के ऐसी है जो भोर को निकला कि अपने दाख के खेत में बनिहारन
२ को लगावे। और जब उसने बनिहारन से दिनभर की पान्नी चुकाई उसने उन्हों को अपने दाख के खेत में भेजा।
३ और वुह पहर दिन के अटकल में बाहर गया और औरन
४ को हाट में व्यर्थ खड़े देखा। और उन्हें कहा कि तुम भी दाख के खेत में जाओ और जो कुछ कि ठीक है मैं
५ तुम्हें दूंगा और वे चले गये। फेर उसने दोपहर और
६ तीसरे पहर के लगभग बाहर जाकर वैसही किया। और

घंटा भर दिन रहते हुए वुह बाहर गया और औरन को व्यर्थ खड़े पाया और उन्हों को कहा तुम सब यहां दिन
७ भर क्यों व्यर्थ खड़े हो। उन्हों ने उसको कहा इस कारण कि हम को किसी ने काम में न लगाया उसने उन्हों को कहा कि तुम भी दाख के खेत में जाओ और जो कुछ कि
८ ठीक है तुम पाओगे। सो जब सांझ हुई दाख के खेत के स्वामी ने अपने भंडारी को कहा कि बनिहारन को बुला और पिछले से लेके पहिले लों उन्हों को बनी दे।
९ और जब वे जिन्हों ने घंटे भर काम किये थे आये वे हरएक
१० मनुष्य एक एक चवन्नी पाये। परंतु जब पहिले के आये वे समझे कि हम अधिक पावेंगे परंतु वे भी एक एक चवन्नी
११ पाये। और जब वे पा चुके वे घर के उत्तम स्वामी के
१२ आगे कुड़कुड़ा के। कहने लगे कि इन पिछलन ने एकी घंटा काम किया और तू ने उन्हों को हमारे समान किया कि
१३ जिन्हों ने दिन का भार और ताप सहा। तब उसने उन में से एक को उत्तर दे के कहा कि हे मित्र मैं तेरा अधर्म्म नहीं करता तू ने क्या मुझ से एक चवन्नी का ठीका नहीं
१४ किया। अपनी ले और चला जा इस पिछले को मैं जैसा
१५ तुझे दिया दूंगा। क्या मुझे योग्य नहीं कि मैं अपनी ही से जो चाहों सो करूं क्या इस कारण तेरी आंख बुरी है
१६ कि मैं भला हों। इस लिये पिछले अगिले होंगे और अगिले पिछले क्योंकि बहुतेरे बुलाये गये हैं परंतु थोड़े प्रसिद्ध हैं।

१७ और ईसा यिरोशलीम को जाते ज़ए बारह शिष्यन को
१८ पंथ में अलग ले गया और उन्हें। को कहा। कि देखो
हम यिरोशलीम को जाते हैं और मनुष्य का पुत्र प्रधान
याजकन और अध्यापकन के पास पकड़वाया जायगा और
१९ वे उसके मार डालने की आज्ञा करेंगे। और उसे अन्य
देशिअन को सोंपेंगे कि ठट्ठों में उड़ावें और कोड़े मारें
और क्रूस पर खेंचे और वुह तीसरे दिन फेर जी उठेगा।
२० तब जेबदी के पुत्रन कि माता अपने पुत्रन के संग उस
पास आई और उसकी बिनती करके इच्छा किई कि
२१ उससे कुछ मांगे। तब उसने उसको कहा तू क्या चाहती
है उसने उसको कहा कि कह कि मेरे ये दोनो पुत्र तेरे
राज्य में एक तेरे दाहिने ओर दूसरा तेरे बाएं ओर बैठे।
२२ परंतु ईसा ने उत्तर देके कहा तुम नहीं जानते हो कि तुम
क्या मांगते हो क्या तुम सामर्थ्य रखते हो कि उस कटोरे
से जो मैं पीने पर हों पीओ और उस स्नान से जो मैं
स्नान पाता हों स्नान पाओ वे उसे बोले कि हम सामर्थ्य
२३ रखते हैं। और उसने उन्हें को कहा कि ठीक तुम मेरे
कटोरे से पीओगे और उस स्नान से जिससे मैं स्नान पाता
हों स्नान किये जाओगे परंतु मेरे दाहने और मेरे बांयें ओर
बैठना मेरे देने में नहीं है परंतु उन्हों को जिनके कारण मेरे
२४ पिताने ठहराया है। और जब उन दसों ने सुना वे उन
२५ दोनो भाईअन पर क्रोधित ज़ए। परंतु ईसा ने उन्हें को

बुलाके कहा तुम जानते हो कि अन्य देशिअन के राजा उन पर राज्य करते हैं और वे जो बड़े हैं उन पर आज्ञा
२६ करते हैं। परंतु तुम में ऐसा न होगा परंतु जो कोई तुममें
२७ बड़ा हुआ चाहे वुह तुम्हारा सेवक होवे। और जो कोई तुममें चाहे कि प्रधान हों वुह तुम्हारा सेवक होवे।
२८ जैसा मनुष्य का पुत्र भी स्वामी बन्ने को नहीं आया परंतु सेवक बन्ने को और बहुतेरन के कारण अपने प्राण को दंड
२९ देवे। और जब वे अरीहू से जाने लगे ऐक बड़ी मंडली
३० उसके पीछे होलिई। और देखो कि दो अंधे जो मार्ग के समीप बैठे थे सुना कि ईसा उधर से जाता है चिल्लाके
३१ बोले कि हे प्रभु दाऊद के पुत्र हम पर दया कर। और मंडली ने उन्हों को घुरकी दिई कि वे चुप रहें परंतु वे अधिक चिल्लाके बोले कि हे प्रभु दाऊद के पुत्र हम पर
३२ दया कर। तब ईसा खड़ा हुआ और उन्हों को बुलाके कहा तुम क्या चाहते हो कि मैं तुम्हारे कारण करों।
३३ उन्हों ने उसको कहा कि हे प्रभु हमारी आंखें खुल जावें तब ईसा दयाल हुआ और उनकी आंखें छूआ और तुरंत उन की आंखें दृष्ट पाईं और वे उसके पीछे हो लिये।

२१ ऐकीसवां पर्ब्ब

१ आर जब वे यिरोशलीम के समीप पहुंचे और बैतफ़ा में

जलपाई के पहाड़ के समीप आये तब ईसा ने दो शिष्यन
२ को भेजा। और उन्हों को कहा कि उस गांव में जो
तुम्हारे सन्मुख है जाओ और तुरंत एक बंधी हुई गदही
को और उसके संग एक बच्चे को पाओगे खोलके मेरे
३ पास लाओ। और जो कोई तुम्हें कुछ कहे तुम कहियो
कि प्रभु को उनका प्रयोजन है और वुह तुरंत उनको
४ भेजेगा। यह सब कुछ हुआ कि जो आगमज्ञानी यह
५ कहके बोला था संपूर्ण होवे। कि सीहून की पुत्री से
कहो कि देख तेरा राजा कोमल से गदही पर हां गदही के
६ बच्चे पर चढ़के तेरे समीप आता है। तब शिष्यन ने जाके
और जैसा ईसा ने उन्हों को आज्ञा किई थी वैसा किये।
७ और उस गदही को बच्चा समेत ले आये और उन्हों पर
अपने बस्त्र को रखा और उसको उन पर बैठाया।
८ और एक अति बड़ी मंडली ने अपने बस्त्रन को मार्ग में
बिछाया औरन ने बृक्षन की डालियां काटीं और पंथ में
९ बिथराईं। और मंडलिअन जो उसके आगे पीछे जाती
थीं पुकारके कहने लगीं कि दाऊद के पुत्र को होशाना
धन्य वुह जो प्रभु के नाम से आता है होशाना अत्यंत
१० ऊंचे पर। और जब वुह यिरोशलीम में पहुंचा समस्त
११ नगर चंचल होके कहने लगे कि यह कौन है। तब
मंडली ने कहा कि वुह जलील के नासरः का आगमज्ञानी
१२ ईसा है। और ईसा ईश्वर के मंदिर में गया और उस

सबन को जो मंदिर में बेंचते और कीनते थे बाहर निकाल दिया और सुरहिअन के चैाकिअन को और कबूतर

१३ बेचनेवालन के पीढ़न को उलट दिया। और उन्हों को कहा कि यह लिखा है कि मेरा घर प्रार्थना का घर कहावेगा परंतु तुम्हों ने उसे चोरन की मांद बनाई।

१४ और मंदिर में अंधे और लंगड़े उसके समीप आये और

१५ उसने उन्हों को चंगा किया। और जब प्रधान याजकन और अध्यापकन ने वे अचरज कर्म जो उसने किये और लड़कन को मंदिर में पुकारते और दाऊद के पुत्र को होशाना कहते ऊए देखा वे अति उदासीन ऊए।

१६ और उसको कहा तू सुनता है कि ये क्या कहते हैं तब ईसा ने उन्हों को कहा कि हां क्या तुम्हों ने नहीं पढ़ा कि बालकन और दूध के बच्चों के मुंह से तू ने स्तुति पूरी

१७ किई। तब उसने उन्हों को छोड़ा और नगर से बाहर

१८ बैतीना में गया और वहां बास किया। और बिहान जब

१९ वुह नगर में जाने लगा उसे भूख लगी। और जब उसने ऐक गूलर के बृक्ष को मार्ग में देखा वुह उसके समीप आया और उस पर पत्तन को छोड़ कुछ न पाया और उसको कहा कि तुझ पर अब से अंत लों कुछ फल न लगे तब वुह

२० गूलर का बृक्ष तुरंत सूख गया। और जब शिष्यन ने देखा वे आस्चर्य होके बोले कि गुलर का बृक्ष कैसा जलदी

२१ सूख गया। ईसा ने उत्तर देके उन्हों को कहा कि मैं

तुम से सत्य कहता हों जो तुम बिश्वास रखो और संदेह न करो तो तुम केवल यही जो गूलर के बृक्ष से किया गया है न करोगे परंतु जो तुम इस पहाड़ को भी कहोगे कि टल २२ जा और समुद्र में गिर पड़ तो वैसाही होगा। और समस्त बस्तें जो कुछ कि तुम प्रार्थना में बिश्वास करके मांगोगे २३ तुम पाओगे। और जब वुह मंदिर में आया और उपदेश करता था तब प्रधान याजकन और लोगन के प्राचीन उसके समीप आके कहने लगे कि तू किस आज्ञा से यह २४ कार्य करता है और यह आज्ञा तुझे किसने दिई। तब ईसा ने उत्तर दिया और उन्हों को कहा कि मैं भी तुम्हों से एक बात पूछोंगा तुम जो मुझे बतलाओगे तो मैं भी तुम्हें बतलाओंगा कि मैं किस आज्ञा से यह कार्य करता हों। २५ यहिया का स्नान कहां से था स्वर्ग से अथवा मनुष्य से तब वे अपने मन में बिचार करके कहने लगे जो हम कहें कि स्वर्ग से तो वुह हम से कहेगा फेर तुम किस लिये उस पर २६ बिश्वास न लये। अथवा जो हम कहें कि मनुष्य से तो हम लोगन से डरते हैं क्योंकि सब कोई यहिया को २७ आगमज्ञानी जानते हैं। और उन्हों ने ईसा को उत्तर देके कहा कि हम नहीं जानते तब उसने उन्हों को कहा कि मैं भी तुम को नहीं बतलाता कि मैं किस आज्ञा से यह २८ कार्य करता हों। परंतु तुम को क्या बूझ पड़ता है एक मनुष्य के दो पुत्र थे और उसने पहिले के पास आके कहा

२९ कि पुत्र जा आज मेरे दाख के खेत में काम कर। उसने उत्तर देके कहा कि मेरी इच्छा नहीं परंतु पीछे वुह पछता
३० के गया। और उसने दूसरे के समीप आके वैसाही कहा और उसने उत्तर देके कहा हे प्रभु मैं जाता हों और न
३१ गया। इन दोनों में किसने पिता की आज्ञा मानी उन्हों ने उसको कहा कि पहिले ने ईसा ने उन्हों को कहा कि मैं तुम से सत्य कहता हों कि तुम से आगे पटवारिअन
३२ और बेश्या ईश्वर के राज्य में जाते हैं। क्योंकि यहिया सच्चाई से तुम्हारे समीप आया था और तुम्हों ने उस पर बिश्वास न किया परंतु पटवारिअन और बेश्यन ने उसके बिश्वास किये पर तुम्हों ने देख कर पीछे भी न पछताये कि
३३ तुम उसके बिश्वास करते। दूसरा दृष्टांत सुनो कि एक गृहस्थ ने दाख का खेत लगाया और उसके चारों ओर बाड़ा बांधा और खोद के उस में कोल्हू बनाया और एक गढ़ बनाया और उसे मालिअन को सौंप कर परदेश को चला गया
३४ और जब फलने का समय पहुंचा उसने अपने सेवकन को
३५ मालिअन पास भेजा कि वे उसका फल लेवें। और मालिअन ने उसके सेवकन को पकड़के एक को मारा दूसरे
३६ को मार डाला और तीसरे को पथरवाह किया। फेर उसने और सेवकन को जो पहिले से अधिक थे भेजा और उन्हों
३७ ने उसी रीति से उनसे भी किया। परंतु सब के पीछे उसने अपने पुत्र को उनके समीप भेजके कहा कि वे मेरे पुत्र

३८ का आदर करेंगे। परंतु जब मालिअन ने पुत्र को देखा
वे आपस में बोले कि यह अधिकारी है आओ उसको
३९ मार डालें और उसका अधिकार छीन लेवें। तब उन्हों ने
उसको पकड़ा और दाख के खेत से बाहर निकाल के मार
४० डाला। अब जो दाख के खेत का स्वामी आवे उन
४१ मालिअन को क्या करेगा। उन्हों ने उसको कहा कि
उन बुरे लोगन को बुरी रीति से नाश करेगा और दाख का
खेत और मालिअन को सौंपेगा जो फलन को उनके समय
४२ में पहुंचावेंगे। ईसा ने उन्हों को कहा क्या तुम्हों ने
धर्म ग्रंथ में नहीं पढ़ा कि जिस पत्थर को राजलोगन ने
निकम्मा ठहराया वही कोने का सिर हुआ यह प्रभु का
४३ कार्य है और हम सब के दृष्टि में आश्चर्य है। इस लिये
मैं तुम्हों से कहता हों कि ईश्वर का राज्य तुम से लिया
जायगा अरु और लोगन को जो उसके फल को लावेंगे
४४ दिया जायगा। और जो कोई इस पत्थर पर गिरेगा कुचल
जायगा परंतु जिस पर वुह गिरेगा उसको पीस डालेगा।
४५ और जब प्रधान याजकन और फरीसियन ने उसके दृष्टांतन
को सुना वे जान गये कि उसने उन्हों के विषय में कहा
४६ था। परंतु जब उन्हों ने इच्छा किई कि उस पर हाथ डालें
वे मंडली से डरे क्योंकि वे उसे आगमज्ञानी जानते थे।

१ और ईसा ने उत्तर दिया और उन्हें को फेर दृष्टांतन में
२ कहा। कि स्वर्ग का राज्य एक राजा से तुल्य है जिसने
३ अपने पुत्र का बिबाह किया। और अपने सेवकन को
भेजा कि नेवतहरिअन को बिबाह में बुलावें परंतु वे न
४ आये। फेर उसने और सेवकन को भेजके कहा कि
नेवतहरिअन को कहो कि देखो मैं ने अपना भोजन
तैयार किया है मेरे बैल और मोटे जानवर मारे गये और
५ समस्त बस्तु बनीबनाई है बिबाह में आओ। परंतु उन्हें
ने अपमान किया और चले गये एक अपने खेत को और
६ दूसरा अपने बेपार को। अरु औरन ने उसके सेवकन
७ को पकड़के दुर्दशा किई और मारडाला। परंतु जब
राजा ने सुना बुह क्रोध करके अपने सैनन को भेजा और
उन हत्यारन को नाश किया और उनके नगर को फूंक
८ दिया। तब उसने अपने सेवकन को कहा कि बिबाह
९ तैयार है परंतु वे नेवतहरी योग्य न थे। इस कारण तुम
मार्गन में जाओ और जितने तुम को मिले बिबाह में
१० बुलाओ। सो उन सेवकन ने निकलकर मार्गन में क्या बुरे
और क्या भले जितनन को पाये एकट्ठे किये और बिबाह
११ का घर नेवतहरिअन से भर गया। और जब राजा
नेवतहरिअन को भीतर देखने आया उसने एक मनुष्य
१२ को वहां देखा जिस पास बिबाह का बस्त्र न था। और
उसने उसको कहा कि हे मित्र तू किस रीति से बिबाह

१३ के वस्त्र बिना यहां आया परंतु वुह बोल न सका। तब राजा ने अपने सेवकन को कहा कि उसका हाथ और पांव बांधकर उसे ले जाओ और बाहर अंधेरे में डाल दो जहां
१४ रोना और दांत पीसना होगा। क्योंकि बहुतेरे बुलाये
१५ गये परंतु प्रसंद थोड़े हैं। तब फरीसिअन ने आके सभा किई कि उसे किस रीति से बचन के कारण से फंदे में डालें।
१६ और उन्हों ने अपने शिष्यन को हीरुदीसिअन के संग उस पास भेजा कि उसे कहें कि हे गुरु हम जानते हैं कि तू सत्य है और सच्चाई से ईश्वर का मार्ग सिखावता है और तू किसीका खटका नहीं रखता क्योंकि तू कोई मनुष्य
१७ का पक्ष नहीं करता। इस लिये हम को कह तू क्या बिचार करता है कैसर को कर देना योग्य है अथवा नहीं।
१८ तब ईसा ने उनकी दुष्टता जानके कहा हे कपटियो तुम
१९ क्यों मेरी परीक्षा करते हो। मुझे कर के सिक्का दिखाओ
२० तब उन्हों ने उस पास एक पावली लाये। और उसने उन्हें
२१ कहा कि यह मूरत और सिक्का किसका। उन्हों ने उसको कहा कि कैसर का तब उसने उन्हें कहा इस कारण जो बस्तें कैसर की कैसर को देओ और जो बस्तें ईश्वर की हैं
२२ ईश्वर को। तब वे सुनकर आश्चर्य हुए और उसको
२३ छोड़कर चलेगये। उसी दिन जादूकिअन जो कहते हैं कि मृत्यु से उठना नहीं होगा उसके निकट आये और
२४ उसको यह कहकर पूछे। हे गुरु मूसा ने कहा कि

जब कोई पुरुष निर्बंश मरे उसका भाई उसकी स्त्री से
२५ बिबाह करे और अपने भाई के कारण बंश चलावे। अब
हमारे संग सात भाई थे और पहिला बिबाह करके मर गया
और निर्बंश था अपनी स्त्री को अपने भाई को छोड़ गया।
२६ इसी रीति से दूसरा भी और तीसरा सातवें लों। (२७) और
२८ सबसे पीछे वुह स्त्री भी मर गई। इस कारण मृत्यु से
उठने में उन सातों में से वुह किसकी स्त्री होगी क्योंकि
२९ उन सबन ने उसे रखा था। ईसा ने उत्तर दिया और उन्हें
कहा कि तुम धर्म्मग्रंथ और ईश्वर का पराक्रम नहीं
३० जानकार चूक करते हो। क्योंकि मृत्यु से उठने में वे
बिबाह नहीं करते न बिबाह देते हैं परंतु स्वर्ग में ईश्वर
३१ के दूतन के समान रहते हैं। पर मृत्यु से जी उठने में जो
३२ ईश्वर ने तुम्हें कहा क्या तुम्हों ने नहीं पढ़ा। कि मैं
इबराहीम का ईश्वर और इसहाक का ईश्वर और याकूब
का ईश्वर हों ईश्वर मृतकन का ईश्वर नहीं परंतु जीवतन
३३ का। और जब मंडली ने सुना वे उसके उपदेश से
३४ आश्चर्य ऊईं। परंतु जब फरीसिअन ने सुना कि
३५ उसने जादूकिअन को चुप किया वे एकट्ठे ऊए। और
उन मेंसे एक शास्त्रीने उसकी परीक्षा के कारण यह कहके
३६ पूछा। हे गुरु तौरेत में बड़ी आज्ञा कौनसी है।
३७ ईसा ने उसको कहा कि परमेश्वर को जो तेरा ईश्वर है
अपने सारे अंतःकरण से और अपने सारे प्राण से और

३८ अपने सारे मन से प्रेम कर। पहिली और बड़ी आज्ञा
३९ यही है। और दूसरी उसीके समान कि तू अपने परोसी
४० को अपने समान प्रेम कर। इन्हीं दोनों आज्ञा से समस्त
४१ तौरेत और आगमज्ञानी का अभिप्राय है। जब लों
फरीसिअन एकट्ठे थे ईसा ने उन्हों को यह कहके पूछा।
४२ कि मसीह के बिषय में तुम क्या बिचार करते हो वुह
४३ किसका पुत्र है वे उसको बोले कि दाऊद का। उसने
उन्हों को कहा तो दाऊद आत्मा से क्यों उसको प्रभु कहता
४४ है। कि प्रभु ने मेरे प्रभु को कहा कि तू मेरे दहिने ओर
बैठ जब लों मैं तेरे शत्रुन को तेरे पांव का पीढ़ा करों।
४५ जो दाऊद उसको प्रभु कहता है तो वुह किस रीति से
४६ उसका पुत्र है। और कोई मनुष्य उत्तर में उसको एक
बात न कहि सका और उसी दिन से किसीका सामर्थ न
हुआ कि उसे और कुछ पूछें।

२३ तेईसवां पर्ब्ब

१ तब ईसा ने उस मंडली को और अपने शिष्यन को कहा।
२ कि अध्यापकन और फरीसिअन मूसा के आसन पर बैठते
३ हैं। इस लिये सब कुछ जो वे तुम्हें मानने को कहें उसे
मानो और ग्रहण करो परंतु तुम उनकी करनी के समान मत
४ करो क्योंकि वे कहते हैं और नहीं करते। इस लिये कि वे
भारी बोझे बांधते हैं जिनका उठावना कठिन है और

मनुष्यन के कंधे पर रखते हैं परंतु वे उन्हें ऐक अंगुली से
५ हिलाने को नहीं चाहते। पर वे अपनी सारी करनी
मनुष्यन को देखावने के कारण करते हैं वे जंचन को चौड़ा
६ करते हैं और अपने बस्त्रन के खूट को बढ़ावते हैं। और
७ जेवनार में प्रधान स्थान और मंडली में श्रेष्ठ आसन।
और हाट में नमस्कार की और यह कि मनुष्य उन्हें गुरु
८ गुरु कहें इच्छा रखत हैं। परंतु तुम गुरु मत कहाओ
क्योंकि तुम्हारा ऐक गुरु मसीह है और तुम सब भाई हो।
९ और पृथिवी पर किसी को अपना पिता मत कहो क्योंकि
१० तुम्हारा पिता ऐक है जो स्वर्ग में है। न तुम गुरु
११ कहाओ क्योंकि तुम्हारा गुरु ऐक मसीह है। परंतु
वुह जो तुम्हारे लेखे सब से बड़ा है तुम्हारा सेवक होगा।
१२ और जो कोई अपने को बढ़ावेगा घटाया जायगा और जो
१३ कोई अपने को आधीन करेगा बढ़ाया जायगा। परंतु हे
कपटी अध्यापकन और फरीसिअन तुम पर हाय है क्यों
कि तुम मनुष्यन पर स्वर्ग का राज्य बंद करते हो कि तुम
आप भीतर नहीं जाते न आवनेवालन को आवने देते हो।
१४ हे कपटी अध्यापकन और फरीसिअन तुम पर हाय है
क्योंकि तुम रंडन के घरों को निंगलते हो और छल से
लंबी प्रार्थना करते हो इस कारण तुम को अति बड़ा दंड
१५ होगा। हे कपटी अध्यापकन और फरीसिअन तुम पर
हाय है क्योंकि तुम ऐक को अपने मत में लावने के कारण

समुद्र और पृथिवी के चारों ओर फिरते हो और जब वुह आचुका तुम उसको अपने से दूना नरक का पुत्र करते
१६ हो। हे अंधे अगुआ तुम पर हाय है जो कहते हो कि जो कोई मंदिर की किरिया खावे वुह कुछ नहीं है परंतु जो कोई मंदिर के सोने की किरिया खावे वुह ऋणी
१७ है। हे मूर्ख और अंधे कौन अति बड़ा है सोना अथवा
१८ मंदिर जो सोना को पवित्र करता है। और जो कोई बेदी की किरिया खावे वुह कुछ नहीं है परंतु जो कोई उस दान
१९ की जो उस पर धरा है किरिया खावे वुह ऋणी है। हे मूर्ख और अंधे कौन बड़ा है दान अथवा बेदी जो दान को
२० पवित्र करती है। इस कारण जो कोई बेदी की किरिया खाता है वुह उसकी और सब बस्तें जो उस पर हैं किरिया
२१ खाता है। और जो कोई मंदिर की किरिया खाता है वुह
२२ उसकी और जो उस में रहता है किरिया खाता है। और वुह जो स्वर्ग की किरिया खाता है ईश्वर के सिंहासन की
२३ और उसकी जो उस पर बैठता है किरिया खाता है। हे कपटी अध्यापकगन और फरीसिअन तुम पर हाय है क्योंकि तुम पुदीना और सोआ और जीरा का दसवां भाग देते हो और शास्त्र का अति बड़ा न्याय दया और बिश्वास छोड़ दिये
२४ हो अवश्य था कि तुम यह करते और उन्हें न छोड़ते। हे अंधे अगुआ जो मच्छड़ को छान डालते हो और ऊंट
२५ को निगल जाते हो। हे कपटी अध्यापकगन और

फरीसिअन तुम पर हाय है क्योंकि तुम कटोरे और थाली
को बाहर शुद्ध करते हो परन्तु भीतर में बरबस्ती और
२६ कुबराव से भरे हुए हैं। हे अंधे फरीसिअन पहिले
कटोरे और थालीके भीतर शुद्ध करो कि उन्हों के बाहर भी
२७ शुद्ध होवे। हे कपटी अध्यापकन और फरीसिअन तुम
पर हाय है क्योंकि तुम उजले समाधिन के समान हो जो
ऊपर से सुन्दर देखाई देते हैं परंतु भीतर में मृतकन के
२८ हाड़ से और समस्त अपवित्रता से भरे हुए हैं। इसी
भांति से तुम भी बाहर मनुष्यन को सत्यबादी दिखाई देते
हो परंतु भीतर से कपटाई और पाप से भरे हुए हो।
२९ हे कपटी अध्यापकन और फरीसिअन तुम पर हाय है
क्योंकि तुम आगमज्ञानिअन के समाधिन को बनावते हो
और सत्यबादिअन के समाधिन को सिंगार करते हो।
३० और कहते हो कि जो हम सब अपने पितरन के समय में
होते तो आगमज्ञानिअन के लोहू में उन्हों के संगी न होते।
३१ इस कारण तुम सब अपने अपने साक्षी हो कि तुम सब
३२ आगमज्ञानिअन के मारडालनेवालन के पुत्र हो। अच्छा
३३ तुम सब अपने पितरन के नाप को पूरा करो। हे सांपों
हे नाग बंशियो तुम नरक के कष्ट से क्योंकर भागोगे।
३४ इस कारण देखो मैं आगमज्ञानिअन और बुद्धिमानन और
अध्यापकन को तुम्हारे पास भेजता हों और उन में से
कितनों को तुम मार डालोगे और क्रूस पर खैंचोगे और उन में

में कितनों को मंडलियों में पीटेंगे और नगर नगर में
३५ ताड़ना करेंगे। कि सत्य वादियों का लोहू जो पृथिवी
पर बहाया गया है सत्यवादी हाबिल के लोहू से लेके
बरखियाह के पुत्र ज़करियाह के लोहू लों जिसको तुम्हों
ने मंदिर और बेदी के बीच में बध किया तुम सभन पर
३६ आवे। मैं तुम से सत्य कहता हों यह समस्त बातें इस
३७ समय के लोगन पर आवेंगी। हे यिरोशलीम यिरोशलीम
जो आगमज्ञानिओं को बध करता है और उन्हों को जो
तेरे समीप भेजे गये हैं पथरवाह करता है मैं ने कितने बेर
इच्छा किई कि तेरे पुत्रन को जिस प्रकार से कुक्कुटी अपने
बच्चन को पंखन के नीचे एकट्ठे करती है एकट्ठा करूं और
३८ तुमने न चाहा। देखो तुम्हारे कारण तुम्हारा घर उजाड़
३९ छोड़ा जाता है। क्योंकि मैं तुम से कहता हों कि तुम
मुझे फेर न देखोगे जब लों तुम यह न कहोगे कि धन्य
वुह जो ईश्वर के नाम से आता है।

२४ चौबीसवां पर्ब्ब

१ और ईसा मंदिर से निकल कर बाहर गया और उसके
शिष्य मंदिर की बनावट दिखाने को उसके समीप आये।
२ और ईसा ने उन्हों को कहा तुम ये सब बस्तें नहीं देखते
हो मैं तुम से सत्य कहता हों कि यहां एक पत्थर
३ दूसरे पर न छूटेगा जो गिराया न जायगा। और जब वुह

जलपाई के पहाड़ पर बैठा उसके शिष्य अलग उसके समीप
आकर बोले हम को कह कि ये बातें कब होंगी और
तेरे आवने का और जगत के अंत का क्या चिन्ह है।
४ तब ईसा ने उत्तर दिया और उन्हों को कहा चौकस रहो
५ कि कोई मनुष्य तुम को छल न देवे। क्योंकि मेरे नाम से
बहुतेरे यह कहते आवेंगे कि मैं मसीह हों और
६ बहुतेरन को भरमावेंगे। और तुम लड़ाइआन और
लड़ाइअन का संदेस सुनोगे देखो कि तुम मत घबराइयो
क्योंकि इन सबन का होना अवश्य है परंतु अभी अंत
७ नहीं है। क्योंकि लोग लोग पर और राज्य राज्य पर
८ चढ़ेंगे और अकाल और मरी पड़ेंगी। और भूडोल अनेक
९ स्थान में होंगे। यह सब दुःखन का आरंभ है तब वे
तुम को कष्ट दिलवने को सौंपेंगे और तुम्हें मार डालेंगे और
१० मेरे नाम के कारण सब लोग तुम से बैर करेंगे। और तब
बहुतेरे ठोकर खावेंगे और एक दूसरे को पकड़वायेगा और
११ एक दूसरे का बैर करेगा। और बहुतसे मिथ्या आगमज्ञानी
१२ प्रगट होंगे और बहुतेरन को भरमावेंगे। और पाप के फैलने
१३ के कारण बहुतेरन के प्रेम ठंढे होजायेंगे। परंतु वुह जो
१४ अंत लों ठहरेगा वही त्राण पावेगा। और राज्य का यह
मंगल समाचार समस्त जगत में उपदेश किया जायगा कि
सब लोगन के कारण एक साक्षी होय और तब अंत
१५ आवेगा। इसीलिये जब तुम बिनाश करनेवालन के घिनाते

की बस्तु को जिसके बिषय में दानियाल आगमज्ञानी ने
कहा कि पवित्र स्थान में खड़ा हुआ देखोगे जो कोई पढ़ता
१६ है सो समझे। तब वे जो यहूदिया में हैं पहाड़ों में भागें।
१७ वुह जो कोठे पर है अपने घर से कुछ लेने को न उतरे।
१८ न वुह जो खेत में है अपना बस्त्र लेने को फिरे।
१९ और हाय उन पर जो उन्हीं दिनन में गर्भिणी और
२० दूध पिलानिवालियां हों। परंतु प्रार्थना करो कि तुम्हारा
२१ भागना जाड़े में अथवा सब्त के दिन में न होवे। क्योंकि
तब महा कष्ट होगा जैसा कि जगत के आरंभ से अब लों
२२ न था न कभी होवेगा। और जो वे दिन घटाये न जाते
तो कोई प्राणी बच न सकता परंतु चुने हुए लोगन के
२३ कारण वे दिन घटाये जायेंगे। तब कोई जो तुम्हें कहे कि
देखो मसीह यहां अथवा वहां है प्रतीति मत करियो।
२४ क्योंकि बहुतेरे झूठे मसीह और झूठे आगमज्ञानी प्रगट होंगे
और ऐसे बड़े चिन्ह और आश्चर्य कर्म देखावेंगे यहां लों जो
होनहार होता तो वे चुने हुए लोगन को भी भरमावते।
२५ देखो मैं आगे से तुम्हें कह चुका हों। (२६) इस कारण
जो वे तुम्हें कहें कि देखो वुह बन में है तो बाहर मत
जाइयो अथवा देखो अंतःपुर में है प्रतीति मत करियो।
२७ क्योंकि जिस प्रकार से बिजली पूर्व से निकलती है और
पश्चिम लों प्रकाश करती है उसी रीति से मनुष्य के पुत्र
२८ का भी आवना होगा। क्योंकि जहां कहीं लोथ है तिथ

२९ वहीं एकट्ठे होंगे। उन दिनन के कष्ट के पीछे तुरंत सूर्य्य अंधकार होगा और चंद्रमा अपने प्रकाश को न देगा और तारे स्वर्ग से गिरेंगे और स्वर्गन की दृढ़ता ३० हिल जायेंगी। और तब मनुष्य के पुत्र का चिन्ह स्वर्ग में दिखाई देगा और उस समय में पृथ्वी के समस्त लोग बिलाप करेंगे और मनुष्य के पुत्र को पराक्रम और बड़े ३१ बिभव से आकाश के मेघन पर आवते देखेंगे। और वुह अपने दूतन को तुरही के बड़े शब्द के संग भेजेगा और वे उसके चुने हुए लोगन को चारों पवन से स्वर्ग के एक सिवाने ३२ से दूसरे लों एकट्ठे करेंगे। अब गूलर के बृक्ष से एक दृष्टांत सीखो जब उसकी डाली कोमल होती है और पत्ते निकलते हैं तुम जानते हो कि गरमी निकट है। ३३ इसी रीति से जब तुम यह सब बातें देखो जानो कि वुह ३४ समीप है अर्थात द्वार पर। मैं तुम से सत्य कहता हों कि यह पीढ़ी टल न जायगी जब लों यह समस्त पूरा न ३५ हो लें। स्वर्ग और पृथिवी टल जायगी परंतु मेरे बचन ३६ न टलेंगे। परंतु उस दिन और उसके घड़ी को मेरे पिता ३७ को छोड़ स्वर्ग के दूतन भी कोई नहीं जानते। पर जिस प्रकार से नूह के समये में हुआ मनुष्य के पुत्र का आवना ३८ भी ऐसही होगा। क्योंकि जिस रीति से जलामय के दिनन के आगे वे खाते और पीते थे बिवाह करते थे और बिवाह कर देते थे जिस दिन लों नूहने बड़े नाव में

३९ प्रवेश किया। और न जाना जब लों जलमय आया
और उन सबन को ले लिया तैसे मनुष्य के पुत्र का भी
४० आवना होगा। तब खेत में दो होंगे एक पकड़ा जायगा
४१ और दूसरा छूट जायगा। दो चक्की पीसनियां होंगी एक
४२ पकड़ी जायगी और दूसरी छूट जायगी। इस लिये चौकस
रहो क्योंकि तुम सब नहीं जानते कि तुम्हारा प्रभु किस
४३ घड़ी आवेगा। परंतु यह जानो कि जो गृहका स्वामी
जानता कि चोर किस पहर में आवेगा तो वुह जागता
४४ रहता और अपने घर में सेंध देने न देता। इस कारण
तुम भी चौकस रहो क्योंकि जिस समय में तुम्हें चिंता न
४५ होगी मनुष्य का पुत्र आवेगा। फेर वुह धर्मी और
बुद्धिमान सेवक कौन है जिसको उसका प्रभु अपने
घराने पर प्रधान करेगा कि समय में उन्हों को भोजन देवे।
४६ धन्य वुह सेवक जिसको उसका प्रभु आके ऐसा करते हुए
४७ पावे। मैं तुम से सत्य कहता हों कि वुह अपने समस्त
४८ धन पर उसको प्रधान करेगा। परंतु जो वुह दुष्ट सेवक
अपने मन में कहे कि मेरा प्रभु आवने में बिलंब करता
४९ है और अपने संग के सेवकन को मारने और मद्यपन के
५० संग खाने पीने लगे। वुह सेवक का स्वामी ऐसे दिन में
आवेगा कि वुह बाट न देखता हो और जिस घड़ी वुह
५१ निश्चिंत होय। और उसको दो टुकड़े करेगा और उसका भाग
कपटिअन के संग देगा जहां रोना और दांत पीसना होगा।

१ उस समय में स्वर्ग का राज्य दस कन्या से उपमा दिया
२ जायगा। जिन्हन ने अपने दीपकन को लेकर दूलह से
३ भेंट करने को बाहर चलीं। और उन में पांच चतुरी और
पांच मूर्ख थीं वे जो मूर्ख थीं अपने दीपकन को उठा लिया
४ और तेल अपने संग न लियां। परंतु चतुरिअन ने अपने
५ बासनन में दीपकन के संग तेल ले लियां। जब लों दूलह
६ ने बिलंब किया वे सब औंघ गईं और सोगईं। और
आधी रात को धूम मची कि देखो दूलह आता है उससे
७ मिलने को बाहर निकलो। तब वे सब कन्या उठीं और
८ अपने दीपकन को संवारी। और मूर्खन ने चतुरिअन को
कहा कि अपने तेल में से हम को देओ क्योंकि हमारे दीपक
९ बुझते हैं। परंतु चतुरिअन ने उत्तर देके कहा न होवे
कि हमारे और तुम्हारे कारण बस नहो परंतु भला है कि
तुम बेंचनेवालन के पास जाओ और अपने कारण मोल
१० लेओ। और जब वे मोल लेने गईं दूलह आया और वे
जो चौकस थीं उसके संग बिबाह के घर में पैठीं और द्वार
११ बंद हुआ। पीछे वे कन्या भी यह कहती हुई आईं कि
१२ हे प्रभु हे प्रभु हमारे कारण खोल। परंतु उसने उत्तर दिया
और कहा मैं तुम से सत्य कहता हों कि मैं तुम्हों को
१३ नहीं जानता। इस कारण चौकस रहो क्योंकि तुम नहीं
जानते कि मनुष्य का पुत्र कौनसे दिन और कौन सी घड़ी
१४ में आवैगा। क्योंकि यह उस पुरुष के समान है जिसने

परदेश को जातेहुए अपने सेवकन को बुलाया और
१५ अपना धन उन्हें सौंप दिया। और एक को उसने पांच
तोड़े दिये दूसरे को दो और एक को एक हरएक मनुष्य
को उसके सामर्थ के समान दिया और वुह तुरंत चला गया।
१६ तब वुह जिसने पांच तोड़े पाये थे गया और उनसे लेन देन
१७ किया अरु और पांच तोड़े अधिक कमाये। और इसी
रीति से वुह जिसने दो पाये थे उसने भी दो और कमाये।
१८ परंतु जिसने एक पाया था जाकर भूमि को खोद के अपने
१९ प्रभु के रुपैयन को छिपाया। बहुत दिन के पीछे उन
सेवकन का स्वामी आया और उन्हों से लेखा लेने लगा।
२० और वुह जिसने पांच तोड़े पाये थे आया और पांच तोड़े
और भी लाया और कहा कि हे प्रभु तू ने मुझे पांच तोड़े
सौंपे थे देख मैं ने उनसे पांच तोड़े अधिक कमाये।
२१ उसके स्वामी ने उसको कहा धन्य हे अच्छे और धर्मी
सेवक तू थोड़ी सी बस्तु में धर्मी निकला मैं तुझे बहुत सी
बस्तु पर प्रधान करोंगा तू अपने प्रभु के आनंद में प्रवेश
२२ कर। वुह भी जिसने दो तोड़े पाये थे आया और बोला
कि हे प्रभु तू ने मुझे दो तोड़े सौंपे थे देख मैं ने उनसे और
२३ दो तोड़े अधिक कमाये। उसके स्वामी ने उसको कहा
धन्य हे अच्छे और धर्मी सेवक तू थोड़ीसी बस्तु में धर्मी
निकला मैं तुझे बहुतसी बस्तु पर प्रधान करोंगा तू अपने
२४ प्रभु के आनंद में प्रवेश कर। तब वुह जिसने कि एक

तोड़ा पाया था आया और कहा कि हे प्रभु मैं तुझे जानता था कि तू कठोर मनुष्य है और लवनहार जहां तूने नहीं
२५ बोया और एकट्ठा करनहार जहां तूने नहीं बिथराया। इसलिये मैं डर और जाके तेरे तोड़े को पृथिवी में छिपा रखा
२६ देख तेरा जो है सो है। उसके प्रभु ने उत्तर देके उसको कहा कि हे दुष्ट और आलसी सेवक तू ने जाना कि जहां मैं ने नहीं बोया लवता हों और जहां मैं ने नहीं बिथराया
२७ एकट्ठा करता हों। इसलिये तुझे उचित था कि मेरे रूपे कोठी में रखता और मैं आवते हुए अपना बिआज
२८ समेत पावता। इस कारण उससे वुह तोड़ा लेलो और
२९ जिस पास दस तोड़े हैं उसे दो। क्योंकि जिस पास कुछ है उसे दिया जायगा और उसे अधिक बढ़ती होगी परंतु जिस पास कुछ नहीं है उससे वुह भी जो उसके पास है
३० लिया जायगा। और वुह निकम्मा सेवक को बाहर अंधकार में डाल देओ जहां रोना और दांत पीसना होगा।
३१ जब मनुष्य का पुत्र समस्त पवित्र दूतन के संग अपने बिभव
३२ में आवेगा। तब वुह अपने बिभव के सिंहासन पर बैठेगा और उसके सन्मुख समस्त लोग एकट्ठे किये जायेंगे और वुह एक दूसरे से अलग करेगा जिस रीति से कि
३३ गड़ेरिया भेड़न को बकरियन से अलग करता है। और वुह भेड़न को अपने दहिने परंतु बकरिअन को अपने बायें
३४ और रखेगा। तब राजा उन्हों को जो उसके दहिने ओर

हैं कहेगा कि आओ मेरे पिता के धन्य लोग उस राज्य के अधिकारी होओ जो जगत के आरंभ से तुम्हारे कारण बनाया गया है। ३५ क्योंकि मैं भूखा था और तुम ने मुझे भोजन दिया मैं प्यासा था और तुम ने मुझे पिलाया ३६ मैं परदेशी था और तुम ने मेरा आदर किया। नंगा था और तुम ने मुझे पहिनाया मैं रोगी था और तुम मेरी सेवा किये मैं बंदी में था और तुम मेरे पास आये। ३७ तब सत्यबादी उसको उत्तर देके कहेंगे कि हे प्रभु हम सबने कब तुझे भूखा देखा और खिलाया अथवा प्यासा ३८ और पिलाया। हम तुझे कब परदेशी देखा और आदर ३९ किया अथवा नंगा और पहिनाया। अथवा कब हम तुझे रोगी अथवा बंदी में देखे और तेरे पास आये। ४० तब राजा उत्तर देके उन्हों को कहेगा मैं तुम्हों से सत्य कहता हों कि जिस रीति से तुम ने मेरे एक अति छोटे ४१ भाइअन का संग किये तुम ने मेरा संग किये। तब वुह उन्हों को जो उसके बांएं ओर हैं कहेगा हे स्रापित लोग मेरे समीप से उस अनंत अग्नि में जो शयतान और उसके ४२ दूतन के कारण रचा गया है दूर हो। क्यों कि मैं भूखा था और तुम ने मुझे भोजन न दिया मैं प्यासा था और ४३ तुम ने मुझे न पिलाया। मैं परदेशी था और तुम ने मेरा आदर न किया नंगा था और तुम ने मुझे न पहिनाया ४४ रोगी और बंदी में था और तुम मेरे पास न आये। तब

वे भी उसको उत्तर देके कहेंगे कि हे प्रभु कब हम ने तुझे भूखा देखा अथवा प्यासा अथवा परदेशी अथवा नंगा अथवा रोगी अथवा बंदी में और तेरी सेवा न किई। ४५ तब वुह उत्तर देके उन्हें को कहेगा मैं तुम से सत्य कहता हों कि जिस प्रकार से तुम ने इन अति छोटों में से एक से न किया तुम ने मुझ से न किया। ४६ और ये सब अनंत पीड़ा में जायेंगे परंतु सत्यबादिगन अनंत जीवन में।

२६ छबीसवां पर्ब्ब

१ और ऐसा ज्ञआ कि जब ईसा ने यह समस्त बातों को समाप्त किया उसने अपने शिष्यन को कहा। २ तुम जानते हो कि दो दिन के पीछे फसः का पर्ब्ब होगा और मनुष्य का पुत्र पकड़वाया जायगा कि क्रूस पर लटकाया जाय। ३ तब प्रधान याजकगन और अध्यापकगन और लोगन के प्राचीनन काइफा नाम प्रधान याजक के सदन में ऐकट्ठे ज्ञए। ४ और बिचार किये कि वे ईसा को कपट से पकड़ें और मार डालें। ५ परंतु उन्हें ने कहा कि पर्ब्ब में नहीं नहो कि लोगन में धूम मचे। ६ और जब ईसा बैतीना में शमऊन कोढ़ी के घर में था। ७ एक स्त्री उजले पत्थर की डिबिया में बड़े मोल का सुगंध तेल लिये उसके समीप आई और उसके बैठने के समय में उसके सिर पर डाल दिई। ८ परंतु जब उसके शिष्यनने देखा वे जलजलाहट होके बोले कि यह व्यर्थ उठान किस

९ कारण था। क्योंकि यह सुगंध तेल बहुत मोल पर
१० बिकता और कंगालन को दियाजाता। तब ईसा ने जान
कर उन्हें कहा कि तुम इस स्त्री को क्यों दुख देते हो कि
११ उसने मुझ पर भलाई किई है। क्योंकि कंगाल तुम्हारे संग
१२ सदा हैं परंतु मैं सदा नहीं हों। क्योंकि वुह सुगंध
तेल जो मेरे देह पर डाला उसने मेरे गाड़ने के कारण किया।
१३ मैं तुम से सत्य कहता हों कि समस्त जगत में जहां कहीं
यह मंगल समाचार सुनाया जायगा यह भी जो इस
१४ स्त्री ने किया उसके स्मरण के कारण कहा जायगा। तब उन
बारह में से एक जो यहूदा अस्करयूती कहावता था प्रधान
१५ याजकन के समीप जाके। बोला कि तुम मुझे क्या देगे
जो मैं उसको तुम्हें सौंप दें तब उन्हन ने उससे तीस रूपे
१६ पर ठीक किया। और उस समय से वुह अवसर ढूंढता
१७ था कि उसको पकड़वा दे। और बिनखमीरी रोटी के पहिले
दिन शिष्यन ने ईसा के समीप आके उसको कहा तू कहां
चाहता है कि हम तेरे भोजन के कारण फसः बनावें।
१८ उसने कहा कि नगर में फ़लाने मनुष्य पास जाओ और
१९ उसको कहो कि गुरु ने कहा है कि मेरा समय आन
पहुंचा। मैं अपने शिष्यन के संग तेरे घर फसः करेंगा
और जिस प्रकार से ईसा ने शिष्यन को आज्ञा किई थी वे
२० फसः को तैयार किये। और जब सांझ हुई वुह उन बारह
२१ के संग बैठा। और उनके भोजन करते हुए उसने कहा मैं

तुम से सत्य कहता हों कि तुम में से एक मुझ को पकड़वावेगा।
२२ तब वे अति उदासीन हुए और एक एक उन में से उसको
२३ कहने लगा कि हे प्रभु क्या मैं हों। तब उसने उत्तर दिया
और कहा वुह जो मेरे संग थाली में हाथ डालता है वही
२४ मुझे पकड़वावेगा। मनुष्य का पुत्र जैसा कि उसके बिषय
में लिखा है जाता है परंतु हाय उस मनुष्य पर जिस से
मनुष्य का पुत्र पकड़वाया जाय उस मनुष्य के कारण भला
२५ होता जो वुह उत्पन्न न होता। तब यहूदा ने जिस ने
उसे पकड़वाया उत्तर दिया और कहा कि हे गुरु क्या मैं
२६ हों उसने उसको कहा कि तूही ने कहा। और जों वे
भोजन कर रहे थे ईसा ने रोटी लिया और आशीष देके
तोड़ा और शिष्यन को दिया और कहा लेओ खाओ यह
२७ मेरी देह है। और वुह कटोरा भी लिया और धन्य
कहके उन्हों को दिया और कहा कि तुम सब इससे पिओ।
२८ क्योंकि यह नये नियम का मेरा लोहू है जो बहुतेरन के
२९ पाप मोचन के कारण बहाया गया है। परंतु मैं तुम से
कहता हों कि मैं दाख का रस अब से आगे न पिओंगा
उस दिन लों कि मैं अपने पिता के राज्य में तुम्हारे संग
३० उसे नया पिओं। और जब वे एक भजन गा चुके वे
३१ बाहर निकल के जलपाई के पहाड़ को गये। तब ईसा ने
उन्हों को कहा कि इसी रात तुम सब मेरे कारण ठोकर
खाओगे क्योंकि लिखा है कि मैं गड़ेरिया को मारोंगा और

३२ झुंड के भेड़े बिथर जायंगे। परंतु मैं अपने फेर उठने के
३३ पीछे तुम्हारे आगे जलील को जाऊंगा। पितरस ने उत्तर
दिया और उसको कहा जो तेरे कारण सब ठोकर खावें मैं
३४ कधी ठोकर न खाऊंगा। तब ईसा ने उस को कहा मैं
तुझ से सत्य कहता हों इसी रात कुक्कुट के शब्द करने से
३५ आगे तू तीन बार मुझसे मुकर जायगा। पितरस ने उसको
कहा यद्यपि मेरा मरना तेरे संग होवे तद्यपि मैं तुझसे
३६ मुकर न जाऊंगा सब शिष्यन ने भी ऐसही कहा। तब
ईसा उन्हों के संग एक स्थान में जो जसमन कहावता है
आया और शिष्यन को कहा तुम सब यहां बैठो जब लों
३७ मैं वहां जाके प्रार्थना करों। और उसने पितरस और ज़ेबदी
के दो पुत्रन के संग लिया और उदासीन होके अति दुख
३८ पावने लगा। तब ईसा ने उन्हों को कहा कि मेरा प्राण
मरने लों अति उदासीन है तुम यहां ठहरो और मेरे संग
३९ जागते रहो। और वुह थोड़ा आगे बढ़के औंधे मुंह
गिरपड़ा और यह कहिके प्रार्थना किया कि हे मेरे पिता
जो होनहार है तो यह कटोरा मुझसे जाता रहे तिस पर भी
वुह नहीं जो मैं चाहता हों परंतु वुह जो तू चाहता है।
४० तब वुह शिष्यन के समीप आया और उन्हें सोवते पाया
और पितरस को बोला क्या तुम एक घड़ी मेरे संग जाग न
४१ सके। जागो और प्रार्थना करो कि तुम परीक्षा में न पड़ो
४२ आत्मा की इच्छा है ठीक परंतु शरीर दुर्बल है। वुह

दूसरे बेर फेर गया और प्रार्थना करके बोला कि हे मेरे पिता जो यह कटोरा मुझसे न जाता रहे कि मैं उसे पीऊं तेरी इच्छा होय। ४३ तब वुह आया और उन्हें फेर सोवते पाया क्योंकि उनकी आंखें नींद से भरी थीं। ४४ और वुह उन्हें छोड़कर फेर चला गया और वही बचन कहके तीसरे बेर प्रार्थना किया। ४५ फेर वुह अपने शिष्यन के समीप आया और उन्हें बोला अब सोवते रहो और बिश्राम करो देखो समय निकट है कि मनुष्य का पुत्र पापिअन के हाथ में सौंपा जाता है। ४६ उठो कि हम चलें देखो वुह जो मुझे पकड़वाता है निकट है। ४७ और जो वुह कहि रहा था देखो यहूदा जो बारह में से एक था अपने संग एक बड़ी मंडली तलवारें और लाठियां लिये हुए प्रधान याजकन और लोगन के प्राचीनन के ओर से लेके आया। ४८ अब जिसने उसे पकड़वाया उन्हों को यह कहिके पता दिया था कि जिसे मैं चूमों वुह वही है उसे पकड़ लो। ४९ और तुरंत वुह ईसा के समीप आया और बोला कि हे गुरु प्रणाम और उसको चूमा। ५० और ईसा ने उसको कहा हे मित्र तू किस कारण आया तब वे निकट आये और ईसा पर हाथ डाले और उसको पकड़ लिये। ५१ और देखो एक ने उन में से जो ईसा के संग थे हाथ बढ़ाके अपनी तलवार खैंची और प्रधान याजक के एक सेवक को मारा और उसका कान उड़ा दिया। ५२ तब ईसा ने उसको कहा अपनी

तलवार को उसके काठी में रख क्योंकि सब जो तलवार खैंचते
५२ हैं तलवार हीसे मारे जायेंगे। क्या तू नहीं जानता कि
मैं अभी अपने पिता की प्रार्थना कर सकता हों और वुह
५४ तुरंत दूतन के बारह सेना को मुझे देगा। परंतु तब ग्रंथ
५५ क्योंकर संपूर्ण होंगे कि यों होना अवश्य है। उसी घड़ी
में ईसा ने मंडलिअन को कहा कि तुम मेरे पकड़ने को
चोर के समान तलवारें और लाठियां लेके बाहर निकले हो
मैं तो नित्य तुम्हारे संग मंदिर में बैठकर उपदेश करता
५६ था और तुम सब मुझ पर हाथ न डाले। परंतु यह
समस्त हुआ कि आगमज्ञानिअन के ग्रंथ संपूर्ण होवें
५७ तब सब शिष्य उसे छोड़कर भागे। और वे जो ईसा को
पकड़े थे प्रधान याजक कायफा के समीप जहां अध्यापकन
५८ और प्राचीनन एकट्ठे थे ले गये। परंतु पितरस दूर से
उसके पीछे पीछे प्रधान याजक के सदन लों चला गया और
५९ भीतर जाके सेवकन के संग बैठा कि अंत को देखे। तब
प्रधान याजकन और प्राचीनन और समस्त सभा ईसा पर
झूठी साक्षी ढूंढते थे कि उसे मार डालें परंतु कोई न पाये।
६० हां यद्यपि बहुतेरे झूठे साक्षी आये तद्यपि वे न पाये अंत
६१ में दो झूठे साक्षी आये। और बोले कि इसने कहा कि
मुझ में यह सामर्थ है कि ईश्वर के मंदिर को ढाओं और
६२ उसे तीन दिन में खड़ा करों। तब प्रधान याजक उठा
और उससे बोला तू कुछ उत्तर नहीं देता ये तेरे पर क्या

क्या साक्षी देते हैं। परंतु ईसा चुपका रहा और प्रधान याजक ने उत्तर दिया और उसको कहा मैं तुझे जीवते ईश्वर की किरिया देता हों कि तू जो वुह मसीह ईश्वर
६४ का पुत्र है हमसे कह। ईसा ने उसको कहा कि तूही ने कहा तिस पर भी मैं तुम से कहता हों इस के पीछे तुम मनुष्य के पुत्र को पराक्रम के दाहिने ओर बैठा और
६५ आकाश के मेघन पर आते देखोगे। तब प्रधान याजक ने अपने वस्त्र को फाड़के कहा यह पाषंड कहि चुका है अब हम को आगे साक्षी का क्या प्रयोजन है देखो अभी तुम ने
६६ उसका पाषंडता सुनी। तुम क्या बिचारते हो उन्हन ने
६७ उत्तर दिया और कहा यह मारडालने के योग्य है।
उन्हन ने उसके मुंह पर थूका और उसको घूंसे मारे और
६८ औरन ने थपेड़े मारे। और कहे कि हे मसीह हमें आगमज्ञान से बोल वुह कौन है जो तुझे मारता है।
६९ अब पितरस बाहर सदन में बैठा था और एक सहेली उसके पास आई और बोली कि तू भी ईसा जलील के संग था।
७० परंतु वुह सब के सन्मुख मुकर गया और कहा कि मैं नहीं
७१ जानता कि तू क्या कहती है। और जब वुह बाहर ओसारे में आया एक दूसरी उसे देखके जो वहां खड़े थे उन्हन को बोली कि यह भी ईसा नासरी के संग था।
७२ और फिर वुह किरिया खाके मुकरगया कि मैं उस मनुष्य को
७३ नहीं जानता। और तनिक पीछे वे जो वहां खड़े थे

पितरस पास आये और बोले सत्य तू भी उन्हों में से है
७४ क्योंकि तेरी भाषा तुझे प्रगट करती है। तब वुह सराप
देके और किरिया खाके कहने लगा कि मैं उस मनुष्य को
७५ नहीं जानता और तुरंत कुक्कुट ने शब्द किया। तब पितरस
ने ईसा के बचन को जो उसने उसको कहा था चेत किया
कि कुक्कुट के शब्द के पहिले तू तीन बार मुझसे मुकर जायगा
तब वुह बाहर जाके बिलख बिलख के रोया।

२७ सत्ताईसवां पर्ब्ब

१ जब भोर हुआ सब प्रधान याजकन और लोगन के
प्राचीन ने ईसा के बिरोध में सभा किई कि उसे मारडालें।
२ और जब उन्हन ने उसे बांधा वे लेचले और पंतियुस
३ पीलातूस अध्यक्ष को सौंप दिया। तब यहूदा ने जिसने
उसे पकड़वाया था जब देखा कि उस पर मारडालने की
आज्ञा हुई आप उदासीन होके वुह तीस रुपै प्रधान
४ याजकन और प्राचीनन के समीप फेर लाके। कहने
लगा कि मैं ने इस में पाप किया कि मैं ने निष्पापी
को पकड़वाया तब वे बोले हमको क्या तूही जान।
५ और वुह रुपैअन को मंदिर में फेंकके चला गया और
६ जाके अपने को फांसी लगाई। और प्रधान याजकन
ने वे रुपै लेके कहा कि उन्हें भंडार में रखना योग्य
७ नहीं क्योंकि यह लोहू का मोल है। तब उन्हन ने सभा

किईं और उससे कोंहार का खेत परदेशिअन के गाड़ने
८ के कारण मोल लिया। इस लिये वुह खेत अब लों लोहू
९ का खेत कहावता है। तब वुह जो अरमीया आगमज्ञानी
से कहा गया था पूरा हुआ कि उन्हन ने तीस रुपे उसका
मोल जो ठहराया गया था जिसका मोल इसराईल के बंश में
१० से कितनों ने ठहराया। और उन्हें कोंहार के खेत के
११ कारण दिया जैसा प्रभु ने मुझे आज्ञा किई। और ईसा
अध्यक्ष के सन्मुख खड़ा था और अध्यक्ष ने उसे यह
कहके पूछा क्या तू यहूदिअन का राजा है ईसा ने
१२ उसको कहा तुही तो कहता है। और जब प्रधान याजकन
और प्राचीनन उस पर दोष दे रहे थे उसने कुछ उत्तर
१३ न दिया। तब पिलातूस ने उसको कहा क्या तू नहीं सुनता
१४ कि वे क्या क्या तेरे पर साक्षी देते हैं। परंतु उसने एक
बचन का भी उसको उत्तर न दिया यहां लों कि अध्यक्ष ने
१५ बहुत बड़ा अचरज किया। और उस पर्ब्ब में अध्यक्ष की
रीति थी कि लोगन के कारण एक बंधुआ को जिसे वे चाहते
१६ थे छोड़ देता था। और उस समय में उनका एक प्रसिद्ध
१७ बंधुआ था जो बारब्बास कहावता था। सो जब वे एकट्ठे
थे पिलातूस ने उनको कहा तुम किसको चाहते हो कि मैं
तुम्हारे कारण छोड़ दों बारब्बास अथवा ईसा को जो मसीह
१८ कहावता है। क्योंकि वुह जानता था कि उन्हन ने उसे
१९ डाह से सौंपा था। जब वुह बिचार के आसन पर बैठा

उसकी स्त्री ने उसको यह कहके कहला भेजा कि तू उस सत्यवादी पुरुष से कुछ काम मत रख क्योंकि उसके
२० कारण मैं ने आज स्वप्न में बहुत कष्ट पाया है। परंतु प्रधान याजकन और प्राचीनन ने मंडली को उसकाया कि
२१ वे बरब्बास को मांगें और ईसा को नाश करें। अध्यक्ष ने उत्तर दिया और उन्हें कहा कि तुम दोनों में से किसको चाहते हो कि मैं तुम्हारे कारण छोड़ दें। वे बोले कि बरब्बास
२२ को। पिलातूस ने उन्हें कहा फेर ईसा को जो मसीह कहावता है मैं क्या करों सबके सब उसको बोले कि
२३ वुह क्रूस पर टांगा जाय। तब अध्यक्ष ने कहा क्यों उसने क्या अपराध किया परंतु वे और भी चिल्लाके बोले
२४ कि वुह क्रूस पर टांगा जाय। जब पिलातूस ने देखा कि उसका कुछ बस न चला परंतु और भी हुल्लर होता है उसने पानी लेके मंडली के सन्मुख हाथन को धोआ और कहा कि मैं इस सत्यवादी के लोहू से निर्दोष हों
२५ तुम्ही जानो। तब समस्त लोग उत्तर दिये और बोले
२६ कि उसका लोहू हम पर और हमारे बंश पर होय। फिर उसने उन्हन के कारण बारब्बास को छोड़ दिया और ईसा को कोड़े मारके सौंप दिया कि क्रूस पर टांगा जाय।
२७ तब अध्यक्ष के सिपाहिअन ने ईसा को बैठक में ले जाके
२८ सब सिपाहिअन को उसके समीप एकट्ठे किये। और उन्हन ने उसको नंगा करके उसे लाल वस्त्र पहिरया।

२९ और जब वे कांटन के मुकुट गांथे उन्हन ने उसके सिर पर रखा और उसके दहिने हाथ में एक नरकट दिया तब वे उसके सन्मुख घुठना टेके और यह कहिके ठट्ठे किये
३० कि हे यहूदिअन के राजा प्रणाम। तब वे उस पर
३१ थूके और नरकट लेके उस के सिर पर मारे। और जब वे उस पर ठट्ठा करचुके उन्हन ने उस पर से वस्त्र उतारे और उसका अपना वस्त्र उसे पहिनाया और उसे ले चले कि
३२ क्रूस पर टांगे। और जब वे बाहर आये उन्हन ने कुरीने के एक मनुष्य को जिसका नाम शमऊन था पाया वे उससे
३३ बेगारी में उसका क्रूस उठवाये। और जब वे एक स्थान में जिसका नाम जलजता था अर्थात खोपड़ी के स्थान में
३४ पहुंचे। उन्हों ने सिरका में पित मिलाके उसे पीनेको दिया और जब उसने चीखा तो पीने को इच्छा न किई।
३५ और उन्हन ने उसको क्रूस पर टांगा और उसके बस्त्रन को भाग करके चिट्ठी डाली कि जो आगमज्ञानी ने कहा था पूरा होवे कि वे आपस में मेरे बस्त्रन को बांट लिये मेरे
३६ बागा पर उन्हन ने चिट्ठी डाली। और वे वहां बैठके
३७ उसकी रखवारी किये। और उसका दोषपत्र जिसको उसके सिरके ऊपर रखा कि यह यहूदिअन का राजा
३८ ईसा है। तब वहां उसके संग दो चोर भी क्रूस पर टांगे
३९ गये थे एक दहिने हाथ और दूसरा बायें। और वे जो उधर से जाते थे सिरधुन के उससे ठट्ठा करते थे।

४० और कहते थे तू जो मंदिर का ढानेवाला और तीन दिन में उठावनेवाला आप को बचा जो तू ईश्वर का पुत्र है क्रूस
४१ पर से उतर आ। इसी रीति से प्रधान याजकन ने भी अध्यापकन और प्राचीनन के संग यह कहके ठट्ठा से
४२ कहा। कि वुह औरन को बचाया आपको बचा नहीं सकता जो वुह इसराईल का राजा है वुह क्रूस पर से उतर
४३ आवे और हम उस पर विश्वास लावेंगे। उसने ईश्वर पर भरोसा रखा था जो वुह उसका प्यारा है अब वुह उसको छोड़ावे क्योंकि उसने कहा था कि मैं ईश्वर का
४४ पुत्र हों। वे चोरन भी जो उसके संग क्रूस पर टांगे गये
४५ थे इसी प्रकार से उसकी निंदा करते थे। तब दोपहर से तीसरे पहर लों उस समस्त देश में अंधियारा हुआ।
४६ और तीसरे पहर के लगभग ईसा ने बड़े शब्द से चिल्ला के कहा ऐली ऐली लामा सबकतानी अर्थात हे मेरे ईश्वर हे मेरे
४७ ईश्वर तूने मुझे क्यों अकेला रखा। कई उनमें से जो वहां खड़े थे जब उन्हन ने सुना तो कहा कि यह इलियास को
४८ बुलावता है। और तुरंत एकने उन मेंसे दौड़के बादल लेकर सिरके से भरा और नल पर रखके उसे पीने को दिया।
४९ औरन ने कहा रहने दो हम देखें कि इलियास उसे
५० छोड़ावने को आवेगा। तब ईसा ने दूसरे बेर बड़े शब्दसे
५१ चिल्लाके प्राण त्याग किया। और देखो मंदिर का घूंघट उपर से निचे लों फट गया और पृथिवी कंपित भई और

५२ पहाड़ तड़क गये। और समाधिन खुल गईं और बहुत
५३ पुन्यमानन की देह जो निद्रा में थीं उठीं। और उसके
उठने के पीछे समाधिन से बाहर आईं और पवित्र नगर
५४ में गईं और बहुतन को दिखाई दिईं। और जब
वुह सेनापती और वे जो उसके संग ईसा की रखवारी
करते थे भुंइडोल और जो कुछ कि हुआ था देखे के
यह कहके बहुत डरे कि यह सचमुच ईश्वर का पुत्र था।
५५ और बहुतसी स्त्री वहां थीं जो जलील से ईसा के पीछे उस
५६ की सेवा करती आईं दूरसे देख रही थीं। जिन में मरियम
मजदली और याकूब और योसी की माता मरियम और
५७ जबदी के बालकन की माता। जब सांझ हुई अरिमातिया
का एक धनमान जिसका नाम यूसफ था वुह भी आप ईसा
५८ का शिष्य था आया। और पीलातूस के समीप जाकर ईसा
की देह मांगा तब पीलातूस ने आज्ञा किई कि देह उसे
५९ दिई जाय। और जब यूसफ ने देह को लिया उसने
६० निर्मल सूती बस्त्र में लपेटा। और उसे अपने नये समाधि
में जो उसने पत्थर में खोदा था रखा और वुह एक बड़ा
६१ पत्थर समाधि के मुंह पर ढलकाके चलागया। और वहां
मरियम मजदली और दूसरी मरियम समाधि के सन्मुख
६२ बैठी थीं। अब दूसरे दिन जो बनावरी के पीछे थे प्रधान
याजकन और फरिसिअन एकट्ठे होके पीलातूस पास आये।
६३ और कहे कि हे प्रभु हमें चेत है कि वुह छली अपने

जीते मैं कहता था कि मैं तीन दिन पीछे फिर उठोंगा।
६४ इस कारण आज्ञा कर कि तीन दिन लों समाधि की रखवारी किई जावे नहो कि उसके शिष्य रात को आके उसे चोर ले जावें और लोगन से कहें कि वुह मृतकन मेंसे जी उठा
६५ सो पिछली चूक पहिले से अधिक होगी। तब पिलातूस ने उन्हों से कहा रखवार तुम्हारे पास हैं जाओ और अपने
६६ जानते भर रखवारी करो। सो वे गये और पत्थर पर छापा करके समाधि की चौकसी किई और रखवार को बैठाये।

२८ अट्ठाइसवां पर्ब्ब

१ सबत के अंत अठवारे के पहिले दिन पहफटते मरियम मजदली और दूसरी मरियम समाधि देखने को आईं।
२ और देखो कि बड़ा भुंइडोल हुआ था क्योंकि ईश्वर का दूत स्वर्ग से उतरा और उस पत्थर को समाधि से ढलका के
३ उस पर बैठ गया। उसका स्वरूप बिजली के समान और
४ उसका वस्त्र पाला सा उजला था। और उसके भय से रखवारे कांप गये और मृतक समान हुए। और उस दूत ने
५ उत्तर देके स्त्रीगन से कहा कि मत डरो क्योंकि मैं जानता हों कि तुम ईसा को जो क्रूस पर मारा गया था ढूंढतियां हो।
६ वुह यहां नहीं है परंतु जैसा उसने कहा था वुह जी उठा
७ है आओ और उस स्थान में जहां प्रभु पड़ा था देखो।
७ और तुरंत जाओ और उसके शिष्यन से कहो कि वुह मृत्यु

से जी उठा है और देखो वुह तुम से आगे जलील को
जाता है तुम उसको वहां देखोगे देखो मैंने तुम्हें चेता दिया।
और वे समाधि से तुरंत भय और बड़े आनंद से उसके
९ शिष्यन को कहने को दौड़ीं। और जों वे उसके शिष्यन
से कहने को चली जाती थीं देखो ईसा उन्हें मिला और
बोला कि कल्याण और उन्होंने दौड़कर उसका चरण
१० पकड़ के स्तुति किई। तब ईसा ने उन्हें कहा मत डरो
जाओ मेरे भाइअन से कहो कि वे जलील को जायें और
११ मुझे वहां देखेंगे। और जब वे चली जाती थीं देखो कि
कई उन रखवारों में से नगर में आये और प्रधान याजकन
१२ को समस्त समाचार सुनाये। और जब वे प्राचीनन के संग
एकट्ठे हुए और परामर्श किये वे उन सिपाहिअन को बहुत
१३ रुपे दिये। और कहा कि तुम सब कहो कि उसके
शिष्य आके रात को जब हम सो गये थे उसे चोरा ले गये।
१४ और जो यह अध्यक्ष के कान लों पहुंचे हम उसे समझा
१५ के तुम्हें बचा लेंगे। सो वे रुपे लिये और जैसा सिखाके
गये थे वैसा किये और यह बात आज लों यहूदिअन में
१६ प्रगट है। तब वे ग्यारह शिष्य जलील को उस पहाड़
१७ में जहां ईसा ने उनसे ठहराया था गये। और जब उन्हन
ने उसे देखा उसकी पूजा किई परंतु कितनों ने संदेह किया।
१८ और ईसा उन के समीप आया और यह कहके बोला कि
स्वर्ग और पृथिवी पर समस्त पराक्रम मुझे दिया गया है।

१९ इस कारण तुम जाओ और सब लोगन को पिता पुत्र और
२० धर्मात्मा के नाम से स्नान करके शिष्य करो। और उन्हें
उपदेश करो कि वे समस्त बचन को जो मैंने तुम्हें आज्ञा
किई है मानें और देखो कि मैं सर्वदा जगत के समाप्ति लों
तुम्हारे संग हों। आमीन॥

मंगल समाचार मरकस रचित

१ पहिला पर्ब्ब

१ ईश्वर के पुत्र ईसा मसीह के मंगल समाचार का आरंभ। २ जैसा कि आगमज्ञानिअन् ने लिखा है कि देखो मैं अपने दूत को तेरे सन्मुख भेजता हों वुह तेरे आगे तेरे मार्ग को सुधारेगा। ३ बन में ऐक पुकारनहार का शब्द है कि ईश्वर के मार्ग को सुधारो और उसके पंथन् को सीधा करो। ४ यहिया बन में स्नान देता था और पाप मोचन के कारण पश्चात्ताप के स्नान का उपदेश करता था। ५ और उसके समीप यहूदिया के देश और यिरोशलीम बासी निकल आये और वे सब अपने अपने पापन को मान लेके यर्द्दन नदी में उससे स्नान किये जाते थे। ६ और यहिया का बस्त्र ऊंट के रोम का था और चमड़े का पटुका अपनी कमर में लपेटता था और उसका भोजन टिड्डि और बन की मधु थीं। ७ और उपदेश करके यह कहता था कि मेरे पीछे ऐक मुझसे अधिक सामर्थी आता है जिसकी जूती का बंद मुझे योग्य नहीं कि झुकके खोलों। ८ ठीक मैं तुम्हन को जलसे स्नान देता

९ हों परंतु वुह तुम्हें धर्मात्मा से स्नान देगा। और उन्हीं दिनन में ऐसा ज़ुआ कि ईसा ने जलील के नासरः से
१० आकर यर्दन में यहिया से स्नान पाया। और तुरंत जल से बाहर आते ज़ुए उसने स्वर्ग को खुला और आत्मा को कबूतर
११ के समान अपने ऊपर उतरते देखा। और स्वर्ग से एक शब्द आया कि तू मेरा प्रिय पुत्र है जिसमें मैं अति प्रसन्न हों।
१२।१३ और आत्मा तुरंत उसको बन में लेगया। और वुह वहां बन में चालीस दिन लों शयतान से परीक्षा किया गया और उस का रहना बनैला पशुन के संग था और दूत उसकी सेवा करते थे।
१४ और यहिया के बंदिगृह में डाले जाने से पीछे ईसा जलील में आके ईश्वर के राज्य के मंगल समाचार का उपदेश करने
१५ लगा। और कहने लगा कि समय पूरा ज़ुआ और ईश्वर का राज्य निकट है तुम सब पश्चात्ताप करो और मंगल समाचार
१६ पर बिश्वास लाओ। और जों वुह जलील के समुद्र के समीप फिरता था उसने शमऊन और उसके भाई अंद्रयास को समुद्र
१७ में जाल डालते देखा क्योंकि वे मछुए थे। और ईसा ने उन्हें कहा कि तुम मेरे पीछे आओ और मैं तुम्हें मनुष्यन
१८ का धीवर करोंगा। और वे तुरंत अपने जाल को छोड़के
१९ उसके पीछे होलिये। और जब वुह वहां से थोड़ा आगे बढ़ा उसने ज़बदी के पुत्र याकूब और उसके भाई यूहन्ना को
२० देखा वे भी नाव पर अपने जाल को सुधारते थे। और उसने तुरंत उन्हें बुलाया और वे अपने पिता ज़बदी को

२१ सेबदान के संग नाव पर छोड़के उसके पीछे हो लिये। तब
व कफरनाऊम में प्रवेश किये और तुरंत बिश्राम के दिन में
२२ उसने मंडली में जाके उपदेश किया। और वे उसकी शिक्षा
से आश्चर्य्य ऊए क्योंकि उसने उन्हें एक सामर्थी के समान
२३ उपदेश किया और अध्यापकान के समान नहीं। और
उन्हन की मंडली में एक मनुष्य था जिसपर अपवित्र आत्मा
२४ की छाया थी उसने चिल्लाके। कहा कि रहने दे हमन को
तुझसे क्या काम है ईसा नासरी क्या तू हमें नाश करने को
आया है मैं तुझे जानता हों कि तू कौन है ईश्वर का वही
२५ धर्म्मी। तब ईसाने उसको डांटके कहा कि चुप रह और
२६ उससे बाहर आ। तब अपबित्र आत्मा ने उसको फाड़ा
२७ और बड़ा शब्द करके उससे बाहर निकल गया। और वे
सब यहां लों बिस्मित ऊए कि वे आपुस में पूछने और
कहने लगे कि यह क्या है यह कैसी नई शिक्षा है क्योंकि
वुह अपवित्र आत्मन को भी पराक्रम से आज्ञा करता है
२८ और वे उसको मानते हैं। और तुरंत उसकी कीर्त्ति जलील
२९ के सारे सिवाने में फैल गई। और तत्काल वे मंडली से बाहर
निकलके याकूब और यूहन्ना के संग शमऊन और अंद्रियास
३० के घर में प्रवेश किये। परंतु शमऊन की सास ज्वर से रोगी
पड़ी थी तब उन्हन ने उसके बिषय में तुरंत उसे कहा।
३१ तब उसने आके उसका हाथ पकड़ा और उसे उठाया और
ज्वर ने तुरंत उसको छोड़ दिया और उसने उनकी सेवा

३२ किई। और सांझ को जब सूर्य्य अस्त ऊआ वे समस्त
३३ रोगिअन और देवग्रस्तन को उसके निकट लाये। और
३४ समस्त नगर द्वार पर एकट्ठे ऊए थे। और उसने अनेकन
को जो नानाप्रकार के दुख से रोगी थे चंगा किया और बऊत
से देवन को दूर किया और देवन को बोलने न दिया क्योंकि
३५ वे उसे पहिचानते थे। और तड़के बऊत रात रहते वुह
उठके बाहर निकला और एक अरण्य स्थान में जाके उसने
३६ प्रार्थना किई। तब शमऊन और वे जो उसके संग थे
३७ उसके पीछे होलिये। और जब उन्हों ने उसे पाया वे
३८ उसको बोले कि सब आप को ढूंढते हैं। और उसने उन्हें
कहा आओ हम निकट के नगरन में चलें कि मैं वहां भी
उपदेश करों क्योंकि मैं इसी कारण बाहर निकला हों।
३९ और वुह समस्त जलील में उनके मंडलिअन में उपदेश
४० करता और देवन को दूर करता था। तब एक कोढ़ी ने
उसके निकट आके उसकी बिनती किई और उसके समीप
घुठना टेकके बोला जो आप चाहें तो मुझे पवित्र कर सकते
४१ हो। ईसा ने दयाल होके हाथ बढ़ाया और उसे छूकर
४२ कहा कि मैं चाहता हों तू पवित्र हो। और बचन कहते
ही तुरंत कोढ़ उससे जातारहा और वुह पवित्र होगया।
४३ और उसने उसे आज्ञा करके तुरंत बिदा किया।
४४ और उसको कहा कि देख किसी मनुष्य को कुछ मत कह
परंतु चलाजा और अपने को याजक को दिखा और अपने

पवित्र होने के कारण जो कुछ मूसा ने उनके साक्षी के लिये
४५ आज्ञा किई है दान कर। परंतु वुह बाहर जाके उस कर्म
को फैलावने और प्रगट करने लगा यहां लों कि ईसा फेर
नगर में प्रगट न जा सका परंतु बाहर अरण्य स्थानन में रहा
और चारों ओर से लोग उसके समीप आये।

२ दूसरा पर्ब्ब

१ और कई दिन बीते वुह कफरनाऊम में फेर गया और यह
२ चर्चा ऊई कि वुह घर में है। और तुरंत बऊतेरे एकट्ठे
ऊऐ यहां लों कि द्वार के समीप भी समाई नथी और उसने
३ उन्हें बचन कह सुनाया। तब वे एक अर्द्धंगी को चार
४ मनुष्यन से उठवाये ऊए उसके समीप लेआये। और जब
वे भीड़ के कारण उसके समीप न आसके उन्हन ने उस छत
को जिस में वुह था उघेरा और उन्हन ने उसे तोड़कर उस
खाट को जिस पर वुह अर्द्धंगी पड़ा था लटका दिया।
५ तब ईसा ने उनका बिश्वास देखके उस अर्द्धंगी को कहा
६ कि पुत्र तेरे पाप क्षमा किये गये। परंतु वहां कितने
अध्यापक बैठे थे और अपने मन में बिचार करते थे।
७ कि यह क्यों पाषंडता बकता है केवल ईश्वर को छोड़ कौन
८ पाप क्षमा करसकता। और तुरंत ईसा ने अपने आत्मा
में जाना कि वे अपने मन में ऐसा बिचार करते हैं उसने
उन्हें कहा कि तुम सब क्यों अपने अपने मन में ऐसी चिंता

९ कहते हो। उस अर्द्धंगी को क्या कहना सहज है कि पाप क्षमा किये गये अथवा यह कहना कि उठ और अपनी
१० खाट उठाले और चल। परंतु कि तुम जानो कि मनुष्य का पुत्र पृथिवी पर पाप क्षमा करने को सामर्थ रखता है
११ उसने उस अर्द्धंगी को कहा। कि मैं तुझे कहता हों कि उठ और अपनी खाट उठाले और अपने घर को चला जा।
१२ और वुह उसी घड़ी उठा और खाट उठा लिया और उन सबन के सन्मुख चल निकला यहां लों कि वे सब बिस्मित ऊए और ईश्वर की स्तुति करके बोले कि हम ने ऐसी रीति
१३ कभी न देखी थीं। और वुह फेर समुद्र के ओर गया और समस्त मंडली उसके समीप आई और उसने उन्हें उपदेश
१४ किया। और ज्यों वुह आगे बढ़ा उसने हलफा के पुत्र लेई को कर लेने के स्थान में बैठे देखा और उसे कहा कि मेरे पीछे आ तब वुह उठा और उसके पीछे होलिया।
१५ और ऐसा ऊआ कि जब ईसा उसके घर में बैठा भोजन करता था बऊत से पटवारिअन और पापिअन भी ऐकट्ठे ईसा के और उसके शिष्यन के संग बैठे क्योंकि वहां बऊत
१६ थे और वे उसके पीछे चले आये थे। और जब अध्यापकन और फरीसिअन ने उसको पटवारिअन और पापिअन के संग भोजन करते देखा वे उसके शिष्यन से बोले यह कैसा है कि वुह पटवारिअन और पापिअन के संग खाता और
१७ पीता है। तब ईसा ने सुनके उन्हें कहा कि उन्हन को

जो निरोगी हैं बैद्य का प्रयोजन नहीं परंतु रोगिअन को
मैं धर्मिअन को बुलावने नहीं आया परंतु पापिअन को कि
१८ पश्चात्ताप करें। और यहिया के और फरीसिअन के शिष्य
ब्रत करते थे उन्हन ने आके उसको कहा कि यहिया के
और फरीसिअन के शिष्य क्यों ब्रत करते हैं परंतु तेरे शिष्य
१९ ब्रत नहीं करते। तब ईसा ने उन्हन को कहा कि जब
लों बराति के संग दूलह है क्या वे ब्रत करसकते हैं जब लों
२० दूलह उनके संग है वे ब्रत नहीं करसकते। परंतु वे दिन
आवेंगे जब दूलह उनसे अलग किया जायगा और तब
२१ उन्हीं दिनन में वे ब्रत करेंगे। कोई मनुष्य नये कपड़े का
टुकरा पुराने बस्त्र में जोड़ नहीं लगाता नहीं तो वुह फटा
२२ अधिक होता है। और कोई मनुष्य नये दाख के रस को
पुराने कुप्पे में नहीं भरता नहीं तो वुह नये दाख के रस से
कुप्पे फटजाते और दाख का रस बहि जाता है और कुप्पे नष्ट
होते हैं परंतु नये दाख के रस को अवश्य है कि नये कुप्पे
२३ में रखें। और ऐसा हुआ कि वुह बिश्राम के दिन अन्न
के खेतन में से चला जाता था और उसके शिष्यन जाते हुए
२४ अन्न की बालें तोड़ने लगे। तब फरीसिअन उसको कहा
देख जो कर्म बिश्राम के दिन में करने को योग्य नहीं वे क्यों
२५ करते हैं। तब उसने उन्हें कहा क्या तुम्हन ने नहीं पढ़ा
कि दाऊद ने जब उसको भूख और अवश्य था और उन्हन
२६ ने जो उसके संग थे क्या किया। उसने किस प्रकार से

अबियाथार प्रधान याजक के समय में ईश्वर के मंदिर में जाके सन्मुख की रोटी जो याजकन को छोड़ किसी को खाने के योग्य न थी खाई और अपने संगिअन को भी दिई।
२७ और उसने उन्हें कहा कि बिश्राम का दिन मनुष्य के लिये ठहराया गया परंतु मनुष्य बिश्राम के दिन के लिये नहीं।
२८ इस कारण मनुष्य का पुत्र बिश्राम के दिन का भी प्रभु है।

३ तीसरा पर्ब्ब

१ तब वुह मंडली में फेरगया और वहां एक मनुष्य था जिसका
२ हाथ सून होगया था। और वे उसे अगोर रहे थे कि वुह उसको बिश्राम के दिन में चंगा करेगा अथवा नहीं कि
३ वे उसे दोष देवें। और उसने उस मनुष्य को जिसका हाथ
४ सून होगया था कहा कि बीच में खड़ा हो। और उसने उन्हन को कहा कि बिश्राम के दिनन में उत्तम कर्म करना उचित है अथवा अधम करना प्राण को बचावना अथवा
५ मारना परंतु वे चुप रहे। और जब उसने चारों ओर क्रोध से उन्हन को देखा उन्हन के कठोर अंतःकरण से दुखी होकर उस मनुष्य को कहा कि अपना हाथ बढ़ा तब उसने बढ़ाया
६ और उसका हाथ दूसरे के समान चंगा होगया। तब फरीसिअन ने तुरंत जाके हिरूदीसिअन के संग उसके बिरोध में परामर्श किया कि वे उसे किस प्रकार से नाश करें।
७ परंतु ईसा आप अलग होके अपने शिष्यन के संग समुद्र के

अगर मैं सिर्फ़ उसके कपड़ों को छूलूंगी सिह्हत पा जाऊंगी *
२९ और फ़िलफ़ौर उसके लोहू का चश्मः खुश्क हो गया और उसने
अपने जिस्म की हालत से जाना कि उस आफ़त से उसने
३० मुख़लिसी पाई * तब ईसा फ़िलफ़ौर अपने दिल में जान के कि मुझ में
से कुव्वति शाफ़ियः निकली उस अंबोह की तरफ़ मुतवज्जिह हुआ
३१ और कहा कि मेरे लिबास को किसने छूआ * उसके शागिर्दों ने
उसे कहा तू देखता है कि लोग तुझ पर गिरे पड़ते हैं फिर
३२ तू कहता है मुझे किसने छूआ * तब उसने आस पास निगाह
३३ की ता कि उसे जिसने यिह काम किया था देखे * और वुह
रंडी डरती और कांपती क्यूंकि वुह जानती थी उस पर क्या
वाक़िअ हूआ आई और उसके आगे गिर पड़ी और सब सच
३४ सच उस से कहा * तब उसने कहा कि बेटी तेरे इअतिक़ाद ने
तुझे सिह्हत बख़्शी सलामत जा और अपनी आफ़त से बची रह *
३५ वुह भी कहता था कि उस मजमअ के रईस के घर से लोगों ने
आके कहा कि तेरी बेटी मर गई अब क्यूं तू मुअल्लिम को ज़ियादः
३६ तसदीअ देता है * ईसा ने उस कलाम को जो वुह कह रहे थे
सुन कर मजमअ के रईस को कहा मत डर फ़क़त इअतिक़ाद रख *
३७ और उसने सिवा पत्रस और यअक़ूब और यअक़ूब के भाई यूहन्ना
३८ के किसी को अपने साथ चलने न दिया * और मजमअ के रईस
के घर में आके हंगामः यअने बअज़े लोगों को रोने और वावैला
३९ करते देखा * और दरामद होके उन्हें कहा तुम काहे को हंगामः

४० करते और रोते हो लड़की मरी नहीं पर सोती है * वे उस पर
हंसे लेकिन वुह सब को बाहर करके लड़की के मा बाप को और
अपने रफ़ीक़ों को लेके वहां जहां वुह लड़की पड़ी हुई थी
४१ अंदर आया * और उस लड़की का हाथ पकड़ कर उसे
कहा तलीसा क़ूमी जिसका तरजमः यिह है कि लड़की मैं
४२ तुझे कहता हूं उठ * और वुह लड़की वोंहीं उठी और
चलने लगी कि वुह बारह बरस की थी तब वे हैरति शदीद से
४३ मबहूत होगये * फिर उसने उन्हें बहुत ताकीद से हुक्म किया
कि उसे कोई न जाने और फ़रमाया कि उसे कुछ खाने
को दें *

छठा बाब

१ फिर वुह वहां से रवानः हुआ और अपने वतन में आया और
२ उसके शागिर्दों ने उसकी हमराही की * और जब सबत का
रोज़ हुआ वुह मजमअ में वअ़ज़ कहने लगा और बहुतेरे
सुन के हैरानी से कहने लगे ये चीज़ें उसने कहां से पाईं और
यिह क्या हिकमत है जो उसे मिली है कि ऐसे मुअजिज़े
३ उसके हाथ से ज़ाहिर होते हैं * क्या यिह शख़्स बढ़ई मरयम
का बेटा यअ़क़ूब और यूसा और यहूदा और शमऊ़न का भाई
नहीं और क्या उस की बहिन यहां हमारे पास नहीं हैं
४ और उन्हों ने उसे अपने ठोकर खाने का बाइ़स बनाया * तब
ईसा ने उन्हें कहा कि नबी फ़क़त वतन में और अपने ख़ेशावंदों

५ में और अपने घर में बेइज़्ज़त है * और वुह वहां कोई मुअजिज़ः न देख सका मगर उसने हाथ थोड़े से बीमारों पर
६ रख के उन्हें चंगा किया * और उनकी बेइअतिक़ादी से हैरान था
७ और गिर्द के गाओं में वअज़ कहता फिरा * और उन बारह को बुलाया और उनको दो दो करके भेजना शुरूअ किया और उन्हें
८ पलीद रूहों पर इख़्तियार बख़्शा * और हुक्म किया कि सफ़र के लिये सिवा अ़सा के कुछ न लो न झोली न रोटी न अपने पटके
९ में कुछ नक़्द * मगर जूते पहनो और दो जामें न पहनो *
१० और उन्हें कहा तुम जिस मक़ाम में किसी घर में दाख़िल हो
११ तो जबतक तुम वहां से जाओ वहीं रहो * और जो कोई तुम्हारी ख़ातिरदारी न करे और तुम्हारी न सुने तो जब तुम वहां से निकलो पांओं की गर्द झाड़ो ता कि उन पर गवाही हो मैं तुम से सच कहता हूं कि अ़दालत के दिन सदूम और ग़मरः का
१२ अ़ज़ाब उस शहर के अ़ज़ाब से आसान तर होगा * और
१३ उन्हों ने जाकर मुनादी की कि तायब होओ * और बहुत से देवों को दूर किया और बहुतों को जो बीमार थे तेल मल के चंगा
१४ किया * जब हिरूदीस बादशाह ने सुना क्यूंकि उसका नाम मशहूर हो चुका था तो उसने कहा कि यहया मुस्तबिग़ मर के
१५ जी उठा इसलिये मुअजिज़े उस से नुमायां होते हैं * औरों ने कहा कि वुह इलियास है औरों ने कहा कि यिह ऐक नबी
१६ या किसी नबी के मानिन्द है * हीरूदीस ने सुन कर कहा कि

यहूया है जिस का मैं ने सिर कटवाया वही मर के जी उठा है *
१७ हीरूदीस ने आप ही हीरूदिया के वास्ते जो उसके भाई
फ़ैलबूस की जोरू थी लोग भेज कर यहूया को पकड़वा के क़ैदख़ाने
१८ में बंद किया था क्यूंकि उस ने उसे निकाह किया * और
यहूया ने हीरूदीस को कहा था कि अपने भाई की जोरू को रखना
१९ तुझ पर हलाल नहीं * इसलिये हीरूदिया उसका कीनः रखती
थी और चाहती थी कि उसे जान से मारे पर उसका हाथ न पड़ता था *
२० इसवास्ते कि हीरूदीस यहूया को मर्दे रास्तबाज़ और मुक़द्दस
जानकर डरता था और उसकी पासदारी करता था और उसकी
नसीहत सुन कर बहुत सी बातों पर अमल करता था और उसकी
२१ बातें खुशी से सुनता था * आख़िरुलअमर क़ाबू का दिन आया कि
हीरूदीस ने अपनी साल गिरह में अपने बुजुर्गों और रिसालःदारों
२२ और जलील के अमीरों के लिये खाना तैयार किया * तब हीरूदिया
की बेटी आई और नाची और हीरूदीस और उसके मिहमानों
को खुश किया तब बादशाह ने उस छोकरी को फ़रमाया कि जो चाहे
२३ सो मांग मैं तुझे दूंगा * और क़सम खाके उस से कहा कि तू मेरी
२४ आधी ममलुकत तक जो कुछ मुझसे मांगे मैं तुझे दूंगा * वुह चली
गई और अपनी मा से पूछा कि मैं क्या मांगूं वुह बोली कि यहूयाय
२५ मुस्तग़िरा का सिर * तब वुह फ़िलफ़ौर बादशाह पास चालाकी
से आई आर उस से सवाल किया कि मैं चाहती हूं तू एक तश्त में
२६ यहूयाय मुस्तग़िरा का सिर मुझे अभी ला दे * बादशाह बहुत

दिलगीर हूआ पर अपनी क़सम और हमनशीनों के सबब से
२७ न चाहा कि उसे महरूम करे * तब बादशाह ने जल्द जल्लाद को
भेजा और हुक्म किया कि उसका सिर लावे और उसने जाके
२८ उसका सिर क़ैद में काटा * और ऐक तश्त में रखके लाया और
२९ उस लड़की को दिया उस लड़की ने अपनी मा को दिया * और उसके
शागिर्द सुन कर आये और उसके तन को उठाया और क़बर में रखा *
३० और हवारी ईसा पास जमअ हूऐ और सब कुछ उस से कहा कि
३१ हम ने यों किया और हमने यूं वअ़ज़ कही * उसने उन्हें कहा
कि तुम अलग वीराने में चले जाओ और टुक सुसताओ इसलिये कि
वहां बहुत लोग आते जाते थे और उन्हें खाना खाने की भी फ़ुरसत
३२ न थी * तब वे अलग किश्ती पर बैठ के ऐक वीराने को गये (३३) गरोहों
ने उन्हें रवानः होते देखा और कितनों ने उसे पहचाना और
सारे शहरों से ख़ुश्की ख़ुश्की उधर दौड़े और उनसे आगे जा पहुंचे
३४ और इकट्ठे होके उस पास आये * और जब ईसा ने बाहर आन के
जम ग़फ़ीर को देखा उसे उन पर रहम आया क्यूंकि वे उन भेड़ों के
मानन्द थे जो बे चौपान हों तब वुह उन्हें बहुत सी नसीहतें
३५ करने लगा * जब दिन बहुत ढला उसके शागिर्दों ने उस पास आके
३६ कहा यिह जगह वीरान है और बहुत देर हूई है * उन्हें
रुख़सत कीजिऐ ता कि वे आस पास के खेतों और गांओं में जावें
और अपने लिये रोटी मोल लें कि खाने को उन पास कुछ नहीं *
३७ उसने उन्हें जवाब दिया और कहा तुम उन्हें खाने को दो तब

वे बोले हां हम जावें दो सौ दीनार की रोटियां मोल लें उन्हें खिलावें *
३८ उसने उन्हें कहा तुम पास कितनी रोटियां हैं जाके देखो तो उन्हों
३९ ने मअलूम करके कहा कि पांच रोटियां और दो मछलियां * तब
उसने उन्हें हुक्म किया कि उन सबको हरे घास पर सफ़ सफ़
४० बिठलावें * चुनांचिः वे सौ सौ और पचास पचास सफ़ सफ़ बैठे *
४१ तब उसने पांच रोटियां और दो मछलियां लेके आसमान पर
निगाह की और बरकत की बात कही फिर रोटियां तोड़ीं और
अपने शागिर्दों को दीं कि उनके आगे रखें और दो मछलियां
४२ उसने उन सब को बांटीं * वे सब खाके सेर हुए (४३) और उन्हों
ने टुकड़ों की बारह टुकरियां उठाईं और कुछ मछलियों से भी
४४ पाया * और वे जिन्हों ने रोटियां खाईं पांच हज़ार मर्द के क़रीब
४५ थे * फिर उसने अपने शागिर्दों को ताकीद से हुक्म किया कि किश्ती
पर चढ़ो जिस अरसे में कि मैं लोगों को रुख़सत करूं तुम पार
४६ बैतसैदा में आगे जा रहो * और आप उन्हें रुख़सत करके एक
४७ पहाड़ को गया कि दुआ करे * और जब शाम हुई वुह किश्ती
४८ बीच दरया में थी और वुह अकेला ज़मीन पर था * उसने देखा कि
वे खेने में सख़्त मिहनत करते हैं क्योंकि हवा उनके मख़ालिफ़ थी
तब पहर रात बाक़ी रहे वुह उन पास दरया के सतह पर चलता
४९ आता था उनसे बढ़ चला था * और उन्हों ने उसे दरया पर चलते
५० देख कर ख़ियाल किया कि कुछ धोखा है और चिल्ला उठे * सब ने
उसे देखा और घबराये पर वुह फ़िलफ़ौर उनसे बोला और उन्हें

५१ कहा ख़ातिरजमअ़ रखो मैं हूं मत डरो * फिर वुह किश्ती पर उन पास गया और हवा रह गई तब वे दिलों में बेनिहायत हैरान
५२ और मुतअ़ज्जिब हूए * इसलिये कि वे रोटियों के मुअ़जिज़े को
५३ न समझे थे उनका दिल सख़्त था * और वे पार गुज़र के जनसरत
५४ के मुल्क में आये और घाट पर बैठे * जब वे किश्ती पर से उतरे
५५ फ़िल्फ़ौर लोग उसे पहचान के * मुल्क के हर तरफ़ से दौड़े और रंजूरों को खटोलों पर डाल के जहां उन्हों ने सुना था कि वुह है
५६ लेजाने लगे * और वुह जहां कहीं गाओं या शहरों या खेतों में गया उन्हों ने बीमारों को बाज़ारों में रखा और उसकी मिन्नत की कि फ़क़त उसके जामे के दामन को छू लें और जितनों ने उसे छूआ अच्छे होगये *

सातवां बाब

१ तब फ़रीसी और बअ़ज़े कातिब वही जो औरशलीम से आये
२ थे उस पास जमअ़ हूए * और जब उन्हों ने उसके बअ़ज़े शागिर्दों को नापाक यअ़ने बिन धोये हाथों से रोटी खाते देखा तो
३ ऐब जाना * इसलिये कि फ़रीसी और सब यहूदी उन क़ौलों से जो मशाइख़ ने सौंपे मुतमस्सिक होके जबतक दोनों हाथ
४ मलके न धोयें * और बाज़ार से आके जबतक नहा न लें नहीं खाते और बहुत से और अहकाम हैं जैसे प्यालों और थालियों और तांबे के बरतनों और कुरसियों का धोना जो उनको हिफ़्ज़
५ करने के लिये तफ़्वीज़ किये गये हैं * तब फ़रीसियों और कातिबों

ने उस से पूछा कि तेरे शागिर्द मशाइख़ की रवायत पर क्यूं
६ नहीं चलते और रोटी बिन हाथ धोये खा लेते हैं * उसने जवाब
दिया और कहा ऐ रियाकारो इशअया ने तुम्हारी ठीक ख़बर दी
कि लिखा है ये लोग होंठों से मेरी तअज़ीम करते हैं पर उनके
७ दिल मुझ से दूर हैं * और वे अबस मेरी परस्तिश करते हैं *
८ कि ख़ल्क़ के हुक्मों को इल्मि ज़रूरी ठहराके सिखलाते हैं
क्यूंकि तुम ख़ुदा के हुक्म को तर्क करके ख़ल्क़ की रवायत जैसे
प्यालों और थालियों का धोना हिफ़्ज़ करते हो और ऐसी और
९ बहुत सी चीज़ें हैं जो तुम करते हो * और उसने उन्हें कहा
तुम ख़ुदा के हुक्म को बहुत अच्छे तौर से बातिल करते हो ता कि
१० अपनी सुन्नत को क़ाइम रखो * क्यूंकि मूसा ने कहा कि
अपने मा बाप की तकरीम कर और जो कोई बाप या मा को बुरी
११ बात कहे वुह जान से मारा जावे * पर तुम कहते हो अगर कोई
अपने बाप या मा को कहे जो तुम्हें मुझ से नफ़्अ मिल सकता था
१२ सो अल्लाह दिया गया तो कुछ मुज़ाइक़ः नहीं * और तुम उसे
उसके बाप या मा से उससे आगे कुछ सलूक करने नहीं देते *
१३ पस तुम ख़ुदा के कलाम को अपनी सुन्नत से जो तुम ने रइज
की है बातिल करते हो और ऐसा बहुत कुछ करते हो *
१४ फिर उसने सारी जमाअत को पास बुलाके कहा कि तुम सब
१५ के सब मेरी सुनो और समझो * ऐसी कोई चीज़ आदमी के
बाहर नहीं जो उस में दाख़िल होके उसे पलीद कर सके पर वे

घर्का इस पार फिर आया बहुत लोग उसके समीप एकट्ठे हुए
२२ और वुह समुद्र के निकट था। और देखो मंडली के प्रधान
में से एक जिसका नाम याइरस था आया और उसको देख
२३ कर उसके चरणों पर गिरा। और उसकी बहुत बिनती
करके कहा कि मेरी छोटी बेटी मरने पर पड़ी है आके
अपने हाथन को उस पर रख कि वुह चंगी हो जाय और
२४ वुह जीएगी। तब ईसा उसके संग गया और बहुत से लोग
२५ उसके पीछे हो लिये और उस पर भीड़ किये। तब एक
२६ स्त्री ने जिसको बारह बरस से लोहू बहता था। और
बहुत से बैद्यन से औषध करा चुकी थी और अपना सब
कुछ उठाके चंगी न हुई परंतु अधिक दुखी हुई।
२७ तब उसने ईसा का समाचार सुनके उस भीड़ में पीछे आई
२८ और उसके बस्त्र को छूलिई। क्योंकि उसने कहा कि जो
मैं केवल उसके बस्त्रन को छूओं मैं चंगी हो जाउंगी।
२९ और तुरंत उसके लोहू का सोता सूख गया और उसने
अपने शरीर की दशा से जाना कि उस रोग से मैं अच्छी
३० हुई। तब ईसा ने तुरंत आप में जाना कि मुझ से
पराक्रम निकला और उस मंडली की ओर फिरके कहा कि
३१ मेरे बस्त्रन को किसने छूआ। तब उसके शिष्यन ने उसको
कहा तू देखता है कि मंडली तुझ पर भीड़ करती है और
३२ फेर तू कहता है कि मुझ को किस ने छूआ। और जिसने
यह काम किया था उसको देखने के कारण वुह चारों ओर

३३ देखने लगा। तब उस स्त्री ने अपने पर जो कि किया गया था जानकर डरती और कांपती आई और उसके आगे
३४ गिरके समस्त सत्य बोली। और उसने उसको कहा कि हे पुत्रि तेरे बिश्वास ने तुझे चंगा किया कुशल से जा और
३५ अपने रोग से बची रह। वुह कहताही था कि उस मंडली के प्रधान के ने से लोगन ने आके कहा कि तेरी बेटी
३६ मर गई तू प्रभु को अब क्यों दुख देता है। जब ईसा ने उस बचन को जो वे कहि रहे थे सुना उसने मंडली के
३७ प्रधान को कहा कि मत डर केवल बिश्वास रख। तब उसने पतरस और याकूब और उसके भाई यूहन्ना को
३८ छोड़ किसी को अपने पीछे आवने न दिया। और उसने मंडली के प्रधान के घर में आकर लोगन को धूम करते और
३९ रोते और अति बिलाप करते देखा। और जब उसने भीतर प्रवेश किया उसने उन्हें कहा कि तुम किस कारण धूम करते और रोते हो कन्या मर नहीं गई परंतु नींद में है।
४० तब वे उस पर ठट्ठे से हंसे परंतु जब उसने सबको बाहर किया उसने कन्या के पिता और माता को और जो उसके
४१ संग थे लेकर जहां वुह कन्या पड़ी थी प्रवेश किया। तब उसने उस कन्या का हाथ पकड़ा और उसे कहा तालीताकूमी
४२ अर्थात् कन्या मैं तुझे कहता हों कि उठ। और वुह कन्या तुरंत उठी और चलने लगी क्योंकि वुह बारह बरस
४३ की थी और वे यह आश्चर्य से अति बिस्मित हुए। तब

उसने उन्हें दृढ़ता से कहा कि उसे कोई न जाने और आज्ञा किई कि उसे कुछ खाने को देवें।

६ छठवां पर्ब्ब

१ तब वुह वहां से चला और अपने देश में आया और उसके २ शिष्य उसके पीछे होलिये। और जब बिश्राम का दिन आया वुह मंडली में उपदेश करने लगा और बहुतेरे सुनते हुए बिस्मित होके कहने लगे कि यह बातें उसको कहां से मिलीं और यह क्या बुद्धि है जो उसे दिई गई है कि ऐसे ३ आश्चर्य कर्म उसके हाथन से किये जाते हैं। क्या यह मरियम का पुत्र बढ़ई नहीं याकूब और यूसा और यहूदा और शमऊन का भाई नहीं और क्या उसकी बहिनें यहां हमारे पास नहीं हैं और उन्हन ने उसे अपने ठोकर खाने का ४ कारण बनाया। तब ईसा ने उन्हें कहा कि आगमज्ञानी का अनादर नहीं परंतु अपने देश में और अपने कुटुम ५ के बिषे और अपने ही घर में। और वुह वहां कोई आश्चर्य कर्म न कर सका केवल कि उसने थोड़े रोगिअन पर हाथ रख ६ के चंगा किया। और वुह उनके अबिश्वास के कारण बिस्मित हुआ और वुह चारों ओर के गांवन में उपदेश करता फिरा। ७ तब उसने उन बारह को बुलाया और उन्हें दोदो करके भेजना आरंभ किया और उन्हें अपवित्र आत्मन पर सामर्थ्य ८ दिया। और उन्हें आज्ञा किई कि वे कूंच के कारण केवल लाठी के कुछ न लेवें न झोली न रोटी न पटके में पैसा।

९ परंतु अपने पांव में जूता पहिन लेवें और न दो अंगरखे
१० पहिनें। और उसने उन्हें कहा कि तुम जिस स्थान में
किसी घर मे जाओ जब लों वहां से न निकलो वहीं रहो॥
११ और जोकोइ तुम्हारा शिष्टाचार न करे और तुम्हारा न सुने जब
तुम वहां से निकलो अपने चरण की धूल झाड़ो कि उन पर
साक्षी होय मैं तुम से सत्य कहता हों कि न्याय के दिन में
सदूम और अमूरा की उस नगर की दशा से अधिक सहाज
१२ होगी। और उन्हन ने बाहर जाके उपदेश किया कि लोग
१३ पश्चात्ताप करें। और वे अनेक देवन को दूर किये और
१४ बहुत दुखिअन को तेल से मलके चंगा किये। और
हीरूदीस राजा ने सुना क्योंकि उसका नाम फैल गया था
तब उसने कहा कि यहिया स्नानकारक मृत्यु से जी उठा
१५ इस कारण उससे पराक्रम प्रगट होते हैं। औरन ने कहा
कि यह इलियास है और कितनन ने कहा कि एक
१६ आगमज्ञानी है अथवा यह आगमज्ञानी के समान है। परंतु
जब हीरूदीस ने सुना उसने कहा कि यह यहिया जिसका
१७ मैं ने सिर कटवाया वही मृत्यु से जी उठा है। क्योंकि
हीरूदीस ने अपने भाई फिलबूस की स्त्री हीरूदियास के
कारण कि उसने उससे ब्याह किया था आपही लोगन को
१८ भेजके यहिया को पकड़वाकर बंदिगृह में बंद किया था।
क्योंकि यहिया ने हीरूदीस को कहा था कि तुझे उचित नहीं
१९ कि अपने भाई की स्त्री को रखे। इस कारण हीरूदियास

उससे बिरोध रखती थी और चाहती थी कि उसे मार डाले
२० परंतु न सकी। क्योंकि हीरुदीस यहिया को सज्जन
और पवित्र मनुष्य जानकर उसे डरता था और उसका मानता
था और उसका उपदेश सुनके बहुत से बचन पर चलता था
२१ और उसको आनंद से सुनता था। और जब औसर का
दिन आपहुंचा कि हीरुदीस अपने जन्म दिन में अपने
बड़ेन और सेनापति और जलील के प्रधानन के कारण
२२ बिआरी बनाई। तब हीरुदियास की पुत्री उनके मध्य में
आई और नाची और हीरुदीस को और उन्हें जो उसके
संग बैठे थे प्रसन्न किया तब राजा ने उस कन्या को कहा
कि जो तेरी इच्छा होय मुझसे मांग और मैं तुझे दूंगा।
२३ और उसने उसके लिये किरिया खाई कि मेरे आधा राज्य लों
२४ जो कुछ तू मांगेगी मैं तुझे दूंगा। और उसने जाके अपनी
माता को पूछा कि मैं क्या मांगों और उसने कहा कि यहिया
२५ स्नानकारक का सिर। तब वुह तुरंत उतावली से राजा के
समीप आई और यह कहके सिर मांगी कि मैं चाहती हों
कि तू एक थाल में यहिया स्नानकारक का सिर अभी मुझे
२६ मंगवा दे। तब राजा अति उदास हुआ परंतु अपने किरिया
और अपने संग बैठनिहारन के कारण उसने न चाहा कि
२७ उसे फेरे। तब राजा ने तुरंत बधिक को भेजकर आज्ञा
किई कि उसका सिर लावे और उसने जाके बंदिगृह में
२८ उसका सिर काटा। और उसका सिर एक थाल में लाके

उस कन्या को दिया और कन्या ने उसे अपनी माता को दिया।
२९ जब उसके शिष्यन ने सुना वे आकर उसकी लोथ को लेके
३० उसे समाधि में रखे। और प्रेरितन ईसा के समीप एकट्ठे
हुए और समस्त समाचार जो उन्हन ने किया और जो उन्हन
३१ ने सिखाया उसे कहा। तब उसने उन्हें कहा कि तुम उजार
में अलग चलो और तनिक बिश्राम करो क्योंकि वहां बहुत
आवते जाते थे और उन्हें भोजन करने का भी सावकाश न
३२ था। तब वे अलग नाव पर बैठके एक अरण्य स्थान में
३३ चले गये। और लोगन ने उन्हें जाते देखा और बहुतेरन ने
उसे चीन्हा और समस्त नगरन से पांवपांव उधर दौड़े और
उनसे आगे जापहुचे और एकट्ठे होके उसके समीप आये।
३४ तब ईसा बाहर निकलकर बहुत से लोगन को देखके उनपर
दयाल हुआ क्योंकि वे उन भेड़न के समान थे जिनको गड़ेरिये
नहीं और वुह उन्हन को बहुत सा उपदेश करने लगा।
३५ और जब दिन बहुत बीत गया उसके शिष्यन ने उस पास
३६ आयके कहा कि यह अरण्य स्थान है। और समय बहुत
बीत गया उन्हें बिदा करिये कि वे चारों ओर के खेतन और
गाउन में जांय और अपने लिये खाने को मोल लेवें क्योंकि
३७ उनके भोजन के कारण कुछ नहीं है। उसने उन्हें उत्तर
देके कहा कि तुम उन्हन को खाने को दो तब वे उसको
बोले क्या हम जायें और दो सौ चरनी की रोटी मोल लेके
उन्हें खाने को दें उसने उन्हें कहा कि तुम्हारे पास कितनी

रेटी हैं जाके देखो और उन्हन ने जानकर कहा कि पांच
३८ रेटीं और दो मछलों। और उसने उन्हन को आज्ञा किई
३९ कि हरी घास पर पांती पांती सबन को बैठाओ। तब वे
४० सा सा और पचास पचास की पांती बांध के बैठ गये। और
जब उसने उन पांच रेटीं और दो मछलों लिई उसने स्वर्ग
के ओर देखके आशीष दिया और रेटिउन को तोड़के अपने
शिष्यन को दियां कि उन्हन के आगे रखें और इसी रीति से दो
४१ मछलिअन को भी भाग करके उन सबन को दियां। तब वे
४२ सब खाके संतुष्ट ऊए। और वे चूरचार से बारह टोकरियां
४३ उठाईं और मछलियन से भी कुछ पाया। और वे जिन्हन ने
४४ रेटीं खाईं पांच सहस्र के लगभग पुरुष थे। और तुरंत
उसने अपने शिष्यन को दृढ़ आज्ञा किई कि नाव पर चढ़के
आगे उस पार बैतसैदा को जायें जबलों वुह लोगन को
४५ बिदा करे। और जब उसने उन्हें बिदा किया वुह आप
४६ एक पहाड़ पर प्रार्थना करने को गया। और जब सांझ
ऊई वुह नाव समुद्र के मध्य में थी और वुह भूमि पर
४७ अकेला था। और उसने उन्हें खेवतेऊए थका देखा क्योंकि
पवन उनके सन्मुख था और रात के चौथे पहर के लगभग वुह
समुद्र पर चलते उन्हन के समीप आया और उनसे आगे
४८ बढ़ चला था। परंतु जब उन्हन ने उसको समुद्र पर चलते
देखा वे समझे कि वुह कुछ धोखा है और चिल्ला उठे।
४९ क्योंकि वे सब उसको देखके व्याकुल ऊए तब उसने तुरंत

उन्हन से बात्तं करके उन्हें कहा कि चैन से रहो और मत
५० डरो यह मैं हूं। तब वुह उनके निकट जाके नाव पर चढ़ा
और पवन थम गया और वे आप में बेपरिमाण अति बिस्मित
५१ थे और आश्चर्य किये। क्योंकि वे उन रोटिअन की अवस्था
५२ को न सोचे थे क्योंकि उनका अंतःकरण कठोर था। और
जब वे पार पहुंचे वे जनेसरत के देश में आये और घाट
५३ पर पहुंचे। और जब वे नाव से उतर आये तुरंत लोगन
५४ ने उसे जाना। और उस देश के चारों ओर दौड़े और
रोगिअन को खाटन पर उठाके जहां उन्हन ने सुना था
५५ कि वुह है ले जाते थे। और उसने जहां कहीं गावन अथवा
नगरन अथवा देश में प्रवेश किया वे रोगिअन को मार्गन में
रखे और उसकी बिनती किई कि वे केवल उसके वस्त्र का खूंट
छू लेवें और जितनन ने उसको छूआ चंगे होगये।

७ सातवां पर्ब्ब

१ तब फरीसिअन और अध्यापकन में से कई एक जो
२ यिरोशलीम से आये थे उस पास एकट्ठे हुए। और जब
उन्हन ने उसके शिष्यन को अपवित्र अर्थात बिनधोये हाथन
३ से रोटी खाते देखा वे दोष दिये। क्योंकि फरीसिअन और
समस्त यहूदिअन प्राचीनन के ब्यवहार पर चलते थे इस
४ कारण कि हाथ बिना बार बार धोये न खाते थे। और
हाट से आके बिना स्नान किये न खाते थे और बहुतेरी
अनेक रीति हैं जो वे ग्रहण करके मानलिये थे जैसा कि

कटोरे और बटलोही पीतल के बर्त्तन और पीढ़न का धोना।
५ तब फरीसिअन और अध्यापकन ने उससे पूछा कि तेरे शिष्य प्राचीन के व्यवहार पर क्यों नहीं चलते परंतु बिनधोये
६ हाथन से रोटी खाते हैं। उसने उत्तर दिया और उन्हें कहा कि इशिया ने आगमज्ञान से तुम सब काल्पनिक को कारण ठीक कहा जैसा लिखा है कि यह लोग होंठन से मेरा आदर करते हैं परंतु उनका अंतःकरण मुझ से दूर है।
७ इस कारण वे व्यर्थ मेरी सेवा करते हैं कि मनुष्यन की आज्ञा
८ को अवश्य ठहराके सिखावते हैं। क्योंकि ईश्वर की आज्ञा को त्याग करके तुम सब मनुष्यन के व्यवहार जैसा कि बटलोही और कटोरे को धोना मानते हो और ऐसी बहुत
९ बस्तें हैं जो तुम सब करते हो। और उसने उन्हें कहा कि तुम सब ईश्वर की आज्ञा को अच्छी रीति से भंग करते
१० हो कि तुम अपने व्यवहार को रखो। क्योंकि मूसा ने कहा कि अपनी माता और पिता की प्रतिष्ठा कर और जो कोई पिता अथवा माता को दुर्बचन कहे वुह प्राण से मारा जाय।
११ परंतु तुम सब कहते हो कि जो कोई अपने पिता अथवा माता को कहे कि जो कुछ तुझे मुझ से लाभ मिल सकता था सो कुर्बान है अर्थात ईश्वर को भेंट दिया गया।
१२ तो कुछ चिंता नहीं और आगे को तुम उसे अपनी माता
१३ और पिता को कुछ करने नहीं देते हो। सो तुम सब अपना व्यवहार ठहराके ईश्वर के बचन को वृथा करते हो

१४ और ऐसे बहुत कुछ करते हो। और जब उसने सब
लोगन को बुलाया उसने उन्हों से कहा कि हर एक मेरी
१५ सुनो और समझो। ऐसी कोई बस्तु मनुष्य के बाहर
नहीं जो उसमें प्रवेश करके उसको अपवित्र कर सके परंतु
वे बस्तें जो उससे निकलती हैं वही मनुष्य को अपवित्र
१६ करती हैं। जो किसी के कान सुन्ने के लिये होय वुह
१७ सुने। और जब उसने लोगन के समीप से घर में प्रवेश
किया उसके शिष्यन ने उसको उस दृष्टांत की अवस्था में
१८ पूछा। तब उसने उन्हें कहा क्या तुम भी ऐसे बे समझ
हो क्या तुम्हें नहीं सूझता कि वुह जो बाहर से मनुष्य में
१९ प्रवेश करती हैं उसे अपवित्र नहीं कर सकतीं। इस कारण
कि वुह उसके अंतःकरण में प्रवेश नहीं होतीं परंतु ओझ
में और वुह समस्त भोजन को पवित्र करके उन्हें गड़हे में
२० निकालता है। और उसने कहा कि वुह जो मनुष्य से
२१ निकलती हैं वही मनुष्य को अपवित्र करती हैं। क्योंकि
मनुष्यन के अंतःकरण में से बुरी चिंता परस्त्रीगमन ब्यभिचार
२२ बध। चोरी लोभ द्रोह छल लंपटता कुदृष्टि पाषंड। अहंकार
२३ मूर्खता। ये समस्त बुरी बस्तें भीतर से निकलतीं और मनुष्य
२४ को अपवित्र करती हैं। तब वुह वहां से उठके सूर और
सैदा के सिवाने में गया और उसने एक घर में प्रवेश करके
२५ चाहा कि कोई न जाने परंतु वुह छिप न सका। क्योंकि
एक स्त्री जिसकी पुत्री पर एक अपवित्र आत्मा की छाया

थी उसका समाचार सुनकर आई और उसके पांव पर गिरी।
२६ वुह स्त्री यूनानी और सरूफूनकी के लोगनकी थी उसने
उसकी बिनती किई कि वुह देव को उसकी पुत्री पर से दूर
२७ करे। परंतु ईसा ने उसको कहा कि पहिले बालकन को
संतुष्ट होने दे क्योंकि उचित नाहीं कि बालकन की रोटी लेके
२८ कुत्तन के आगे फेंक देवें। तब उसने उत्तर देके उसको कहा
ठीक प्रभु परंतु कुत्ते भी मंच के नीचे बालकन की रोटी का
२९ चूरचार खाते हैं। तब उसने उसे कहा कि इस बचन के
३० कारण तू चली जा वुह देव तेरी पुत्री से उतर गया। और
जब वुह अपने घर में पहुंची उसने देखा की देव उतर गया
३१ और उसकी पुत्री खाट पर लेटी है। और फेर वुह सूर
और सैदा के सिवाने से निकलके अशरमदन के सिवाने के
३२ मध्य से जलील के समुद्र के समीप आया। तब वे एक
बहिरे मनुष्य को जो तोतला के बोलता था उसके समीप लाये
और उसकी बिनती किये कि वुह अपना हाथ उस पर
३३ धरे। और वुह उसको उस मंडली से एकांत लेगया और
अपनी अंगुली उसके कानन में डालीं और उसने थूकके
३४ उसके जीभ को छूआ। और उसने स्वर्ग के ओर देखते
हुए हाय किया और उसे कहा कि इफता। अर्थात खुलजा।
३५ और तुरंत उसके कान खुल गये और उसकी जीभ का बंधन
३६ ढीला हुआ और वुह ठीक बोलने लगा। और उसने उन्हें
आज्ञा किई कि वे किसी को न कहें परंतु जितना उसने

उन्हें बर्जित किया था वे उससे अधिक प्रगट करते थे।
३७ और वे परिमाण बिस्मित होके कहने लगे कि उसने समस्त बस्तें भले किये वुह बहिरन को सुननिहार और गूंगन को बोलनिहार करता है।

८ आठवां पर्ब्ब

१ उन्हीं दिनन में जब बड़ी मंडली एकट्ठी थी और उन पास कुछ खाने को न था ईसा ने अपने शिष्यन को बुलाकर
२ उन्हन को कहा। कि मंडली पर मुझे दया आवती है इस कारण कि वे तीन दिन से मेरे संग हैं और उनकने
३ कुछ खाने को नहीं है। और जो मैं उन्हन को उनके घरन में उपासी भेजों वे मार्ग में निर्बल हो जायंगे क्योंकि
४ अनेक उन में से दूर से आये हैं। तब उसके शिष्यन ने उसे उत्तर दिया कि मनुष्य कहां से इन्हें इस बन में रोटी
५ से संतुष्ट कर सके। तब उसने उन्हें पूछा कि तुम कितनी
६ रोटी रखते हो वे बोले कि सात। तब उसने लोगन को आज्ञा किई कि भूमि पर बैठ जायं और उसने उन सात रोटीअन को लेकर धन्य कहके तोड़ीं और अपने शिष्यन को दिईं कि वे उन्हन के आगे धर देवें और उन्हन ने लोगन
७ के आगे रखीं। और उन पास कई एक छोटी मछलियां थीं उसने आशीष देकर आज्ञा किई कि उन्हें भी आगे धरों।
८ सो वे भोजन करके संतुष्ट हुए और उन्हन ने टूकार से जो

९ बच रहे थे सात टोकरियां भरीं उठाईं। और वे जो भोजन किये थे चार सहस्र के लगभग थे तब उसने उन्हें बिदा
१० किया। और तुरंत वुह अपने शिष्यन के संग नाव पर
११ चढ़ बैठा और दालमनूथा के सिवाने में आया। तब फरीसिअन निकले और उसकी परीक्षा के कारण उससे
१२ पूछने लगे और स्वर्ग से एक लक्षण चाहे। तब उसने अपने मन में अति हाय करके कहा कि इस समय के लोग किस कारण लक्षण ढूंढ़ते हैं मैं तुम्हन से सत्य कहता हों कि इस समय के लोगन को कोई लक्षण दिखाया न जायगा।
१३ और वुह उन्हें छोड़ कर नाव में फेर प्रवेश करके उस पार
१४ चला गया। और रोटी लेने को भूल गये थे और उनके
१५ संग नाव पर एक रोटी से अधिक न था। तब वुह उन्हें आज्ञा करके कहने लगा कि देखो फरीसिअन के किन्व और
१६ हीरूदीस के किन्व से परे रहो। तब वे आपस में बिचार करके कहने लगे इस कारण कि हमारे पास रोटी नहीं।
१७ और जब ईसा ने जाना उसने उन्हन को कहा कि तुम सब क्यों बिचार करते हो यह इस कारण है कि हमारे पास रोटी नहीं क्या तुम अब लों नहीं जानते और नहीं बूझते
१८ क्या तुम्हारा अंतःकरण अब लों कठोर है। आंख रखते हुए तुम नहीं देखते और कान रखते हुए नहीं सुनते
१९ और क्या तुम चेत नहीं करते। जब मैं ने पांच रोटीअन को पांच सहस्र के कारण तोड़ीं तुम्हम चूरचार से कितनी

टोकरियां भरी उठाईं उन्हन ने उसे कहा कि बारह ।
२० और जब चार सहस्र के कारण सात रुम सब चूरचार से
कितनी टोकरियां भरी उठाईं उन्हन ने कहा कि सात ।
२१ और उसने उन्हें कहा कि यह किस लिये है कि तुम नहीं
२२ बूझते । और वुह बैतसेदा में आया तब वे उसको समीप
एक अंधे मनुष्य को लाये और उसकी बिनती किई कि उसे
२३ छूवे । और वुह उस अंधे मनुष्य का हाथ पकड़के नगर
के बाहर ले गया और जब उसने उसकी आंखन पर थूका
और अपना हाथ उस पर रखके उसे पूछा कि तू कुछ
२४ देखता है । उसने ऊपर देखके कहा कि मैं मनुष्यन को
२५ वृक्ष समान चलते देखता हों । तब उसने उसकी आंखन
पर हाथ फेर रखा और उसे ऊपर देखाया तब वुह चंगा हो
२६ गया और हरएक मनुष्य को प्रत्यक्ष देखा । और उसने
उसे यह कहिके उसके घर भेजा कि नगर में मत जा और
२७ किसी से नगर में मत कह । तब ईसा और उसके शिष्य
कैसरिया फैलबूस के नगरन में गये और उसने मार्ग में अपने
शिष्यन से पूछा कि मनुष्य क्या कहते हैं कि मैं कौन हों ।
२८ और उन्हन ने उत्तर दिया कि यहिया स्नानकारक और
कितने कि इलियास और कितने एक आगमज्ञानियन में
२९ से । फेर उसने उन्हें कहा परंतु तुम क्या कहते हो कि
मैं कौन हों पतरस ने उत्तर देके उसको कहा कि तू मसीह
३० है । तब उसने उन्हें आज्ञा किई कि मेरे विषय में किसी

३१ से मत कहो। फेर उसने उन्हें उपदेश करना आरंभ किया कि मनुष्य के पुत्र को अवश्य है कि बहुत दुख उठावे और प्राचीन और प्रधान याजकन और अध्यापकन से निंदित किया जाय और मारा जाय और तीन दिन पीछे फेर
३२ उठे। और उसने यह बचन प्रगट कहा तब पतरस उसे
३३ लेके डांटने लगा। परंतु वुह घूम कर अपने शिष्यन की ओर देखके पतरस को घमकाके बोला कि हे शैतान मेरे पीछे जा क्योंकि वे बस्तें जो ईश्वर की हैं तुझे नहीं सूचतीं
३४ परंतु वे बस्तें जो मनुष्य की हैं। और जब उसने शिष्यन के संग लोगन को बुलाया उसने उन्हन को कहा कि जो कोई मेरे पीछे आवने चाहे अपनी इच्छा को रोके और
३५ अपने क्रूस को उठाले और मेरे पीछे आवे। क्योंकि जो कोई अपने प्राण को बचावेगा उसे गवांवेगा और जो कोई मेरे और मंगल समाचार के कारण अपने प्राण को गंवावेगा
३६ वही उसे बचावेगा। क्योंकि मनुष्य को क्या प्राप्त होगा जो वुह समस्त जगत को बश में लावे और अपने प्राण को
३७ गंवावे। अथवा मनुष्य अपने प्राण का बदला क्या देगा।
३८ इस कारण जो कोई इस परस्त्रीगामी और पापी पीढ़ी में मुझ से और मेरे बचन से लजावेगा मनुष्य का पुत्र उससे भी लजावेगा जब वुह अपने पिता के ऐश्वर्य में पवित्र दूतन के संग आवेगा।

९ नवां पर्ब्ब

१ तब उसने उन्हें कहा मैं तुम से सत्य कहता हों कि कितने उन्हन में से जो यहां खड़े हैं मृत्यु का स्वाद न चखेंगे जब लों ईश्वर के राज्य को प्रभाव से आवते न देखें। २ और छः दिन बीते ईसा पतरस और याकूब और यूहन्ना को लेकर उन्हें एकांत में एक ऊंचे पहाड़ पर गया और उन्हन के सन्मुख उसका स्वरूप बदल गया। ३ और उसका बस्त्र चमकने लगा और पाला के समान बहुत उजला हो गया जैसा कि कोई धोबी पृथिवी पर उजला नहीं कर सकता। ४ और उन्हन को मूसा के संग इलियास दिखाई दिया और वे ५ ईसा के संग बार्त्ता करते थे। तब पतरस ने उत्तर देके ईसा को कहा कि हे उपदेशक हमारे कारण अच्छा है कि यहां रहें और तीन तंबू बनावें एक तेरे कारण और एक मूसा के कारण ६ और एक इलियास के कारण। क्योंकि वुह न जानता था कि ७ क्या कहे इसलिये कि वे बहुत डर गये थे। तब एक मेघ ने उन पर छाया किई और उस मेघ से एक शब्द यह कहते ८ निकला कि यह मेरा प्रिय पुत्र है उसकी सुनो। और तुरंत जब उन्हन ने चारों ओर दृष्टि किई वे केवल ईसा को छोड़ और ९ किसी मनुष्य को अपने संग न देखे। और जब वे पहाड़ से उतरते थे उसने उन्हें आज्ञा किई कि ये बस्तें जो तुम्हन ने देखीं जब लों मनुष्य का पुत्र मृतकन में से न उठे किसी १० से मत कहियो। और वे उस बचन को अपने ही में रख

के आपस में चरचा करते थे कि मृत्यु से उठने का क्या अर्थ
११ है। फेर उन्हन ने यह कहिके उससे पूछा कि अध्यापकन
क्यों कहते हें कि पहिले इलियास का आवना अवश्य है।
१२ उसने उत्तर देके उन्हन को कहा कि इलियास का प्रथम
आवना और समस्त बस्तुन को सुधारना ठीक है और वुह
जो मनुष्य के पुत्र की अवस्था में लिखा गया है कि वुह
१३ बहुत दुख उठावे और अनादर किया जावे। परंतु मैं
तुम से कहता हों कि ठीक इलियास आचुका है और उन्हन
ने जो कुछ कि चाहा उससे किया जैसा उसके बिषय में
१४ लिखा है। और जब वुह शिष्यन के समीप आया उनके
आसपास एक बड़ी मंडली और अध्यापकन को उनसे प्रश्न
१५ करते देखा। तब तुरंत सब लोग उसको देखकर अति
१६ बिस्मित होकर दौड़े आये और प्रणाम किये। सो उसने
अध्यापकन से पूछा कि तुम उन से क्या प्रश्न करते थे।
१७ तब मंडली में से एक ने उत्तर देके कहा कि हे उपदेशक
मैं अपने पुत्र को तेरे समीप लाया हों जिस पर एक गूंगे
१८ देव की छाया है। और वुह जहां कहीं उसे ले जाता है
उसे फाड़ता है और वुह फेन बहाता और अपना दांत
किचकिचाता है और गल जाता है और मैं तेरे शिष्यन से
१९ कहा कि वे उसे दूर करें परंतु वे न करसके। उसने उत्तर
देके उसको कहा कि हे अबिश्वासी लोग मैं कब लों तुम्हारे
संग रहोंगा और मैं कब लों तुम को सहोंगा उसे मेरे समीप

२० लाओ। तब वे उसको उस पास लाये और जब उसने उसे देखा तुरंत उस देव ने उसे फाड़ा और वुह भूमि पर गिर
२१ और फेन बहाके लोट गया। और उसने उसके पिता से पूछा कि उसे यह कितने दिन से ज्ञआ है तब उसने कहा कि
२२ लड़काई से। और उसने बारबार उसको अग्नि में और जल में फेंका कि उसे नाश करें परंतु जो तू कुछ करसके हम पर
२३ दया कर। तब ईसा ने उसको कहा जो तू बिश्वास लासके
२४ सब कुछ बिश्वासिअन के कारण होनहार है। तब उस बालक का पिता तुरंत चिल्लाया और आंसू बहाके बोला कि हे प्रभु मैं बिश्वास लावता हों मेरी अबिश्वासों का
२५ उपकार कर। जब ईसा ने देखा कि लोग दौड़े आये उसने अपबित्र आत्मा को घुरकी देके उसको कहा कि हे गूंगे और बहिरे आत्मा मैं तुझे आज्ञा करता हों कि उससे
२६ बाहर निकल और उस में फेर कभी मत पैठ। तब वुह चिल्लाया और उसको अत्यंत फाड़के उससे निकल आया और वुह मृतक समान होगया यहां लों कि बज्जतेरन
२७ ने कहा कि वुह मरगया। परंतु ईसा ने उसका हाथ
२८ पकड़ा और उसे उठाया और वुह उठखड़ा ज्ञआ। और जब वुह घर में आया उसके शिष्यन ने एकांत में उसे पूछा
२९ कि हम उसको दूर क्यों नकर सके। तब उसने उन्हें कहा कि इस भांति का केवल प्रार्थना और ब्रत के किसी रीति से
३० बाहर नहीं निकल सकता। फेर वे वहां से चले और

अलंग से होके निकल गये और उसने चाहा कि कोई
३१ मनुष्य न जाने। क्योंकि उसने अपने शिष्यन को उपदेश
किया और उन्हें कहा कि मनुष्य का पुत्र मनुष्यन के
हाथन में सौंपा जाता है और वे उसको मार डालेंगे और
३२ वुह मरने के पीछे तीसरे दिन फेर उठेगा। परंतु वे यह
३३ बचन न समझे और उसे पूछने को डरे। फेर वुह कफरनाहूम
में आया और घर में पहुंचके उसने उन्हें पूछा कि तुम
३४ आपस में पंथ के बिषे क्या चरचा करते थे। परंतु वे चुप रहे
क्योंकि वे मार्ग के बिषे आपस में चरचा करते थे कि सब से
३५ बड़ा कौन है। और उसने बैठकर उन बारह को बुलाया
और उन्हें कहा कि जो कोई मनुष्य चाहे कि पहिला होय
३६ सब से पीछे और सब का दास होगा। और उसने एक
बालक को लेकर उन्हन के मध्य में बैठाया और जब उसने
३७ उसे गोद में लिया उसने उन्हें कहा। जो कोई मेरे नाम
से इन बालकन में से एक को ग्रहण करे मुझे ग्रहण करता
है और जो कोई मुझ को ग्रहण करे मुझे नहीं परंतु उसे
३८ जिसने मुझे भेजा ग्रहण करता है। तब यूहन्ना उसको
उत्तर देके कहने लगा कि हे उपदेशक हमने एक को तेरे
नाम से देवन को दूर करते देखा और वुह हमारे संग नहीं
आता और हमने उसे बर्जित किया क्योंकि वुह हमारे पीछे
३९ न आया। तब ईसा ने कहा कि उसे मत बर्जो क्योंकि
कोई मनुष्य नहीं है जो मेरे नाम से आश्चर्य कर्म करके

४० मेरी अवस्था में निंदित बचन कहि सके। क्योंकि वुह
४१ जो हमारा द्रोही नहीं हमारा संगी है। पर जो कोई एक
कटोरा जल मेरे नाम से तुम्हें पीने को देगा इस कारण कि
तुम मसीह के हो मैं तुम से सत्य कहता हों कि वुह
४२ अपना फल न गंवायेगा। और जो कोई इन छोटों में से
एक को जो मुझ पर बिश्वास रखता है ठोकर खिलावे उसके
कारण अति भला था कि उसके गले में एक चक्की का पाट
४३ लटकाया जाता और वुह समुद्र में फेंका जाता। और जो
तेरा हाथ तुझे ठोकर खिलावे उसे काट डाल यह तेरे कारण
अति भला है कि टुंडा जीवन में प्रवेश करना कि दो हाथ
रखते हुए नरक में उस अग्नि के बिषे जो कधी नहीं
४४ बुझती डाला जावे। जहां उन्हन का कीड़ा नहीं मरता
४५ और अग्नि नहीं बुझती। और जो तेरा पांव तुझे ठोकर
खिलावे उसे काट डाल तेरे कारण अति भला है कि लंगड़ा
जीवन में प्रवेश करना कि दो पांव रखते हुए नरक में उस
४६ अग्नि के बिषे जो कधी नहीं बुझेगी डाला जावे। जहां
उन्हन का कीड़ा नहीं मरता और अग्नि नहीं बुझती।
४७ और जो तेरी आंख तुझे ठोकर खिलावे उसे बाहर निकाल
डाल कि ईश्वर के राज्य में काना प्रवेश करना यह तेरे
कारण बहुत अच्छा है कि दो आंख रखते हुए नरक के
४८ अग्नि में डाला जावे। जहां उन्हन का कीड़ा नहीं मरता
४९ और अग्नि नहीं बुझती। क्योंकि हरएक में अग्नि स्वादित

होगा और समस्त यज्ञ लोन से लोना किया जायगा। ५० लोन अच्छा है परंतु जो लोन अपने स्वाद को खोवे तो तुम उसको किससे स्वादित करोगे आप में लोन रखो और आपस में मेल करो।

१० दसवां पर्ब्ब

१ फिर वुह वहां से उठकर यर्दन के उस पार यहूदिया के सिवाने में आया और लोग उसके संग फेर एकट्ठे हुए और वुह अपने व्यवहार के समान उन्हन को उपदेश करने लगा। २ तब फरीसिअन ने उसके निकट आकर परीक्षा के कारण उससे पूछा क्या उचित है कि मनुष्य अपनी स्त्री को त्याग करे। ३ उसने उत्तर देके उन्हें कहा कि मूसा ने तुम्हें क्या आज्ञा किई। ४ वे बोले कि मूसा ने कहा कि त्याग पत्र लिख देवें और अलग करें। ५ तब ईसा ने उत्तर देके उन्हें कहा कि उसने तुम्हारे अंतःकरण की कठोरता से तुम्हारे कारण यह व्यवहार बांधा। ६ परंतु सृष्टि के आरंभ से ईश्वर ने उन्हें नर और नारी उत्पन्न किया। ७ इस कारण मनुष्य अपने माता पिता को छोड़ेगा और अपनी स्त्री से मिला रहेगा। ८ और वे दोनों एक देह होंगे सो वे अब दो नहीं परंतु एक देह हैं। ९ इस लिये जिसको ईश्वर ने मिलाया है मनुष्य अलग न करे। १० और घर में उसके शिष्यन ने वही बात फेर उसे पूछा। ११ तब उसने उन्हें कहा जो कोई अपनी

स्त्री को त्यागे और दूसरी से ब्याह करे वुह उसके बिषय
१२ में ब्यभिचार करता है। और जो स्त्री अपने स्वामी को
छोड़े और दूसरे से बिवाह करे वुह ब्यभिचार करती है।
१३ फेर वे उसके समीप बालकन को लाये कि वुह उन्हें छूवे
१४ और शिष्यन ने लावनेवालन को डांटा। परंतु ईसा देखकर
उदास हुआ और उनको बोला कि बालकन को मेरे समीप
आवने देओ और उन्हें मत बरजो क्योंकि ईश्वर का राज्य
१५ ऐसेन का है। मैं तुम्हन से सत्य कहता हों जो कोई छोटे
बालक के समान ईश्वर के राज्य को ग्रहण न करे वुह उस में
१६ प्रवेश न करेगा। और उसने उन्हें गोद में लिया और
१७ उन पर हाथ रखके उन्हें आशीर्बाद दिया। और जब वुह
मार्ग में जाता था एक मनुष्य दौड़ा आया और उसके आगे
घुटना टेकके उससे पूछा कि हे उत्तम गुरु मैं क्या करूं कि
१८ अनंत जीवन का अधिकारी होों। तब ईसा ने उसको कहा
तू मुझे क्यों उत्तम कहता है उत्तम कोई नहीं परंतु एक
१९ ईश्वर। तू आज्ञा को जानता है ब्यभिचार मत कर खून मत
कर चोरी मत कर झूठी साखी मत दे किसी को मत ठग अपने
२० माता पिता का सन्मान कर। तब उसने उत्तर देके उसको
कहा कि हे गुरु यह समस्त मैंने अपने छोटपन से पालन
२१ किया है। तब ईसा ने उसे देख के उस पर प्रेम किया
और उसको कहा कि तुझे एक कार्य अवश्य है चला जा जो
कुछ तेरे हैं बेंच और कंगालन को दे और तू स्वर्ग में धन

२२ पावेगा। और क्रूस उठाके मेरे पीछे चला आ और वुह उस बात से उदास होकर चलागया क्योंकि उसके बक्तत
२३ धन था। तब ईसा ने चारों ओर देखके अपने शिष्यन को कहा कि उनको जो धनी हैं स्वर्ग के राज्य में प्रवेश करना
२४ कैसही कठिन है। तब शिष्यन उसके बचन से बिस्मित क्रूऐ परंतु ईसा ने फेर उत्तर देके उन्हन को कहा कि हे लड़के उसके कारण जो धन पर आसा रखते हैं ईश्वर के
२५ राज्य में प्रवेश करना कैसा कठिन है। कि सूई के छेद से ऊंट का जाना अति सुगम है कि ऐक धनमान ईश्वर के
२६ राज्य में प्रवेश करे। और वे बेपरिमाण आश्चर्य होके
२७ आपस में कहने लगे तो कौन त्राण पासकता है। ईसा ने उन पर दृष्टि करके कहा कि मनुष्य के समीप अनहोना है परंतु ईश्वर के निकट नहीं क्योंकि ईश्वर से सब कुछ हो
२८ सकता है। तब पतरस उसको कहने लगा कि देख हमने
२९ समस्त छोड़े और तेरे पीछे चले आये। तब ईसा ने उत्तर देके कहा मैं तुम से सत्य कहता हों कि ऐसा कोई मनुष्य नहीं जिसने घर अथवा भाई अथवा बहिन अथवा माता अथवा पिता अथवा स्त्री अथवा पुत्रन अथवा खेतन को मेरे
३० और मंगल समाचार के कारण छोड़ा है। परंतु कि वुह सौ गुना अब इस समय में घर और भाइयन और बहिनें और माता और बालकन और खेतन को दुखन के संग और
३१ आवनिहार जगत में अनंत जीवन पावेगा। परंतु बक्ततेरे

३२ अगिले पिछले और पिछले अगिले होंगे। और वे मार्ग में यिरोशलीम को जाते थे और ईसा उनके आगे चलता था और वे विस्मित हुए और डरते हुए पीछे पीछे आते थे और उसने फेर उन बारह को लिया और अपने पर जो

३३ होनहार था उनको कहने लगा। कि देखो हम यिरोशलीम को जाते हैं और मनुष्य का पुत्र प्रधान याजकन और अध्यापकन को सौंपा जायगा और वे उसको मार डालने की आज्ञा देंगे और उसको अन्य देशिअन को सौंपेंगे।

३४ और वे उसपर ठट्ठा करेंगे और उसको कोड़े मारेंगे और उस पर थूकेंगे और उसे मार डालेंगे और वुह तीसरे दिन

३५ फेर उठेगा। तब जबदी के दोनो पुत्र याकूब और यूहन्ना उसपास आके कहने लगे कि हे गुरु हम चाहते हैं कि जो

३६ कुछ हमारी इच्छा हे तू हमारे कारण करदे। तब उसने उन्हें कहा कि तुम क्या चाहते हो कि मैं तुम्हारे कारण करूं।

३७ वे उसे बोले कि हमारे कारण यह कर दे कि हम एक तेरे दहिने हाथ और दूसरा तेरे बाएं हाथ तेरे ऐश्वर्य में बैठें।

३८ तब ईसा ने उन्हें कहा तुम नहीं जानते कि तुम क्या मांगते हो क्या जिस कटोरे से मैं पीता हों तुम उससे पी सकते हो और

३९ जिस स्नान से मैं स्नान पाता हों स्नान पासकते हो। तब वे उसे बोले कि हम सकते हैं तब ईसा ने उन्हें कहा कि तुम ठीक उस कटोरे से जिससे मैं पीता हों पीओगे और

४० जिस स्नान से मैं स्नान पाता हों तुम स्नान पाओगे। परंतु

मेरे दाहिने हाथ और मेरे बाऐं हाथ बैठना मेरे देने में
४१ नहीं परंतु जिनके कारण ठहराया गया है। और जब
दसोंने हुना वे याकूब और यूहन्ना से अति क्रोधी हुऐ।
४२ तब ईसा ने उन्हें समीप बुलाके कहा तुम जानते हो कि वे
जो अन्य देशिअन के प्रधान हैं उनपर प्रभुता करते हैं और
४३ उनके बड़े लोग उनपर पराक्रम करते हैं। परंतु तुम में ऐसा
न होगा परंतु जो कोई तुम में बड़ा होने की इच्छा रखे
४४ तुम्हारा सेवक होगा। और जो कोई तुम में मुखिआ होने
४५ की इच्छा रखे वुह सब का सेवक होगा। कि मनुष्य का
पुत्र भी सेवा करवाने को नहीं आया परंतु सेवा करने को
और बहुतेरन के कारण अपने प्राण को बदला देने आया
४६ है। और वे अरीहा में आये और जब वुह और उसके शिष्य
और ऐक बड़ी मंडली अरीहा से निकली तिमी का पुत्र
बरतिमी अंधा मार्ग के किनारे पर बैठ के भीख मांगता था।
४७ और जब उसने सुना कि वुह नासरः का ईसा है वुह
चिल्लाके कहनेलगा कि हे दाऊद के पुत्र ईसा मुझ पर दया
४८ कर। और बहुतेरन ने उसको घुड़क के कहा कि चुप रह
परंतु वुह अधिक चिल्लानेलगा कि हे दाऊद के पुत्र मुझ पर
४९ दया कर। ईसा ने खड़ा होके आज्ञा किई कि उसे बुलावे
तब उन्हन ने उस अंधे मनुष्य को बुलाया और उसको कहा
५० कि सावधान हो उठ वुह तुझे बुलाता है। और वुह
अपने वस्त्र को फेंकते हुऐ उठा और ईसा के समीप आया।

५१ तब ईसा ने उत्तर दिया और उसको कहा तू क्या चाहता है कि मैं तेरे लिये करूं उस अंधे मनुष्य ने उसको कहा कि हे
५२ प्रभु मैं अपनी दृष्टि पाओं। और ईसा ने उसको कहा कि चलाजा तेरे बिश्वास ने तुझे चंगा किया और तुरंत उसने अपनी दृष्टि पाई और मार्ग में ईसा के पीछे होलिया।

११ ग्यारहवां पर्ब्ब

१ और जब वे यिरोशलीम के निकट जलपाई के पहाड़ के समीप बैतफजा और बैतीना में आये उसने अपने शिष्यन में
२ से दो को भेजा। और उन्हें कहा कि उस गांव में जो तुम्हारे सन्मुख है जाओ और तुरंत उसमें प्रबेश करके एक बांधा हुआ बछेरा पाओगे जिस पर कोई मनुष्य नहीं चढ़ा उसे खोल
३ कर ले आओ। और जो कोई मनुष्य तुम्हें कहे कि तुम ऐसा क्यों करते हो तुम कहिओ कि प्रभु को उसका प्रयोजन
४ है और वुह तुरंत उसे भेजेगा। तब वे गये और उस बछेरे को द्वार के समीप बाहर एक स्थान में जहां दो मार्ग मिलता
५ था पाये और वे उसे खोले। और उन्हन में से कितनन ने जो वहां खड़े थे उन्हन को कहा कि तुम क्या करते हो कि
६ बछेरे को खोलते हो। तब वे उन्हन को जैसा कि ईसा ने
७ आज्ञा किई थी बोले और वे उनको जाने दिये। तब वे उस बछेरे को ईसा पास लाये और अपने बस्त्रन को उस पर
८ बिछाये और वुह उस पर चढ़ बैठा। और बहुतन ने

अपने बस्त्रन को मार्ग में बिछाये अरु औरन ने बृक्षन की
९ डारें काटीं और पंथ में बिथराईं। और वे जो आगे पाछे
जाते थे पुकार के कहने लगे कि होशाना आशीर्बाद उस
१० पर जो प्रभु के नाम से आता है। हमारे पिता दाऊद के
राज्य पर जो प्रभु के नाम से आता है आशीर्बाद अत्यंत
११ ऊंचे में होशाना। और ईसा यिरोशलीम में प्रबेश करके
मंदिर में गया और जब उसने चारों ओर समस्त बस्तु पर
दृष्टि किई और अब संध्याकाल हुआ वुह बारहों के संग
१२ बैतनिया को गया। और दूसरे दिन जब वे बैतनिया से
१३ निकले वुह भूखा हुआ। और वुह एक गूलर का बृक्ष
पत्ते से भरा हुआ दूर से देखकर आया क्या जाने कि वुह
उस पर कुछ पावे परंतु उसने उसके समीप आके केवल पत्तन
१४ के कुछ न पाया क्यों कि गूलर का समय न था। तब ईसा
ने उत्तर देके उसे कहा कि अब से अंत्य लों तेरा फल कोई
१५ मनुष्य न खावे और उसके शिष्यन ने सुना। और वे
यिरोशलीम में आये और ईसा ने मंदिर में प्रबेश किया
और उन्हें जो मंदिर में कीनते और बेंचते थे बाहर
निकालने लगा और सुरटिअन के पटरन को और कबूतर
१६ बेचनहारन के आसनन को उलट दियां। और किसी मनुष्य
१७ को न छोड़ा कि मंदिर में होके पात्रन को ले जाय। और
उसने उन्हन को उपदेश करके कहा क्या यह नहीं लिखा
है कि मेरा घर समस्त लोगन के कारण प्रार्थना का घर

कहावेगा परंतु तुम्हन ने उसे चोरन की मांद बनाई।
१८ तब अध्यापकन और प्रधान याजकन ने सुनकर सोच किया कि उसे किस प्रकास से नाश करें क्योंकि वे उसे डरते थे इस
१९ कारण कि समस्त लोग उसके उपदेश से बिस्मित हुए थे। और
२० जब सांझ हुई वुह नगर से बाहर गया। और प्रातःकाल में जो वे जाते थे उन्हन ने उस गूलर के बृक्ष को जड़ से सूखा
२१ देखा। और पतरस ने स्मरण करके उसको कहा कि हे गुरु देख यह गूलर का बृक्ष जिसे आप ने श्राप दिया सूख गया है।
२२ तब ईसा ने उत्तर देके उन्हें कहा कि ईश्वर पर बिश्वास
२३ रखो। क्योंकि मैं तुम्हन से सत्य कहता हों कि जो कोई इस पहाड़ को कहे कि तू टहल जा और समुद्र में गिर पड़ और अपने मन में संदेह न करे परंतु प्रतीति लावे कि जो वुह कहता है हो जायगा जो कुछ वुह कहेगा पावेगा।
२४ इस कारण मैं तुम्हन से कहता हों कि प्रार्थना में जो कुछ तुम मांगोगे बिश्वास करो कि तुम्हें मिलेगा और तुम पाओगे।
२५ और जब तुम प्रार्थना करने को खड़े होओ जो कोई तुम्हारा अपराधी हो क्षमा करो कि तुम्हारा पिता भी जो स्वर्ग में है
२६ तुम्हारे अपराधन को क्षमा करे। परंतु जो तुम क्षमा न करोगे तुम्हारा पिता भी जो स्वर्ग में है तुम्हारे अपराधन को
२७ क्षमा न करेगा। और वे फेर यिरोशलीम में आये और जब वुह मंदिर में फिरता था प्रधान याजकन और
२८ अध्यापकन और प्राचीनन उसके समीप आये। और उसे

कहा तू किस परक्रम से यह कर्म करता है और तुझे ये
१९ कर्म करने को किसने परक्रम दिया। तब ईसा ने उत्तर
देके उन्हन को कहा कि मैं तुम्हन से भी ऐक बात पूछता
हों मुझ से कहो तो मैं तुम्हें कहोंगा कि मैं किस परक्रम
३० से यह कर्म करता हों। यहिया का स्नान स्वर्ग से था कि
३१ मनुष्यन से मुझे उत्तर देओ। तब वे यह कहिके आपस
में बिचारने लगे जों हम कहें कि स्वर्ग से तो वुह कहेगा
३२ कि फेर तुम्हन ने उसका बिश्वास क्यों न किया। परंतु जों
हम कहें कि मनुष्यन से हम लोगन से डरते हैं क्योंकि
३३ सब यहिया को ठीक आगमज्ञानी जानते थे। तब उन्हन
ने उत्तर देके ईसा को कहा कि हम नहीं कह सकते और
ईसा ने उत्तर देके उन्हें कहा कि मैं भी तुम से नहीं कहता
कि मैं किस परक्रम से यह कर्म करता हों।

१२ बारहवां पर्ब्ब

१ और वुह फेर उन्हन को दृष्टांतन में कहने लगा कि ऐक
मनुष्य ने दाख का खेत लगाया और आसपास बाड़ा बांधा
और कोल्हू खोदा और गढ़ बनाया और मालिअन को ठीका
२ करके परदेश गया। और समय में उसने ऐक सेवक को
मालिअन के समीप भेजा कि वुह मालिअन से दाख के खेत
३ का फल पावे। और उन्हन ने उसको पकड़ के मारा और
४ खाली हाथ फेर दिया। और फेर उसने उन्हन के पास दूसरे

सेवक को भेजा और उन्हन ने उसको पत्थरन से मारा और सिर
५ को फोड़ा और अपमान करके फेर दिया। और फेर उसने
एक दूसरे को भेजा और उन्हन ने उसको मारडाला अरु
६ और बहुतेरन को मारे और कितनन को वध किये। अब
उसका एकही अति प्रिय पुत्र रहगया उसने अंत्य में उसको
भी यह कहके उनके समीप भेजा कि वे मेरे पुत्र का आदर
७ करेंगे। परंतु उन मालिअन ने आपस में कहा कि यह
अधिकारी है आओ उसको मारडालें और अधिकार हमारा
८ हो जायगा। और उन्हन ने उसको पकड़के मारडाला और
९ दाख के खेत से बाहर फेंक दिया। अब इस कारण दाख
के खेत का स्वामी क्या करेगा वुह आवेगा और उन मालिअन
१० को नाश करेगा और दाख का खेत औरन को देगा। और
क्या यह जो लिखा है तुम्हन ने नहीं पढ़ा वुह पत्थर
जिसको बनावनिहारन ने निकम्मा ठहराया कोने का सिरा
११ हुआ। यह ईश्वर का कार्य है और हमारी दृष्टि में
१२ आश्चर्य है। और उन्हन ने चाहा कि उसको पकड़ लेवें
परंतु लोगन से डरे क्योंकि वे जानगये कि उसने यह दृष्टांत
१३ उनके बिषय में कहा और वे उसे छोड़के चलेगये। फेर उन्हन
ने कई फरीसिअन और हीरूदीसिअन को उसके समीप
१४ भेजा कि उसको बचन में उसे पकड़ें। और जब वे आये
उन्हन ने उसको कहा कि हे उपदेशक हम जानते हैं कि
तू सत्य है और किसी मनुष्य का भय नहीं रखता क्योंकि तू

मनुष्यन का पक्ष नहीं करता परंतु ईश्वर के मार्ग को ठीक उपदेश करता है क्या कैसर को कर देना योग्य है कि नहीं।
१५ हम देवें कि न देवें परंतु उसने उनके छलको जानकर उन्हें कहा कि तुम सब मुझे क्यों परखते हो एक रुपैया मेरे पास
१६ लाओ कि मैं देखों और वे लाये। तब उसने उन्हें कहा कि यह किसकी मूर्त्ति और किसकी छाप है तब उन्हन ने
१७ उसको कहा कि कैसर की। फेर ईसा ने उत्तर देके उन्हें कहा कि जो बस्तु कैसर की है कैसर को और जो कि ईश्वर
१८ की है ईश्वर को देओ और वे उस पर बिस्मित ज़ए। तब जादूकिअन जो कहते हैं कि मृतकन का फेर जी उठना नहीं है उसके निकट आये और यह कहिके उसे पूछे।
१९ कि हे उपदेशक हमारे कारण मूसा ने लिखा कि जो किसी का भाई मरजाय और स्त्री को छोड़े और कोई बालक न हो उसका भाई उसकी स्त्री को लेय और अपने भाई के कारण
२० बंश उत्पन्न करे। अब सात भाई थे और पहिले ने स्त्री
२१ किई और निर्बंश मरगया। तब दूसरे ने उसे लिया और मरगया वुह भी कोई बंश न छोड़ गया और इसी
२२ रीति से तीसरे ने भी। और सातों ने उसे लिया और कोई
२३ बंश न छोड़ गया सब के पीछे वुह स्त्री भी मरगई। इसलिये मृत्यु से फेर जीउठने में जब वे फेर जीउठेंगे वुह उन में से किसकी स्त्री होगी क्योंकि उन सातों ने उसे ग्रहण किया था।
२४ तब ईसा ने उत्तर देके उन्हें कहा क्या तुम इस कारण नहीं

चूकते कि तुम लिखा हुआ और ईश्वर के सामर्थ्य को नहीं
२५ जानते। क्योंकि जब वे मृत्यु से फेर जीउठेंगे वे बिबाह
नहीं करते और बिवाह नहीं दिये जाते हैं परंतु दूतन के
२६ समान हैं जो स्वर्ग में हैं। और मृतकन की अवस्था में
कि बे जीउठेंगे क्या तुम्हन ने मूसा के ग्रंथ में नहीं पढ़ा कि
झाड़ी में ईश्वर उसको किस प्रकार से यह कहिके बोला कि
मैं इबराहीम का ईश्वर और इसहाक का ईश्वर और याकूब
२७ का ईश्वर। वुह मृतकन का ईश्वर नहीं परंतु जीवतन का
ईश्वर है इसकारण तुम बहुत चूक करते हो। तब
२८ अध्यापकन में से एक ने जब उन्हन को आपस में चर्चा
करते सुना और देखा कि उसने उन्हें ठीक उत्तर दिया
२९ उसको पूछा कि सब आज्ञा में पहिली कौन है। तब ईसा
ने उसे उत्तर दिया कि सबसे पहिली आज्ञा यह कि सुनो
३० हे इसराईल प्रभु हमारा ईश्वर एक प्रभु है। और तू
अपने समस्त अंतःकरण से और अपने समस्त प्राण से और
अपने समस्त मन से और अपने समस्त सामर्थ्य से प्रभु को जो
३१ तेरा ईश्वर है प्रेम कर यही पहिली आज्ञा है। और दूसरी
इसी के समान है कि तू अपने परोसी को अपने समान प्रेम
३२ कर इन्हन से और कोई बड़ी आज्ञा नहीं। तब उस
अध्यापक ने उसको कहा कि अच्छा हे उपदेशक तू ने
सत्य कहा क्योंकि एकही ईश्वर है और उसको छोड़ दूसरा
३३ कोई नहीं। और उसको समस्त अंतःकरण और समस्त

बुद्धि और समस्त प्राण और समस्त सामर्थ से प्रेम करना
और परोसी पर ऐसा प्रेम करना जैसा आप को करता है
३४ यह समस्त यज्ञ और होम से अति बड़ा है। और जब
ईसा ने देखा कि उसने बुद्धि से उत्तर दिया उसने उसको
कहा कि तू ईश्वर के राज्य से दूर नहीं और उसके पीछे
३५ कोई मनुष्य का सामर्थ न ऊआ कि उसे पूछे। और जब
ईसा मंदिर में उपदेश करता था उसने उत्तर देके कहा कि
अध्यापकन किस रीति से कहते हैं कि मसीह दाऊद का
३६ पुत्र है। क्योंकि दाऊद ने आपही धर्मात्मा के कहे से कहा
कि परमेश्वर ने मेरे प्रभु से कहा कि तू मेरे दाहिने हाथ
बैठ जब लों मैं तेरे शत्रुन को तेरे पांव तले का पीढ़ा करों।
३७ सो दाऊद तो आप ही उसको प्रभु कहता है फेर वुह उसका
पुत्र किस रीति से है तब बड़ी मंडली आनंद से सुनती थी।
३८ और उसने अपने उपदेश में उन्हें कहा कि अध्यापकन
से सचेत रहो जो लंबे बस्त्र पहिनके चलने की और हाट
३९ में नमस्कारन की। और मंडलिअन में उत्तम स्थानन पर
और भोजन के पांती में प्रधान आसनन की इच्छा रखते
४० हैं। जो बिधवा के घरन को निगलते हैं और छल से
४१ प्रार्थना को बढ़ावते हैं उनको बऊत बड़ा दंड होगा। फेर
ईसा भंडार के सन्मुख बैठकर देख रहा था कि लोग भंडार
में रूपैया किस प्रकार से डालते हैं और बऊतेरे जो धनमान
४२ थे बऊत डालते थे। तब ऐक कंगाल बिधवा ने दो छदाम

४३ जो भिक्षुके एक अधेला होता है डाला। और उसने अपने शिष्यन को बुलाके उन्हें कहा में तुम से सत्य कहता हों कि जिन्हन ने भंडार में डाला है इस कंगाल बिधवा ने
४४ उन सब से अधिक डाला। क्योंकि सबन ने अपने अधिकाई से डाला परंतु इसने अपने दरिद्रता से जो कुछ रखती थी अपना उपजीवन डाला।

१३ तेरहवां पर्ब्ब

१ और जब वुह मंदिर से बाहर जाता था उसके शिष्यन में से एक ने उसको कहा कि हे उपदेशक देख ये किस भांति
२ के पत्थरन और कैसी जोड़ाई हैं। तब ईसा ने उत्तर दिया और कहा कि तू यह बड़ी जोड़ाई देखता है यहां एक
३ पत्थर दूसरे पर न छूटेगा जो गिराया न जाय। और जब वुह जलपाई के पहाड़ पर मंदिर के सन्मुख बैठा था पतरस और याकूब और यूहन्ना और अंद्रियास ने एकांत में उसे पूछा।
४ हम से कहिये कि ये सब कुछ कब होगा और जब कि
५ यह समाप्त पूरा हो क्या चिन्ह है। तब ईसा उत्तर देकर उन्हें कहने लगा कि चौकस रहो कि तुम्हें कोई छल न
६ देवे। क्योंकि बहुतेरे मेरे नाम से आवेंगे और कहेंगे कि
७ मैं हों और बहुतेरन को भरमावेंगे। और जब तुम युद्ध और युद्ध का समाचार सुनोगे व्याकुल मत होइयो क्योंकि उनका
८ होना अवश्य है परंतु अभी अंत्य नहीं है। क्योंकि लोग

पर लोग और राज्य पर राज्य चढ़ि आवेंगे और अनेक स्थान
में भूंचाल होंगे और आकाल और घबराहट होंगे ये दुखन
९ के आरंभ हैं। परंतु तुम सब सोचेत रहो क्योंकि वे तुम्हें
सभा में सौंपेंगे और तुम मंडलिअन में मारे जाओगे कि
१० उन्हन पर साक्षी होय। और अवश्य है कि पहिले मंगल
११ समाचार समस्त लोगन को सुनाया जाय। परंतु जब वे ले
जायें और तुम्हें सौंपें आगे से चिंता मत करो कि हम क्या
कहेंगे न आगे से बिचार करो परंतु जो कुछ तुम्हें उस घड़ी
दिया जाय वही कहियो क्योंकि तुम नहीं जो कहते हो
१२ परंतु धर्मात्मा। और भाई भाई को और पिता पुत्र को मार
डालने के लिये पकड़वायेगा और लड़के माता पिता के बिरोध
१३ में उठेंगे और उन्हन को मारडलवावेंगे। और मेरे नाम के
कारण सब तुम्हारे शत्रु होंगे परंतु वुह जो अंत्य लों सहेगा
१४ वही उद्धार पावेगा। परंतु जब तुम उजार करनहारी घिन
की बस्तु को देखोगे जिसके बिषय में दानियाल आगमज्ञानी
ने कहा है जहां उसको योग्य नहीं खड़ा है वुह जो पढ़ता
है समझे तब वे जो यहूदिया में होंगे पहाड़न को भागें।
१५ और वुह जो कोठे पर होगा घर में न उतरे कि पैठके
१६ अपने घर से कोई बस्तु निकाले। और वुह जो खेत में
१७ होगा पीछे न फिरे कि अपने बस्त्र को उठालेवे। परंतु
हाय उन्हन पर जो उन दिनन में गर्भिणी और उन पर जो
१८ दूध पिलावनेवालियां हों। और तुम प्रार्थना करो कि तुम्हारा

१९ मानना जाड़े में न हो। क्योंकि उन दिनन में ऐसा कष्ट होगा जैसा कि आरंभ से जो ईश्वर ने उत्पन्न किया अब
२० लों न हुआ और न होगा। और जो ईश्वर उन दिनन को न घटावते तो कोई शरीर उद्धार न पावता परंतु चुने हुऐ लोगन के कारण जिन्हन को उसने छांट रखा था उसने उन
२१ दिनन को घटाया। और उस समय जो कोई मनुष्य तुम्हें कहे कि देखो मसीह यहां अथवा देखो वहां है प्रतीति मत
२२ करियो। क्योंकि झूठे मसीह और झूठे आगमज्ञानी निकलेंगे और लक्षण और आश्चर्य दिखावेंगे कि जो होनहार
२३ होता तो चुने हुऐ लोगन को भी भरमावते। परंतु तुम सोचेत
२४ रहो देखो मैं ने तुम्हें आगे से समस्त कहि दिया है। पर उन दिनन में उस कष्ट के पीछे सूर्य अंधकार होगा और
२५ चंद्रमा अपनी ज्योति न देगा। और स्वर्ग से तारे गिरेंगे
२६ और स्वर्ग की दृढ़ता हिलजायेंगी। और तब वे मनुष्य के पुत्र को मेघन पर बड़े पराक्रम और ऐश्वर्य से आवते देखेंगे।
२७ और तब वुह अपने दूतन को भेजेगा और अपने चुने हुऐन को चारों पवन से पृथिवी के सिवाने से स्वर्ग के सिवाने लों
२८ एकट्ठे करेगा। अब गूलर के वृक्ष से एक दृष्टांत सीखो जब उसकी डाली कोमल है और पत्ते निकलते हैं तुम जानते हो
२९ कि गरमी निकट है। सो तुम इसी भांति से जब देखो कि यह बस्तें आन पंहुचीं जानो कि वुह निकट है अर्थात
३० द्वारन पर। मैं तुम से सत्य कहता हों कि यह पीढ़ी बीत

३१ न जायगी जब लों यह सब कुछ न होले। स्वर्ग और पृथिवी
३२ टल जायेंगी परंतु मेरे बचन न टलेंगे। परंतु उस दिन और
उस घड़ी को कोई मनुष्य नहीं जानता न दूतन भी जो स्वर्ग में
३३ हैं और न पुत्र केवल पिता। तुम सोचेत रहो जागो और
३४ प्रार्थना करो क्योंकि तुम नहीं जानते कि समय कब है। जैसे
एक मनुष्य ने दूर जाते हुए अपने घर को छोड़ा और अपने
सेवकन को पराक्रम दिया और एक एक मनुष्य को अपना
३५ कार्य और द्वारपाल को आज्ञा दिई कि जागता रहे। इस
कारण तुम जागते रहो क्योंकि तुम नहीं जानते कि घर का
स्वामी कब आवता है सांझ को अथवा आधी रात को अथवा
३६ कुक्कुट बोलते हुए अथवा प्रातःकाल को। न होवे कि वुह
३७ अचानक आके तुम्हें सोवते पावे। और जो मैं तुम से
कहता हों मैं सब से कहता हों जागते रहो।

१४ चैादहवां पर्ब्ब

१ दो दिन के पीछे अखमीरी रोटी का पर्ब्ब था और प्रधान याजकन
और अध्यापकन बिचार कर रहे थे कि उसे किस भांति छल
२ से पकड़ लेवें और मारडालें। परंतु उन्हन ने कहा कि
३ पर्ब्ब में नहीं न होवे कि लोगन में हुल्लर होवे। और जब
वुह बैतऐना में कोढ़ी शमऊन के घर में कुछ खाने बैठा एक
स्त्री बहुत मोल का सुगंध तेल श्वेत पत्थर के डिब्बा में भर
के लाई और उसने उस डिब्बा को तोड़ा और उसके सिर पर

४ डाल दिया। और वहां कितने थे जो अपने मन में क्रोधित होके बोले कि इस सुगंध तेल का व्यर्थ उठान किस कारण
५ हुआ। कि वुह तीन सौ घरनी से अधिक को बेंचा जाता और कंगालन को दिया जाता और वे उस पर कुड़कुड़ाने लगे।
६ पर ईसा ने कहा कि उसे रहने दो तुम उसको क्यों दुख
७ देते हो उसने मुझ पर एक उत्तम कार्य किया है। क्योंकि तुम कंगालन को सर्वदा अपने संग पाओगे और जब कभी तुम चाहोगे उन पर भला कर सकोगे परंतु मुझे तुम सर्वदा
८ न पाओगे। जो कुछ वुह कर सकी सो किई उसने मेरे गाड़ने के कारण आगे से आके मेरी देह पर सुगंध तेल लगाया।
९ मैं तुम से सत्य कहता हों कि समस्त जगत में जहां कहीं यह मंगल समाचार सुनाया जायगा यह भी जो उसने किया
१० है उसके स्मरण के कारण कहा जायगा। तब यहूदा अस्करयूती उनबारह में से एक प्रधान याजकन के समीप
११ गया कि उसे उन्हन को पकड़वा देवे। और जब उन्हन ने सुना वे आनंद हुए और उसे रुपैयें देने को ठहराये तब वुह सोच में रहा कि उसे किस प्रकार से दाव में पकड़वा देवे।
१२ और अखमीरी रोटी के पहिले दिन जब वे फसः को बलिदान करते थे उसके शिष्यन ने उसे कहा कि तू कहां चाहता है
१३ कि हम जाके बनावें कि तू फसः को खावे। तब उसने अपने शिष्यन में से दोको भेजा और उन्हें कहा तुम नगर में प्रवेश करो और तुम को एक मनुष्य जल का घड़ा उठाये

१४ उसे मिलेगा उसके पीछे जाओ। और जहां कहीं वुह प्रवेश करे उस घर के स्वामी को कहो कि उपदेशक ने कहा है कि वुह पाहुनशाला जहां मैं अपने शिष्यन के संग फसः
१५ खाऊं कहां है। और वुह एक बड़ी उपरौटा कोठरी संवारी सुधारी हुई तुम्हें दिखावेगा वहीं हमारे कारण ठीक करो।
१६ तब उसके शिष्य चलेगये और नगर में प्रवेश करके जैसा उसने कहा था वैसही पाये और उन्हन ने फसः को
१७ बनाया। और वुह सांझ को उन बारहन के संग आया।
१८ और जब वे बैठे और खाने लगे ईसा ने कहा कि मैं तुम्हन से सत्य कहता हों कि एक तुम में से जो मेरे संग खाता
१९ है मुझे पकड़वावेगा। तब वे कुढ़ने लगे और एक एक करके उसको कहनेलगा क्या मैं हों और दूसरा बोला क्या मैं हों।
२० उसने उत्तर देके उन्हें कहा कि बारह में से एक जो मेरे
२१ संग थाली में हाथ डुबोता है। मनुष्य का पुत्र जैसा कि उसके बिषय में लिखा है जाता है ठीक परंतु हाय उस मनुष्य पर जिससे मनुष्य का पुत्र पकड़वाया जायगा उस मनुष्य के कारण यह अच्छा था कि वुह कभी उत्पन्न न होता।
२२ और जब वे खाते थे ईसा ने रोटी को लिया और आशीष देके तोड़ा और यह कहकर उन्हें दिया कि लेओ खाओ
२३ यह मेरी देह है। फेर उसने कटोरा लिया और धन्य कहिकर उसने उन्हन को दिया और वे सब उससे पीये।
२४ तब उसने उन्हें कहा कि यह नये नियम का मेरा रुधिर

२५ है ओ बहुतेरन के कारण बहाया जाता है। मैं तुम से सत्य कहता हों कि मैं दाख के रस को फेर न पीओंगा उस २६ दिन लों कि मैं ईश्वर के राज्य में उसे नया पीओं। और जब वे एक भजन गाके वे बाहर जलपाई के पहाड़ पर २७ गये। तब ईसा ने उन्हें कहा कि तुम सब आज रात मेरे बिषय में ठोकर खाओगे क्योंकि लिखा है कि मैं गड़ेरिया को २८ मारोंगा और भेड़ें छिन्नभिन्न हो जायेंगी। परंतु मैं अपने जी उठने के पीछे तुम से आगे जलील को जाऊंगा। २९ तब पतरस ने उसको कहा यद्यपि सब ठोकर खावें तद्यपि ३० मैं नहीं। तब ईसा ने उसको कहा मैं तुझ से सत्य कहता हों कि आज के दिन अर्थात इसी रात में कुक्कुट के शब्द ३१ करने से आगे तू तीन बार मुझ से मुकर जायगा। परंतु वुह और अति दृढ़ता से कहने लगा कि यद्यपि तेरे संग मेरा मरना होय मैं किसी भांति से तुझ से न मुकरोंगा उन ३२ सबन ने भी इसी रीति से कहा। तब वे एक स्थान में जिसका नाम गेतसमन था आये और उसने अपने शिष्यन को कहा कि जब लों मैं प्रार्थना करों तुम यहां बैठो। ३३ तब वुह अपने संग पतरस और याकूब और यूहन्ना को ले ३४ कर बहुत घबराने और अति कुढ़ने लगा। और उन्हें कहा कि मेरा प्राण मरने लों अति दुःखित है तुम यहां ठहरो ३५ और जागते रहो। तब वुह थोड़ा आगे बढ़के भूमि पर गिरा और प्रार्थना किया कि जो यह होनहार होय तो

३६ यह घड़ी मुह्ह से टल जाय। और कहा कि हे आबा पिता सब कुछ तेरे बश में है यह कठोर मुह्ह से ले ले तिसे पर भी वुह नहीं जो मैं चाहता हों परंतु वुह जो तू
३७ चाहता है। तब वुह आया और उन्हें सोवते पाया और पतरस को बोला कि हे शमऊन तू सोता है क्या तू एक
३८ घड़ी न जाग सका। तुम सब जागते रहो और प्रार्थना करो ऐसा नहो कि तुम परीक्षा में पड़ो आत्मा तो तैयार है
३९ ठीक परंतु शरीर निर्बल है। और वुह फिर गया और
४० प्रार्थना में वही बचन बोला। और जब वुह फिर आया उसने उन्हन को फिर सोवते पाया क्योंकि उनकी आंखें भारी
४१ थीं और वे न जानते थे कि उसे क्या उत्तर देवें। फिर वुह तीसरे बार आके उनसे बोला कि अब सोवते रहो और बिश्राम करो बस है समय आन पहुंचा देखो मनुष्य का पुत्र
४२ पापिअन के हाथ में पकड़वाया जाता है। उठो हम जावें
४३ देखो वुह जो मुह्हे पकड़वाता है निकट है। और तुरंत जब वुह कहि रहा था एक उन बारह में से यहूदा और उसके संग प्रधान याजकन और अध्यापकन और प्राचीनन के ओर से एक बड़ी मंडली खड्ग और लाठियां लेके आई।
४४ और वुह जिसने उसे पकड़वाया था उन्हन को यह कहके बता दिया कि जिस किसी को मैं चूमों वुह वही है उसे
४५ पकड़ो और सैाचेती से ले जाओ। और ज्योंही वे आपहुंचे वुह तुरंत उसके समीप जाकर बोला हे गुरु हे गुरु और

४६ उसका चूमा लिया। तब उन्हन ने उस पर हाथ धरके पकड़
४७ लिया। और उन में से एक ने जो वहां खड़े थे खड्ग
निकालकर प्रधान याजन के एक सेवक को मार और उस
४८ का कान उड़ा दिया। तब ईसा ने उत्तर देके उन्हें कहा
क्या तुम मुझे चोर के समान पकड़ने को खड्ग और लाठियां
४९ लेके निकले हो। मैं तो प्रति दिन तुम्हारे संग मंदिर में
उपदेश करता था और तुम्हन ने मुझे न पकड़ा परंतु अवश्य
५० है कि लिखा हुआ संपूर्ण होय। तब वे सब उसको छोड़
५१ के भाग गये। परंतु वहां एक तरुण मनुष्य उसके पीछे
चला जाता था जो सूती बस्त्र से नंगाई को ढांपा था और
५२ तरुणन ने उसे पकड़ लिया। और वुह सूती बस्त्र को
५३ छोड़कर उन से नंगा भागा। तब वे ईसा को प्रधान याजक
के समीप ले गये और उसके संग समस्त प्रधान याजकन और
५४ प्राचीनन और अध्यापकन एकट्ठे हुए थे। और पतरस
प्रधान याजक के घर लों दूर से उसके पीछे पीछे गया और
५५ वुह सेवकन के संग बैठकर आग तापता था। तब प्रधान
याजकन और समस्त सभा ईसा पर साक्षी ढूंढ़ते थे कि उस
५६ को मारडालें परंतु न पाये। यद्यपि बहुतेरन ने उस पर
झूठी साक्षी दिई तद्यपि उनकी साक्षी समान न मिली।
५७ और कई एक उठे और यह कहिके उस पर झूठी साक्षी
५८ देनेलगे। कि हमने उसे कहते सुना है कि मैं इस
मंदिर को जो हाथन से बनाया गया है ढाऊंगा और तीन

५९ दिन में एक दूसरा बिना हाथ से बनाऊंगा। परंतु तिस
६० पर भी उन की साक्षी समान न ठहरी। तब प्रधान याजक
मध्य में खड़ा ह्रुआ और यह कहिके ईसा को पूछा क्या तू
कुछ उत्तर नहीं देता ये तुझ पर क्या क्या साक्षी देते हैं।
६१ परंतु वुह चुपका रहा और कुछ उत्तर न दिया प्रधान
याजकन ने उसे फेर पूछा और कहा क्या तू मसीह उस
६२ कल्याण का पुत्र है। तब ईसा ने कहा मैं वही हों और
तुम मनुष्य के पुत्र को पराक्रम के दाहिने ओर बैठे और
६३ आकाश के मेघन में आवते देखोगे। तब प्रधान याजक ने
अपने बस्त्रन को फाड़ा और कहा कि अब हमन को और
६४ साखिअन से क्या प्रयोजन है। तुम ने यह पाषंडता सुनी
क्या सोचते हो तब उन सब ने दोष दिया कि वुह मारडालने
६५ के योग्य है। तब कितने उस पर थूकने और उसका
मुंह ढांपने और उसको घूंसा मारने लगे और उसको कहने
लगे कि आगम कह और सेवकन ने उसको हथेली से थपेड़े
६६ मारे। और जब पतरस नीचे सदन में था प्रधान याजक
६७ की एक दासी आई। और जब वुह पतरस को तापते
देखी उस पर दृष्टि करके बोली कि तू भी ईसा नासरी के
६८ संग था। परंतु वुह यह कहिके मुकर गया कि मैं नहीं
जानता और नहीं बुझता कि तू क्या कहती है तब वुह
६९ बाहर ओसारे में गया और कुक्कुट ने शब्द किया। और
एक दासी फेर उसको देखके उनसे जो खड़े थे कहनेलगी

७० कि यह उन में से है। और वुह उससे फेर मुकर गया और तनिक पिछे फेर उन्हन ने जो वहां खड़े थे पतरस को कहा कि सचमुच तू उन में से है क्योंकि तू जलील का है
७१ और तेरी बोली मिलती है। परंतु वुह श्राप देने और किरिया खानेलगा कि मैं उस मनुष्य को जिसका तुम कहते
७२ हो नहीं जानता। और दूसरे बार कुक्कुट ने शब्द किया तब पतरस ने उस बचन को जो ईसा ने उसे कहा था स्मरण किया कि कुक्कुट के दो बार शब्द करने से आगे तू तीन बार मुझ से मुकर जायगा तब वुह उसका सोच करके रोनेलगा।

१५ पंदरहवां पर्ब्ब

१ और ज्यों बिहान हुआ प्रधान याजकन ने प्राचीनन और समस्त अध्यापकन और सभा के प्रधानन के संग परामर्श कर
२ के ईसा को बांध के लेगये और पिलातूस को सौंपे। तब पिलातूस ने उसको पूछा क्या तू यहूदिअन का राजा है और उसने उत्तर देके उसको कहा तूही तो कहता है।
३ तब प्रधान याजकन उस पर बहुत से दोष देनेलगे परंतु उस
४ ने कुछ उत्तर न दिया। तब पिलातूस ने यह कहके फेर उसको पूछा कि तू कुछ उत्तर नहीं देता देख वे क्या क्या
५ कुछ साक्षी तुझ पर देते हैं। परंतु तो भी ईसा ने कुछ उत्तर न दिया यहां लों कि पिलातूस बिस्मित हुआ।
६ अब पर्ब्ब में वुह एक बंधुआ को जिसे वे चाहते थे छोड़ देता

७ था। और बरब्बास नाम का ऐक था जो उन ऊल्लर करने वालन के संग जिन्हन ने ऊल्लर में बध किया था बंधा
८ ऊआ था। तब मंडली चिल्लाके मांगने लगी जैसा कि वुह
९ उन्हन के कारण सदा करता था सो करे। परंतु पिलातूस ने उत्तर देके उन्हन को कहा क्या तुम सब चाहते हो कि
१० मैं यहूदिअन के राजा को तुम्हारे कारण छोड़ दें। क्योंकि वुह जानता था कि प्रधान याजकन ने उसे डाह से सौंप
११ दिया। परंतु प्रधान याजकन ने लोगन को उसकाया कि
१२ वुह उनके कारण बरब्बास को छोड़ने की ईच्छा करे। तब पिलातूस ने फेर उत्तर देके उन्हें कहा तो तुम क्या चाहते हो कि मैं उसको करों जिसे तुम यहूदिअन का राजा कहते
१३ हो। और वे फेर चिल्लाके बोले कि उसको क्रूस पर मारे।
१४ तब पिलातूस ने उन्हें कहा कि किस कारण उसने क्या अपराध किया वे और अत्यंत चिल्लाये कि वुह क्रूस पर
१५ मारा जाय। तब पिलातूस ने लोगन के संतोष के कारण बरब्बास को उन्हन के लिये छोड़ दिया और ईसा को छड़ी
१६ मारके सौंप दिया कि क्रूस पर मारा जाय। तब सैनन ने उसको भीतर प्रेतोरियम अर्थात बैठक में लेगये और उन्हन ने
१७ समस्त सैनन को ऐकट्ठे बुलाये। और उन्हन ने उसे बैंगनी बस्त्र पहिराया और वे कांटन का मुकुट सजके उस पर रखे।
१८ और उसको नमस्कार करने लगे कि हे यहूदिअन के राजा
१९ प्रणाम। और उन्हन ने उसके सिर पर नरकट से मारा

और उसपर थूका और घुटने टेकके उसको प्रणाम किया।
२० और जब वे उसका निंदा करचुके उन्हन ने उस बैंगनी को
उससे उतार और उसीका बस्त्र उसपर पहिनाया और उस
२१ को बाहर लेचले कि क्रूस पर मारें। और उन्हन ने एक
शमऊन करीनी को जो सिकंदर और रूफस का पिता था वुह
देश से आके उधर से जाता था पकड़ा कि उसको क्रूस को ले
२२ चले। और वे उसको गलगता स्थान में जिसका अर्थ
२३ खोपड़ी का स्थान है लाये। और उन्हन ने दाख का रस
बोल मिलाके उसे पीने को दिया परंतु उसने न लिया।
२४ और जब उन्हन ने उसे क्रूस पर खैंचा वे उसके बस्त्रन को
भाग करके उन्हन पर चिठ्ठी डाली कि एक एक मनुष्य कौन
२५ सा लेय। और वुह तीसरी घड़ी थी जब उन्हन ने उसको
२६ क्रूस पर खैंचा। और उसके कारण यह दोष पत्र ऊपर
२७ लिखा कि यहूदिअन का राजा। और उन्हन ने उसके
संग दो चोर को एक को दाहिने ओर दूसरे को बाएं ओर
२८ क्रूस पर खैंचा। तब वुह ग्रंथ जो कहता है कि वुह
२९ पापिअन के संग गिना गया संपूर्ण हुआ। और वे जो
उधर से जाते थे उस पर ठट्ठे किये और सिर धुनके कहते
थे कि तू जो मंदिर को ढाता है और तीन दिन में
३० बनाता है। अपने को बचा और क्रूस से उतर आ।
३१ इसी भांति से प्रधान याजकन ने भी आपस में अध्यापकन
के संग ठठ्ठा करते कहा कि वुह औरन को बचाया अपने

३२ को नहीं बचा सकता। अब मसीह ईसराईल का राजा क्रूस से उतर आवे कि हम देखें और बिश्वास लावें और वे जो उसके संग क्रूस पर खैंचे गये थे उसको दुर्बचन बाहे।
३३ और छठईं घड़ी से नवईं घड़ी लों समस्त देश में अंधकार
३४ छागया। और नवईं घड़ी में ईसा ने बड़ा शब्द करके कहा कि ऐली ऐली लमा सबक्तनी जिसका यह अर्थ है कि हे
३५ मेरे ईश्वर हे मेरे ईश्वर तू ने क्यों मुझे अकेला रखा। तब कई उन्हन में से जो समीप खड़े थे यह सुनके बोले कि देखो
३६ वुह इलियास को बुलाता है। और एक ने दौड़के बादल के टुकड़े सिरके से भरा और नरकट पर धरके पीने को दिया और कहा कि रहने दे हम देखें जो इलियास उसको
३७ उतारने को आवेगा। तब ईसा ने बड़ा शब्द करके प्राण
३८ त्याग किया। और मंदिर का परदा ऊपर से नीचे लों दो
३९ टुकड़ा होगया। और जब उस सेनापति ने जो उसके सन्मुख खड़ा था देखा कि उसने ऐसा शब्द करके प्राण त्याग किया उसने कहा कि यह मनुष्य सचमुच ईश्वर का पुत्र
४० था। वहां स्त्रीअन भी बैठी दूर से देख रहीं थीं जिन में मरियम मुजद्लो और छोटे याकूब और यूसस की माता
४१ मरियम और सालूमी थीं। वे भी जब वुह जलील में था उसके पीछे गईं और उसकी सेवा किईं और बहुत सी और
४२ स्त्रीअन थीं जो उसके संग यिरोशलीम में आईं थीं। और जब सांझ हुई इस कारण कि बनावरी थी अर्थात बिश्राम

४३ से पहिले दिन। अरमतियः का युसफ ऐक प्रतिष्ठित मंत्री जो ईश्वर के राज्य का भी बाट जोहता था आया और उसने निर्भय से पिलातूस पास जाके ईसा की लोथ मांगी।
४४ तब पिलातूस बिस्मित ऊआ कि वुह अभी मरगया और उस
४५ सेनापति को बुलाके उसको पूछा क्या अबेर से मरा है। तब
४६ उसने सेनापति से जानकर लोथ युसफ को दिया। और उसने मेहीन वस्त्र मोल लिया और उसे उतारके कपड़े में लपेटा और उसको ऐक समाधि में जो पत्थर में खोदा गया था रखा और समाधिके द्वार पर ऐक पत्थर ढुलका दिया।
४७ और मरियम मुहदली और यूसा की माता मरियम ने जहां वुह रखा गया था देख रखा।

१६ सोलहवां पर्ब्ब

१ और जब बिश्राम का दिन बीतगया मरियम मुजदली और याकूब की माता मरियम और सालूमी ने सुगंध द्रव्य मोल
२ लिया कि वे आके उस पर लगावे। और बड़े तड़के भोर को अठवारे के पहिले दिन सूर्य उदय होते वे समाधि पर
३ आईं। और वे आपस में कहनेलगीं कि हमारे कारण
४ समाधि के द्वार से पत्थर कौन ढुलकावेगा। और जब उन्हन ने दृष्टि किई तो देखा कि पत्थर ढुलकाया ऊया था
५ और वुह बऊत बड़ा था। और समाधि में प्रवेश करके उन्हन ने ऐक तरुण मनुष्य को श्वेत वस्त्र पहिने दाहिने

६ और बैठे ऊपरे देखा और वे डर गईं। तब उसने उन्हें कहा कि मत डरो तुम ईसा नासरी को जो क्रूस पर मारागया था ढूंढ़तियां हो वुह जी उठा है यहां नहीं है देखो उस स्थान में जहां उन्हन ने उसे रखा था। अब तुम जाके
७ उसके शिष्यन और पतरस को कहो कि वुह तुम्हारे आगे जलली को जाता है तुम उसको वहां देखोगे जैसा उसने
८ तुम्हें कहा था। और वे तुरंत निकलके समाधि से दौड़ीं क्योंकि वे कंपित और बिस्मित थीं और किसीसे कुछ न
९ कहीं क्योंकि वे डरगईं थीं। अब तड़के अठवारे के पहिले जब वुह उठा वुह मरियम मुजदली को पहिले दिखाई दिया जिससे उसने सात देवन को निकाला था।
१० उसने जाके उन्हन को जो उसके संग रहते थे बिलाप करते
११ और रोते थे कहा। और जब उन्हन ने सुना कि वुह
१२ जीता है और उसे दिखाई दिया प्रतीति न किई। उसके पीछे वुह दूसरे स्वरूप में उन में से दो को जब वे बाहर
१३ जाते थे दिखाई दिया। और उन्हन ने जाके औरन को
१४ कहा वे उनकी भी प्रतीति न किये। उसके पीछे वुह उन ग्यारहन को जब वे भोजन को बैठे थे दिखाई दिया और उनके अबिश्वास और अंतःकरण की कठोरता पर ओलाना दिया इस कारण कि वे उन्हन को जिन्हन ने उसे जी उठने
१५ के पीछे देखा प्रतीति न किये। तब उसने उन्हन को कहा कि तुम सब समस्त जगत में जाओ और हरएक मनुष्य को

१६ मंगलसमाचार सुनाओ। वुह जो बिश्वास लाता है और स्नान कियागया है उद्धार पावेगा परंतु वुह जो बिश्वास
१७ नहीं लाता उस पर दंड की आज्ञा किई जायगी। और वे जो बिश्वास लावते हैं उन में यह लक्षण होंगे कि वे मेरे नाम से देवन को दूर करेंगे और वे नई नई भाषा से
१८ बोलेंगे। वे सर्पन को उठावेंगे और जो वे कोई मृत्युके वस्तु को पीवेंगे वुह उनको दुख न देगा वे रोगिअन पर हाथ
१९ रखेंगे और वे चंगे होजावेंगे। सो जब प्रभु उन्हन को कहि चुका वुह स्वर्ग पर जानारहा और ईश्वर के दाहिने ओर
२० बैठा। तब उन्हन ने बाहर निकलके हरएक स्थान में उपदेश किया और ईश्वर सहाय करता था और बचन को लक्षणन से स्थिर करता था ॥ आमिन ॥

मंगल समाचार लूका रचित

---

१ पहिला पर्ब्ब

१ जैसा कि बहुतेरन ने कमर बांधी कि उन बस्तुन को जिन पर हम सब ठीक बिश्वास किये हैं एक रीति से प्रगट
२ करें। हां जैसा कि उन्हन ने जो आरंभ से बचन के देखनिहार और सेवक थे हम से बर्णन किये हम को सौंपे।
३ हे महामहिमन थाउफिलिस मुझे भी अच्छा जानपड़ा कि उन सबन का ठीक ज्ञान आदि से रखता हों अच्छे ढब से
४ तुम्हारे कारण लिखों। कि तू उन बातन के निश्चय को
५ जिन में तू ने उपदेश पाया है जाने। यहूदिया के राजा हीरुदीस के समय में आबिया के पारी से जकरिया नाम एक याजक था और उसकी स्त्री हारून की पुत्रीअन में से
६ थी और उसका नाम अलीसबा था। और वे दोनों ईश्वर के सन्मुख धर्मी और प्रभु की समस्त आज्ञा और रीति पर
७ निर्दोष चलनिहार थे। और उसके बंश न था क्योंकि
८ अलीसबा बांझ थी और वे दोनों बृद्ध थे। और ऐसा हुआ कि जब वुह याजक का कर्म ईश्वर के सन्मुख अपनी

९ पारी की रीति पर करता था। और याजक के रीति के समान उसकी पारी पक्षंची कि प्रभु के मंदिर में प्रवेश करके
१० सुगंध जलावे। और लोगन की समस्त मंडली सुगंध जलावने
११ के समय में बाहर प्रार्थना करती थी। उसी समय में ईश्वर का एक दूत जो सुगंध बेदी के दहिने ओर खड़ा था
१२ दिखाई दिया। और जब जकरिया ने देखा वुह व्याकुल
१३ क्ष्रआ और उसे डर लगा। तब उस दूत ने उसको कहा कि हे जकरिया मत डर क्योंकि तेरी प्रार्थना सुन गई और तेरी स्त्री अलीसबा तुझ से एक पुत्र जनेगी और तू
१४ उसका नाम यहिया रखना। और तुझे आनंद और मंगल होगा और बक्षतेरे उसके जन्म से मग्न होंगे।
१५ क्योंकि वुह प्रभु की दृष्टि में बड़ा होगा और दाख का रस और मदिरा न पीयेगा और वुह अपनी माता के गर्भ ने से
१६ धर्मात्मा में पूर्ण होगा। और वुह इसराईल के बंशन में से
१७ अनेकन को उन्हन के प्रभु ईश्वर के ओर फिरावेगा। और वुह उसके सन्मुख इलियास के आत्मा और सामर्थ से चलेगा कि पिता के मन को पुत्रन के ओर और आज्ञा भंग करनिहारन को धर्मिजन के स्वभाव के ओर फिरावेगा कि प्रभु
१८ के लिये एक लोग को ठीक करके सुधारें। तब जकरिया ने उस दूत से कहा कि मैं यह किस प्रकार से जानों क्यों
१९ कि मैं वृद्ध हों और मेरी स्त्री भी बक्षत बरस की है। तब दूत ने उत्तर देके उसको कहा मैं जबराईल हों जो ईश्वर

के समीप खड़ा रहता हों और भेजागया हों कि तुझ से
२० कहों और यह मंगल समाचार तेरे पास पहुंचाओं। और
देख तू गूंगा होगा और जिस दिन लों ये सब बातें पूरी न
हों बोल न सकेगा इस कारण कि तू ने मेरे बचन को जो
२१ अपने समय में संपूर्ण होंगे बिश्वास न किया। और लोग
जकरिया के लिये ठहर रहे थे और आश्चर्य्य हुए कि उस
२२ ने मंदिर में बिलंब किया। और वुह बाहर निकल के
उनसे बोल न सका तब उन्हों ने जाना कि उसने मंदिर में
कुछ धोखा सा देखा क्योंकि वुह उन्हें सैन करता था और
२३ गूंगा रहगया। और ऐसा हुआ कि जिस समय में उस
की सेवकाई के दिन पूरे हुए वुह अपने घर को चलागया।
२४ और उन दिनन के पीछे उसकी स्त्री अलीसबा गर्भिनी हुई
और अपने को पांच महीने लों यह कहके छिपाई।
२५ कि ईश्वर ने जिन दिनन में मुझ पर दृष्टि किई यों
व्यवहार किया कि लोगन के आगे मेरा अपमान दूर करे।
२६ और छठवें महीने में ईश्वर के ओर से जबराईल दूत
जलील के एक नगर में जिसका नाम नासिरः था भेजागया।
२७ एक कन्या के समीप जो दाऊद के बंश के एक पुरुष
यूसफ से बचन दत्ता हुई और उस कन्या का नाम मरियम
२८ था। और उस दूत ने उसके समीप आके कहा हे
अंगीकार किईगई प्रणाम प्रभु तेरे संग स्त्रीअन में तू धन्य
२९ है। तब वुह देख के उसके बचन से व्याकुल हुई और

३० सोचने लगी कि यह कैसा प्रणाम है। तब दूत ने उसे कहा हे मरियम मत डर क्योंकि तू ने ईश्वर के समीप
३१ अनुग्रह पाया। और देख तू गर्भवती होगी और एक
३२ पुत्र जनेगी और उसका नाम ईसा रखेगी। वुह बड़ा होगा और अत्यंत महान का पुत्र कहावेगा और प्रभु ईश्वर उस
३३ को उसके पिता दाऊद का सिंहासन देगा। और वुह सर्वदा याकूब के घराने पर राज्य करेगा और उसके राज्य
३४ का अंत न होगा। तब मरियम ने दूत से कहा कि यह किस रीति से होगा क्योंकि मैं पुरुष को नहीं जानती।
३५ तब दूत ने उत्तर देके उसे कहा कि धर्मात्मा तुझ पर उतरेगा और अत्यंत महान के सामर्थ की छाया तुझ पर होगी इसलिये वुह साधु जो तुझ से उत्पन्न होगा ईश्वर का
३६ पुत्र कहावेगा। और देख तेरे कुटुंब अलीसबा को भी बुढ़ापे में पुत्र का गर्भ है और यह उसका जो बांझ
३७ कहावती थी छठवां महीना है। क्योंकि ईश्वर से कोई
३८ बात अनहोनी नहीं है। तब मरियम बोली कि देख ईश्वर की दासी तेरे बचन के समान मेरे लिये होय तब दूत
३९ उसके पास से चलागया। और उन्हीं दिनन में मरियम उतावली से उठके पर्बत देश यहूदा के एक नगर मे गई।
४० और जकरिया के घर में प्रवेश करके अलीसबा को प्रणाम
४१ किई। और ऐसा हुआ कि जब अलीसबा ने मरियम का प्रणाम सुना बालक उसके पेट में उछला और अलीसबा

४२ धर्मात्मा से भरपूर होगई। और वुह बड़े शब्द से बोली कि
४३ तू स्त्रीअन में धन्य और तेरे गर्भ का फल धन्य। और
मेरे लिये यह कैसे हुआ कि मेरे प्रभु की माता मुझ पास
४४ आई। कि देख ज्यों तेरे प्रणाम का शब्द मेरे कान लों
४५ पहुंचा लड़का मेरे गर्भ में आनंद से उछला। और धन्य
वुह जो बिश्वास लाई कि वे बातें जो ईश्वर के ओर से उसे
४६ कही गई हैं संपूर्ण होंगीं। तब मरियम ने कहा कि
४७ मेरा प्राण ईश्वर का महिमा करता है। और मेरा आत्मा
४८ मेरे त्राणी ईश्वर से आनंद हुआ। क्योंकि उसने अपनी
दासी की छोटाई पर दृष्टि किई कि देख इस समय से
४९ समस्त लोग मुझे धन्य कहेंगे। क्योंकि उसने जो सामर्थी
५० है मुझ पर बड़ी कृपा किई। और उसका नाम पवित्र है
और उसकी दया उनपर जो उसे डरते हैं पीढ़ी से पीढ़ी लों है।
५१ उसने अपने हाथका बल दिखलाया और उन्हें जो अहंकारी
५२ हैं छिन्नभिन्न किया। उसने बलवंत को चौकिअन से
५३ नीचे उतार दिया और छोटन को बढ़ादिया। उसने भूखेन
को अच्छी बस्तु से संतुष्ट किया और धनी को छूछे हाथ
५४ भेजा। उसने अपनी कृपा को स्मरण करने के लिये अपने
५५ दास इसराईल पर सहाय किया। जैसा उसने हमारे पिता
इबराहीम और उसके बंश को जो सर्बदा लों रहेगा कहा।
५६ और मरियम तीन महीने के निकट उसके संग रही फेर
५७ अपने घर को आई। अब अलीसबा के जन्ने के दिन

५८ पूरे ऊए और वुह ऐक पुत्र जनी। तब उसके परोसिअन और उसके कुटुबन ने सुना कि प्रभु ने उस पर बड़ी कृपा किई और वे उसके संग अति प्रसन्न ऊए और ऐसा ऊआ कि वे आठवें दिन उस बालक का खतना करने को आये।
५९ और वे उसका नाम जकरिया जो उसके पिता का था रखने
६० लगे। तब उसकी माता ने उत्तर देके कहा कि नहीं
६१ परंतु उसका नाम यहिया रखा जाय। तब उन्हन ने उसे कहा कि तेरे घराने में ऐसा कोई नहीं जो इस नाम से
६२ कहावता है। तब उन्हन ने उसके पिता को ओर सैन किया
६३ कि वुह उसका नाम क्या रखा चाहता है। तब उसने पटिआ मंगाके लिखा और कहा कि उसका नाम यहिया
६४ है तब वे सब आश्चर्य किये। और तुरंत उसका मुंह और जीभ भी खुलगई और उसने बका होके ईश्वर की
६५ स्तुति किई। तब उनपर जो उन्हन के आसपास रहते थे डर पड़ा और इन सब बातन की चर्चा यहूदिया के पर्बत
६६ के समस्त देश में ऊई। और जो कोई सुनता था अपने मन में संदेह करता था कि यह किस प्रकार का लड़का
६७ होगा कि प्रभु का हाथ उस पर था। और उसका पिता जकरिया धर्मात्मा से भरपूर ऊआ और आगम कहने लगा।
६८ कि इसराईल का प्रभु स्तुति के योग्य है क्योंकि उसने
६९ अपने लोगन पर दृष्टि करके रक्षा किई। और हमारे कारण उद्धार की सींग अपने दास दाऊद के घराने में से

७० उत्पन्न किया। जैसा कि उसने अपने पबित्र आगम ज्ञानिअन के मुंह से जो जगत के आदि से होती आई
७१ कहा। कि हम अपने शत्रुन से और सब के हाथ से
७२ जो हम से बैर रखते हैं उद्धार पावें। कि अपनी दया को जो हमारे पितरन पर है संपूर्ण करे और अपने पबित्र
७३ बाचा को स्मरण करे। उस किरिया को जो उसने हमारे
७४ पिता इबराहीम से किया। कि वुह हमें यह देगा कि
७५ हम अपने शत्रुन के हाथ से बचके। उसके आगे पवित्रता और सत्यता से अपने समस्त जीवन भर हम निर्भय उसकी
७६ सेवा करें। और हे बालक तू अत्यंत महान का आगम ज्ञानी कहावेगा इसलिये कि तू प्रभु के आगे जाके उसके मार्गन
७७ को सुधारेगा। कि संदेश देवे कि उसके लोगन को पापन
७८ के क्षमा के कारण से उद्धार मिला। यह हमारे ईश्वर के मन की दया से है जिसके कारण उदय का प्रकाश ऊपर
७९ से हम पर पहुंचा। कि उनको जो अंधकार और मृत्यु की छाया में बैठे हैं उंजियाला देवे कि हमारे पांव को
८० कुशल के मार्ग में लेजाय। और वुह लड़का बढ़तागया और आत्मा में बल पाया और बन में रहा किया जिस दिन लों कि इसराईल को दिखाई दिया।

२ दूसरा पर्ब्ब

१ और उन्हीं दिनन में ऐसा हुआ कि कैसर अगस्तूस की

आज्ञा निकली कि समस्त देश के लोगन के नाम लिखे
२ जायें। यह नाम लिखावने का आरंभ हुआ जब
३ कीनियूस सूरिया का अध्यक्ष था। तब हरएक अपने
४ अपने नगर को नाम लिखावने चला। और यूसफ भी इस
लिये कि वुह दाऊद के बंश और घराने से था जलील और
नासरः के नगर से यहूदिया में दाऊद के नगर को जो
५ बैतुल्लहम कहावता है गया। कि अपनी बचन दत्त स्त्री
६ मरियम के संग जो गर्भिणी थी नाम लिखावे। और उनके
वहां होतेहुए ऐसा हुआ कि उसके जन्ने के दिन पूरे
७ हुए। और वुह अपना पहिलौंठा पुत्र जनी और उसको
बस्त्र में लपेट के चरनी में रखा क्योंकि उनको समाई सराय
८ में न थी। और उसी देश में गड़ेरिये थे जो खेत में
९ रहते और रात को अपने झुंड की रखवारी करते थे। और
देखो कि ईश्वर का दूत उन पास आया और ईश्वर का तेज
१० उन के चारों ओर चमका और वे बहुत डरगये। तब दूत
ने उन्हें कहा कि मत डरो इसलिये कि देखो मैं तुम्हें
मंगल समाचार जो सब लोगन के कारण बड़ा आनंद है देता
११ हों। क्योंकि आज दाऊद के नगर में तुम्हारे लिये एक
१२ बचावनिहार उत्पन्न हुआ जो मसीह प्रभु है। और
तुम्हारे लिये यही पता है कि तुम उस बालक को बस्त्र में
१३ लपेटा और चरनी में पड़ाहुआ पाओगे। और तुरंत उस
दूत के संग स्वर्ग के सेना की एक मंडली प्रगट हुई और

१४ यह कहिके ईश्वर की स्तुति करने लगे। कि अपर
ऊंचे पर ईश्वर को धन्य और पृथिवी पर कुशल और मनुष्यन
१५ में मिलाप होवे। और ऐसा हुआ कि जों दूत उन्हन
के समीप से स्वर्ग पर जाते रहे गड़ेरियन ने आपस में कहा
कि आओ अब बैतुलहम को चलें और इस बात को
जो हुआ है जिसे ईश्वर ने हमपर प्रगट किया देखें।
१६ तब वे शीघ्र आके मरियम और यूसफ को और उस बालक
१७ को चरनी में पड़ा हुआ पाये। और जब उन्हन ने देखा
वे उन बातन को जो बालक के विषय में उनसे कहा गया
१८ था प्रगट किये। और सबके सब जो सुनते थे उन बातन
से जो गड़ेरियन ने उन्हन को कहा था बिस्मित हुए।
१९ परंतु मरियम ने उन सब बातन को अपने मन में रखके
२० बिचार किया। और गड़ेरिये उन समस्त बस्तुन के कारण
जो उन्हन ने सुना और वैसाही देखा था ईश्वर को धन्य
२१ कहते और स्तुति करते हुए उलटे फिरे। और आठ
दिन के पीछे जब उस बालक के खतना का समय पूरा हुआ
उसका नाम ईसा रखा गया वही नाम दूत ने उसके गर्भ में
२२ पड़ने से पहिले रखा था। और जब उनके पवित्र होनेके
दिन मूसा की व्यवस्था के समान पूरे हुए वे उसको
२३ यिरोशलम में लाये कि ईश्वर के आगे लावें। जैसा कि
ईश्वर के शास्त्र में लिखा है कि हरएक नर जो गर्भ को
२४ खोलता है ईश्वर को भेंट किया जायगा। और जैसा कि

इश्वर के शास्त्र में कहागया है कि पंडूक के जोड़े अथवा
२५ कपोत के दो बच्चे को बलिदान करें। और देखो कि
यिरोशलीम में शिमऊन नाम एक मनुष्य था वही सज्जन
पुरुष और धर्मी था और इसराईल के कुशल का कारण
२६ ताक रहा था और धर्मात्मा उस पर था। और धर्मात्मा से
उस पर प्रगट हुआ कि वुह जब लों ईश्वर के मसीह को
२७ न देख ले मृत्यु को न देखेगा। और वुह आत्मा की शिक्षा
से मंदिर में आया और जब माता पिता उस बालक ईसा
को भीतर लाते थे कि उसके लिये तौरेत के व्यवहार के
२८ समान करें। उसने उसको अपनी गोद में उठा लिया
२९ और ईश्वर की स्तुति करके कहा। कि हे प्रभु अब तू
अपने बचन के समान अपने दास को कुशल से बिदा किया
३० चाहता है। क्योंकि मेरी आंखन ने तेरे उद्धार को देखा।
३१ जिसे तू ने समस्त लोगन के सन्मुख ठीक किया है।
३२ कि एक ज्योति अन्यदेशिअन के उंजिआला करने को
३३ और तेरे इसराईल के लिये बिभव। तब यूसफ और उसकी
माता उन बातन से जो उसके विषय में कहेगये थे आश्चर्य
३४ किये। और शिमऊन ने उन्हन को आशीष दिया और
उसकी माता मरियम को कहा कि देख यही इसराईल में
अनेकन के गिरने और फेर उठने के कारण स्थिर है
३५ और बिरोध कहने के लिये एक चिन्ह है। हां एक तरवार
तेरे प्राण में भी प्रवेश करेगी कि बहुतेरन के मन की चिंता

३६ प्रगट होजाय। और वहां हन्ना नाम फनूईल की पुत्री जो आशेर के बंश से थी और आगमज्ञानी थी जो बहुत वृद्ध थी और अपने कुंआरपने से सात बरस लों एक पति के संग रही थी।

३७ और वुह विधवा चौरासी बरस के लगभग थी जो मंदिर से न्यारी न हुई परंतु ब्रत और प्रार्थना से रात दिन सेवा करती थी।

३८ और उसने उसी समय आके ईश्वर की स्तुति किई और उन सभन को जो यिरोशलीम में उद्धार की आस रखते थे उसके विषय में बोली।

३९ और जब वे प्रभु के शास्त्र के समान समस्त कार्य कर चुके वे जलील में अपने नगर नासरः को फिरे।

४० और वुह बालक बढ़तागया और आत्मा में बल पाया और ज्ञान से भरगया और ईश्वर का अनुग्रह उस पर था।

४१ अब उसके माता पिता बरस बरस फसः के पर्ब्ब में यिरोशलीम को जाते थे।

४२ और जब वुह बारह बरस का हुआ वे

४३ पर्ब्ब के व्यवहार के समान यिरोशलीम को गये। और जब वे उन दिनन को पूरा करके फिरनेलगे वुह बालक ईसा यिरोशलीम में रहिगया और यूसफ और उसकी मा ने न जाना।

४४ परंतु वे समझे कि वुह संगिअन में है एक दिन के पंथ गये और उसे अपने कुटुंबन और चिन्हारन में ढूंढे।

४५ और जब उन्हन ने उसको न पाया

४६ वे यिरोशलीम को फिर आके उसे ढूंढनेलगे। और ऐसा हुआ कि उन्हन ने तीन दिन पीछे उसे मंदिर में पंडितन

के मध्य में बैठे हुए उनकी सुनते और उन्हन से प्रश्न
४७ करते पाया। और सब जो उसकी सुनते थे उसकी बुद्धि
४८ और उत्तर से बिस्मित हुए। और जब उन्हन ने उसे
देखा वे आश्चर्य किये और उसकी माता ने उसे कहा कि
हे पुत्र किस लिये तूने हम से ऐसा किया देख तेरे
४९ पिता और मैं कुढ़ते तुझे ढूंढ़ते थे। तब उसने उन्हें
कहा यह किस कारण है कि तुम मुझे ढूंढ़ते थे क्या तुम
न जानते थे कि मुझे अवश्य है कि अपने पिता का कार्य्य
५० करूं। पर वे उस बचन को जो उसने उन्हन को
५१ कहा न समझे। और वुह उन्हन के संग चलागया
और नासरः में आया और उनके बश में रहा परंतु
उसकी माता ने यह समस्त बचन को अपने मन में रखा।
५२ और ईसा ज्ञान और डील में और ईश्वर और मनुष्य
की कृपा में बढ़ता गया।

३ तीसरा पर्ब्ब

१ अब तीबारयूस कैसर के राज्य के पंद्रहवें बरस जब
पंतियूस पिलातूस यहूदिया का अध्यक्ष था और हेरोदीस
जलील के चौथाई का और उसका भाई फैलकूस ऐतूरियः
के चौथाई का और तरखूना देश के और लूसानिया
२ अबीलनिया के चौथाई का अध्यक्ष था। हना और
काया के प्रधान याजक होते ईश्वर का बचन जकरिया के

३ पुत्र यहिया को बन में पहुंचा। और वुह यर्द्दन के आसपास के समस्त देश में आके स्नान का पश्चात्ताप पाप
४ मोचन के कारण उपदेश करनेलगा। जैसा कि आगमज्ञानी के बचन के पुस्तक में लिखा है कि बन में एक पुकारने वाले का शब्द है कि तुम प्रभु के मार्ग को बनाओ और
५ उसके पंथन को सीधा करो। हरएक खाले भूमि भरी जायगी और समस्त पहाड़ और चटान नीचा कियाजायगा और टेढ़े सीधे किये जावेंगे और खड़बिड़ पंथ चौरस बनेंगे।
६ और हरएक प्राणी ईश्वर के उद्धार को देखेगा।
७ तब उसने मंडली को जो उससे स्नान पावने को निकली थीं कहा हे सर्पबंशी तुम्हें किसने चेताया कि आवनिहार
८ क्रोध से भागो। इसलिये फल को जो पश्चात्ताप के समान है लाओ और अपने अपने मन में मत कहो कि हमारा पिता इबराहीम है क्योंकि मैं तुम्हन से कहता हों कि ईश्वर में सामर्थ है कि इन पत्थरन से इबराहीम के
९ लिये पुत्र उत्पन्न करे। और अब बृक्षन के जड़ पर कुल्हाड़ी भी धरी है इसलिये हरएक बृक्ष जो अच्छे फल नहीं लाता काटाजाता और अग्नि में झोंका जाता
१० है। तब लोगन ने यह कहिके इसको पूछा कि अब
११ हम क्या करें। उसने उत्तर दिया और उन्हन को कहा जिस किसी के पास दो अंगरखे हों उसके संग जिसके पास कुछ नहीं है बांट ले और जिसपास खाने को हो वुह भी

१२ ऐसा करे। तब पटवारिअन भी स्नान पाने को आये
१३ और उसको बोले कि हे उपदेशक हम क्या करें। तब
उसने उन्हन को कहा जो तुम्हारे लिये ठहराया गया है
१४ उससे अधिक मत लेओ। फिर सिपाहिअन ने भी यह
करके उससे पूछा कि हम क्या करें तब उसने उन्हें
कहा किसी से प्रबलता मत करो न झूटा दोष लगाओ और
१५ अपनी मजूरी से संतोष करो। और जब लोग भरोसे
में थे और समस्त जन अपने मन में यहिया के बिषय
में बिचार करते थे कि वुह मसीह है कि नहीं।
१६ यहिया ने उत्तर देके सबन को कहा ठीक मैं तो
तुम्हन को जल से स्नान देता हों परंतु मुझ से एक
अधिक सामर्थी आता है जिसके जूते का बंद मैं
खोलने को योग्य नहीं वुह तुम्हन को धर्मात्मा और अग्नि
१७ से स्नान देगा। उसके हाथ में छाज है और वुह
अपने खरिहान को अच्छी रीति से झारेगा और गोहूं
को अपने खत्ते में एकट्ठे करेगा परंतु भूसी को स्थिर
१८ अग्नि से जलायेगा। और उसने अपने उपदेश में
१९ लोगन को और अनेक वस्तु सिखाया करता था। परंतु
हीरूदीस ने जो चौथाई का अध्यक्ष था अपने भाई
फीलबूस की स्त्री हीरूदियाह के कारण और अपनी समस्त
बुराई के कारण जो हीरूदीस ने किई थी उससे दोष पाता
२० था। उन सबन पर यह अधिक किया कि उसन

२१ यहिया को बंदीगृह में डाला। और जब समस्त लोग स्नान पाचुके ऐसा हुआ कि ईसा ने भी स्नान पाया और
२२ प्रार्थना करते हुए स्वर्ग खुलगया। और धर्मात्मा देही के स्वरूप कपोत के समान उस पर उतरा और स्वर्ग से ऐसा शब्द आया जो कहा कि तू मेरा प्रिय पुत्र है तुझ से मैं
२३ अति प्रसन्न हों। तब ईसा आपही तीस बरस के लगभग होनेलगा जैसा कि बिचार था वुह पुत्र यूसफ का था पुत्र
२४ हेली का। पुत्र मत्तत का पुत्र लोई का पुत्र मल्की का पुत्र
२५ याने का पुत्र यूसफ का। पुत्र मतता का पुत्र अमूस का
२६ पुत्र नाहूम का पुत्र हसले का पुत्र बखी का। पुत्र मात का पुत्र मतता का पुत्र शमई का पुत्र यूसफ का पुत्र यहूदा का।
२७ पुत्र यूहीन का पुत्र रसा का पुत्र जोरबाबुल का पुत्र सली
२८ का। पुत्र मलकी का पुत्र अद्दी का पुत्र कूसम का पुत्र
२९ आलमूदम का पुत्र ईर का। पुत्र यूसा का पुत्र आजर का
३० पुत्र यूरम का पुत्र मतीता का पुत्र लूई का। पुत्र शमऊन का पुत्र यहूदा का पुत्र यूसुफ का पुत्र यूनन का पुत्र
३१ आलीयाकीम का। पुत्र मलिया का पुत्र माने का पुत्र मतता
३२ का पुत्र नातन का पुत्र दाऊद का। पुत्र ऐसे का पुत्र ओबीद का पुत्र बगर का पुत्र सलमून का पुत्र नहसून
३३ का। पुत्र अमनादाब का पुत्र अरम का पुत्र हसरून का
३४ पुत्र फारिज का पुत्र यहूदा का। पुत्र याकूब का पुत्र इसहाक का पुत्र इबराहीम का पुत्र तारह का पुत्र नाहूर

३५ का। पुत्र साहग का पुत्र अरगू का पुत्र फालिक का
३६ पुत्र ऐबर का पुत्र सलह का। पुत्र कैनान का पुत्र
अरफकशद का पुत्र साम का पुत्र नूह का पुत्र लामिकन
३७ का। पुत्र मतूशलह का पुत्र हनूक का पुत्र यारद का
३८ पुत्र महललाईल का पुत्र कैनान का। पुत्र अनूश का
पुत्र शेत का पुत्र आदम का पुत्र ईश्वर का।

४ चौथा पर्ब

१ और ईसा धर्मात्मा से भरपूर होके यर्दन से फिरा और
२ आत्मा की शिक्षा से बन में गया। और चालीस दिन
लों शयतान से परीक्षा कियागया और उन्हीं दिनन में
उसने कुछ न खाया और जब वे दिन बीतगये और तो
३ भूखा हुआ। तब शयतान ने उसको कहा कि जो तू
ईश्वर का पुत्र है आज्ञा कर कि यह पत्थर रोटी बनजाय।
४ तब ईसा ने उत्तर देके उसको कहा यह लिखा है कि
मनुष्य केवल रोटी से नहीं परंतु ईश्वर के हरएक बचन से
५ जीता रहेगा। तब शयतान ने उसे एक ऊंचे पहाड़ पर
लेजाके जगत का समस्त राज्य एक छिणभर में दिखाया।
६ और शयतान ने उसको कहा कि यह समस्त पराक्रम और
उनका ऐश्वर्य मैं तुझे देंगा क्योंकि यह मुझे सौंपागया है
७ और जिस किसी को मैं चाहों उसे दें। इस कारण जो
८ तू मेरी पूजा करेगा तुरंत समस्त तेरा होजायगा। तब ईसा ने

उत्तर दिया और उसको कहा कि हे शयतान मेरे पीछे जा क्योंकि यह लिखा है कि तू अपने प्रभु ईश्वर की पूजा कर और केवल उसी की सेवा कर। ९ तब वुह उसको यिरोशलीम में लाया और मंदिर के एक कलस पर खड़ा किया और उसे बोला जो तू ईश्वर का पुत्र है तो अपने को यहां से नीचे गिरा दे। १० क्योंकि यह लिखा है कि वुह तेरे कारण अपने दूतन को आज्ञा करेगा कि तेरी रक्षा करें। ११ और हाथन में वे तुझे उठालेंगे न हो कि तेरा पांव पत्थर में लगने पावे। १२ तब ईसा ने उत्तर देके उसको कहा यह कहागया है कि तू प्रभु को जो तेरा ईश्वर है मत परख। १३ और जब शयतान समस्त परीक्षा कर चुका वुह थोरे समय लों उससे दूर रहा। १४ और ईसा आत्मा के सामर्थ से जलील को फिरा और उसकी कीर्ति समस्त देश में चारोंओर फैलगई। १५ और उसने उन्हन की मंडलिअन में उपदेश किया और सबन से स्तुति पाई। १६ और वुह नासरः में जहां वुह प्रतिपाल पाया था आया और अपने व्यवहार की रीति पर बिश्राम के दिन मंडली में प्रवेश करके बांचने को खड़ा हुआ। १७ और इशीया आगमज्ञानी का ग्रंथ उसे दिया गया और जब उसने ग्रंथ को खोला उसने उस स्थल को पाया जहां यह लिखा हुआ था। १८ कि प्रभु का आत्मा मुझ पर है इसकारण उसने मुझे मसीह किया कि मंगल समाचार कंगालन को सुनाओ उसने मुझे

भेजा कि चूर्ण अंतःकरणन को चंगा करें और बंधुअन को
छोड़ावने को और अंधन को फेर दृष्टि पावने को संदेश
१९ सुनाओं और घायलन को छोड़ाऊं। और प्रभु के प्रसन्न
२० किये बरस का उपदेश करें। तब उसने ग्रंथ को बंद किया
और सेवक को फेर सोंपकर बैठगया और समस्त मंडली उस
२१ पर टकटकी लगाके देखरही थीं। तब उसने उन्हन को
कहना आरंभ किया कि आज के दिन यही लिखा हुआ
२२ तुम्हारे कानन में संपूर्ण हुआ। और सबन ने उसपर
साक्षी दिई और उसकी प्रसन्नता के बचन से जो उसके
मुंह से निकले थे बिस्मित होरहे थे और बोले क्या यह
२३ यूसफ का पुत्र नहीं। तब उसने उन्हन को कहा कि तुम
निश्चय मुझे यह दृष्टांत कहोगे कि हे बैद्य अपने के चंगा
कर जो कुछ हम सब ने सुना है कि कपरनाहूम में
२४ किया यहां अपने देश में भी कर। और उसने कहा
मैं तुम्हन से सत्य कहता हों कि कोई आगमज्ञानी अपने
२५ देश में अंगीकार नहीं कियाजाता। परंतु मैं तुम से सत्य
कहता हों कि इलियास के दिनन में जब स्वर्ग तीन बरस
छःमहीने लों बंद था यहां लों कि समस्त देश में काल
२६ पड़ा था बहुतेरी बिधवा इसराईल में थीं। परंतु इलियास
उन में से किसी के समीप न भेजागया था केवल सैदा के
२७ सरफता में एक बिधवा स्त्री के पास। और अलीशा
आगमज्ञानी के समय में इसराईल में बहुतसे कोढ़ी थे और

उन में से नाआमन सुरिआनी को छोड़ कोई पावन न
२८ हुआ। तब वे सब सभा में उन बचन को सुनते ही क्रोध
२९ से भरगये। और उठकर उसको नगर से बाहर निकाल
दिया और उस पहाड़ के किनारे पर जिसपर उनका
नगर बनायागया था लेचले कि वे उसको औंधे मुंह गिरा देवें।
३० परंतु वुह उन्हन के मध्य में से निकलके जातारहा।
३१ और कपरनाहूम में जो जलील का एक नगर है आया
और बिश्राम के दिनन में उन्हन को उपदेश दिया किया।
३२ और वे उसके उपदेश से आस्चर्य हुए क्योंकि उसका बचन
३३ पराक्रम के संग था। और मंडली में एक मनुष्य था जिस
में अपबित्र देव का आत्मा था उसने बड़े शब्द से चिल्लाके।
३४ कहा कि हे ईसा नासरी रहने दे हमन को तुह से क्या
काम क्या तू हमन को नाश करने आया है मैं तुझे
३५ जानता हों कि तू कौन है ईश्वर का धर्मी। तब ईसा ने
उसपर झुंझलाके कहा कि चुपरह और उससे निकल आ
और जब देव ने उसको मध्य में गिराया वुह उसको बिना
३६ दुख दिये हुए निकल आया। तब वे सब बिस्मित होके
आपस में कहने लगे कि यह कैसी बात है क्योंकि वुह
पराक्रम और सामर्थ से अपबित्र आत्मन को आज्ञा करता
३७ है और वे बाहर निकल आते हैं। और उसकी कीर्त्ति
३८ उस देश के समस्त स्थान में चारों ओर फैल गई। तब वुह
मंडली में से उठा और शमऊन के घर में आया और

शमऊन की सास बड़े ज्वर से पड़ी थी और उन्हन ने
३९ उसके लिये उसकी बिनती किई। तब वुह उसके सिरहाने
खड़ा होके ज्वर पर झुंझलाया और ज्वर ने उसे छोड़ा
४० और उसने तुरंत उठके उन्हन की सेवा किई। और जब
सूर्य अस्त होता था वे सब जिन पास नाना प्रकार के रोगी
थे उन्हन को उसके समीप लाये और उसने उनमें से हरऐक
४१ पर हाथ रखके उन्हन को चंगा किया। और बज्जतेरन से
देव भी चिल्लाके बाहर निकले और बोले कि तू ईश्वर का
पुत्र मसीह है और उसने घुरकी देके उन्हन को बात
करने न दिया क्योंकि वे जानते थे कि वुह मसीह है।
४२ और जब बिहान ज्ञआ वुह निकलकर एक अरण्य स्थान
में गया और लोग उसे ढूंढने लगे और उसके समीप आये
और उसे रोके कि वुह उन्हन के समीप से न जाय।
४३ तब उसने उन्हन को कहा कि मुझे अवश्य है कि और
नगरन में भी ईश्वर के राज्य का समाचार सुनाओं क्योंकि
४४ मैं इसी कारण भेजागया हों। और वुह जलील की
मंडलिअन में उपदेश करता रहा।

५ पांचवां पर्व्व

१ और ऐसा ज्ञआ कि जब लोगन ने उसपर भीड़ किया कि
ईश्वर का बचन सुनें वुह जनेसरत के झील के निकट
२ खड़ा था। और उस झील पर दो नावें लगी देखीं परंतु

मछुऐ उन पर से उतर के अपने जालन को धो रहे थे।
३ तब उनने उसमें से ऐक नाव पर जो शमऊन की थी उस
से चढ़के चाहा की तीर से थोड़ा दूर लेजाय और वुह बैठ
४ कर लोगन को नाव पर से उपदेश करने लगा। और जब
उसने बातों से सावकाश पाया वुह शमऊन को बोला कि
गहिरे में लेजा और बझावने के लिये अपने जाल को
५ डाल। तब शमऊन ने उत्तर देके उसको कहा हे प्रभु
हमने रात भर परिश्रम किया और कुछ न पकड़ा तिसपर
६ भी आपके कहने से मैं जाल डालता हों। और जब
उन्हन ने ऐसा किया तो मछलियन का बड़ा झुंड घेरा और
७ उनका जाल फटनेलगा। तब उन्हन ने अपने साहिअन
को जो दूसरी नाव पर थे सैन किया कि तुम सब आके
हमारा सहाय करो तब वे आये और दोनों नावें ऐसी भरीं
८ कि वे डुबनेलगीं। तब शमऊन पतरस ने देखकर ईसा के
घुटनों पर गिरके कहा कि हे प्रभु मुझ से परे रहिये कि
९ मैं पापि मनुष्य हों। क्योंकि वुह और सब जो उसके
संग थे उन मछलिअन के बझाव से जो उन्हन ने पकड़ीं
१० आश्चर्य किये। और इसीरीति से जबदी के बेटे याकूब
और यूहन्ना जो शमऊन के साझी थे बिस्मित थे तब
ईसा ने शमऊन को कहा कि भय मत कर कि इस
११ समय से तू मनुष्यन को पकड़ेगा। और जब उन्हन ने
अपनी नावें तीर पर लाईं वे सब कुछ त्याग करके उसके

१२ पीछे होलिये। और जब वुह किसी नगर में था ऐसा हुआ कि ऐक मनुष्य जो कोढ़ से भरा हुआ था ईसा को देख के औंधा गिरा और उसकी बिनती करके बोला कि
१३ हे प्रभु जो आप चाहो मुझे पवित्र करसकते हो। तब उसने हाथ बढ़ाया और उसको यह कहिके छूआ कि मैं चाहता हों तू पवित्र होजा और उसका कोढ़ तुरंत जाता
१४ रहा। और उसने उसको आज्ञा किई कि किसी से मत कह परंतु जा और अपने को याजक को दिखला और अपने पवित्र होजाने के लिये जैसा कि मूसाने आज्ञा किई
१५ है भेंट दे कि उन्हन के समीप साक्षी होय। परंतु तिस पर भी उसकी कीर्त्ति अधिक फैलगई और बहुत सी मंडली ऐकट्ठी हुई कि सुनें और अपनी दुर्बलता से उससे चंगे
१६ होवें। और उसने बन में ऐकांत होकर प्रार्थना किई।
१७ और ऐक दिन ऐसा हुआ कि जब वुह उपदेश कररहा था कि फरीसिअन और ताकिकन वहां बैठे थे जो जलील के हरऐक नगर से और यहूदिया और यिरोशलीम से आये थे और उन्हें चंगा करने को ईश्वर का सामर्थ प्रगट
१८ था। और देखो कि लोग ऐक मनुष्य को जो अर्द्धांगी था खाट पर ले आये और चाहा कि उसको भीतर लावें और
१९ उसके आगे रखें। परंतु जब मंडली के कारण वे अवसर न पाये कि उसे भीतर लेजायें वे कोठे पर चढ़गये और खपरैल को अलग करके उसको खाट समेत मध्य में ईसा

२० के आगे लटकादिया। और उसने उन्हन का बिश्वास देखके उसे कहा हे मनुष्य तेरे पाप क्षमा कियेगये।
२१ तब अध्यापकन और फरीसिअन योंही सोचने लगे कि यह कौन है जो पाखंडता बकता है ईश्वर को छोड़ कौन
२२ पापन को क्षमा करसकता है। तब ईसा ने उनके चिंतन को जानके उत्तर दिया और उन्हन को कहा कि तुम सब
२३ अपने अपने मन में क्या बिचार करते हो। क्या कहना सहज है कि तेरे पाप क्षमा कियेगये अथवा कहना कि
२४ उठ और चल। परंतु जिससे तुम जानो कि मनुष्य के पुत्र को पृथिबी पर पराक्रम है कि पापन क्षमा करे उसने उस अर्द्धांगी को कहा मैं तुझे कहता हों कि उठ और
२५ अपनी खाट उठाके अपने घर को चलाजा। और तुरंत वुह उन्हन के आगे उठा और जिस पर वुह पड़ा था लेकर
२६ ईश्वर की स्तुति करते अपने घर को चलागया। तब वे सबके सब बिस्मय से ईश्वर की स्तुति करनेलगे और भय
२७ से भरके बोले कि हमने आज अनोखी बस्तें देखीं। और इस बस्तुन के पीछे वुह बाहर गया और ऐक पटवारी को जिसका नाम लेई था कर लेने के स्थान में बैठे देखा और
२८ उसने उसको कहा कि मेरे पीछे होले। तब वुह सब छोड़कर उठ खड़ा हुआ और उसके पीछे होलिया।
२९ और लेई ने उसके लिये अपने घर में बड़ा जेवनार किया और वहां बहुत से पटवारी अरु और लोग थे जो

३० उन्हन के संग बैठ गये थे। परंतु उन्हन के अध्यापकन और फरीसिअन उसके शिष्यन पर कुड़कुड़ा के कहने लगे कि तुम सब किस कारण पटवारिअन और पापिअन ३१ के संग खाते पीते हो। तब ईसा ने उत्तर देके उन्हन को कहा वे जो चंगे हैं बैद्य का प्रयोजन नहीं रखते ३२ परंतु वे जो रोगी हैं। मैं धर्मिअन को बुलाने नहीं ३३ आया परंतु पापिअन को कि पश्चात्ताप करें। तब उन्हन ने उसको कहा कि यहिया के शिष्य क्यों बारंबार व्रत करते और प्रार्थना करते हैं और इसी रीति से ३४ फरीसिअन के भी करते हैं परंतु तेरे खाते पीते हैं। तब उसने उन्हन को कहा कि जब लों दूलह बराती अन के संग है क्या तुम उन्हन को व्रत करवा सकते हो। ३५ परंतु वे दिन आवेंगे कि जब दूल्हा उन्हन से अलग ३६ होगा तब वे वहीं दिनन में व्रत करेंगे। और उसने उन्हन को एक दृष्टांत भी कहा कि कोई मनुष्य नये थान का टुकड़ा पुराने बस्त्र में नहीं लगाता नहीं तो वुह जो उस में लगायागया है बस्त्र से खैंचता है और वुह टुकड़ा जो ३७ नये से लियागया था पुराने में नहीं मिलता। और कोई पुराने कुप्पे में नया दाखका रस नहीं भरता नहीं तो नया दाख का रस कुप्पन को फाड़ेगा और बहि जायगा और ३८ कुप्पे नष्ट होजायेंगे। परंतु अवश्य है कि नया दाख का ३९ रस नये कुप्पे में रखे कि दोनों जतन से रहेंगे। कोई

पुराना पीके तुरंत नये की इच्छा नहीं करता क्योंकि वुह कहता है कि पुराना अति भला है।

६ छठवां पर्ब्ब

१ और पहिले से दूसरे बिश्राम दिन को यों हुआ कि वुह खेतन के बीच से जाने लगा और उसके शिष्य बालन को तोड़ना और हाथन से मलके खाना आरंभ किया। २ तब फरीसिअन में से कितनन उन्हन को बोले तुम क्यों वुह कर्म करते हो जो बिश्राम के दिनन में करना योग्य नहीं। ३ ईसा ने उत्तर देके उन्हन को कहा क्या तुम सबने इतना नहीं पढ़ा है कि दाऊद ने जब वुह भूखा था और उसके संगिअन ने क्या किया। ४ वुह क्योंकर ईश्वर के घर में गया और भेंट की रोटी लिई और खाई और उन्हें भी जो उसके संग थे दिई यद्यपि उन्हें खाने को योग्य न थी परंतु केवल याजकन को। ५ और उसने उन्हन को कहा कि मनुष्य का पुत्र बिश्राम के दिन का भी प्रभु है। ६ और दूसरे बिश्राम के दिन को भी ऐसा हुआ कि उसने मंडली में प्रवेश करके उपदेश किया और वहां एक मनुष्य था जिसका दहिना हाथ सूख गया था। ७ तब अध्यापकन और फरीसिअन उसे अगोरने लगे कि वुह बिश्राम के दिन में चंगा करेगा कि वे उस पर दोष देने का कारण पावें। ८ परंतु वुह उन्हन के बिचार को जान के उस मनुष्य

को जिसका हाथ सूख गया था कहा कि उठ और मध्य
९ में खड़ा हो तब वुह उठखड़ा हुआ। फेर ईसा ने उन्हन
को कहा कि मैं तुम्हन से एक बात पूछता हों क्या बिश्राम
के दिनन में भला करना उचित है अथवा बुरा करना प्राण
१० को बचाना अथवा नाश करना। और उन सबन पर चारों
ओर दृष्टि करके उसने उस मनुष्य को कहा कि अपना
हाथ बढ़ा तब उस ने वैसा किया और उसका हाथ दूसरे
११ के समान चंगा होगया। तब वे सब बौड़ाहपने से भरगये
१२ और आपस में कहनेलगे कि ईसा को क्या करें। और
उन दिनन में ऐसा हुआ कि वुह एक पहाड़ पर प्रार्थना
करने को गया और रात भर ईश्वर की प्रार्थना में रहा।
१३ और जब दिन हुआ उसने अपने शिष्यन को बुलाया और
उसने उन में से बारह को छांटकर प्रेरित नाम भी रखा।
१४ शमऊन जिसका नाम उसने पतरस भी रखा और उसका
भाई अंद्रियास याकूब और यूहन्ना फैलबूस और बरसूलमी।
१५ मत्ती और तूमा और हलफा का पुत्र याकूब और शमऊन
१६ जो दृढ़ता कहावता है। और याकूब का भाई यहूदा
और यहूदा असकरयूती जो उसका पकड़वानेहारा हुआ।
१७ फेर वुह उन्हन के संग उतर के चौरस पर खड़ा रहा और
उसके शिष्यन की मंडली और लोगन की एक बड़ी भीड़
जो उसके सुन्ने और अपने रोगन से चंगा होने को समस्त
यहूदिया और यिरोशलीम और सूर और सैदा के सिवाने

१८ से जो समुद्र के तीर पर हैं आई थी। और वे भी जो
१९ अपवित्र आत्मन से दुखी थे चंगे हुऐ। और समस्त
मंडली इच्छा रखती थी कि उसे छूवें क्योंकि सामर्थ
२० उससे निकलता था और सबको चंगा करता था। फेर
उसने अपने शिष्यन पर दृष्टि करके कहा कि दरिद्रो
२१ तुम धन्य हो क्योंकि ईश्वर का राज्य तुम्हारे है। धन्य हो
जो अब भूखे हो क्यों तुम तृप्त होगे धन्य हो जो अब रोते
२२ हो क्योंकि तुम हंसोगे। धन्य हो तुम जब मनुष्य तुम्हें
घिनायेंगे और जब वे तुम को अलग करेंगे और धिक्कारेंगे
और मनुष्य के पुत्र के कारण तुम्हारा नाम अधम के समान
२३ निकालेंगे। उसी दिन तुम आनंद हो और आनंद से
उछलो इसलिये कि देखो तुम्हारा फल स्वर्ग में बड़ा है क्योंकि
उनके पितरन ने आगमज्ञानिअन से ऐसही किया।
२४ परंतु तुम पर जो धनी हो संताप है क्योंकि तुम सब
२५ अपनी शांति पाचुके। तुम पर जो संतुष्ट हो संताप है
क्योंकि तुम भुखे होगे तुम पर जो अब हंसते हो संताप
२६ है क्योंकि तुम रोओगे और बिलाप करोगे। तुम पर
संताप है जब सब लोग तुम्हारे विषय में भला कहें क्योंकि
उनके पितरन झूठे आगमज्ञानिअन से ऐसही करते
२७ थे। परंतु मैं तुम्हन को जो सुनते हो कहता हों कि
अपने शत्रुन पर प्रेम करो उन पर जो तुम से दुष्टता करते
२८ हैं भला करो। उन्हें जो तुम को श्राप देवें आशीष करो

और उन्हन के लिये जो तुम्हारी दुर्दशा करें प्रार्थना करो।
२९ और उसको जो तेरे गाल पर थपेड़ा मारे दूसरा भी फेर दे
और जो कोई तेरी अलखालुत लेवे मिरजाई लेने से भी मत
३० रोक। जो कोई तुझ से कुछ मांगे उसे दे और उससे
३१ जिसने तेरी वस्तु लेलिया है फेर मत मांग। और जैसी तुम
इच्छा रखते हो कि लोग तुम से करें तुम भी उन से वैसही
३२ करो। क्योंकि जो तुम उन्हें जो तुम पर प्रेम करते हैं
प्रेम करो तुम्हारी क्या बड़ाई है क्योंकि पापिअन भी अपने
३३ प्रेमिअन पर प्रेम करते हैं। और यद्यपि तुम उनसे जो
तुम से भलाई करते हैं भलाई करो तो तुम्हारी क्या
३४ बड़ाई है क्योंकि पापिअन भी ऐसही करते हैं। और
जो तुम फेर पावने की आशा रखके किसी को ऋण दो तो
तुम्हारी क्या बड़ाई है क्योंकि पापिअन भी पापिअन को
३५ ऋण देते हैं कि उतना फेर पावें। परंतु तुम अपने
शत्रुन पर प्रेम करो और भला करो और फेर पावने
की आशा छोड़कर ऋण दो और तुम्हारा फल बड़ा होगा
और तुम महोत्तम के पुत्र होओगे क्योंकि वुह उन पर
जो भलाई नहीं मानते और अधमन पर कृपाल है।
३६ इस कारण तुम दयाल होओ जैसा तुम्हारा पिता दयाल
३७ है। बुरा बिचार न करो कि तुम्हारा बुरा बिचार न
कियाजाय दोष मत दो और तुमपर दोष न किया
जायगा क्षमा करो और तुम्हारा क्षमा किया जायगा।

३८ देओ और तुम्हें दियाजायगा अच्छा परिमाण दाब दाबके और ऐकट्ठा हिलाके उबरते ऊए तुम्हारी गोद में लोग देंगे क्योंकि जिस परिमाण से तुम नापते हो उसी रीति से
३९ तुम नापाऊआ फेर पाओगे। फेर उसने उन्हन से ऐक दृष्टांत कहा कि क्या अंधा अंधे का अगुआ हो सकता है
४० क्या वे दोनों गड़हे में न गिरेंगे। शिष्य अपने गुरु से बड़ा नहीं परंतु हरऐक जो शुद्ध ऊआ है अपने गुरु के
४१ समान होगा। और तू उस किर्किरी को जो तेरे भाई की आंख में है क्यों देखता है परंतु उस लट्ठे को जो तेरी आंख
४२ में है नहीं देखता। अथवा क्योंकर तू अपने भाई को कहि सकता है कि हे भाई वुह किर्किरी जो तेरी आंख में है ला मैं निकाल दों जब तू उस लट्ठे को जो तेरी आंख में है नहीं देखता हे काल्पनिक पहिले उस लट्ठे को अपनी आंख से निकाल और तब तू उस किर्किरी को जो तेरे भाई की आंख में है अच्छी भांति से देखकर निकाल सकेगा।
४३ क्योंकि उत्तम बृक्ष अधम फल नहीं लाता न अधम बृक्ष
४४ उत्तम फल लाता है। क्योंकि हरऐक बृक्ष अपने फल से जाना जाता है इसलिये कि लोग कटीलन से गूलर नहीं
४५ तोड़ते और न भटकटैआ से दाख तोड़ते। उत्तम मनुष्य अपने अंतःकरण के उत्तम भंडार से उत्तम बस्तें बाहर निकालता है और अधम मनुष्य अपने अंतःकरण के अधम भंडार से अधम बस्तु बाहर निकालता है क्योंकि उस

४६ का मुंह अंतःकरण की भरपूरी से बोलता है। और तुम मुझे क्यों प्रभु प्रभु कहते हो और वे कर्म जो मैं कहता

४७ हों नहीं करते। जो कोई मेरे समीप आता है और मेरा कहना सुनता है और उन्हें करता है मैं तुम्हें बताओंगा

४८ कि वुह किससे उपमा है। वुह उस मनुष्य के समान है जिसने ऐक घर बनाते हुऐ गहिरा खोदा और पत्थर पर नेव डाली और जब बाढ़ आये उस घर पर बड़ा बौछार लगा और उसे हिला न सका क्योंकि वुह पत्थर पर उठाया

४९ गया था। परंतु वुह जो सुनकर नहीं करता उस मनुष्य के समान है जिसने भूमी पर बिना नेव का घर उठाया जिसपर बड़ा बौछार लगा और वुह तुरंत गिरपड़ा उस घर का बड़ा बिनाश हुआ।

७ सातवां पर्ब्ब

१ और जब वुह लोगन को अपनी समस्त बार्त्ता सुनाचुका

२ तो कपरनाहुम में आया। और ऐक सेनापती का दास

३ जो उसका बहुत प्यारा था और रोग से मरने पर था। और उसने ईसा का संदेश सुन के यहूदिअन के प्राचीनन को उसपास भेजकर उसकी बिनती किई कि वुह आवे

४ और उसके दास को चंगा करे। और वे ईसा के समीप आके अति बिनती करके कहने लगे कि वुह योग्य

५ है कि तू उसपर यह करे। क्योंकि वुह हमारे लोगन

पर प्रेम करता है और उसने अपने पास से हमारे कारण
६ ऐक मंदिर बनाया है। तब ईसा उन्हन के संग चला
और जब वुह उसके घरसे बज्जत दूर न था उस सेनापती
ने मित्रन को उसके समीप भेजकर कहा कि प्रभु अपने को
क्लेश न दीजिये क्योंकि मैं योग्य नहीं कि तू मेरी छत तले
७ आवे। इस कारण कि मैं अपने को भी योग्य न समझा
कि तेरे समीप आओं परंतु ऐक बचन कहिये और मेरा
८ दास चंगा होजायगा। इस लिये कि मैं भी ऐक मनुष्य
और के आधीन हों सेना मेरी आज्ञा में है और मैं ऐक
को कहता हों कि जा और वुह जाता है और दूसरे को
कि आ और वुह आता है और अपने दास को कि यह
९ कर और वुह करता है। जब ईसा ने यह सब सुना
उसने उससे आस्चर्य किया और पीछे फिरके उस मंडली से
जो उसके पीछे आवती थी कहा मैं तुम्हन से कहता हों
१० कि मैं इसराईल में भी ऐसा बड़ा बिस्वास न पाया। और
उन्हन ने जो भेजेगये थे घर में फिर जाके उस दास को
११ जो रोगी था चंगा पाया। और दूसरे दिन ऐसा
ज्जआ कि वुह ऐक नगर को जो नाईन कहावता था
चला जाता था और बज्जतेरे उसके शिष्यन में से और बज्जत
१२ लोग उसके संग थे। जब वुह नगर के फाटक के समीप
आया देखो कि ऐक मृतक को बाहर लिये जाते थे जो
अपनी माता का ऐक लौता पुच था और वुह रांड थी और

१२ नगर के बज्जत लोग उसके संग थे। और प्रभु ने उसको
देखके उस पर दया किई और उसे कहा कि मत रो।
१४ और उसने आके रथी को छूआ तब उठावनेवाले ठहर गये
और उसने कहा कि हे तरुण मैं तुझे कहता हों कि
१५ उठ। और वुह जो मरा था उठ बैठा और बोलनेलगा
१६ और उसने उसे उसकी माता को सैांप दिया। और
सबन पर भय पज्जंचा और वे ईश्वर की स्तुति करके कहने
लगे कि एक बड़ा आगमज्ञानी हमन में प्रगट ज्जआ और
१७ कि ईश्वर ने अपने लोगन पर दृष्टि किई। और उसकी
यह चर्चा सर्वत्र यहूदिया में और चारों ओर के समस्त
१८ देश में फैली। यहिया के शिष्यन ने उसको उन सब
१९ बस्तुन का संदेश पज्जंचाया। तब यहिया ने अपने शिष्यन
में से दो को बुलाके ईसा को कहवा भेजा कि वुह जो
आवनिहार था तू है अथवा हम दूसरे की बाट देखें।
२० उन मनुष्यन ने उसके समीप आके कहा कि यहिया स्नान
कारक ने हमन को आप के समीप भेजके कहवाया कि
वुह जो आवनिहार था तू है अथवा हम दूसरे की बाट
२१ देखें। और उसने उसी घड़ी अनेकन को दुर्बलता और
मरी और दुष्ट आत्मन से चंगा किया और बज्जतन से अंधअन
२२ को दृष्टि दिई। तब ईसा ने उत्तर दिया और उन्हें कहा
कि जाओ और जो कुछ तुम देखे और सुने हो यहिया
से कहो कि किस रीति से अंधे देखते हैं लंगड़े चलते हैं

कोढ़ी पवित्र होते हैं बहिरे सुनते हैं मृतक जिलाये
२३ जाते हैं कंगालन को मंगल समाचार सुनायाजाता है। और
२४ धन्य वुह है जोकोई मुझसे ठोकर न खावे। और जब
यहिया के दूत चले गये वुह यहिया के बिषय में लोगन से
कहने लगा कि तुम सब बन में क्या देखने को गये क्या
२५ ऐक नरकट पवन से हिलता ऊआ। परंतु तुम सब क्या
देखने को बाहर निकले क्या ऐक मनुष्य महीन बस्त्र पहिने
ऊऐ देखो वे जो भड़कीला वस्त्र पहिने हैं और सुकुआर
२६ से रहते हैं राजभवनन में हैं। पर तुम सब क्या देखने
गये क्या ऐक आगमज्ञानी हां मैं तुम्हन से कहता हों कि
२७ ऐक आगमज्ञानी से भी अधिक। यही है जिसके बिषय
में लिखा है कि देख मैं अपने दूत को तेरे सन्मुख भेजता
२८ हों जो तेरे मार्ग को तेरे आगे सुधारेगा। क्योंकि मैं तुम से
कहता हों उन में से जो स्त्रीअन से उत्पन्न ऊऐ हैं कोई
आगमज्ञानी यहिया स्नानकारक से बड़ा नहीं है परंतु
वुह जो ईश्वर के राज्य में सबसे छोटा है उससे बड़ा है।
२९ तब सब लोगन ने और पटवारिअन ने जिन्हन ने यहिया
से स्नान पाया था यह सुनके ईश्वर की बड़ाई किई।
३० परंतु फरीसिअन और ताकिकन जिन्हन ने उससे स्नान न
पाया था ईश्वर के अभिप्राय को अपनी दुर्दशा से त्याग
३१ किया। और प्रभु ने यह भी कहा कि मैं इस समय के
लोगन को किससे उपमा दों और वे किसके समान हैं।

३२ वे बालकन के समान हैं जो हाट में बैठकर एक दूसरे को पुकारके कहते हैं कि हम तुम्हारे कारण बांसुरी बजाये और तुम न नाचे हम तुम्हारे लिये बिलाप किये
३३ और तुम न रोये। क्योंकि यहिया स्नानकारक न तो रोटी खाता न दाख का रस पीता आया और तुम सब कहते हो
३४ कि उस पर देव है। मनुष्य का पुत्र खाते और पीते आया है और तुम कहते हो कि देखो एक बड़ा खाऊ
३५ और मद्यप पटवारिअन और पापिअन का मित्र है। परंतु
३६ बुद्धि अपने समस्त पुत्रन से निर्दोषी है। फेर फरीसिअन में से एक ने चाहा कि वुह उसके संग भोजन करे और वुह उस फरीसी के घर में गया और भोजन पर बैठा।
३७ और देखो एक स्त्री जो उस नगर में पापिन थी जब उसने जाना कि ईसा फरीसी के घर में भोजन पर बैठा श्वेत पत्थर
३८ की डिबिआ में सुगंध तेल भरके लाई। और उसके चरण के समीप पीछे खड़ी होके रोने लगी और आंसुअन से उसका चरण धोने लगी और अपने सिर के बालन से पोंछी और उसके चरण को चूमी और सुगंध तेल लगाई।
३९ और जब उस फरीसी ने जिसने उसका शिष्टाचार किया था देखा वुह अपने मन में कहने लगा कि जो यह पुरुष आगमज्ञानी होता तो जानजाता कि यह स्त्री जो उसे छूती है कौन और किस भांति की है क्योंकि वुह पापिन है।
४० तब ईसा ने उत्तर दिया और उसको कहा कि हे शमऊन

मैं तुझे कुछ कहा चाहता हों वुह बोला कि हे उपदेशक
४१ कहिये। एक धनी था जिसके दो ऋणी थे एक पांच
४२ सहस्र का और दूसरा पचास का। और उन पास कुछ देने
को न था उसने दोनो को क्षमा किया अब मुझे कह कि
४३ उन में से कौन उसको अधिक प्रेम करेगा। शमऊन ने उत्तर
दिया और कहा मैं समझता हों कि वुह जिसका उसने
बहुत क्षमा किया तब उसने उसको कहा तूने ठीक बिचार
४४ किया। फेर उसने उस स्त्री के ओर फिरके शमऊन को
कहा तू इस स्त्री को देखता है मैं तेरे घर में आया तूने
मेरे चरण के लिये जल न दिया परंतु उसने मेरे चरण को
आंसुअन से धोया और अपने सिर के बालन से पोंछा।
४५ तू ने मेरा चूमा न लिया परंतु जबसे मैं यहां आया यह
४६ मेरे चरण चूमने से अलग न रही। तू ने मेरे सिर में तेल
न लगाया परंतु इस स्त्री ने मेरे चरण में सुगंध तेल मला।
४७ इस लिये में तुझ से कहता हों कि उसके पाप जो बहुत
हैं क्षमा कियेगये क्योंकि उसका बड़ा प्रेम है परंतु जिसके
४८ थोड़े क्षमा कियेगये उसका थोड़ा प्रेम है। फेर उसने
४९ उसको कहा कि तेरे पाप क्षमा किये गये। तब वे जो
उसके संग भोजन पर बैठे थे अपने मन में कहनेलगे कि
५० यह कौन है जो पापन को भी क्षमा करता है। और
उसने उस स्त्री को कहा कि तेरे बिश्वास ने तेरा उद्धार
किया कुशल से चलीजा।

८ आठवां पर्ब्ब

१ और उसके पीछे यों हुआ कि वुह नगर नगर और गांव गांव से फिरता हुआ उपदेश करता और ईश्वर के राज्य का मंगल समाचार सुनावता था और वे बारह उसके संग २ थे। और कितनी स्त्रिअन जिन्ह ने दुष्ट आत्मा और दुर्बलता से चंगी हुई थीं अर्थात मरियम जो मजदली ३ कहावती थी जिससे सात देव उतारे गये थे। और हीरूदीस का भंडारी कूजा की स्त्री यूहनः और सैसन अरु और बहुतेरी जो अपने द्रव्य से उसकी सेवा करती ४ थीं। और जब बहुत लोग नगर नगर से एकट्ठे होके ५ उसके समीप आये उसने एक दृष्टांत में कहा। एक किसान अपना बीज बोने गया और बोते हुए कितने मार्ग के किनारे पर गिरे और लताड़े गये और आकाश के ६ पंछिअन ने उन्हें चुग लिया। और कितने पत्थर पर गिरे और वे जमके सूख गये क्योंकि सिमसिमाहट उन्हें न ७ पहुंची। और कितने कांटन में गिरे और कांटन ने संग ८ बढ़के उन्हें घोंट डाला। अरु और उत्तम भूमि पर गिरे और उगे और सौगुने फल लाये तब उसने यह बचन कहिके पुकारा कि जिसको कान सुन्ने को लिये हैं सुने। ९ और उसके शिष्यन ने यह कहिके उसको पूछा कि इस १० दृष्टांत का क्या अर्थ है। तब उसने कहा कि ईश्वर के राज्य के भेद का ज्ञान तुम्हें दियागया है परंतु औरन को

दृष्टांतन में कि वे देखते हुए न देखें और सुनते हुए न
११ समझें। अब यह दृष्टांत ऐसा है कि बीज जो है
१२ ईश्वर का बचन है। मार्ग के ओर वे हैं जो सुनते हैं
तब शयतान आता है और बचन को उन्हें न के अंतःकरण
से लेभागता है न हो कि वे बिश्वास लावें और उद्धार पावें।
१३ पत्थर पर के वे हैं जो बचन को सुनके आनंद से ग्रहण
करते हैं और वे जड़ नहीं रखते जो क्षण भर बिश्वास लाते
१४ हैं परंतु परीक्षा के समय में फिरजाते हैं। और जो
कांटन में गिरे वे हैं कि सुनके चलनिकलते हैं और
चिंता और धन और इस जीवन का सुख उन्हें दबालेते हैं
१५ और पक्के फल नहीं लावते। परंतु उत्तम भूमि के वे हैं
जो बचन को सुनके अच्छे और खरे अंतःकरण में धारण
१६ करते हैं और संतोष से फल लावते हैं। कोई मनुष्य
दीयक बारके पात्र के नीचे नहीं ढांपता अथवा खाट तले
नहीं रखता परंतु दीअट पर रखता है कि वे जो भीतर
१७ प्रवेश करते हैं उंजियाला देखें। इसलिये कि कोई बस्तु
गुप्त नहीं जो प्रगट न होय न छिपी जो जानी न जाय
१८ और प्रगट न हो। इसलिये सोचेत रहो कि तुम किस
प्रकार से सुनते हो क्योंकि जिस किसी का है उसको दिया
जायगा और जिसके कुछ नहीं उससे वुह भी जिस पर
वुह ध्यान करता है कि उसका है फेर लियाजायगा।
१९ तब उसकी माता और भाइअन उसके समीप आये और

२० भीड़ के कारण उससे भेंट न करसके। और उसको कहा गया कि तेरी माता और तेरे भाइअन बाहर खड़े तेरे देखने
२१ की इच्छा रखते हैं। तब उसने उत्तर दिया और उन्हें कहा कि मेरी माता और मेरे भाई ये हैं जो ईश्वर का
२२ बचन सुनके मानते हैं। और एक दिन ऐसा हुआ कि वुह अपने शिष्यन के संग एक नाव पर चढ़ा और उन्हन को बोला कि हम उस झील के पार चलें तब उन्हन ने
२३ खोली। परंतु जब नाव चली जाती थी वुह सोगया और झील में एक आंधी की बयार चली और उनकी नाव भर
२४ गई और वे भय में थे। तब वे उसके समीप आये और उसे जगाके बोले कि हे गुरु हे गुरु हम मरे तब उसने उठकर आंधी और जलके लहर को डांटा और वे थमगये और
२५ बड़ा चैन होगया। और उसने उन्हन को कहा कि तुम्हारा बिश्वास कहां है और वे आश्चर्य करके बोले कि यह किस भांति का मनुष्य है कि वुह पवन और जल को भी आज्ञा
२६ करता है और वे उसकी मानते हैं। फेर वे जदरियन
२७ के देश में जो जलील के सन्मुख है पहुंचे। और जब वुह भूमि पर उतरा उस नगर का एक मनुष्य जिस पर बहुत दिन से देवन की छाया थी और वस्त्र नहीं पहिरता
२८ था और न घर में परंतु समाधिन में रहता था। वुह ईसा को देख के चिल्लाया और उसके आगे गिरपड़ा और बड़े शब्द से बोला कि हे अति महान ईश्वर के पुत्र ईसा मुझे

तुझ से क्या काम है मैं तेरी बिनती करता हों मुझे मत
२९ सता। क्येंकि उसने उस अपबित्र आत्मा को आज्ञा किई
थी कि उस मनुष्य से बाहर निकलजाय कि वुह बारबार
उसको पकड़ता था यद्यपि वुह सीकरन और बेड़िअन से
बंधा ऊआ था तद्यपि उन बंधन को तोड़ के देव उसको बन
३० में दौड़ाता था। तब ईसा ने उसको यह कहके पूछा कि
तेरा नाम क्या है वुह बोला कि लाजाऊन इस कारण कि
३१ बऊत से देव उसमें पैठे थे। फेर उन्हन ने उसकी
बिनती किई कि हमें गंभीर में जाने की आज्ञा मत कर।
३२ और वहां बऊत से सूअरन का एक झुंड पहाड़ पर
चरता था तब उन्हन ने उसकी बिनती किई कि हमन को
जाने दे कि उनमें प्रवेश करें तब उसने उन्हें जानेदिया।
३३ फेर वे देव उस मनुष्य से बाहर निकलके सूअरन में पैठे
और वुह झुंड कड़ारे पर से झट झील में जा गिरा और
३४ डूबके मरगया। जब चरवाहन ने जो कि कियागया देखा वे
३५ भागे और नगर में और देश में जाके बोले। तब जो कि
कियागया था वे देखने को बाहर निकले और ईसा के
समीप आये और उस मनुष्य को जिस पर से देव निकल
गये थे बस्त्र पहिनेऊए सचेत ईसा के चरण पास बैठाऊआ
३६ सज्ञान पाया और डरगये। उन सबने जो देखचुके थे
उन्हन से बोले कि वुह जिसपर देव थे किस रीति से चंगा
३७ ऊआ। तब जदरियन के देश के आसपास के सारे

लोगन ने उसकी बिनती किई कि हमारे समीप से जा क्योंकि उन्हें बड़ा डर पैठगया था और वुह नाव पर चढ़के
३८ उलटा फिरा। अब उस मनुष्य ने जिसमें से देव बाहर निकलगये थे उसकी बिनती किई कि मैं भी आप के संग
३९ रहों परंतु ईसा ने उसको यह कहिके बिदा किया। कि अपने घर को फिरजा और दिखा कि ईश्वर ने तेरे लिये कैसे बड़े कार्य किये तब वुह गया और समस्त नगर में सुनाने लगा कि ईसा ने उसके लिये ऐसे बड़े कार्य किये।
४० और ऐसा हुआ कि जब ईसा फिर आया तो लोगन ने उसको ग्रहण किया क्योंकि वे सब उसकी बाट जोहते थे।
४१ और देखो याइरस नाम एक मनुष्य मंडली का प्रधान था आया और ईसा के चरणन् पर गिरके बिनती किई कि
४२ आप मेरे घर चलिये। क्योंकि उसकी एक लौती पुत्री बारह बरस के लगभग थी जो मरने पर पड़ी थी परंतु उसके जाते
४३ हुए लोगन ने उस पर भीड़ किया। और एक स्त्री ने जिसके बारह बरस से रक्त गिरता था जो अपना समस्त धन
४४ बैद्यन पर उठाया परंतु किसी से चंगी न होसकी। पीछे से आके उसके बस्त्र के खूंट को छूई और तुरंत उसके रक्त
४५ का बहना थम गया। तब ईसा ने कहा कि किसने मुझे छूआ जब सब मुकरगये तो पतरस ने और उन्हन ने जो उसके संग थे कहा कि हे गुरु लोग तुझ पर ठेलमठेल करके भीड़ करते हैं और तू कहता है कि मुझे किसने छूआ।

४६ ईसा ने कहा कि मुझे किसीने छूआ है क्योंकि मैं जानता
४७ हों कि सामर्थ मुझ से निकला। और जब उस स्त्री ने
देखा कि वुह छिप न सकी तो कांपती ज़ई आई और उसके
आगे गिरके सब लोगन के सन्मुख उस पर प्रगट किया कि
मैं ने इस कारण से उसे छूआ और कैसा तुरंत चंगी होगई।
४८ तब उसने उसे कहा कि हे पुत्री सावधान हो तेरे बिश्वास
४९ ने तुझे चंगा किया कुशल से चलीजा। जब वुह यह कहि
रहा था तो मंडली के प्रधान के यहां से एक ने आकर
उसको कहा कि तेरी पुत्री मर गई गुरु को दुख मत दे।
५० परंतु जब ईसा ने सुना उसने उत्तर देके उसको कहा कि
मत डर केवल प्रतीति कर और वुह चंगी हो जायगी।
५१ और जब वुह उसके घर में आया तो केवल पतरस और
याकूब और यूहन्ना और उस कन्या के माता पिता को छोड़
५२ किसी को भीतर जाने न दिया। और सब उसके कारण
बिलाप करके रोरहे थे परंतु उसने कहा कि मत रोओ वुह
५३ मर नहीं गई पर सोती है। तब वे उसपर निंदा करके
५४ हंसे कि जानते थे कि वुह मरगई थी। और उसने उन
सबन को बाहर करके उसका हाथ पकड़ा और पुकार के
५५ कहा कि कन्या उठ। तब उसका प्राण फिर आया और
वुह तुरंत उठी और उसने आज्ञा किई कि उसे खाने को
५६ दियाजाय। तब उसके माता पिता बिस्मित ज़ए और उसने
उन्हें कहा कि यह जो किया गया किसी से मत कहियो।

९ नवां पर्ब्ब

१ फेर उसने अपने बारह शिष्यन को एकट्ठे बुलाके उन्हें सब देवन पर परक्रम और दुखन को छोड़ावने को सामर्थ दिया। २ और उन्हें भेजा कि ईश्वर के राज्य का उपदेश करें और ३ रोगिअन को चंगा करें। और उन्हें कहा कि चलने के कारण कुछ मत लेओ न लाठी न झोली न रोटी न रुपैया ४ न मनुष्य पीछे दो बस्त्र। और जिस किसी घर में तुम ५ प्रवेश करो वहीं रहो और वहीं से सिधारो। जो कोई तुम्हारा आदर न करे जब तुम उस नगर से बाहर निकलो उन्हन ६ पर साक्षी के लिये अपने चरण की धूर झाड़ो। तब वे चल निकले और नगर नगर से सर्बत्र मंगल समाचार सुनावते ७ और सर्बत्र चंगा करते गये। अब हीरुदीस ने जो चौथाई का स्वामी था सब कुछ जो उसने किया था सुनके घबराया इस लिये कि कितने कहते थे कि यहिया मरके जी उठा। ८ और कितने कि इलियास प्रगट हुआ और कितने कि ९ एक प्राचीन आगमज्ञानिअन में से फेर उठा है। तब हीरुदीस बोला कि यहिया का तो मैं ने सिर काटा परंतु यह कौन है जिसकी अवस्था में मैं ऐसी बार्त्ता सुनता १० हों और चाहा कि उसे देखे। तब प्रेरितन ने फेर आके सब कुछ जो उन्हन ने किया था जताया और वुह उनको लेके चुपके से एकांत बैतिसैदा नगर के एक अरण्य स्थान ११ में गया। और लोगन जानके उसके पीछे होलिये और

उसने उन्हन का आदर करके उनसे ईश्वर के राज्यकी बातें किईं और उन्हन को जिन्हें चंगा होनेका प्रयोजन था चंगा किया। १२ और जब दिन ढलने लगा उन बारह ने आके उसको कहा कि मंडली को बिदा करिये कि वे नगरन में और चारों ओर की बस्तिअन में जा रहें और भोजन पावें क्योंकि हम यहां उजाड़ में हैं। १३ परंतु उसने उन्हन को कहा कि तुम उन्हें खाने को देओ वे बोले कि हम केवल पांच रोटिअन और दो मच्छलिअन को छोड़ कुछ नहीं रखते हैं हां जो हम जाके ये सब लोगन के लिये भोजन मोल लेवें। १४ क्योंकि वे अटकर में पांच सहस्त्र पुरुष थे तब उसने अपने शिष्यन से कहा कि उन्हें पचास पचास की पांती करके बैठाओ। १५ उन्हन ने वैसही किया और सबन को बैठाया। १६ तब उसने उन पांच रोटिअन और दो मछलिअन को उठाईं और स्वर्ग पर दृष्टि करके उन पर आशीष किया और तोड़ीं और शिष्यन को दिईं कि मंडली के आगे रखें। १७ और उन सब ने भोजन किया और सबके सब संतुष्ट ऊए और उन चूरचार से जो उनसे बच रहे थे बारह टोकरियां भरीं उठाईं। १८ और जब वुह अकेला प्रार्थना करता था ऐसा ऊआ कि उसके शिष्य उसके संग थे तब उसने यह कहके उन्हन को पूछा कि लोग क्या कहते हैं मैं कौन हों। १९ वे उत्तर देके बोले कि यहिया स्नानकारक परंतु कितने इलियास कहते हैं

और कितने कि पुराने अगमज्ञानिअन में से एक
२० फेर उठा। उसने उन्हन को कहा परंतु तुम क्या कहते
हो कि मैं कौन हों पतरस ने उत्तर देके कहा कि
२१ ईश्वर का मसीह। तब उसने उन्हें दृढ़ता से चेताया और
यह कहिके आज्ञा किई कि यह बात किसी से मत
२२ कहियो। अवश्य है कि मनुष्य का पुत्र बहुत कष्ट उठावे
और प्राचीनन और प्रधान याजकन और अध्यापकन से
निंदा कियाजाय माराजाय और तीसरे दिन फेर उठे।
२३ फेर उसने सबन से कहा कि जो कोई मेरे पीछे चला चाहे
तो चाहिये कि वुह अपने ही बिरोध करे और प्रति दिन
२४ अपना क्रूस उठावे और मेरे पीछे आवे। इस लिये कि
जो कोई अपना प्राण बचाया चाहे उसे खोवेगा परंतु जो
कोई मेरे कारण अपने प्राण को गंवावेगा वुह उसे पावेगा।
२५ क्योंकि मनुष्य को क्या प्राप्त है जो वुह समस्त जगत को
२६ कमावे और अपने को खोवे और नष्ट होजावे। इसलिये
जोकोई मुझ से और मेरे बचन से लज्जा करेगा मनुष्य का
पुत्र भी उससे जिस समय में वुह अपने और अपने पिता के
और पवित्र दूतन के ऐश्वर्य में आवेगा लज्जा करेगा।
२७ परंतु मैं तुम से सत्य कहता हों कि यहां कितने खड़े हैं
जो मृत्यु का स्वाद न चखेंगे जब लों कि ईश्वर के राज्य को
२८ न देखलें। और उन बातन से आठ दिन के पीछे ऐसा
हुआ कि वुह पतरस और यूहन्ना और याकूब को लेके

२९ पहाड़ पर प्रार्थना करने को गया। और उसके प्रार्थना करते हुए उसका स्वरूप कुछ और होगया और उसका
३० बस्त्र श्वेत हुआ और चमकने लगा। और देखो कि दो मनुष्य उससे बार्त्ता करते थे जो मूसा और इलियास थे।
३१ जो तेज में दिखाई दिये और उसके मृत्यु की जिसको वुह
३२ यिरोशलीम में संपूर्ण करने पर था चर्चा करते थे। तब पतरस और वे जो उसके संग थे नींद से भारी थे और जब वे जागे उन्हों ने उसके ऐश्वर्य्य को और उन दोनों मनुष्यन
३३ को जो उसके संग खड़े थे देखा। और जब वे उससे अलग होने लगे ऐसा हुआ कि पतरस ने ईसा को कहा कि हे गुरु हमारे कारण अच्छा है कि यहां रहें और तीन तंबू बनावें एक तेरे लिये और एक मूसा के लिये और एक इलियास के लिये वुह न जानता था कि क्या कहता है।
३४ उसके यह कहते एक मेघ ने आके उन पर छाया किई
३५ और जब वे मेघ में प्रवेश करने लगे वे डरगये। और मेघ से एक शब्द यह कहते हुए आया कि यह मेरा प्रिय
३६ पुत्र है उसकी सुनो। और जब शब्द होचुका ईसा अकेला पायागया और वे चुपके होकर उन बस्तुन में से जो उन्हों ने देखी थी उन्हीं दिनन में किसीसे कुछ न
३७ कहा। और ऐसा हुआ कि दूसरे दिन जब वे पहाड़
३८ पर से उतरे बड़ी मंडली उसको मिली। और देखो कि एक मनुष्य ने उस मंडली से पुकार के कहा हे गुरु मैं तेरी

बिनती करता हों कि मेरे पुत्र पर दृष्टि कर क्योंकि वुह
३९ मेरा एकलौता है। और देख उसको आत्मा लेता है
और वुह तुरंत चिल्लाता है और वुह उसे ऐसा ऐंठता है
कि वुह फेन बहाता है और वुह उसको कुचल के कठिन
४० से निकल जाता है। और मैं ने तेरे शिष्यन से बिनती
४१ किई कि उसको दूर करें और वे न कर सके। तब ईसा
ने उत्तर दिया और कहा हे अविश्वास और टेढ़ी पीढ़ी मैं कब
लों तुम्हारे संग रहों और तुम्हारी सहों अपने पुत्र को इधर
४२ ला। और जब वुह आने लगा उस देव ने उसको गिरा
दिया और फाड़ा तब ईसा ने उस अपवित्र आत्मा को डांटा
और बालक को चंगा किया और उसे उसके पिता को सौंप
४३ दिया। और वे सब ईश्वर के बड़े पराक्रम से बिस्मित हुए
परंतु जब वे सबकेसब उन कार्यन से जो ईसा ने किया था
४४ आश्चर्य में थे उसने अपने शिष्यन को कहा। ये बातें
अपने कान में रखो कि मनुष्य का पुत्र लोगन के हाथ में
४५ सौंपाजायगा। परंतु वे इस बचन को न समझे और यह
उनसे गुप्त रहा कि उनको सूझ न पड़ा और वे उस बात
४६ को उसे पूछने को डरे। फेर उन्हन में यह चर्चा उठी
४७ कि हम में सब से बड़ा कौन है। ईसा ने उनके
अंतःकरण की चिंता जानके एक बालक को लेकर अपने
४८ समीप खड़ा किया। और उन्हें कहा कि जो कोई इस
बालक को मेरे नाम पर अंगीकार करे मुझे अंगीकार करता

है और जो कोई मुझे अंगीकार करेगा उसको जिसने मुझे भेजा है अंगीकार करता है क्योंकि वुह जो तुम सब में

४९ अत्यंत छोटा है वही बड़ा होगा। तब यूहन्ना ने उत्तर दिया और कहा कि हे गुरु हमने एक को तेरे नाम से देवन को भगावते देखा और उसे बरजा इस कारण कि वुह

५० हमारे संग नहीं आता। तब ईसा ने उसको कहा कि मत बरजो क्योंकि वुह जो हमारा बिरोधी नहीं हमारे ओर

५१ का है। और जब उसके ऊपर जानेका समय आया ऐसा हुआ कि उसने अपने मुंह को दृढ़ किया कि यिरोशलीम

५२ को जाय। और अपने सन्मुख दूतन को भेजा और वे जाके सामरियन के एक गांव में प्रवेश किये कि उसके

५३ लिये ठीक करें। और उन्हन ने उसको ग्रहण नकिया इस कारण कि उसका रुख यिरोशलीम को जाने पर था।

५४ और जब उसके शिष्य याकूब और यूहन्ना ने देखा वे बोले कि हे प्रभु तेरी इच्छा होय तो हम आज्ञा करें कि स्वर्ग से आग बरसे और उन्हें भस्म करे जैसा कि इलियास ने

५५ किया था। परंतु वुह फिरके उनको झुंझला के बोला तुम

५६ नहीं जानते कि तुम्हारा किस प्रकार का आत्मा है। क्योंकि मनुष्य का पुत्र लोगन का प्राण नाश करने नहीं आया परंतु रक्षा करने को आया है फेर वे दूसरे ग्राम को गये।

५७ और ऐसा हुआ कि जब वे मार्ग में चलेजाते थे एक ने उसको कहा कि हे प्रभु जहां कहीं तू जाता है मैं तेरे

५८ पीछे चलोंगा। तब ईसा ने उसे कहा कि लोमड़िअन के
माँदें हैं और आकाश के पंछिअन् के खोते हैं परंतु मनुष्य
५९ के पुत्र के लिये सिर धरने का स्थान नहीं है। और
उसने दूसरे को कहा कि मेरे पीछे चला आ परंतु उसने
कहा हे प्रभु मुझ को पहिले जाने दे कि अपने पिता को
६० गाड़ों। ईसा ने उसे कहा कि मृतक को अपने मृतकन्
को गाड़ने दे परंतु तू जाके ईश्वर के राज्य का संदेश दे।
६१ और दूसरे ने भी कहा हे प्रभु मैं तेरे पीछे चलेंगा परंतु
पहिले मुझको जानेदे कि अपने घर के लोगन से बिदा हो
६२ आओं। तब ईसा ने उसको कहा कि जो मनुष्य अपने
हाथ को हल पर रखके पीछे देखे ईश्वर के राज्य के योग्य
नहीं।

१० दसवां पर्ब्ब

१ इन सबन के पीछे प्रभु ने और सत्तर को भी ठहराया और
उन्हन को दोदो करके अपने सन्मुख जिस जिस नगर और
२ स्थान में जहां वुह आप जाया चाहता था भेजा। उस
समय उसने उन्हन को कहा कि पक्की हुई खेती बहुत है
ठीक परंतु बनिहार थोड़े हैं सो खेती के स्वामी की बिनती
करो कि वुह अपनी पक्की खेती के लिये बनिहारन को भेजे।
३ जाओ देखो मैं तुम्हें भेड़ के बच्चे के समान हुंडारन में भेजता
४ हों। न थैली न झोला न जूता लेओ और मार्ग में किसी

५ को नमस्कार मत करो। और तुम जिस किसी घर में
६ प्रवेश करो पहिले उस घर पर कल्याण कहो। और जो
कल्याण का पुत्र वहां होय तुम्हारा कल्याण उसपर ठहरेगा
७ नहीं तो तुम्हीं पर फिर आवेगा। और उसी घर में रहो
और जो कुछ वे तुम्हें देवें खाओ पीओ इसलिये कि
८ बनिहार अपने टीका के योग्य है घर घर मत फिरो। और
जिस बस्ती में तुम प्रवेश करो और वे तुम्हारा आदर करें
९ जो कुछ तुम्हारे आगे रखा जाय भोजन करो। और वहां
के रोगिअन को चंगा करो और उन्हें कहो कि ईश्वर का
१० राज्य तुम्हारे समीप पहुंचा है। परंतु जिस किसी नगर
में तुम प्रवेश करो और वे तुम्हारा आदर न करें वहां के
११ मार्गन में जाके कहो। कि तुम्हारे नगर की धूर लों जो
हम पर पड़ी है हम तुम्हीं पर झाड़ चले परंतु तुम इसे
निश्चय जानो कि ईश्वर का राज्य तुम्हारे निकट पहुंचा है।
१२ परंतु मैं तुम से कहता हूं कि उसी दिन में उस नगर की
१३ दशा से सदूम के लिये अधिक सहज होगी। हे कोराजीन
तुझ पर संताप है हे बैतसैदा तुझ पर संताप है इसलिये
कि जो आश्चर्य काम तुम में दिखाये गये जो सूर और सैदा
में दिखाये जाते वे टाट ओढ़के और राख मलकर कबके
१४ पश्चात्ताप कर चुकते। परंतु बिचार के दिन में तुम्हारी
दशा से सूर और सैदा के लिये अधिक सहज होगी।
१५ और हे कफरनाऊम जो स्वर्ग लों बढ़ाई गई है नाश लों

१६ नीचे फेंकी जायगी। वुह जो तुम्हारी सुनता है मेरी सुनता है और वुह जो तुम्हारा अनादर करता है मेरा अनादर करता है और वुह जो मेरा अनादर करता है मेरे
१७ भेजनिहार का अनादर करता है। तब वे सत्तर फेर आके आनंद से कहने लगे कि हे प्रभु तेरे नाम से देव भी हमारे
१८ बश में हुए। तब उसने उन्हें कहा मैं ने देखा कि शैतान
१९ बिजुली के समान स्वर्ग से गिरा। देखो मैं तुम्हें सामर्थ देता हों कि तुम सांपन और बिच्छुअन पर और शत्रुन के समस्त पराक्रम पर चरण रखो और कोई बस्तु तुम्हें किसी
२० रीति से दुख न देगी। तिसपर भी उससे आनंद मत होओ कि आत्मन भी तुम्हारे बश में हैं परंतु पहिले इसलिये आनंद होओ कि तुम्हारे नाम स्वर्ग में लिखे हुए
२१ हैं। उसी घड़ी में ईसा आत्मा के बिषे आनंद होके अति प्रसन्न हुआ और बोला कि हे पिता स्वर्ग और पृथिवी के प्रभु मैं तेरी स्तुति करता हों कि तूने इन सबन् को ज्ञानिअन और बुद्धिमानन से गुप्त किया और उन्हें बालकन पर प्रगट किया ऐसही होवे हे पिता क्योंकि तेरी दृष्टि में
२२ यही अच्छा जानागया। सब कुछ मेरे पिता से मुझे सौंपागया है और बिना को छोड़ कोई नहीं जानता कि पुत्र कौन है और पुत्र को और उसको जिसपर पुत्र प्रगट किया चाहे छोड़ कोई नहीं जानता कि पिता कौन है।
२३ तब उसने शिष्यन को ओर फिरके एकांत में कहा कि धन्य

वे आंखें कि यह समस्त जो तुम देखते हो देखती हैं।
२४ इसलिये कि मैं तुम्हें कहता हों कि बहुतेरे आगमज्ञानी
और राजा ने अभिलाष किया कि यह जो तुम देखते हो
देखें और न देखा और वे सब जो तुम सुनते हो सुनें और
२५ न सुना। और देखो एक तार्किक ने उठके उसकी परीक्षा
करने को पूछा कि हे उपदेशक मैं क्या करें कि अनंत
२६ जीवन का अधिकारी होओं। उसने उसको कहा कि
२७ तौरेत में क्या लिखा है तू कैसे पढ़ता है। तब उसने
उत्तर देके कहा कि तू प्रभु अपने ईश्वर को अपने सारे
अंतःकरण से और अपन सारे मनसे और अपने सारे बल
से और अपनी सारी बुद्धी से प्रेम कर और अपने परोसी
२८ को अपने समान प्रेम कर। तब उसने उसको कहा कि
२९ तूने ठीक उत्तर दिया यही कर और तू जीएगा। परंतु
उसने अपने को निर्दोष करने की इच्छा करके ईसा को
३० कहा भला मेरा परोसी कौन है। तब ईसा ने उत्तर देके
उसको कहा कि एक मनुष्य यिरोशलीम से अरीहा को
चला और चोरन ने उसे घेरा और नंगा करके उसको घाइल
३१ किया और अधमुआ छोड़के चलेगये। तब संयोग से कोई
याजक उस मार्ग से आया जब उसने उसे देखा वुह दूसरे
३२ ओर से चलागया। और इसी रीति से एक लोई जब वुह
उस स्थान में था आके देख कर दूसरे ओर से चलागया।
३३ परंतु एक सामरी जाते जाते जहां वुह था पहुंचा और

३४ वुह उसे देखके दयावान हुआ। और समीप आके तेल और मदिरा लगाकर उसके घावन को बांधा और अपने पशु पर बैठाके उसे ऐक सरा में लाया और उसकी सेवा करने
३५ लगा। तब दूसरे दिन बिदा होते हुऐ उसने दो सुकी निकालकर भठिहारा को दिईं और उसको कहा कि उसकी टहल कर और जो कुछ तेरी अधिक उठान होगी
३६ जब मैं फिर आओंगा मैं तुझे भरदेउंगा। अब तू क्या बिचार करता है कि उन तीनों में कौन उसका परोसी था
३७ जो चोरन में जा पड़ा था। उसने कहा वुह जिसने उसपर दया किई तब ईसा ने उसको कहा जा तू भी ऐसही कर।
३८ और ऐक स्त्री ने जिसका नाम मरथा था उसको अपने घर
३९ में उतारा। और मरियम नाम उसकी ऐक बहिन थी जो ईसा के चरण पास बैठके उसकी बार्त्ता भी सुनती थी।
४० तब मरथा बहुत सेवा करने से व्याकुल हुई और उसके समीप आके बोली कि हे प्रभु क्या तू नहीं चिंता करता कि मेरी बहिन ने मुझे अकेली पर सेवा छोड़ दिई
४१ इस लिये उसे आज्ञा कर कि मेरा सहाय करे। तब ईसा ने उत्तर दिया और उसको कहा कि मरथा मरथा तू बहुतसी बस्तुन की चिंता करती और व्याकुल होती है।
४२ परंतु ऐकही बस्तु अवश्य है और मरियम ने उस अच्छे भाग को चुना है जो उससे लिया न जायगा।

१ और ऐसा हुआ कि जों वुह ऐक स्थान में प्रार्थना करता था जब सावकाश पाया उसके शिष्यन में से ऐक ने उसे कहा कि हे प्रभु हम को प्रार्थना करना सिखाव जैसा कि यहिया
२ ने अपने शिष्यन को सिखाया। उसने उन्हें कहा कि जब तुम प्रार्थना करो कहो कि हे हमारे पिता जो स्वर्ग में है तेरा नाम पवित्र रहे तेरा राज्य आवे तेरी इच्छा जैसी
३ स्वर्ग में है वैसी पृथिवी पर हो जाय। हमारे दिन
४ दिन की रोटी प्रति दिन हमें दे। और हमारे पापन को क्षमा कर क्योंकि हम भी सबन को जो हमारे ऋणी हैं क्षमा करते हैं और हम को परीक्षा में मत डाल
५ परंतु हमें दुष्ट से बचाले। और उसने उन्हें कहा तुम में से कौन है जिसका ऐक मित्र होय और आधी रात को उस पास जाय और उसको कहे कि हे मित्र तीन रोटी
६ मुझे उधार दे। क्योंकि मेरा ऐक मित्र कूंच में मेरे यहां आ उतरा है और मेरे पास कुछ नहीं कि उसके आगे धरूं।
७ और वुह भीतर से उत्तर देवे और कहे कि मुझे मत संताव अब द्वार बंद है और मेरे बालकन मेरे संग बिछौने पर
८ हैं मैं उठके तुझे दे नहीं सकता। सो मैं तुम से कहता हों कि यद्यपि वुह उठके उसको न देगा इसलिये कि वुह उसका मित्र है तद्यपि उसके सतावने के कारण वुह
९ उठेगा और जितना वुह चाहता है उसे देगा। और मैं तुम्हें कहता हों कि मांगो और तुम्हें दिया जायगा ढूंढो

और तुम पाओगे खटखटाओ और तुम्हारे लिये खोला
१० जायगा। इसलिये हरऐक जो मंगता है लेता है और
जो कोई कि ढूंढता है पावता है और जो खटखटाता है
११ उसके लिये खोला जायगा। कौन है तुम में जो पिता
होके जब बेटा उससे रोटी मांगे वुह उसको पत्थर दे
अथवा जो मछली मांगे मछली के बदले उसे सर्प दे।
१२ अथवा जो वुह अंडा मांगे क्या वुह उसे बिच्छू दे।
१३ यद्यपि तुम बुरे होके अच्छे दान अपने बालकन को देने
जानते हो तो कितना अधिक तुम्हारा स्वर्गवासी पिता
१४ उन्हन को जो उससे मांगते हैं धर्मात्मा देगा। फेर
वुह ऐक देव को जो गूंगा था और ऐसा हुआ कि जब
उसने देव को निकाला वुह गूंगा बोलने लगा और लोग
१५ आश्चर्य किये। परंतु उनमें से कितने बोले कि वुह
देवन के राजा बालजबूल के सहाय से देवन को
१६ भगाता है। कितनन ने परीक्षा के लिये उससे स्वर्ग
१७ से ऐक लक्षण चाहा। तब उसने उनकी चिंता जान
के उन्हें कहा कि हरऐक राज्य अपने बिरोध से
दो भाग होजाय उजार होता है और जो घर अपना
१८ बिरोधी हो गिरपड़ता है। जो शयतान भी अपने बिरोध
में आप से अलग होय तो उसका राज्य कैसे स्थिर रहेगा
क्योंकि तुम कहते हो कि मैं बालजबूल के सहाय से देवन
१९ को भगाता हों। भला जो मैं बालजबूल के सहाय से देवन

को भगाता हों तुम्हारे बेटे किसके सहाय से भगाते हैं इस
२० लिये वे तुमारे बिचारी होंगे। परंतु जो मैं ईश्वर के सहाय
से दैवन को दूर करता हों तो निश्चय ईश्वर का राज्य तुम
२१ पर आया है। जब ऐक बलवंत मनुष्य हथियार बांधे हुए
अपने घर की रखवारी करता है उसकी संपत्ति कुशल से
२२ रहती है। परंतु जो उससे ऐक अधिक बलवंत उसपर
चढ़ आवे और उसको जीत ले वुह उसका समस्त हथियार
को जिस पर उसकी आसरा थी ले लेता है और उसके धन
२३ को बांट देता है। वुह जो मेरे संग नहीं सो मेरा बैरी
है वुह जो मेरे संग ऐकट्ठा नहीं करता बिथराता है।
२४ जब अपवित्र आत्मा मनुष्य से बाहर निकल गया है
वुह सूखे स्थान में बिश्राम ढूंढता फिरता है और नहीं
पाके वुह कहता है कि मैं अपने घर में जहां से निकला
२५ हों फिर जावंगा। और आके उसे झाड़ा बोहारा पावता है।
२६ तब वुह जाके और सात आत्मा जो उससे अधिक दुष्ट हैं
लेता है और वे प्रवेश करके वहीं रहते हैं तब उस
मनुष्य की पिछली दशा पहिले से भी अधिक बुरी होती
२७ है। और जब वुह ये बचन कहता था ऐसा हुआ कि
उस मंडली में से ऐक स्त्री ने बड़े शब्द से कहा धन्य वुह
गर्भ जिसमें तू पड़ा और वे स्तन जिसे तू ने चूसा है।
२८ परंतु उसने कहा कि हां अति धन्य वे हैं जो ईश्वर का
२९ बचन सुनते हैं और उसे मनन करते हैं। और जब

बहुत लोग एकट्ठे होने लगे उसने कहना आरंभ किया कि इस समय के लोग दुष्ट हैं वे चिह्न ढूंढ़ते हैं और कोई चिह्न उन्हें दिया न जायगा केवल यूनस आगमज्ञानी
३० का चिह्न। इसलिये कि जिस रीति से यूनस निनीवी के लोगन पर एक चिह्न हुआ मनुष्य का पुत्र भी ऐसही
३१ इस समय के लोगन के लिये होगा। दक्षिण की रानी बिचार के दिन में इस समय के मनुष्यन के संग उठेगी और उन्हें दोषी करेगी क्योंकि वुह पृथिवी के सिवाने से सुलैमान का ज्ञान सुनने को आई और देखो एक यहां
३२ सुलैमान से भी अति बड़ा है। निनीवी के लोग बिचार के दिन में इस समय के लोगन के संग उठेंगे और उन्हन को दोषी करेंगे इसलिये कि उन्हन ने यूनस के उपदेश से पश्चात्ताप किया और देखो कि एक यहां यूनस से भी
३३ अति बड़ा है। कोई मनुष्य दीपक को बारके गुप्त स्थान में अथवा नांद के नीचे नहीं रखता परंतु दीअट पर धरता है कि वे जो भीतर आवें उंजिआला देखें।
३४ देह का उंजिआला आंख है इस कारण जो तेरी आंख शुद्ध है तेरा समस्त देह उंजिआला है पर जो बुरी है तो तेरा समस्त देह भी अंधकार से भरा है। इसलिये
३५ सोचेत रहो कि वुह उंजियाला जो तुझ में है
३६ अंधियारा न हो जाय। इसलिये जो तेरा समस्त देह उंजियाले से भरा हो और कुछ अंधियारा न होवे समस्त

देह उंजियाले से भरा होगा जैसा अति प्रकाश दीपक से
३७ तुझे उंजियाला मिलता है। और जब वुह कहि रहा
था एक फरीसी ने उससे बिनती करके कहा कि मेरे संग
भोजन करिये और वुह भीतर जाके भोजन पर बैठा।
३८ और जब उस फरीसी ने देखा कि उसने भोजन से पहिले
३९ स्नान नहीं किया तो आश्चर्य किया। तब प्रभु ने उसको
कहा अब तुम हे फरीसिअन कटोरे और थाली को बाहर
से शुद्ध करते हो परंतु तुम्हारे भीतर में क्रूरता और दुष्टता
४० भरी ऊई है। हे अज्ञानिअन क्या वुह जिसने बाहर
४१ को बनाया भीतर को भी नहीं बनाया। सो तुम उन
बस्तुन में से जो तुम्हारी हैं दान दो और देखो कि समस्त
४२ बस्तें तुम्हारे लिये पवित्र हैं। परंतु हे फरीसिअन तुम
पर संताप है क्योंकि तुम पुदीना और जीरा और सब
प्रकार के सागन का दसवां भाग देते हो और बिचार और
ईश्वर के प्रेम को किनारे करते हो तुम को अवश्य था कि
४३ इन्हें करते और उन्हें न छोड़ते। हे फरीसिअन तुम पर
संताप है क्योंकि तुम सभा में श्रेष्ठ आसन और हाटन में
४४ नमस्कार का प्रेम रखते हो। हे काल्पनिक अध्यापकन
और फरीसिअन तुम पर संताप है क्योंकि तुम समाधिन के
समान हो जो दिखाई नहीं देते और लोग जो ऊपर
४५ फिरते हैं नहीं जानते। तब एक शास्त्री ने उत्तर दिया
और उसको कहा कि हे उपदेशक यह कहिके तू हम

४६ को भी ओलाना देता है। तब उसने कहा हे शास्त्रिअन तुम पर भी संताप है क्योंकि तुम बोझा जिनका उठावना कठिन है मनुष्यन पर डारते हो और तुम आप उन
४७ बोझन को अपनी एक अंगुली से भी नहीं छूते। तुम पर संताप है क्योंकि तुम आगमज्ञानिअन के समाधिन को बनावते हो और तुम्हारे पितरन ने उन्हें मारडाला।
४८ ठीक तुम अपने पितरन के कर्म पर साखी देते हो क्योंकि वे तो उन्हें मारडाले और तुम उनके समाधिन को बनावते
४९ हो। इसलिये ईश्वर के ज्ञान ने भी कहा कि मैं आगमज्ञानिअन और प्रेरितन को उनके तीर भेजेंगा और वे उनमें से कितनन को मार डालेंगे और दुख देंगे।
५० कि समस्त आगमज्ञानिअन का रुधिर जो जगत के आरंभ से बहाया गया है इस समय के लोगन से लिया जाय।
५१ हां हाबिल के रुधिर से लेके जकरिया के रुधिर लों जो वेदी और मंदिर के मध्य में बध किया गया मैं तुम से कहता हों कि इस समय के लोगन से लिया जाय।
५२ हे शास्त्रिअन तुम पर संताप है क्योंकि तुम ने बिद्या की कुंजी लेलिई है तुम आप प्रवेश नहीं करते और उन्हें जो
५३ प्रवेश करने चाहते हैं तुम ने रोक रखा। और जब वुह उन्हें ये बातें कहता था अध्यापकन और फरीसिअन बेपरिमाण उसे चिढ़ाये और बकबक करके बहुत सी बातन
५४ में उसे दबाने लगे। और उसके घात में लगे और ढूंढते थे

कि उसके मुंह से कोई बचन पकड़ पावें कि वे उसे दोषी करें।

१२ बारहवां पर्ब्ब

१ उस समय में जब अनगिनित लोगन की मंडली एकट्ठी हुई और एक दूसरे को लताड़ता था उसने सब से पहिले अपने शिष्यन को कहना आरंभ किया कि तुम फरीसिअन के किन्व से जो कल्पनिकता है परे रहो। २ क्योंकि कोई बस्तु गुप्त नहीं जो प्रगट न होगी न छिपी जो जानी न जायगी। ३ इस कारण जो कुछ तुम ने अंधेरे में कहा है उजियाले में सुना जायगा और जो कुछ तुमने कोठरिअन के बिषे कान में कहा है कोठन पर पुकारा जायगा। ४ और मैं तुम से जो मेरे मित्र हो कहता हों कि उन से मत डरो जो देह के टुकड़े करते हैं और उससे अधिक कुछ कर नहीं सकते। ५ परंतु मैं तुम्हें बताओं कि तुम किससे डरो तुम उससे डरो जो देह को टुकड़े करके सामर्थी है कि नरक में डाले हां मैं तुमसे कहता हों कि उसे डरते रहो। ६ क्या दो दमड़िअन पर पांच चिड़ियां नहीं बिकतीं और उन में से एक ईश्वर के आगे छिपी नहीं है। ७ परंतु तुम्हारे सिर के समस्त बाल भी गिने हुए हैं इसलिये मत डरो तुम बहुतसी चिड़िअन से अधिक मोलके हो। ८ मैं ये भी तुम से कहता हों कि जो कोई मनुष्यन के आगे मुंह से न मुकरेगा मनुष्य का पुत्र भी

९ उससे ईश्वर के दूतन के आगे न मुकरेगा। और जो कोइ मनुष्यन के आगे मुह्ह से मुकरेगा ईश्वर के दूतन के आगे
१० मुकर जायगा। और जो कोई मनुष्य के पुत्र के बिषय में कुबचन कहेगा वुह उसे क्षमा किया जायगा परंतु जो धर्मात्मा के बिषय में बुरा कहता है उसे क्षमा नहीं किया
११ जायगा। और जब वे तुम्हें मंडलिअन में और न्यायी और पराक्रमी के आगे लेआवें चिंता मत करो कि तुम कैसे अथवा
१२ क्या उत्तर देगे अथवा क्या कहोगे। इसलिये जो तुम्हें
१३ कहना है धर्मात्मा उसी घड़ी तुम को सिखावेगा। तब उस मंडली में से एकने उसे कहा कि हे उपदेशक मेरे भाई
१४ को कह कि वुह मेरे संग अधिकार का भाग दे। तब उस ने उसको कहा कि हे मनुष्य मुझे तुम पर किसने
१५ न्यायी अथवा भागकारक किया। तब उसने उन्हन को कहा सैंचेत रहो और लोभ से परे रहो क्योंकि किसी का जीवन
१६ उसके धन की अधिकाई से नहीं है। फेर उसने उन्हें एक दृष्टांत कहा कि एक धनमान की भूमि में बहुत कुछ
१७ उपजने लगा। तब उसने अपने मन में यह कहिके बिचार किया कि मैं क्या करें मेरे स्थान नहीं कि जहां मैं अपनी
१८ भूमि की बढ़ती रखें। तब उसने कहा मैं यह करेंगा मैं अपने खत्तेको ढाओंगा और बड़े बनाओंगा और अपनी
१९ बढ़ती और धन वहीं एकट्ठा करेंगा। और अपने प्राण को कहोंगा कि हे प्राण तेरे पास बहुत सा धन बरसन के

२० लिये एकट्ठा धर है चैन कर खा पी आनंद हो। परंतु ईश्वर ने उसको कहा कि हे अज्ञान इसी रात तुझ से तेरा प्राण फेर लियाजायगा तब वे बस्तें जो तूने बटोरी हैं किसकी
२१ होगीं। उसकी यह दशा है जो अपने लिये धन बटोरता
२२ है और ईश्वर के ओर धनी नहीं है। फेर उसने अपने शिष्यन को कहा इसलिये मैं तुमसे कहता हों कि अपने जीवन के लिये चिंता मत करो कि हम क्या खायेंगे और न
२३ देह के लिये कि हम क्या पहिनेंगे। कि जीवन खाने से
२४ और देह बस्त्र से अधिक है। कौवन को देखो कि वे न बोते हैं न लवते हैं उनको न खरिहान न खत्ते हैं और
२५ ईश्वर उनको खिलाता है। तुम पंछिअन से कितना अधिक हो और कौन तुम में चिंता करके अपने डील को
२६ एक हाथ बढ़ा सकता है। जो तुम अति छोटे काम नहीं
२७ कर सकते तो औरन के लिये क्यों चिंता करते हो। सुदर्शन पर दृष्टि करो वे कैसे बढ़ते हैं वे परिश्रम नहीं करते न कातते हैं और मैं तुम से कहता हों कि सुलैमान अपने समस्त
२८ ऐश्वर्य में उनमें से एक के समान बिभूषित न था। फेर जो ईश्वर घास को जो आज खेत में है और कल भट्ठे में झोंकी जायगी यों पहिनाता है तुम्हें कितना अधिक पहिनावेगा
२९ हे अल्प बिश्वासिअन। और तुम मत पूछो कि हम क्या खायेंगे और हम क्या पीवेंगे न अपने मन में संदेह करो।
३० क्योंकि उन सब बस्तुन की खोज संसारी लोग करते हैं और

तुम्हारा पिता जानता है कि तुम्हें इन बस्तुन का अबश्य है।
३१ परंतु पहिले तुम ईश्वर के राज्य को ढूंढो और ये समस्त
३२ बस्तें तुम्हारे लिये अधिक किई जायगी। हे छोटी झुंड मत
डर इसलिये कि तुम्हारे पिता की प्रसन्नता है कि वुह राज्य
३३ तुम्हें दे। जो कुछ तुम्हारे हो बेंचो और दान दो अपने
लिये थैली जो पुरानी नहीं होती ठीक करो और भंडार
स्वर्ग में जो नहीं घटता जहां चोर नहीं पहुंचता न कीड़े
३४ नाश करते। क्योंकि जहां तुम्हारा धन है तुम्हारा मन भी
३५ वहीं लगा रहेगा। तुम्हारी कमरें बंधी रहें और तुम्हारा
३६ दीपक बरता रहे। और तुम तो उन लोगन के समान जो
अपने प्रभु की बाट जोहते हों कि वुह बिवाह करके कब
फिर आवेगा कि जो वुह आवे और खटखटावे वे उसको
३७ लिये तुरंत खोलें। धन्य वे दास जिन्हें प्रभु आकर जागते
पावे मैं तुम से सत्य कहता हों कि वुह कमर बांधेगा और
उन्हें भोजन पर बैठावेगा और आके उनकी सेवा करेगा।
३८ और जो वुह दो पहर अथवा तीसरे पहर में आवे और
३९ ऐसा पावे वे दास धन्य हैं। और तुम तो जानते हो कि
जो गृह का स्वामी जानता कि चोर किस घड़ी आवेगा तो
वुह जागता रहता और अपने घर में सेंध देने न देता।
४० सो तुम भी तैयार हो जाओ क्योंकि मनुष्य का पुत्र ऐसे
४१ समय में आवेगा जब तुम बाट न जोहते रहोगे। तब
पतरस ने उसको कहा कि हे प्रभु यह दृष्टांत तू हम से

४२ अथवा सबसे कहता है। प्रभु ने कहा कि वुह बिश्वासी और बुद्धिमान भंडारी कौन है जिसको प्रभु अपने परिवारन पर प्रधान करेगा कि उन्हें ठीक समय में भोजन का भाग
४३ देवे। धन्य वुह सेवक जिसे उसका प्रभु आके ऐसही करते
४४ पावे। मैं तुम से सत्य कहता हों कि वुह उसे अपने
४५ समस्त संपत्ति पर प्रधान करेगा। परंतु जो वुह सेवक अपने मन में कहे कि मेरा प्रभु आवने में बिलंब करता है और दास और दासिअन को मारने और खाने पीने और
४६ मतवाले होने लगे। तो उस सेवक का प्रभु ऐसे दिन में आवेगा जब वुह बाट न जोहता हो और ऐसी घड़ी कि जब वुह अचेत हो और उसको दो टुकड़ा करेगा और
४७ उसका भाग अबिश्वासिअन के संग ठहरावेगा। और वुह सेवक जो अपने प्रभु की इच्छा जानके सोचेत न ज़ुआ न
४८ उसकी इच्छा के समान चला बज़ुतसा मार पावेगा। परंतु वुह जिसने न जाना और मार खाने का कर्म किया थोड़ासा मार पावेगा इसलिये कि जिसको बज़ुत दियागया है उससे बज़ुत मांगा जायगा और जिसको लोगन ने बज़ुत सौंपा है
४९ उससे वे अधिक मांगेंगे। मैं पृथिवी पर आग लगाने आया हों और मैं कैसाही चाहता हों कि अभी लग जाय।
५० और मुझे एक स्नान से स्नान पावना है और मैं कैसे सकेत
५१ में हों जब लों वुह संपूर्ण न होवे। क्या तुम सोचते हो कि मैं पृथिवी पर कुशल देने आया हों मैं तुम से कहता

५२ हों कि नहीं परंतु पहिले अलग करने को। क्योंकि अब से पांच एक घर में दो भाग होंगे तीन शत्रु दो के दो शत्रु
५३ तीन के। पिता पुत्र का बिरोधी होगा और पुत्र पिता का बिरोधी माता पुत्री की बिरोधी और पुत्री माता की बिरोधी सास पतोहू की बिरोधी और पतोहू सास की बिरोधी होगी।
५४ और उसने यह भी लोगन से कहा जब तुम घटा पच्छिम से उठती हुई देखते हो तुरंत कहते हो कि झड़ी आती है
५५ और ऐसही होता है। और जब दक्षिण का पवन चलता है तुम कहते हो कि गरमी होगी और वुह योंही होती
५६ है। हे काल्पनिकन तुम आकाश और पृथिवी के रूप को बिचारने जानते हो पर यह किस रीति से है कि तुम
५७ यह समय नहीं बिचारते। हां तुम वुह जो ठीक है
५८ आपही क्यों नहीं बिचारते। जिस समय में तू अपने बैरी के संग न्यायी के पास चलाजाता है मार्ग में जतन कर कि तू उससे छूट जावे नहो कि वुह तुझे न्यायके समीप खिंचवावे और न्यायी तुझे दंडकारी को सौंपे और दंडकारी तुझे
५९ बंदीगृह में डाल दे। मैं तुससे कहता हों कि तू वहां से न छूटेगा जब लों तू दमड़ी दमड़ी न भर दे।

१३ तेरहवां पर्ब्ब

१ उस समय में कितने वहां थे जो उन जलीलिअन के बिषय में जिन्हन का रुधिर पिलातूस ने उनके बलिदान के संग

२ मिलाया उससे कहने लगे। और ईसा ने उत्तर दिया और उन्हें कहा तुम क्या ध्यान करते हो कि ये जलीलिअन समस्त जलीलिअन से अधिक पापी थे कि उन्हन ने इतना
३ दुख पाया। मैं तुम से कहता हों कि नहीं परंतु जो तुम पश्चात्ताप न करो तो तुम सब उसी रीतिसे नाश होगे।
४ अथवा वे अठारह जिन्हन पर सैलूहा में गगंज गिरे और उन्हें नाश किया क्या तुम चिंता करते हो कि वे यिरोशलीम
५ के समस्त बासिअन से अधिक पापी थे। मैं तुम से कहता हों कि नहीं परंतु जो तुम पश्चात्ताप न करो तो तुम सब
६ उसी रीति से नष्ट होगे। उसने यह दृष्टांत भी कहा कि किसी के दाख के खेत में गूलर का एक बृक्ष लगा था और वुह आया और ढूंढा कि उस बृक्ष में फल लगा है और
७ न पाया। तब उसने अपने माली से कहा कि देख तीन बरस से मैं आके इस बृक्ष पर फल ढूंढता हों और नहीं पाता उसको काट डाल उसने काहे को भूमि को रोक रखा
८ है। उसने उत्तर देके उसको कहा हे प्रभु इस बरस भी उसे रहने दीजिये जब लों मैं उसका थाला खोदों और
९ गोबर भरों। और जो उस पर फल लगे तो अच्छा नहीं
१० तो पीछे उसे काट डालियो। और वुह एक मंडली में
११ बिश्राम के दिन उपदेश करता था। और देखो वहां एक स्त्री थी जो अठारह बरस से देव के कारण से दुर्बल थी और कुबड़ी होगई थी और किसी प्रकार से सीधी

१२ न हो सकती थी। और ईसा ने उसे देखके बुलाया और उसे
१३ कहा कि हे स्त्रि तू अपनी दुर्बलता से छूटी। और
उसने अपने हाथ उस पर रखे और वुह तुरंत सीधी हो गई
१४ और ईश्वर की स्तुति किई। मंडली के प्रधान ने लोगन को
इस कारण से कि ईसा ने बिश्राम के दिन में चंगा किया
क्रोधी होके कहने लगा कि छः दिन हैं जिनमें मनुष्यन
को कार्य करना उचित है इसलिये तुम उन्हीं दिनन में
१५ आ कर चंगे होओ और बिश्राम के दिन में नहीं। तब
प्रभु ने उत्तर दिया और उसको कहा कि हे काल्पनिक क्या
हरएक तुम में से बिश्राम के दिन अपने बैल और गदहे
को थान से नहीं खोलता और पानी पिलावने नहीं ले जाता।
१६ और क्या उचित न था कि यह स्त्री इबराहीम की पुत्री जिस
को शयतान ने देखो इन अठारह बरसन से बांध रखा था
१७ बिश्राम के दिन में इस बंधन से खोली जाय। और जब वुह ये
बातें कहने लगा उसके समस्त शत्रु लज्जित हुए और समस्त
मंडली उन सब भले कर्म के कारण जो उसने किये थे आनंद
१८ हुई। फेर उसने कहा कि ईश्वर के राज्य की उपमा किससे
१९ है और मैं उसको किससे उपमा दों। वुह राई के एक बीज के
समान है जिसे एक पुरुष ने लेके अपने खेत में बोया और
वुह उगा और बड़ा बृक्ष हुआ और आकाश के पंछिअन ने
२० उसके डालिअन पर आके बसेरा किया। फेर उसने कहा
२१ कि मैं ईश्वर के राज्य को किससे उपमा दों। यह किन्व

के समान है जिसे एक स्त्री ने लेके तीन सेर आटे में
२२ छिपादिया और वुह समस्त किन्व होगया। फेर वुह
नगर नगर और गांव गांव में फिरता ऊआ और उपदेश
२३ करता ऊआ यिरोशलीम को चला जाता था। तब एक ने
उसको कहा हे प्रभु क्या वे जो उद्धार पाते हैं थोड़े हैं।
२४ उसने उन्हें कहा सकेत द्वार से प्रवेश करने का परिश्रम
करो कि मैं तुम से सत्य कहता हों कि बऊतेरे चाहेंगे कि
२५ उससे प्रवेश करें और न सकेंगे। जब कि घर का स्वामी
उठा और द्वार को बंद किया तुम बाहर खड़े होके
और यह कहिके द्वार खटखटावने लगोगे कि हे
प्रभु हे प्रभु हमारे लिये खोल तब वुह उत्तर देगा और
तुम्हें कहेगा मैं तुम्हें नहीं जानता कि तुम कहांके हो।
२६ तब तुम कहने लगोगे कि हमने तेरे सन्मुख खाया और
पीया है और तू ने हमारे मार्गन में उपदेश किया है।
२७ तब वुह कहेगा मैं तुम्हें नहीं जानता तुम कहां के हो हे
२८ कुकर्मिअन मेरे समीप से दूर रहो। वहां जब देखेंगे कि
इबराहीम और इसहाक और याकूब और समस्त आगम
ज्ञानिअन ईश्वर के राज्य में हैं और तुम बाहर निकाले
२९ जाते हो तब रोना और दांत किचकिचाना होगा। और वे
पूर्ब और पश्चिम और उत्तर और दक्षिण से आवेंगे और
३० ईश्वर के राज्य में बैठेंगे। और देखो कितने ही पिछले
३१ आगे होंगे और कितनेही अगले पीछे। उसी दिन

कई ऐक ने फरीसिअन में से आके उसे कहा कि बिदा हो और यहां से चला जा कि हीरुदीस तुझे मारडालने चाहता

३२ है। तब उसने उन्हें कहा कि तुम सब जाके उस लोमड़ी से कहो कि देख मैं देवन को बाहर निकालता हों और आज और कल चंगा करलेता हों और तीसरे दिन संपूर्ण

३३ होंगा। तिसपर भी मुझे अवश्य है कि आज और कल और परसें फिरें इसलिये कि यह नहीं होसकता कि

३४ आगमज्ञानी यिरेशलीम के बाहर नाश होवें। हे यिरेशलीम यिरेशलीम जो आगमज्ञानिअन को बध करती है और उनपर जो तुझ पास भेजेगये हैं पथरवाह करती है कई बेर मैं ने चाहा कि तेरे पुत्रन को जिस प्रकार से कुक्कुटी अपने चिंगनन को परन के नीचे लेती है ऐकट्ठा करें

३५ परंतु तुम ने न चाहा। देखो तुम्हारे लिये तुम्हारा घर उजार छोड़ा जाता है और मैं तुम से सत्य कहता हों कि तुम मुझे न देखोगे जब लें वुह समय आवे कि तुम कहोगे धन्य वुह जो प्रभु के नाम से आता है।

१४ चौदहवां पर्ब्ब

१ और ऐसा हुआ कि जब वुह बिश्राम के दिन प्रधान फरिसिअन में से ऐक के घर रोटी खाने गया वे उसको

२ अगोरने लगे। और देखो कि वहां उसके सन्मुख ऐक

३ मनुष्य था जिसे जलंधर था। तब ईसा ने उत्तर देके

शास्त्रिअन और फरीसिअन को कहा क्या बिश्राम के दिन
४ में चंगा करना योग्य है। वे चुप होरहे तब उसने
५ उसको छिया और चंगा करके बिदा किया। और उन्हन
के ओर मुंह फेरके कहा कौन है तुम में जिसका एक
गदहा अथवा बैल कुवे में गिरपड़े और वुह तुरंत
६ बिश्राम के दिन में उसे न निकाले। तब वे उसे उन बचनन
७ का उत्तर न दे सके। और उसने नेवतहरिअन को जब
देखा कि वे क्यों कर प्रधान स्थानन को प्रसिंद करते हैं
८ उन्हन को कहिके यह दृष्टांत कहा। जब तू किसी के
बिवाह में बुलाया जाय प्रधान स्थान पर मत बैठ ऐसा
नहो कि उसने तुझ से किसी प्रतिष्ठित मनुष्य को नेवता
९ दिया हो। और वुह जो उसका और तेरा नेवता किया
है आवे और तुझे कहे कि यह स्थान इस पुरुष को दे
१० और तू लज्जा से अति नीच स्थान पावने लगे। परंतु
जब तेरा नेवता किया जावे जाके अति नीच स्थान में बैठ
कि जब वुह जिसने तेरा नेवता किया है आवे तो तुझे
कहे कि हे मित्र अति ऊंचे पर जा तब तू उन्हन के आगे
११ जो तेरे संग भोजन को बैठे हैं प्रतिष्ठा पावेगा। कि जो
कोई अपने को बढ़ाता है नीचा किया जायगा और वुह
जो अपने को आधीन करता है वही बढ़ाया जायगा।
१२ फेर उसने अपने नेवता करनहार से कहा कि जब तू मध्यान्ह
का भोजन अथवा बिआरी बनावे अपने मित्रन को और अपने

भाइअन को और अपने कुटुंबन को और धनमान परोसी को मत बुला ऐसा नहो कि वे भी फेर तेरा नेवता करें और तेरा
१३ बदला होजाय। परंतु जब तू नेवता करे तो कंगालन को
१४ टुंडन को लंगड़न को अंधन को बुलावना। कि तू धन्य होगा क्योंकि वे तुझे बदला नहीं दे सकते और तू धर्म्मिअन
१५ के फेर जी उठने में बदला पावेगा। नेवतहरिअन में से ऐक ने यह बचन सुन के उसको कहा धन्य वुह है
१६ जो ईश्वर के राज्य में भोजन करेगा। तब उसने उसको कहा ऐक मनुष्य ने बड़ी बिआरी बनाई और बहुतेरन
१७ को नेवते दिये। और बिआरी के समय में अपने सेवक को भेजा कि नेवंतहरिअन से कहें कि आओ क्योंकि अब
१८ समस्त बस्तें बनी हैं। तब सबन ने मिलके बनावट करना आरंभ किया पहिले ने उसे कहा कि मैं ने कुछ भूमि मोल लिया है और मुझे अवश्य है कि जाओं और उसे देखों मैं तेरी बिनती करता हों कि तू मुझे क्षमा कर।
१९ दूसरे ने कहा मैं ने पांच जोड़े बैल मोल लिये हैं और मैं उन्हें परखने जाता हों मैं तेरी बिनती करता हों तू मुझे
२० क्षमा कर। तीसरे ने कहा मैं ने स्त्री बिबाह किया है
२१ इसलिये मैं नहीं आ सकता। तब उस सेवक ने आके अपने प्रभु को यह सब कुछ कहा तब गृह के स्वामी ने क्रोध से अपने सेवक को कहा कि नगर के मार्गन और गलिअन में तुरंत जा और कंगालन और टुंडन और

२२ लंगड़न और अंधन को यहां लेआ। फेर सेवक ने कहा हे प्रभु तू ने जैसी आज्ञा किई थी उसके समान कियागया और अब भी ठिकाना है। तब स्वामी ने उस सेवक को
२३ कहा कि मार्गन में और बाड़े के ओर जा और उनके पीछे
२४ पड़ कि आवें कि मेरा घर भर जाय। क्योंकि मैं तुम्हन से कहता हों कोई उन लोगन में से जिन्हन का नेवता किया
२५ गया था मेरी बिआरी चखने न पावेंगे। अब बहुतसी मंडली उसके संग चली जाती थीं तब उसने फेरके उन्हन
२६ को कहा। जो कोई मेरे समीप आवे और अपने पिता और माता और स्त्री और बालकन और भाइअन और बहिनन का हां अपने प्राण का भी बैरी न होवे वुह मेरा
२७ शिष्य नहीं हो सकता। और जो कोई अपने क्रूस को नहीं उठाता और मेरे पीछे आता है मेरा शिष्य नहीं हो
२८ सकता। क्योंकि कौन है तुम में जो एक गढ़ बनावने की इच्छा करके पहिले बैठे और उठान का लेखा न करे
२९ कि वुह उसे संपूर्ण कर सकेगा। तो ऐसा नहो कि वुह नेव डालके उसे संपूर्ण न करसके और सब देखनहार उस
३० पर हंसने लगे। और कहे कि यह पुरुष बनाना आरंभ
३१ किया परंतु संपूर्ण न करसका। अथवा कौनसा राजा कि दूसरे राजा से युद्ध करने चले तो पहिले बैठ के बिचार न करले कि वुह दस सहस्स लेके सामर्थी है कि उसका जो बीस सहस्स से उसके सन्मुख आवता है साम्हना करे।

३२ नहीं तो जब लों दूसरा बक्कत दूर हो वुह दूतन को भेज
३३ कर मिलाप चाहे। सो इसी रीति से जोकोई तुम में से
अपना समस्त जो वुह रखता है त्याग न करे वुह मेरा
३४ शिष्य हो नहीं सकता। लोन अच्छा है परंतु जो लोन
का स्वाद बिगड़ जाय तो किस बस्तु से स्वादित किया
३५ जायगा। वुह न पृथिवी के और न घूर के काम का है
लोग उसे फेंक देते हैं जिस किसीके कान सुन्ने के लिये
हों सुनें।

१५ पंद्रहवां पर्ब्ब

१ तब समस्त पटवारी और पापिअन उसके समीप आये कि
२ उसकी सुनें। तब फरीसिअन और अध्यापकन ने
कुड़कुड़ा के कहा कि यह पापिअन को आवने देता है
३ और उन्हन के संग भोजन करता है। तब उसने उन्हन
४ से यह दृष्टांत कहा। कि तुम में से कौन मनुष्य है जो
सौ भेड़ रखता हो जो उनमें से एक खो जाय क्या वुह
निनानवे को बन में नहीं छोड़ता और जब लों उस खोये
५ ऊए को नहीं पावता उसे ढूंढा करता है। और जब वुह
६ पावता है आनंद से अपने कांधे पर उठा लेता है। और
घर में आकर मित्रन और परोसिअन को एकट्ठे बुलाता है
और उन्हन को काहता है कि मेरे संग आनंद करो क्योंकि
७ मैं ने अपना भेड़ जो खो गया था पाया है। मैं तुम से

कहता हों कि इसी रीति से स्वर्ग में एक पापी के कारण जो पश्चात्ताप करता है निनानवे धर्मिअन से जिन्हें पश्चात्ताप का प्रयोजन नहीं अधिक आनंद होगा। ८ और कौन स्त्री है जिस पास दस रुपैया हो जो एक खोजाय क्या वुह दीपक को नहीं बारती और घर को नहीं झाड़ती है और जब लों नहीं पावती ढूंढती फिरती है। ९ और जब वुह पावती है वुह मित्रन और परोसिअन को बुलाके कहती है कि मेरे संग आनंद करो क्योंकि मैं ने वुह रुपैया जो खोगया था पाया है। १० इसी रीति से मैं तुम से कहता हों कि ईश्वर के दूतन के समीप एक पापी के कारण जो पश्चात्ताप करता है आनंद होता है। ११ फेर उसने कहा १२ कि एक मनुष्य के दो पुत्र थे। उनमें से छुटके ने पिता को कहा कि हे पिता संपत्ति में से जो मेरा भाग होवे मुझे दीजिये तब उसने उन्हें उपजीवन बांट दिया। १३ और थोड़े दिन पीछे छुटका पुत्र सब कुछ एकट्ठा करके परदेश को चल निकला और वहां कुकर्म में उसने अपना समस्त संपत्ति नष्ट किई। १४ और जब वुह सब कुछ उठाचुका उस देश में बड़ा अकाल पड़ा और वुह बपूंजी होने लगा। १५ तब वुह जाके उस देश के एक प्रजा का सेवक बना और उसने उसको अपने खेतन में भेजा कि सूअरन को चराया करे। १६ और उसे इच्छा थी कि उन छिकुलन से जो सूअर खाते थे अपना पेट भरे और सो भी किसी ने उसे

१७ न दिया। और जब वुह अपने चेत में आया उसने कहा कि मेरे पिता के कितने बनिहार हैं जिनकी रोटी अधिक
१८ है और मैं भूख से मरता हों। मैं उठोंगा और अपने पिता पास जाऊंगा और उसे कहोंगा कि हे पिता मैं ने स्वर्ग
१९ का और तेरा अपराध किया है। और अब मैं योग्य नहीं कि तेरा पुत्र कहाओं मुझे अपने बनिहारन में से एक के
२० समान बनाइये। तब वुह उठके अपने पिता पास आया परंतु जब लों वुह बहुत दूर था उसके पिता ने उसको देखा और दयाल हुआ और दौड़के उसके गले में लपट गया
२१ और उसे चूमने लगा। और पुत्र ने उसको कहा कि हे पिता मैं ने स्वर्ग का और तेरा अपराध किया है और अब
२२ इस योग्य नहीं कि तेरा पुत्र कहाओं। तब पिता ने अपने सेवकन को कहा कि अच्छे से अच्छे वस्त्र लाओ और इसको पहिनाओ और उसके हाथ में अंगूठी और
२३ पाओं में जूती पहिनाओ। और वुह मोटा बछड़ा यहां लाओ और मारो कि हम खावें और आनंद करें।
२४ क्योंकि मेरा यह पुत्र मरगया था और फेर जीता है वुह
२५ खोगया था और मिला तब वे आनंद करने लगे। अब उसका जेठा बेटा खेत में था और जुंहीं वुह आया और घर के निकट पहुंचा तो बाजा और नाच का शब्द सुना।
२६ और सेवकन में से एक को बुलाके पूछा कि यह सब क्या
२७ है। तब उसने उसको कहा कि तेरा भाई आया

है तेरे पिता ने मोटा बछड़ा मारा इस कारण कि उसने
२८ उसको सुखी और कुशल पाया। वुह क्रोधी हुआ और
न चाहता था कि भीतर जाय तब उसके पिता ने बाहर
२९ निकल के उसे मनाया। तब उसने उत्तर देके पिता को कहा
कि देख मैं इतने बरस से तेरी सेवा करता हों और कधीं
भी मैं ने तेरी आज्ञा न टाली और तू ने मुझे ऐक मेम्ना भी
कभी न दिया कि मैं अपने मित्रन के संग आनंद करता।
३० परंतु अब तेरा यह पुत्र जिसने तेरा उपजीवन वेश्यन के
संग नष्ट किया आया तू ने उसके लिये मोटा बछड़ा मारा।
३१ तब उसने उसको कहा कि पुत्र तू सदा मेरे संग है और
३२ जो कुछ कि मेरा है तेरा है। पर आनंद और मगन होना
उचित था क्योंकि तेरा यह भाई मरगया था और फिर के
जीया और खोगया था फिर मिला है।

१६ सोलहवां पर्ब्ब

१ और उसने अपने शिष्यन से यह भी कहा कि ऐक धनमान
मनुष्य था जिसका ऐक भंडारी था उसी पर उसके आगे
२ दोष किया गया कि वुह उसका धन नष्ट करता है। तब
उसने उसको बुलाके कहा कि यह कैसा है जो मैं तेरे
विषय में सुनता हों अपने भंडारपन का लेखा दे कि तू
३ भंडारी न रहि सकेगा। तब भंडारी ने अपने मन में कहा
कि मैं क्या करूं क्योंकि मेरा प्रभु भंडारपन मुझ से लेता है मैं

भूमि को खोद नहीं सकता भीख मांगने में मुझे लाज आती
४ है। मैं ठीक समझता हों कि क्या क्या करना उचित है
कि जब मैं भंडारपन से छोड़ाया जाऊं वे अपने घरन में मुझे
५ लेजायें। सो उसने अपने स्वामी के एक एक ऋणिअन
को बुलाया और पहिले को कहा कि तू मेरे स्वामी का
६ कितना धारता है। उसने कहा कि तेल के सौ परिमाण
फेर उसने उसे कहा कि अपनी बही ले और तुरंत बैठकर
७ पचास लिख। फेर उसने दूसरे से कहा और तू कितना
धारता है उसने कहा कि गोहूं का सौ परिमाण उसने
८ उसको कहा अपनी बही ले और अस्सी लिख। तब
स्वामी ने उस अन्यायी भंडारी की बड़ाई किई इसने लिये
कि उसने चतुराई किई थी क्योंकि इस संसार के संतान
अपने व्यवहार में प्रकाश के पुत्रन से अधिक ज्ञानी हैं।
९ और मैं तुम से कहता हों कि धन को जो असत्य है
अपने लिये मित्र बनाओ कि जब तुम्हारी घटती होवे तुम्हें
१० अनंत ठिकाने में ग्रहण करें। जो कि थोड़े में सच्चा है
बहुत में भी सच्चा है और जो कि थोड़े में छली है
११ बहुत में भी छली है। इस लिये जो तुम असत्य धन
१२ में सच्चा नहो तो सत्य तुम्हें कौन सौंपेगा। और जो तुम
औरन के बस्तु में सच्चाई न करो तो तुम्हारा तुम्हें कौन देगा।
१३ कोई सेवक दो स्वामिअन की सेवा नहीं कर सकता क्योंकि
वुह अथवा एक से घृणा रखेगा और दूसरे से मित्रता

अथवा वुह ऐक का पक्ष करेगा और दूसरे की निंदा तुम
१४ ईश्वर और धन की सेवा नहीं कर सकते। फरीसिअन
ने भी जो कि लोभी थे सब बातें सुनके उसको ठट्ठे में
१५ उड़ाऐ। तब उसने उन्हें कहा तुम वे हो जो अपने को
मनुष्यन के आगे धर्मी दिखावते हो परंतु ईश्वर तुम्हारे
अंतःकरण को जानता है क्योंकि जो बस्तु मनुष्यन के आगे
१६ बज्जत प्रिय है ईश्वर की दृष्टि में मलीन है। तौरेत और
आगमज्ञानिअन यहिया लों थे उसी समय से ईश्वर के
राज्य का मंगल समाचार सुनाया जाता है और हरऐक मनुष्य
१७ समस्त बल से उस में प्रवेश करते हैं। और स्वर्ग और पृथिवी
का टलजाना उससे अति सहज है कि ऐक बिंदु तौरेत
१८ में से घटजाय। जो कोई अपनी स्त्री को त्याग दे और दूसरी
से बिवाह करे व्यभिचार करता है और जो कोई उससे जिसे
उसके पति ने त्याग किया है बिबाह करे व्यभिचार करता
१९ है। ऐक धनमान था जो लाल और महीन बस्त्र पहिनता
२० और प्रतिदिन बड़े बिभवसे आनंद करता था। और लाजर
नाम ऐक कंगाल था जिसे घाव से भरा ज्जआ उसके द्वार पर
२१ डाल गये थे। और उसे इच्छा थी कि चूरचार जो उस
धनमान के मंच से गिरते थे खावे और कुत्ते आवते थे और
२२ उसके घावन को चाटते थे। ऐसा ज्जआ कि वुह कंगाल
मरगया और दूतन ने लेजाके उसको इबराहीम के गोद में
२३ रख दिया वुह धनमान भी मर गया और गाड़ा गया। और

उसने उस लोक में आंखन को उठाके अपने को पीड़ा में पाया और दूर से इबराहीम को देखा और लाजर को उसकी
२४ गोद में। तब वुह चिल्लाके बोला कि हे पिता इबराहीम मुझ पर दया कर और लाजर को भेज कि वुह अपनी अंगुली के पोर को जल में डुबोके मेरी जीभ को ठंढी करे
२५ क्योंकि मैं इस आंच में कलपता हों। इबराहीम ने कहा कि पुत्र चेत कर कि तू ने अपने जीवन में अपने सुख की बस्तु पाई और लाजर ने कष्ट सो वुह अब शांति पाता है
२६ और तू पीड़ा में है। और अधिक उन सबन के हमारे और तुम्हारे मध्य में एक बड़ा गड़हा है कि वे जो इधर से तुम्हारे समीप जाया चाहते हैं नहीं जा सकते न वे जो
२७ उधर हैं हम लों आ सकते। तब उसने कहा कि हे पिता मैं तेरी बिनती करता हों कि तू उसको मेरे पिता के घर
२८ भेज। क्योंकि मेरे पांच भाई हैं कि वुह उनको चितावे
२९ नहो कि वे भी इस पीड़ा के स्थान में आवें। इबराहीम ने उसको कहा कि उन पास मूसा और आगमज्ञानिअन
३० हैं चाहिये कि वे उनकी सुनें। तब वुह बोला कि नहीं हे पिता इबराहीम परंतु जो मृतकन में से कोई उनके
३१ समीप जाय तो वे पश्चात्ताप करेंगे। तब उसने उसे कहा जो वे मूसा और आगमज्ञानिअन की न सुनें तो यद्यपि एक मृतकन से उठे तद्यपि वे न मानेंगे।

१ फेर उसने शिष्यन से कहा कि ठोकर खिलावनवालन का न आवना अनहोना है परंतु उसपर जिसके कारण वे आवें
२ संताप है। उसके कारण यिह अति भला होता कि ऐक चक्की का पाट उसके गले में लटकाया जाता और वुह समुद्र में फेंक दियाजाता कि वुह इन छोटन मेंसे ऐक को
३ ठोकर खिलावे। अपनी चौकसी करो जों तेरा भाई तेरा अपराध करे उसे घुड़क दे और जों वुह पश्चात्ताप करे
४ उसको क्षमा कर। और जों वुह ऐक दिन में सात बेर तेरा अपराध करे और सात बेर ऐक दिन में तेरे समीप फिरआवे और कहे कि मैं पश्चात्ताप करता हों तू उसे क्षमा
५ कर। तब प्रेरितन ने प्रभु को कहा कि हमारे बिश्वास को
६ बढ़ा। और प्रभु ने कहा जों तुम्हें ऐक राई के बीज के इतना बिश्वास होता तो तुम उस गूलर के बृक्ष को कहते कि जड़ से उखड़ और समुद्र में लगजा और वुह तुम्हारी
७ मानता। और तुम में कौन है जिसका ऐक सेवक हल जोतता अथवा ढंगर चराता हो जोंहीं वुह खेत से आवे उसे
८ कहे कि जा भोजन पर बैठ। और उसे न कहे कि मेरे लिये बिआरी बना और अपनी कमर बांध और मेरी सेवा कर जब लों मैं खा पी चुकों और पीछे तू खा और पी।
९ क्या वुह उस दास को धन्य मानता है इस कारण कि उसने वे कार्य्य जो उसे कहे गये थे किये मैं ऐसा नहीं बूझता।
१० सो इसी रीति से तुम भी जब उन कार्य्यन को जो तुम्हें आज्ञा

किये गये हैं करे तो कहो कि हम निष्फल सेवक हैं जो
११ हम को करना उचित था हमने किया। और ऐसा हुआ कि
वुह यिरोशलीम को जाते हुए सामरः और जलील के मध्य
१२ से जाता था। और एक गांव में प्रवेश करते उस को दस
१३ कोढ़ी जो दूर खड़े थे मिले। और वे चिल्लाये कि हे ईसा
१४ गुरु हम पर दया कर। उसने देखके उन्हें कहा कि
जाओ अपने को याजकन को दिखाओ और ऐसा हुआ
१५ कि वे जाते हुए पवित्र होगये। और उन्हन मेंसे एक ने
देखा कि चंगा हुआ बड़े शब्द से ईश्वर की स्तुति करता
१६ हुआ पीछे फिर आया। और उसको धन्य मानते हुए
उसके चरण पर औंधे मुह गिरा और वुह एक सामरी था।
१७ तब ईसा ने उत्तर देके कहा क्या दसों चंगे न हुए फेर वे
१८ नव कहां हैं। सो केवल इस परदेशी के कोई न पाया
१९ गया जो फिरके ईश्वर की स्तुति करे। तब उसने उसको
कहा कि उठ के चलाजा तेरे बिश्वास ने तुझे चंगा किया।
२० और जब फरीसिअन ने उससे पूछा कि ईश्वर का राज्य
कब आवेगा उसने उन्हें उत्तर दिया और कहा कि ईश्वर
२१ का राज्य दिखाई देते हुए नहीं आता। वे न कहेंगे कि
देखो यहां अथवा देखो वहां इस लिये कि देखो ईश्वर का
२२ राज्य तुम्हारे मध्य में है। और उसने शिष्यन से कहा
कि वे दिन आवेंगे जब तुम चाहोगे कि मनुष्य के पुत्र के
२३ दिनन में से एक को देखो और न देखोगे। और वे तुम को

कहेंगे कि देखो यहां अथवा देखो वहां पीछे मत जाइयो
२४ न पीछे चलियो। इसलिये कि जैसे बिजुली जो स्वर्ग के
तले एक ओर से चमक कर स्वर्ग के दूसरे ओर लों प्रकाश
करती है मनुष्य का पुत्र भी अपने दिन में ऐसही होगा।
२५ परंतु पहिले अवश्य है कि वुह बहुत दुःख उठावे और
२६ इस समय के लोगन से अनादर किये जावे। और जैसा
नूह के दिनन में हुआ था मनुष्य के पुत्र के भी दिनन में
२७ वैसही होगा। वे खाते थे वे पीते थे वे बिवाह करते थे
वे बिवाह में दिये जाते थे जिस दिन लों कि नूह नाव पर
२८ चढ़ा और बाढ़ आया और उन सबन को नाश किया। और
जिस रीति से लूत के दिनन में था वे खाते थे वे पीते थे वे
२९ मोल लेते थे वे बेंचते थे वे बोते थे वे बनाते थे। परंतु जिस
दिन लूत सदूम से निकल गया स्वर्ग से अग्नि और गंधक
३० बरसा और उन सबन को नाश किया। उस दिन में भी
३१ ऐसाही होगा जब कि मनुष्य का पुत्र प्रगट होगा। उसी
दिन में वुह जो कोठे पर होगा और उसकी बस्तु घर में हो
वुह उसे लेने को नीचे न आवे और उसी भांति से वुह जो
३२ खेत में होगा उलटा न फिरे। लूत की स्त्री को स्मरण
३३ करो। जो कोई अपने प्राण बचाने की खोज करेगा उसे
गवांवेगा और जो कोई अपने प्राण को गवांवेगा उसे बचावेगा।
३४ मैं तुम से कहता हों कि उस रात में दो जो एक खाट पर
३५ होंगे एक पकड़ा जायगा दूसरा छूट जायगा। दो जो

चक्की पीसतियां होगीं एक पकड़ी जायगी और दूसरी छूट
३६ जायगी। दो जो खेत में होंगे एक पकड़ा जायगा और
३७ दूसरा छूट जायगा। तब उन्हन ने उत्तर दिया और उसको
कहा कि कहां हे प्रभु उसने उन्हन को कहा कि जहां
कहीं लोथ है तहां गिद्ध एकट्ठे होंगे।

१८ अठारहवां पर्ब्ब

१ फेर उसने इस अभिप्राय से कि लोग नित्य प्रार्थना करें और
२ ढील न करें उनसे एक दृष्टांत कहा। कि एक नगर में
एक न्यायी था जो न ईश्वर से डरता न लोगन को लजाता था।
३ और उसी नगर में एक बिधवा थी और वुह उसके समीप
४ कहती ऊई आई कि मेरे बैरी से मेरा बदला ले। और उसने
कुछ देर लों न चाहा परंतु पीछे उसने अपने मन में कहा
कि यद्यपि मैं ईश्वर से नहीं डरता न मनुष्यन को लजाता।
५ तद्यपि इसलिये कि यह बिधवा मुझे क्लेश देती है मैं
उसका बदला लेंगा न हो कि वुह बारबार आके मेरा सिर
६ भुकावे। फेर प्रभु ने कहा कि सुनो उस अनीति न्यायी ने क्या
७ कहा। और क्या ईश्वर अपने चुने ऊएन का जो रात दिन
उस पास रोते हैं यद्यपि वुह उन्हन की अबेर लों सहता है
८ बदला न लेगा। मैं तुम से कहता हों कि वुह झटपट
उनका बदला लेगा तिसपर भी जब मनुष्य का पुत्र आवे क्या
९ वुह जगत में बिश्वास पावेगा। फेर उसने कितनन के लिये

जो अपने में भरोसा रखते थे कि हम धर्मी हैं और औरन
१० की निंदा करते थे यह दृष्टांत कहा। दो मनुष्य मंदिर
में प्रार्थना करने को गये एक फरीशी और दूसरा पटवारी।
११ फरीसी ने अकेले खड़े होके यह प्रार्थना किई कि हे ईश्वर
मैं तेरी स्तुति करता हों कि मैं और मनुष्यन के समान
निचोरी अन्यायी परस्त्रीगामी अथवा यह पटवारी के समान
१२ नहीं हों। मैं सात दिन में दोबार ब्रत रहता हों मैं
१३ हरएक बस्तु की जो मेरी है दसवां भाग देता हों। और
उस पटवारी ने दूर खड़ा होके इतना भी न चाहा कि आंखे
उठाके स्वर्ग के ओर देखे परंतु यही कहिके अपनी छाती
पीटता था कि हे ईश्वर मुझ पापी पर दयाल हो।
१४ मैं तुम से कहता हों कि यह मनुष्य दूसरे से अति धर्मी
ठहरके अपने घर गया क्योंकि हरएक जो अपने को
बढ़ाता है छोटा किया जायगा और वुह जो अपने को
१५ आधीन करता है बढ़ाया जायगा। फेर वे बालकन को
भी उसपास लाये कि वुह उन्हें छूवे परंतु शिष्यन ने देखके
१६ उन्हन को डांटा। तब ईशा ने उन्हें बुलाके कहा कि
छोटे बालकन को मेरे समीप आवने देओ और उन्हें मत
१७ रोको क्योंकि ईश्वर का राज्य ऐसोंही का है। मैं तुम्हन
से सत्य कहता हों कि जो कोई बालक के समान ईश्वर
के राज्य को ग्रहण न करे किसी प्रकार से उस में प्रवेश
१८ न करेगा। और प्रधानन में से एक ने उससे यह कहिके

पूछा कि हे उत्तम गुरु मैं क्या करें कि अनंत जीवन का
१९ अधिकारी होों। ईसा ने उसको कहा तू मुझे उत्तम क्यों
२० कहता है उत्तम कोई नहीं केवल एक ईश्वर। तू आज्ञा
जानता है कि व्यभिचार मत कर खून मत कर चोरी मत
कर झूठी साक्षी मत दे अपने माता पिता का सन्मान कर।
२१ तब उसने कहा मैं ने लड़काई से इन्हें माना है।
२२ और जब ईसा ने यह सुना उसने उसको कहा अब लों
तुझ में एक वस्तु रहगई है कि जो कुछ तेरे पास है
सब बेच डाल और कंगालन को बांट दे और तू स्वर्ग पर
२३ धन पावेगा और इधर आ मेरे पीछे होले। तुह यह
सुनके अति उदासीन ऊआ क्योंकि वुह बड़ा धनी था।
२४ ईसा ने उसे अति उदासीन देखके कहा कि उनके लिये
जो धनी हैं कितना कठिन है कि ईश्वर के राज्य में
२५ प्रवेश करें। कि सूई के छेद से ऊंट का पैठना उससे अति
सहज है कि एक धनमान ईश्वर के राज्य में प्रवेश करे।
२६ और जिन्हों ने सुना वे बोले कि फेर कौन उद्धार पा सकता
२७ है। तब उसने कहा कि जो बस्तें मनुष्यन के समीप अन
२८ होना है ईश्वर से होनहार है। तब पतरस ने कहा देख
२९ हम सब समस्त त्याग किये और तेरे पीछे होलिये। उसने
उन्हन को कहा मैं तुम्हन से सच कहता हों कि ऐसा
कोई मनुष्य नहीं जिसने घर अथवा माता पिता अथवा
भाइयन अथवा स्त्री अथवा पुत्रन को ईश्वर के राज्य के

३० लिये छोड़ा हो। जो इस समय में कितना अधिक और
३१ आवनेहारे जगत में अनंत जीवन न पावेगा। तब
उसने बारहों को संग लेकर उन्हें कहा कि देखो हम
यिरोशलीम को जाते हैं और सब कुछ जो मनुष्य के पुत्र
के बिषय में आगमज्ञानिअन से लिखा गया है संपूर्ण होगा।
३२ क्योंकि वुह अन्यदेशिअन को सौंपा जायगा और ठट्ठा
किया जायगा और वे उसे दुर्दशा करेंगे और उसपर थूकेंगे।
३३ और वे उसको कोड़े मारके मार डालेंगे और वुह तीसरे
३४ दिन फिर उठेगा। और वे उन बातन से कुछ न समझे
और यह बचन उन से गुप्त रहा और उन्हन ने उन बस्तुन
३५ को जो कहा गया था न जाना। सो ऐसा हुआ कि जब
वुह अरीहा के निकट आया एक अंधा मनुष्य मार्ग के
३६ ओर बैठा भीख मांगता था। और मंडली को चलते सुन
३७ कर उसने पूछा कि क्या है। और वे उसे बोले कि
३८ ईसा नासरी चलाजाता है। तब वुह यह कहके चिल्लाया
३९ कि ऐ दाऊद के पुत्र ईसा मुझ पर दया कर। और वे
जो आगे चलेजाते थे उसको डांटे कि चुप रहे परंतु वुह
और भी अधिक चिल्लाया कि हे दाऊद के पुत्र मुझ पर
४० दया कर। तब ईसा खड़ा हुआ और आज्ञा किया कि
उसको मेरे समीप लाओ और जब वुह निकट आया
४१ उसने उसको कहिके पूछा। तू क्या चाहता है मैं तुझ
से क्या करें वुह बोला हे प्रभु कि मैं अपनी दृष्टि फेर

४२ पाओं। तब ईसा ने उसको कहा कि अपनी दृष्टि पा
४३ तेरे बिश्वास ने तुझे छुड़ाया। और उसने तुरंत अपनी
दृष्टि पाई और ईश्वर की स्तुति करता हुआ उसके पीछे
होलिया और समस्त लोगन ने यह देख के ईश्वर की
स्तुति किई।

१९ उन्नीसवां पर्व्व

१ और वुह अरीहा में प्रवेश करके निकल चला।
२ और देखो कि जक्की नाम एक मनुष्य ने जो पटवारिअन में
३ प्रधान और वुह धनी भी था। चाहा कि ईसा को देखे
कि वुह कौन है परंतु भीड़ के कारण न देख सका कि
४ वुह नाटा था। तब वुह आगे दौड़ के गूलर के एक बृक्ष
पर चढ़गया कि उसे देखे क्योंकि वुह उधर से जाने पर था।
५ और जब ईसा उस स्थान में आया तो ऊपर दृष्टि करके
उसको देखा और उसे कहा जक्की शीघ्र करके उतर आ
६ क्योंकि अवश्य है कि मैं आज तेरे घर में रहों। तब
वुह तुरंत उतरा और आनंद से उसको ग्रहण किया।
७ और जब उन्हन ने देखा वे कुड़कुड़ा के कहने लगे कि वुह
८ एक पापी पुरुष के घर में पाहुन जाता है। और जक्की
खड़ा होके प्रभु से कहा हे प्रभु देख मैं अपना आधा धन
कंगालन को देता हों और जो मैं किसी पर झूठा दोष देके
९ कुछ लिया है मैं उसको चौगुना बदला देता हों। तब

ईसः ने उसको कहा कि आज [इस] घर में चाण आया
१० इसलिये कि यह भी इबराहीम का पुत्र है। क्योंकि
मनुष्य का पुत्र आया है कि उसे जो खोया गया है ढूंढे
११ और बचावे। और जब वे यह बचन सुन रहे थे उसने
एक अधिक दृष्टांत कहा इसलिये कि वुह यिरोशलीम के
निकट था और कि वे जानते थे कि ईश्वर का राज्य तुरंत
१२ दिखाई देगा। और उसने कहा कि कोई कुलीन मनुष्य
दूर देश को गया कि वुह राज्य अपने बश में लावे और
१३ फिर आवे। तब उसने अपने दस सेवकन को बुलाया और
उन्हन को दस मोहर सौंपे और उन्हें कहा कि जब लों मैं
१४ आओं बेपार करो। परंतु उसकी प्रजा उससे बिरोध रखती
थी सो उन्हन ने उसके पीछे संदेश भेजा कि हम नहीं
१५ चाहते कि यह हम पर राज करे। और ऐसा हुआ
कि जब वुह राज्य लेके फिर आया उसने आज्ञा करके उन
सेवकन को जिन्हें धन सौंपा था बुलाया कि जाने कि एक
१६ एक ने क्या कमाया। तब पहिले ने आके कहा हे प्रभु
१७ तेरे मोहर ने दस मोहर कमाये। उसने उसको कहा धन्य
हे उत्तम सेवक इस कारण कि तू अति थोड़े में बिश्वासी
१८ निकला तू दस नगर पर प्रधान हो। और दूसरे ने आके
१९ कहा हे प्रभु तेरे मोहर ने पांच मोहर कमाये। और
उसने वैसही उसको कहा कि तू भी पांच नगर पर प्रभुता
२० कर। और तीसरे ने आके कहा हे प्रभु देख तेरा मोहर

२१ है जिसे मैंने अंगोछे मे बांध रखा है। क्योंकि मैं तुझ से
डरा इस कारण कि तू कठोर मनुष्य है जिसे तू ने नहीं रखा
२२ लेता है और जो तू ने नहीं बोया लवता है। तब उसने
उसे कहा हे दुष्ट दास मैं तेरेही मुंह से तेरा बिचार करूंगा
तू ने जाना कि मैं कठोर मनुष्य हों जो मैं ने नहीं रखा लेता
२३ हों और जो मैं ने नहीं बोया लवता हों। सो तू ने मेरे
रुपैये कोठी में क्यों न सौंपा कि मैं आके अपना बिआज
२४ समेत लेता। फेर उसने उन्हें जो समीप थे कहा कि उससे
वुह मोहर लेलो और उसको जिस पास दस मोहर हैं
२५ देओ। तब उन्हन ने उसको कहा हे प्रभु उसके पास तो
२६ दस मोहर हैं। सो मैं तुम से कहता हों कि जिस
पास है उसे दिया जायगा और जिस पास कुछ नहीं
२७ उससे वुह भी जो उसका है लेलिया जायगा। परंतु मेरे
उन शत्रुन को जो नहीं चाहते थे कि मैं उन पर राज्य
२८ करों यहां लेआओ और मेरे सन्मुख मार डालो। और जब
वुह यों कहचुका तो वुह यिरोसलीम की ओर को आगे
२९ बढ़ा। और ऐसा हुआ कि जब वुह बैतिफजा और
बैतिऐना के निकट पहाड़ के पास जो जलपाई का कहावता
है पहुंचा उसने अपने शिष्यन में से दो को यह कहिके
३० भेजा। कि उस गांव में जो सन्मुख है जाओ तुम उस में
पहुंचतेही ऐक बछा जिस पर अब लों कोई न चढ़ा बंधा
३१ हुआ पाओगे उसको खोलके लेआओ। और जो कोई

मनुष्य तुमसे पूछे कि तुम क्यों खोलते हो तुम उसे यों
३१ कहियो कि प्रभु को उसका अवश्य है। और उन्हन ने
जो भेजे गये थे जाके जैसा उसने उन्हन को कहा था वैसा
३२ पाया। और जो वे उस बछे को खोल रहे थे उसके
स्वामिअन ने उन्हें कहा कि तुम इस बछे को क्यों खोलते
३४ हो। वे बोले कि प्रभु को इसका अवश्य है। (३५) और
वे उसको ईसा के पास लाये और अपने बस्त्रन को उस
३५ बछे पर रखके ईसा को उसपर बैठाये। और जब वुह
चला जाता था उन्हन ने अपने बस्त्रन को मार्ग में बिछाया।
३६ और जब वुह जलपाई के पहाड़ लों पहुंचा उसके शिष्यन
की समस्त मंडली उन सब आश्चर्य कर्म के कारण जो उन्हन
ने देखा था आनंद हुईं और बड़े शब्द से यह कहिके
३७ ईश्वर की स्तुति कीं। कि धन्य वह राजा जो प्रभु के
नाम से आता है स्वर्ग पर कुशल और अति ऊंचे पर
३८ माहात्म्य। तब मंडली में से कई फरिसी ने उसको कहा
३९ कि हे गुरु अपने शिष्यन को घुड़क दे। तब उसने उत्तर
दिया और उन्हें कहा मैं तुम्हन से कहता हों कि जो ये
४० न बोलते तो पत्थरन तुरंत पुकारते। और जब वुह निकट
आया उसने उस नगर पर दृष्टि किई और उसपर रोके कहा।
४१ जो तू उन दिनन में जो तेरे थे उन बातन को जानती जो
तेरे कुशल की हैं परंतु अब वे तेरी आंखन से गुप्त हैं।
४२ क्योंकि तुझ पर वे दिन आवेंगे कि तेरे शत्रु तेरे आसपास

खाई खोदेंगे और तेरे चारों ओर घेरेंगे और हरएक ओर
४३ तुझे रोकेंगे। और तुझे तेरे बालकन के संग जो तुझ में
हैं भूमि में मिला देंगे और वे तुझ में एक पत्थर पत्थर पर
न छोड़ेंगे इसके लिये कि तूने अपनी कृपा के समय को
४४ न जाना। तब वुह मंदिर में प्रवेश करके उन्हन को जो उस
में कीनते और बेंचते थे यह कहिके बाहर निकालने लगा।
४५ यह लिखा है कि मेरा घर प्रार्थना का घर है परंतु तुम
४६ सबने उसे चोरन की मांद बनाई। और वुह मंदिर में प्रति
दिन उपदेश करता था परंतु प्रधान याजकन और अध्यापकन
और लोगन के प्रधानन ने उसको नाश करने का सोच किया।
४७ और पावते नथे कि क्या करें इसलिये कि सब लोग उसके
सुन्ने को बहुत ध्यान रखते थे।

२० बीसवां पर्ब्ब

१ और उन्हीं दिनन में से एक में ऐसा हुआ कि जब वुह
मंदिर में लोगन को सिखावता था और मंगल समाचार सुनावता
था प्रधान याजकन और अध्यापकन प्राचीनन के संग चढ़ि
२ आये। और उसको यह कहे कि हमसे कह कि तू किस
पराक्रम से ये कार्य करता है अथवा वुह कौन है जिसने
३ तुझे यह पराक्रम दिया है। तब उसने उत्तर दिया और
उन्हन को कहा मैं भी तुम से एक बात पूछता हों मुझे
४ कहो। यहिया का स्नान स्वर्ग से था अथवा मनुष्यन से।

५ तब वे अपने मन में सोचे जो हम कहें स्वर्ग से तो
वुह कहेगा फेर तुम ने उसकी प्रतीति क्यों न किई।
६ परंतु जो हम कहें मनुष्यन से तो सब लोग हमपर पथरवाह
करेंगे क्योंकि वे निश्चय जानते हैं कि यहिया आगमज्ञानी
७ था। तब उन्हन ने उत्तर दिया कि हम नहीं जानते कि
८ कहां से। फेर ईसा ने उन्हन को कहा मैं भी तुम्हें नहीं
कहता कि मैं किस पराक्रम से यह कार्य्य करता हों।
९ तब वुह लोगन से यह दृष्टांत कहने लगा कि एक मनुष्य ने
दाख की बारी लगाई और उसे मालिअन को सौंप दिया
१० और बहुत दिन के लिये परदेश को चलागया। तब
समय पर उसने एक सेवक को मालिअन के पास भेजा
कि वे दाख की बारी का फल उसको देवें परंतु मालिअन
११ ने उसे मारके खाली हाथ भेजा। और फेर उसने दूसरा
सेवक भेजा और उन्हन ने उसे भी मारा और अपमान
१२ करके खाली फिरा दिया। और फेर उसने तीसरे को भेजा
१३ और उन्हन ने उसे भी घाइल करके निकाल दिया। तब दाख
की बारी के स्वामी ने कहा कि मैं क्या करें मैं अपने प्यारे
१४ पुत्र को भेजोंगा क्या जाने वे उसे देखके आदर करेंगे। परंतु
जब मालिअन ने उसे देखा वे आपस में बिचार करके
कहने लगे कि यह अधिकारी है आओ इसको मारडालें
१५ कि अधिकार हमारा होजाय। सो उन्हन ने उसे दाख
की बारी से बाहर निकालके मारडाला सो दाख की बारी

१६ का स्वामी उन्हन को क्या करेगा। वुह आवेगा और वुह उन मालिअन को प्राण से मारेगा और दाख की बारी औरन
१७ को सौंपेगा उन्हन ने सुनके कहा कि ऐसा न होवे। तब उसने उनके ओर दृष्टि करके कहा तो यह क्या है जो लिखा है कि जिस पत्थर को बनानेवालन ने निकम्मा जाना
१८ वही कोने का सिर ऊआ। जो कोई उस पत्थर पर गिरेगा चकनाचूर होजायगा और जिसपर वुह गिरेगा उसे पीस
१९ डालेगा। तब प्रधान याजकन और अध्यापकन ने चाहा कि उसी घड़ी उस पर हाथ डालें परंतु वे लोगन से डरे कि जानते थे कि उसने यह दृष्टांत उनके बिषय में कहा
२० था। फिर वे अगोरने लगे और भेदिअन को भेजे जो अपने को छल से धर्मी बनाते थे कि वे उसको उसके बचन से पकड़ें कि इसी रीति से वे उसे अध्यक्ष के पराक्रम और
२१ बश में सौंप देवें। फेर उन्हन ने उसे यह कहिके पूछा कि हे उपदेशक हम जानते हैं कि तू ठीक रीति से कहता और सिखावता है तू किसी के प्रगट पर दृष्टि नहीं करता परंतु सच्चाई से ईश्वर का मार्ग सिखावता है। क्या
२२ हमारे कारण योग्य है कि कैसर को कर देवें अथवा नहीं।
२३ परंतु उसने उनका कपट जानके उन्हन से कहा तुम क्यों
२४ मेरी परीक्षा करते हो। एक सूकी मुझे दिखाओ उसपर किसकी मूर्ति और किसका सिक्का है वे उत्तर देके बोले कि
२५ कैसर की। तब उसने उन्हन को कहा इस कारण जो बस्तु

कैसर की है कैसर को देओ और जो बस्तु ईश्वर की है
२६ ईश्वर को। और वे लोगन के आगे उसके बचन को पकड़
न सके और उसके उत्तर से बिस्मित होके चुप रह गये।
२७ तब कितने साटुकिअन में से जो कहते हैं कि फेर जी
उठना न होगा समीप आये और यह कहिके उससे
२८ पूछे। कि हे उपदेशक मूसा ने हमारे लिये लिखा है कि
जो किसी मनुष्य का भाई स्त्री को छोड़के निर्बंश मर जाय
तो उसका भाई उसकी स्त्री को लेवे और अपने भाई के
२९ लिये संतान उत्पन्न करे। अब सात भाई थे और पहिला
३० स्त्री करके निर्बंश मर गया। और दूसरे ने उसको अपनी
३१ स्त्री किई वुह भी निर्बंश मरगया। और तीसरे ने उसे लिया
और इसी रीति से सातों ने और वे सब निर्बंश मर गये।
३२ सब से पीछे वुह स्त्री भी मर गई। (३३) सो फेर जी उठने
में वुह किसकी स्त्री होगी क्योंकि वुह सातों की स्त्री थी।
३४ तब ईसा ने उत्तर देके उन्हें कहा कि इस जगत के संतान
३५ बिवाह करते हैं और बिवाह में दिये जाते हैं। परंतु वे
जो उस जगत के और मृत्यु से फेर उठने के योग्य जाने
गये हैं न बिवाह करते हैं न बिवाह में दिये जाते हैं।
३६ न वे फेर मर सकते क्योंकि वे दूतन के समान हैं और फेर
३७ जी उठने के संतान होकर ईश्वर के पुत्र हैं। अब मृतक
जी उठते हैं मूसा ने भी झाड़ी के समीप दिखाया जहां
उसने प्रभु को इबराहीम का ईश्वर और इसहाक का

३८ ईश्वर और याकूब का ईश्वर कहा। क्योंकि वुह मृतकन का ईश्वर नहीं परंतु जीवतन का क्योंकि समस्त उसके
३९ जीवते हैं। तब अध्यापकन में से कितनों ने उत्तर देके
४० उसे कहा कि हे गुरु तू ने अच्छा कहा। और उसके पीछे उन्हन का पुरुषार्थ न हुआ कि वे उसे कुछ पूछें।
४१ और उसने उन्हन को कहा वे क्योंकर कहते हैं कि
४२ मसीह दाऊद का पुत्र है। और दाऊद आपही भजन के पुस्तक में कहता है कि परमेश्वर ने मेरे प्रभु को कहा तू
४३ मेरे दाहिने हाथ बैठ। जब लों मैं तेरे शत्रुन को तेरे
४४ चरण का पीढ़ा करूं। सो दाऊद तो उसको प्रभु कहता
४५ है फेर वुह उसका पुत्र क्योंकर है। फेर सब लोगन के
४६ सुनते हुए उसने अपने शिष्यन से कहा। अध्यापकन से परे रहो जो लंबे बस्त्र से फिरने की इच्छा रखते हैं और हाटन में नमस्कार और मंडलिअन में प्रधान आसन
४७ जेवनार में प्रधान स्थान के अभिलाषी हैं। वे रंड़न के घर को निंगल जाते हैं और दिखावने के कारण लंबी प्रार्थना करते हैं उनपर अति बड़ी बिपत्ति होगी।

२१ एकीसवां पर्ब्ब

१ तब उसने दृष्टि उठाके देखा कि धनी लोग भंडार में अपना
२ दान डालते हैं। और उसने एक कंगाल बिधवा को भी
३ उसमें दो अधेलियां डालते देखा। तब उसने कहा मैं

तुम्हन से सत्य कहता हों कि इस कंगाल बिधवा ने उन
४ सबन से अधिक डाला। क्योंकि उन सबन ने ईश्वर के
दान के लिये अपने धन की अधिकाई से डाला परंतु उसने
५ अपनी दरिद्रता से अपनी समस्त जीविका डाली। और
जिस समय कितने मंदिर के बिषय में कहते थे कि यह
कैसे सुंदर पत्थरन और दान से सिंगार किया गया है
६ उसने कहा। ये बस्तें जो तुम देखते हो वे दिन आवेंगे
जिन में एक पत्थर पत्थर पर न छूटेगा जो गिराया न
७ जायगा। तब उन्हन ने उसे यह कहिके पूछा कि हे
गुरु यह सब कब होगा और जब यह होगा क्या लक्षण
८ है। उसने कहा सैचेत रहो कि तुम भरमाये न जाओ
कि बहुतेरे मेरे नाम से आके कहेंगे कि मैं वही हों
और वुह समय निकट है सो तुम उनके पीछे मत जाइयो।
९ परंतु जब तुम लड़ाइअन और दंगा की बातें सुनो मत
घबराइयो क्योंकि पहिले इन सबन का होना अवश्य है
१० पर अभी अंत नहीं। फेर उसने उन्हें कहा कि लोग
११ पर लोग और राज्य पर राज्य चढ़ेंगे। और अनेक स्थान
में बड़े भूंचाल आवेंगे और मरी और अकाल पड़ेंगे और
१२ भयंकर दर्शन और बड़े चिन्ह स्वर्ग से दिखाई देंगे। परंतु
इन बस्तुन से पहिले वे तुम्हें पकड़ेंगे और ताड़ना करके
मंडली और बंदीगृह में सौंपकर राजा और अध्यक्षन के
१३ समीप मेरे नाम के कारण ले जायेंगे। और यह तुम्हारे

१४ लिये साक्षी ठहरेगी। अपने मन में ठहरा लो कि आगे
१५ से चिंता न करो कि हम क्या उत्तर देंगे। क्योंकि मैं तुम्हें
ऐसा मुंह और ज्ञान देंगा जो तुम्हारे समस्त शत्रु बोलने
१६ अथवा साम्हना करने न सकेंगे। और तुम माता पिता
और भाइअन और कुटुंब और मित्रन से पकड़वाये जाओगे
१७ और तुम में से कितनन को मार डलवावेंगे। और मेरे
१८ नाम के कारण सब तुम से शत्रुता रखेंगे। परंतु तुम्हारे
१९ सिर का ऐक बाल नष्ट न होगा। अपने संतोष से अपने
२० प्राण को लिये रहो। और जब तुम देखो कि यिरोशलीम
सैन्यन से घेरा हुआ है तब जानो कि उसका उजार होना
२१ निकट है। तब वे जो यहूदियः में हैं पहाड़न को
भागें और वे जो उसके मध्य में हो बाहर निकल जायें
२२ और वे जो बाहर हों उसमें प्रवेश न करें। क्योंकि ये
बदला लेने के दिन और समस्त लिखे हुऐन के पूरा होने
२३ का समय है। परंतु हाय उन्हन पर जो उन्हीं दिनन
में गर्भिणी हों और उन पर जो दूध पिलावतियां हों
क्योंकि देश पर बड़ी बिपत और इस लोग पर क्रोध होगा।
२४ और वे खड्ग की धार से गिराये जायेंगे और समस्त लोगन में
बंधुऐ होंगे और यिरोशलीम अन्य देशिअन से रौंदा जायगा
२५ जब लों अन्य देशिअन का समय पूरा होय। और सूर्य
और चंद्रमा और तारों में लक्षण दिखाई देंगे और पृथिवी
में लोगन पर क्लेश के संग घबराहट होगी समुद्र और

२६ लहरन का बड़ा शब्द होगा। मनुष्यन के अंतःकरण मारे भय के और उन लक्षणन की जो आवनहारे हैं बाट जोहने से घट जायेंगे क्योंकि स्वर्ग की दृढ़ता हिल जायेगी।
२७ और उस समय में वे मनुष्य के पुत्र को मेघ पर प्रभाव
२८ और बड़े तेज से आवते हुए देखेंगे। और जब इन सबन का होना आरंभ होय तो सीधे हो बैठो और अपना सिर
२९ ऊपर को उठाओ क्योंकि तुम्हारा उद्धार निकट है। और उसने उन्हें एक दृष्टांत कहा कि गूलर के बृक्ष और समस्त
३० बृक्षन को देखो। जब उनमें कोंपलें निकलती हैं तब तुम देखके आपही जानते हो कि अब गरमी निकट है।
३१ सो इसी रीति से तुम भी जब उन बस्तुन को प्रगट होते
३२ देखो जानो कि ईश्वर का राज्य समीप है। मैं तुम से सत्य कहता हों कि यह पीढ़ी बीत न जायगी जब लों
३३ समस्त संपूर्ण न होले। स्वर्ग और पृथिवी टल जायगी
३४ परंतु मेरे बचन न टलेंगे। अपने से सचेत रहो नहोवे कि तुम्हारे अंतःकरण किसी संतुष्टता और मद्यपने से और इस जीवन की चिंता से भर जावें और वुह दिन तुम पर
३५ अचानक आजाय। क्योंकि वुह जाल के समान उन सबन
३६ पर जो पृथिवी के ऊपर बसते हैं आ जायगा। इस कारण तुम जागो और नित्य प्रार्थना करते रहो कि तुम उन सबन से जो होनहार हैं बचाने के योग्य निकलो और मनुष्य
३७ के पुत्र के सन्मुख खड़े होओ। और वुह दिन को मंदिर

ठीक मनुष्य का पुत्र जैसा कि ठहराया गया जाता है परंतु हाय उस मनुष्य पर जिसके कारण से वुह पकड़वाया जाता
२३ है। तब वे आपस में पूछने लगे कि हम में वुह जो
२४ यह कर्म करेगा कौन है। और उन में यह बिबाद भी हुआ कि हम में कौन सब से अति बड़ा गिना जायगा।
२५ तब उसने उन्हें कहा कि अन्यदेशिअन के राजा उनपर प्रभुता करते हैं और वे जो उनपर आज्ञाकारी हैं उपकारी
२६ कहावते है। सो तुम ऐसा न करो परंतु तुम में जो सब से बड़ा है छोटे के समान होय और वुह जो प्रधान है सेवक
२७ के तुल्य। इसलिये कि कौन है बड़ा वुह जो भोजन पर बैठता है अथवा वुह जो सेवा करता है क्या वुह नहीं जो बैठता है परंतु मैं तुम्हारे संग सेवक के समान हों।
२८ तुम वे हो जो मेरी परीक्षा में नित्य मेरे संग रहे।
२९ और जिस प्रकार से मेरे पिता ने मेरे लिये राज्य ठहराया
३० मैं तुम्हारे लिये ठहराता हों। कि तुम मेरे राज्य में मेरे मंच पर खाओ और पीओ और सिंहासनन पर बैठके
३१ इसराईल के बारह बंश का न्याय करो। और प्रभु ने कहा शमऊन हे शमऊन देखो शयतान ने चाहा है कि तुम को
३२ गोहूं के समान फटके। परंतु मैं ने तेरे कारण प्रार्थना किई है कि तेरा विश्वास न टले और जब तू फिराया जाय
३३ अपने भाइअन को दृढ़ कर। तब उसने उसे कहा हे प्रभु मैं तेरे संग बंदिगृह में और मृत्यु में जाने को तैयार

३४ हों। उसने कहा कि हे पतरस मैं तुझे कहता हों कि इसी दिन जब लों तू तीन बार न मुकर जाय कि तू मुझे
३५ नहीं जानता कुक्कुट शब्द न करेगा। फिर उसने उन्हें कहा कि जब मैं तुम्हें बिना बटुआ और झोला और जूता भेजा था क्या तुम्हें किसी वस्तु की घटती ऊई थी वे बोले किसी
३६ की नहीं। तब उसने उन्हन को कहा परंतु अब जिस पास तोड़ा और झोला हो उसे ले ले और जिस पास खड्ग
३७ नहो अपना बस्त्र बेचे और मोल ले। क्योंकि मैं तुम से कहता हों अवश्य है कि यह जो लिखा है कि वुह पापिअन में गिना गया मेरे बिषय में संपूर्ण होय क्योंकि
३८ उन बस्तुन का जो मेरे लिये हैं अंत्य को पऊंचे। तब वे बोले हे प्रभु देख यहां दो खड्ग हैं तब उसने उन्हन को
३९ कहा बस है। फेर वुह बाहर निकलके अपने व्यवहार के समान जलपाई के पहाड़ पर गया और उसके शिष्य भी
४० उसके पीछे होलिये। जब वुह उस स्थान में पऊंचा उसने उन्हन को कहा प्रार्थना करो कि परीक्षा में न पड़ो।
४१ फेर उसने उन से ऐक ढेला फेंकने के प्रमाण दूर जाके घुटने
४२ टेके और प्रार्थना करके कहा। कि हे पिता जो तेरी इच्छा हो तो इस कटोरे को मुझ से टलादे तिसपर भी मेरी
४३ इच्छा नहीं परंतु तेरी इच्छा पूरी हो। तब स्वर्ग से ऐक
४४ दूत ने दिखाई देके उसको बल दिया। और उसने पीड़ा में पड़के अधिक बिपत्ति से प्रार्थना किई और उसका पसीना

ऐसा बहा जैसे लोहू के बड़ी बूंद जो पृथिवी पर गिरती हैं।
४५ और जब वुह प्रार्थना से उठा अपने शिष्यन के समीप
४६ आया और उन्हें शोक से सोवते पाया। तब उसने उन्हन
को कहा कि तुम क्यों सोवते हो उठो और प्रार्थना करो
४७ ऐसा न हो कि तुम परीक्षा में पड़ जाओ। और जब वुह
यह कहि रहा था देखो ऐक मंडली दिखाई दिई और उन
बारह में से ऐक जो यहूदा कहावता था उनके आगे आगे
४८ जाता था वही उसका चूमा लेनेको निकट आया। परंतु
ईसा ने उसको कहा हे यहूदा तू मनुष्यके पुत्र को चूमा
४९ से पकड़वाता है। और उन्हन ने जो उसके समीप थे जो
कुछ कि होनहार था देखके उसे कहा हे प्रभु क्या हम
५० खड्ग चलावें। और उनमें से ऐक ने प्रधान याजक के
सेवक पर चलाया और उसका दहिना कान उड़ा दिया।
५१ तब ईसा ने सन्मुख होके कहा कि बस अब धीरज धरो
और उसने उसके कान को छूआ और उसे चंगा किया।
५२ तब ईसा ने प्रधान याजकन और मंदिर के सेनापतिन और
प्राचीनन को जो उसके निकट आऐ थे कहा कि तुमसब
जैसे चोर पकड़ने को खड्ग और लाठियां लेके निकले हो।
५३ जब मैं प्रतिदिन मंदिर में तुम्हारे संग होता था तुम्हन ने
मुझ पर हाथ न बढ़ाया परंतु यह तुम्हारी घड़ी और
५४ अंधकार का पराक्रम है। तब उन्हन ने उसे पकड़के आगे
कालिया और उसको प्रधान याजकन के घर में लाऐ और

५५ पतरस दूर से उसके पीछेपीछे चला गया। और जब उन्हन ने घर के मध्य में अग्नि सुलगाया और ऐकट्ठे बैठे
५६ पतरस भी उनमें बैठ गया। तब ऐक दासी ने उसे अग्नि के समीप बैठे देखा और ध्यान से उसपर दृष्टि करके कहा
५७ कि यह मनुष्य भी उसके संग था। तब उसने उसे मुकर के
५८ कहा कि हे स्त्री मैं उसे नहीं जानता। और तनिक पीछे दूसरे ने उसे देखा और कहा कि तू भी उनमें से है
५९ तब पतरस ने कहा हे मनुष्य मैं नहीं हों। और अटकल ऐक घड़ी के पीछे और ऐक ने दृढ़ता से कहा कि निश्चय यह भी उसके संग था क्योंकि यह भी जलील का है।
६० तब पतरस ने कहा हे मनुष्य मैं नहीं जानता कि तू क्या कहता है और तुरंत जब लों वुह कहताही था कुक्कुट ने
६१ शब्द किया। तब प्रभु ने मुंह फेरके पतरस पर दृष्टि किई और पतरस को प्रभु का बचन चेत आया कि उसने उसे योंही कहा था कि कुक्कुट के शब्द करने से आगे तू तीन बार
६२ मुहसे मुकर जायगा। तब पतरस बाहर गया और बिलख
६३ बिलख के रोया। और जिन मनुष्यन ने ईसा को पकड़ा था
६४ उसे ठट्ठे में उड़ाते हुऐ मारने लगे। और उसकी आखें मूंदके उसकी मुंह पर थपेड़ा मारे और यह कहिके उससे
६५ पूछे कि आगम कह कौन है जो थपेड़े मारता है! अह
६६ और बहुतेरे ने पाषंडपने से उसके बिषय में कहे। और जों दिन हुआ लोगन के प्राचीनन और प्रधान याजकन

और अध्यापकान एकट्ठे आये और उसे अपनी सभा मे
६७ लेजाके बोले। कि हमसे कह क्या तू मसीह है और
उसने उन्हन को कहा जो मैं तुम्हन से कहों तुम प्रतीति न
६८ करोगे। और यद्यपि मैं पूछों भी तुम मुझे उत्तर न
६९ देओगे और न छोड़ोगे। आगे को मनुष्य का पुत्र ईश्वर
७० के पराक्रम के दहिने ओर बैठ रहेगा। तब उन सबन
ने कहा क्या तू ईश्वर का पुत्र है फेर उसने उन्हें कहा
७१ तुम्हीं कहते हो कि मैं हों। फेर उन्हन ने कहा अब
हमें और साक्षी का क्या प्रयोजन है क्योंकि हम सबने
आपही उसी के मुंह से सुना है।

२३ तेईसवां पर्ब्ब

१ तब सारी मंडली उठके उसको पिलातूस पास ले गई।
२ और वे यह कहिके उसपर दोष देने लगे कि हमने इसे
लोगन को बिगाड़ते और कैसर को कर देने से बरजते हुये
और यह कहते हुये सुना कि मैं आपही मसीह-राजा हों।
३ तब पिलातूस ने यह कहिके उसे पूछा क्या तूही यहूदिअन
का राजा है तब उसने उत्तर दिया और कहा तुही तो
४ कहता है। तब पिलातूस ने प्रधान याजकन और लोगन
को कहा मैं इस मनुष्य का कुछ दोष नहीं पावता।
५ और उन्हन ने अधिक हुल्लर करके कहा कि वुह जलील
से लेके यहां लों समस्त यहूदिया में उपदेश करके लोगन में

६ बिभाग आज्ञता है। जब पिलातूस ने जलील का सुना
७ तो पूछा क्या वुह जलील का है। जब उसने जाना कि
वुह हीरुदीस के प्रजा में से है उसने उसे हीरुदीस के
८ पास जो आपही यिरोशलीम में था भेजा। और जब
हीरुदीस ने ईसा को देखा वुह अत्यंत प्रसन्न हुआ
क्योंकि वुह बहुत दिन से उसके देखने की इच्छा रखता
था इस कारण कि उसने उसके बिषय में बहुत कुछ सुना
था और चाहता था कि उसके किसी लक्षण को देखें।
९ तब उसने उसे बहुत कुछ पूछा परंतु उसने उसको कुछ
१० उत्तर न दिया। और प्रधान याजकन और अध्यापकन
११ खड़े होके उस पर दृढ़ता से दोष दिये। और हीरुदीस
ने अपने युद्ध के लोगन के संग होके उसकी निंदा किई
और ठट्ठे किये और उसको भड़कीला बस्त्र पहिनाके
१२ पिलातूस पास फेर भेजा। और उसी दिन पिलातूस और
हीरुदीस आपस में मित्र हुए कि उससे पहिले उनमें
१३ शत्रुता थी। और जब पिलातूस ने प्रधान याजकन और
१४ लोगन के प्रधानन को एकट्ठे बुलाया। उन्हन को कहा
कि तुम सब इस मनुष्य को यह कहते हुए मेरे समीप
लायेहो कि लोगन को बिगाड़ता है और देखो मैं ने तुम्हारे
सन्मुख परीक्षा किई और इस मनुष्य पर उन दोषन के
बिषय में जो तुम ने उस पर दिये मुझे पास कुछ न ठहरा।
१५ और न हीरुदीस के पास कि मैं ने तुम्हें उसके समीप भेजा

था और देखो कि कोई बात जिससे उसको मार डालना योग्य
१६ होय उसपर न किई गई। सो उसको दंड देके छोड़
१७ देता हों। अब उसे अवश्य था कि पर्ब्ब में एक को उन
१८ के लिये छोड़ देवे। तब वे सब एकट्ठे यह कहिके चिल्लाए
कि इसको उठाडाल और बारब्बास को हमारे लिये छोड़ दे।
१९ कि वुह किसी झुल्लर के कारण जो नगर में किया गया था
२० और बध करने के कारण बंदिगृह में डाला गया था। तब
पिलातूस उन्हन से फेर कहिके ईसा के छोड़ देने की बातें
२१ बोला। परंतु वे चिल्ला उठे कि वुह क्रूस पर मारा जाय
२२ क्रूस पर मारा जाय। और उसने तीसरी बार उन्हन को
कहा क्यों उसने क्या अपराध किया है मैं ने उसपर मार डालने
का कोई कारण न पाया इसलिये मैं उसको दंड देके छोड़
२३ देता हों। फेर वे चिल्लाके मांगने लगे कि वुह क्रूस पर मारा
जाय तब उन्हों के और प्रधान याजकन के शब्द ठहरगये।
२४ तब पिलातूस ने आज्ञा देके उन्हन की इच्छा पर सौंप दिया।
२५ और उसने उसको जिसे वे चाहते थे उनके लिये छोड़ दिया
वुह जो बध और झुल्लर के कारण से बंदिगृह में डाला
हुआ था परंतु ईसा को उनकी इच्छा पर सौंप दिया।
२६ और जों वे उसको ले चले उन्हन ने शमऊन कुरीनी को जो
बाहर से आता था पकड़ा और उस पर क्रूस को रखा कि
२७ वुह उठा के ईसा के पीछे ले चले। और बहुतसे लोग
और स्त्रियन जो उसके लिये रोतीं पीटतीं उसके पीछे

२८ होलियां। ईसा ने उनकी ओर फिरके कहा कि हे
यिरोशलीम की पुत्रिअन मुझपर मत रोओ परंतु अपने
२९ और अपने बालकन पर रोओ। क्योंकि देखो वे दिन
आवते हैं जिन में वे कहेंगे कि धन्य बांझ और वे गर्भ
स्थान जिन में धारण न हुआ और वे स्तन जो न पिलाये।
३० उस समय पहाड़न को कहना आरंभ करेंगे कि हम पर
३१ गिरो और चट्टानन को कि हमें छपो। क्योंकि जो हरे
वृक्ष से ऐसा कुछ किया जाता है तो सूखे से क्या किया
३१ जायगा। और दो मनुष्य को भी जो कुकर्म्मी थे उसके संग
३३ मार डालने के लिये ले चले। और जब उस स्थान में जो
खोपड़ी का कहावता है आये वहां उन्हन ने उसको और
उन कुकर्म्मिअन को एक को उसके दहिने और दूसरे को
३४ बायें क्रूश पर खैंचा। तब ईसा ने कहा कि हे पिता
उन पर क्षमा कर क्योंकि वे नहीं जानते कि क्या करते हैं
और उन्हन ने चिट्ठी डालके उसके वस्त्र को बांट लिया।
३५ और लोग खड़े देख रहे थे और प्रधानन भी उनके संग ठट्ठे
से कहते थे कि उसने औरन को छोड़ाया जो वुह मसीह
३६ ईश्वर का चुना हुआ है तो अपने को छोड़ावे। और
प्यादन भी ठट्ठा करते उसके समीप आये और उसे सिरका
३७ दिये। और बोले कि जो तू यहूदिअन का राजा है तो
३८ अपने को छोड़ाव। और यूनानी और लातीनी और
इबरानी अक्षर में एक पत्रे पर लिख के उसको सिर पर लगाया

३९ कि यह यहूदिअन का राजा है। और उन कुकर्म्मिअन में से एक ने जो खैंचेगये थे उनके बिषय में पाखंड कहा कि जो तू मसीह है तो आपको और हमको छोड़ा।
४० परंतु दूसरे ने उत्तर देकर उसको घुड़क के कहा कि तू ईश्वर से नहीं डरता यद्यपि तू भी इसी दंड में संगी है।
४१ और हम तो न्याय की रीति से क्योंकि हम अपने कर्म्म का फल पा रहे हैं पर इस मनुष्य ने कुछ चूक न किया।
४२ और उसने ईसा को कहा हे प्रभु जब तू अपने राज्य में
४३ आवे तो मुझे स्मरण कीजियो। ईसा ने उसको कहा मैं तुझे सत्य कहता हों कि आज तू मेरे संग स्वर्गलोक में
४४ होगा। और दो पहर के समय में समस्त पृथिवी पर
४५ अंधकार छाके तीसरे पहर लों रहा। और सूर्य अंधकार
४६ ऊआ और मंदिर का घूंघट मध्य में फटगया। फेर ईसा बड़े शब्द से चिल्लाके बोला कि हे पिता मैं अपना आत्मा तेरे हाथ में सोंपता हों और यह कहिके अपने प्राण को
४७ छिया। तब सेनापति ने जो कि ऊआ था देखके ईश्वर की स्तुति किई और कहा कि निश्चय यह मनुष्य धर्म्मी
४८ था। और सब लोग जो यह देखने को एकट्ठे ऊए थे उन बस्तुन को जो बीतगया था देखके छातियां पीटते ऊए उलटे
४९ फिरे। और उसके सब चिन्हारन और स्त्रिअन जो जलील से उसके पीछे आई थीं दूर खड़ी होके यह समस्त देख
५० रही थीं। और देखो कि यूसफ नाम एक मनुष्य जो मंत्री

५१ और सज्जन पुरुष और धर्मी था। और उनके परामर्श और कार्य में संगी न था यहूदिअन के एक नगर अरमियः का बासी था और ईश्वर के राज्य का अभिलाषी भी था।
५२ उसने पिलातूस पास जाके ईसा की लोथ मांगी। (५३) और उसने उसे उतार के बस्त्र में लपेटा और एक समाधि में जो पत्थर में खोदा गया था जिस में कधीं कोई मृतक रखा न
५४ गया था धरा। और वुह बनाउती का दिन था और बिश्राम
५५ के दिन का आरंभ था। और स्त्रिअन भी जो उसके संग जलील से आई थीं पीछे हो लिईं और समाधि को और उसकी लोथ को कि किस रीति से रखी गई देख रखीं।
५६ और वे फिर के सुगंध द्रब्य और तेल तैयार कीं और आज्ञा के समान बिश्राम के दिन में बिश्राम कीं।

२४ चौबीसवां पर्ब्ब

१ अब इतवार के दिन बड़े तड़के भोरको वे उन सुगंध द्रब्यन को जो उन्हन ने तैयार किया लेके समाधि पर आईं और
२ उनके संग कई और भी आईं। उन्हन ने उस पत्थर को
३ समाधि से ढुलकाया ऊआ पाया। और भीतर जाके प्रभु
४ ईसा की लोथ को न पाया। और ऐसा ऊआ कि जब वे उस कारण से बऊत घबराईं तो देखो दो मनुष्य चमकते
५ बस्त्र पहिने ऊए उनके समीप खड़े थे। और जो वे भय में थीं और अपने मुंह को भूमि पर झुकाए ऊए थीं उन्हन

ने उनको कहा कि तुम जीवते को मृतकन में क्यों ढूंढतियां
६ हो। वुह यहां नहीं है परंतु जीउठा है चेत करो कि
७ उसने जब जलील में था तुम्हें क्या कहा था। कि अवश्य
है कि मनुष्य का पुत्र पापिअन के हाथ में पकड़वाया
जाय और क्रूस पर मारा जाय और तीसरे दिन फेर उठे।
८ तब उन्हन ने उसके बचन को चेत किया। (९) और
समाधि से फिरीं और उन बातन का समाचार उन ग्यारह
१० को अरु औरन को सुनाईं। मरियम मजदली और
यूआना और मरियम याकूब की माता अरु और उनके
११ संग थीं जिन्हन ने ये बातें प्रेरितन से कहीं। और
उन्हन की बातें उनको व्यर्थ कहानी के समान समझ पड़ीं
१२ और वे उनकी प्रतीति न किये। तब पतरस उठके समाधि
की ओर दौड़ा और नीचे झुकके सूती वस्त्र ऐक ओर पड़ा
हुआ देखा और उस बात से जो बीतगई थी मन में आश्चर्य
१३ करता चला गया। और देखो कि उसी दिन दो उन में से
अमावस नाम ऐक गांव को जो यिरोशलीम से साठ नल
१४ पर था जाते थे। और आपस में उन समस्त बातन की
१५ जो किईं गईं थीं चर्चा करते थे। और ऐसा हुआ कि
जब वे चर्चा और पूछपाछ कर रहे थे ईसा आप समीप
१६ आकर उनके संग होलिया। परंतु उनकी आंखें बंद
होगईं थीं यहां लों कि उन्हन ने उसको न पहिचाना।
१७ और उसने उन्हन को कहा कि यह किस प्रकार की बातें

हैं जो तुम चलते ऊए ऐक दूसरे करते हो और तुम्हारा
१८ मुंह उदासीन है। तब उनमें से ऐक ने जिसका नाम
कलीयास था उत्तर देके उसको कहा क्या तू यिरोशलीम में
लोगन से ऐसा परे रहता है कि ये बातें जो इन्हीं दिनन
१९ में बीती हैं नहीं जानता। उसने उनसे पूछा कि कौन
सी बातें फेर वे उसे बोले कि ईसा नासरी के बिषय में जो
ईश्वर के और समस्त लोगन के आगे आगमज्ञानी था और
२० कार्य और बचन में सामर्थी था। प्रधान याजकन और
हमारे प्रधानन ने उसे पकड़वाके उसके मार डालने की आज्ञा
२१ किई और उसको क्रूस पर खैंचा। और हमें भरोसा था
कि यह वही इसराईल का वही उद्धार करनिहार था
और उन सबन से अधिक आज तीसरा दिन है जब ये बातें
२२ ऊईं। और हमारी मंडली की कई स्त्रिअन ने भी हमें
२३ बिस्मित कर दिया जो भोर को समाधि पर थीं। और
उसकी लोथ न पाके यह कहती आईं कि हमने दूतन का
२४ दर्शन पाया जो कहते थे कि वुह जीता है। और कई
उन में से जो हमारे संग थे समाधि पर गये और जैसा
स्त्रियन ने कहा था बैसाही पाये परंतु उन्हन ने उसको न
२५ देखा। तब उसने उन्हें कहा कि हे मूर्ख और आगम
ज्ञानिअन की कही ऊई समस्त बातों में अल्पबिश्वासिअन।
२६ क्या योग्य न था कि मसीह ये सब कष्ट उठाके अपने ऐश्वर्य
२७ में प्रवेश करे। और उसने मूसा से आरंभ करके समस्त

आगम ज्ञानिअन की वे बातें जो समस्त पुस्तकन में उसके
२८ विषय में हैं उनके आगे निर्णय से कहीं। फेर वे उस
गांव के जिधर वे जाते थे निकट पहुंचे और उसने ऐसा
२९ किया जैसा वुह आगे को जाया चाहता है। परंतु
उन्हन ने मनाके उसे रोका और कहा कि हमारे संग रह
क्योंकि अब संध्या निकट है और दिन बहुत बीत गया
३० तब वुह भीतर गया कि उनके संग रहे। और जब उनके
संग भोजन पर बैठा था ऐसा हुआ कि उसने रोटी उठाके
३१ आशीस की बात कही और तोड़के उन्हन को दिई। तब
उन्हन की आंखें खुल गईं और वे उसको जानगये और
३२ वुह उसकी दृष्टि से लोप हुआ। तब उन्हन ने आपस
में कहा जब वुह हमारे संग मार्ग में बात करता था और
जब वुह ग्रंथन को हम पर प्रगट करता था क्या हमारे
३३ अंतःकरण हम में न जलते थे। और वे उसी घड़ी उठे
और यिरोशलीम को फिरे और उन ग्यारह को और उन्हन
को जो उनके संग एकट्ठे हुए थे यह कहते हुए पाये।
३४ कि प्रभु ठीक उठा है और शमऊन को दिखाई दिया।
३५ और तब उन्हन ने मार्ग की बातें बर्णन कीं और वुह
३६ किस रीति से रोटी तोड़ने में पहिचाना गया। और जब वे
यों कहि रहे थे ईसा आप उनके मध्य में खड़ा था और
३७ उन्हन को कहा कि तुम पर कुशल। वे भय करके डर गये
३८ और समझे कि हमें आत्मा दिखाई दे रहा है। और

उसने उन्हें कहा तुम क्यों व्याकुल हो और क्यों तुम्हारे
३९ अंतःकरण में चिंता उठती है। मेरे हाथन और मेरे पाओं
को देखो कि मैं आपही हों मुझे टटोलो और जानो क्योंकि
आत्मा में मांस और हड्डी नहीं होती जैसा कि तुम मुझे
४० में देखते हो। और यह कहिके अपने हाथन और
४१ पाओं को उन्हें दिखाया। और जब वे अबलों आनंद
से प्रतीति न करते थे और बिस्मित थे उसने उन्हें कहा
४२ तुम्हारे पास यहां कुछ भोजन है। तब उन्हन ने उसे थोड़ीसी
४३ भूनी मछली और मधु का छत्ता दिया। उसने लेके उनको
४४ सन्मुख खाया। और उन्हन को कहा कि ये बातें हैं जो
मैं ने तुम्हारे संग रहते हुए तुम से कहा कि समस्त जो मेरे
विषय में मूसा के तौरेत और आगम ज्ञानिअन के पुस्तकन में
४५ और जबूर में हैं संपूर्ण होना अवश्य है। फेर उसने
४६ उनकी बुद्धि को खोला कि वे ग्रंथन को समझें। और
उन्हें कहा कि योंही लिखा है और ऐसा ऐसा अवश्य
था कि मसीह दुख उठावे और तीसरे दिन मृतकन में से
४७ जी उठे। और कि यिरोशलीम से लेके समस्त लोगन में
पश्चात्ताप और पापन का मोचन उसके नाम से उपदेश किया
४८ जाय। और तुम सब इन बातन के साक्षी हो। (४९) और
देखो कि मैं अपने पिता की प्रतिज्ञा को तुम पर भेजता हों
परंतु जब लों तुम ऊपर से पराक्रम न पाओ यिरोशलीम नगर
५० में बास करो। और वुह उन्हें बितानियां लों बाहर लेगया

५१ और आपना हाथ उठा के उन्हन को आशीस दिया। और ऐसा ज़आ कि वुह उन्हें आशीस देते ज़ए उन से अलग
५२ ज़आ और स्वर्ग पर जाता रहा। तब वे उसकी पूजा
५३ करके बड़े आनंद से यिरोशलीम को फिरे। और नित्य मंदिर में ईश्वर की स्तुति और धन्य कहते रहा किये।

॥ आमीन ॥

मंगल समाचार यूहन्ना रचित

१ पहिला पर्ब्ब

१ प्रथम में बचन था और बुह् बचन ईश्वर के संग था और
२ बुह् बचन ईश्वर था। यही प्रथम में ईश्वर के संग था।
३ समस्त बस्तें उससे रचीगईं और उस बिना कुछ नरचीगईं
४ जो रचीगईं। उसमें जीवन था और बुह् जीवन
५ मनुष्यन का उंजियाला था। और बुह् उंजियाला अंधियारे
६ में चमकताहै और अंधियारे ने उसे नबूझा। एक मनुष्य
ईश्वर को ओर से भेजागयाथा उसका नाम यहिया था।
७ यह् साक्षी के लिये आया कि उंजियाले पर साक्षी दे कि
८ समस्त लोग उसके कारण से बिश्वास लावें। बुह् उंजियाला
९ नथा परंतु उंजियाले पर साक्षी देनेको आयाथा। बुह्
सत्य उंजियाला था कि हरएक मनुष्य को जो जगत में
१० आताहै प्रकाश करताहै। बुह् जगत में था और जगत
उसीसे रचागया और जगत ने उसको नहीं पहिचाना।
११ बुह् अपनन के पास आया और अपनन ने उसे ग्रहण
१२ नकिया। परंतु जितनन ने उसको ग्रहण किया उसने

उन्हन को ईश्वर के पुत्र होने का पराक्रम दिया अर्थात्
१३ उन्हन को जो उसके नाम पर बिश्वास लावतेहैं। जो
नरुधिर से और नशरीर की इच्छा से और नमनुष्यन की
१४ चाह से परंतु ईश्वर से उत्पन्न हुएहैं। और बचन
शरीर हुआ और उसने अत्यंत कृपा और सच्चाई से हम
में बास किया और हमन ने उसका ऐश्वर्य देखा वुह
१५ ऐश्वर्य जैसा पिता के एकलौते को चहियेथा। यहिया
ने उसके लिये साक्षी दिई और पुकारके कहा यह वुह है
जिसके बिषय में मैं कहताथा कि वुह जो मेरे पीछे
आवनिहार था मुससे आगे बढ़ाहै क्योंकि वुह मुससे
१६ पहिले था। और हमसब ने उसकी भरपूरी से पाया और
१७ कृपापर कृपाभी पाई। इसलिये कि शास्त्र मूसा के ओर से
१८ दिया गया कृपा और सच्चाई ईसा मसीह से पहुंची। ईश्वर
को किसीने कभी नदेखा एकलौते पुत्र ने जो पिता के
१९ गोद में था उसे प्रगट किया। और यहिया की साक्षी
यह थी कि जब यहूदिअन ने याजकन और लाविअन
को यिरोशलीम से भेजा कि उसे पूछें कि तू कौन है।
२० उसने मानलिया और नाह नकिया परंतु खोलके कहा
२१ कि मैं मसीह नहीं। और उन्हन ने उसको पूछा सो
क्या तू इलियास है उसने कहा कि मैं नहींहों क्या तू
२२ वुह आगमज्ञानी है उसने उत्तर दिया कि नहीं। तब
उन्हन ने उसको कहा तु कौन है जिस तें हम उनको

जिन्हन ने हमें भेजा कुछ उत्तर दें तू अपने विषय में
२२ क्या कहताहै। उसने कहा कि मैं बन में पुकारनेहारे
का ऐक शब्द हों कि ईश्वर के मार्ग को सीधा करो जैसा
२४ इशीया आगमज्ञानी ने कहा। और वे जो भेजेगयेथे
२५ फरिसिअन में से थे। और उन्हन ने उसको पूछा और
कहा जो तू मसीह नहीं और इलियास नहीं और वुह
२६ आगमज्ञानी भी नहीं फेर तू क्यों स्नान देताहै। यहिया
ने उन्हन को उत्तर देके कहा कि मैं जल से स्नान देताहों।
परंतु तुम्हारे मध्य में ऐक खड़ाहै जिसको तुमसब
२७ नहीं जानते। यह वुह है जो मेरे पीछे आताहै जो
मुझ से आगे बढ़ा जिसकी जूती का बंद खोलने के मैं योग्य
२८ नहीं। ये सब अर्दन के उस पार बैतिइबरः में हुऐथे
२९ जहां यहिया स्नान देताथा। दूसरे दिन यहिया ने ईसा
को अपने पास आते देखा और कहा कि देखो ईश्वर का
३० मेम्ना जो जगत के पाप को उठाताहै। यह वुह है
जिसके विषय में मैंने कहा कि ऐक मनुष्य मेरे पीछे
आताहै जो मुझ से आगे बढ़ा इसलिये कि वुह मुझसे
३१ पहिले था। और मैं तो उसको नजानताथा पर इसलिये
मैं जल से स्नान देता आया कि वुह इसराईल पर प्रगट
३२ हो। और यहिया ने यह साक्षी दिई कि मैं ने आत्मा
को कबूतर के समान स्वर्ग से उतरते देखा और वुह उसपर
३३ ठहरा। और मैं उसको नजानताथा परंतु जिसने मुझे

भेजा कि जल से स्नान दें उसने मुझे कहा कि जिसपर तू आत्मा को उतरते और ठहरते देखे वही वुह है जो
३४ धर्मात्मा से स्नान देताहै। सो मैं ने देखा और साक्षी
३५ दिई कि यह ईश्वर का पुत्र है। फेर दूसरे दिन यहिया
३६ और दो उसके शिष्यन में से खड़ेथे। तब उसने ईसा को
३७ चलते देखके कहा देखो ईश्वर का मेम्ना। और उन दो शिष्यन ने उसका बचन सुना और वे ईसा के पीछे होलिये।
३८ तब ईसा ने मुंह फेरके उन्हन को पीछे आवते देखके उन्हें कहा कि तुम क्या ढूंढते हो उन्हन ने उसको कहा हे
३९ रब्बी अर्थात् हे गुरु तू कहां रहताहै। उसने उन्हन को कहा चलो देखो वे आये और जहां वुह रहताथा देखे और उस दिन उसके संग रहे वुह दसवें घंटे के
४० अटकल था। एक उन दो में से जो यहिया का बचन सुनकर उसके पीछे गये शमऊन पतरस का भाई अंद्रयास
४१ था। उसने पहिले अपने भाई शमऊन को पाया और उसको कहा कि हमने मसीह को जिसका अर्थ ख्रीष्ट
४२ है पाया। तब वुह उसको ईसा के पास लाया और ईसा ने उसपर दृष्टि करके कहा तू यूना का पुत्र शमऊन है तू
४३ कैफा कहावेगा जिसका अर्थ पत्थर है। दूसरे दिन ईसा ने चाहा कि जलील में जाय और फैलबूस को पाके कहा
४४ मेरे पीछे चल। अब फैलबूस अंद्रयास और पतरस के
४५ नगर बैतसैदा का बासी था। फैलबूस ने नासानाईल को

पाया और उसको कहा कि हमने उसको पाया जिसकी अवस्था में मूसा ने शास्त्र में और आगमज्ञानिअन ने लिखा है

४६ कि यूसफ का पुत्र ईसा नासरी है। नाथानाईल ने उसको कहा क्या कोई अच्छी वस्तु नासरः से निकल सकती है

४७ फैलबूस ने उसको कहा कि आ और देख। ईसा ने नाथानाईल को अपने ओर आवते देखा और उसके विषय में कहा कि देखो एक सच्चा इसराईली जिसमें कपट [illegible]।

४८ नाथानाईल ने उसे कहा तू मुझे कहां से [illegible] है। ईसा ने उत्तर देके उसको कहा फैलबूस के तुझे बुलवाने से आगे

४९ जब तू गूलर के वृक्ष के तले था मैं ने तुझे देखा। नाथानाईल ने उत्तर देके उसको कहा हे गुरु तू ईश्वर का पुत्र है तू

५० ईसराईल का राजा है। ईसा ने उत्तर देके उसको कहा क्या इसलिये तू बिश्वास लाता है कि मैंने तुझे कहा कि मैंने तुझे गूलर के वृक्ष के तले देखा तू इन्हसे बड़े कार्य

५१ देखेगा। फेर उसने उसको कहा मैं तुम से सत्य सत्य कहता हों कि इसके पीछे तुम स्वर्ग को खुला और ईश्वर के दूतन को ऊपर जाते और मनुष्य के पुत्र पर उतरते देखोगे।

२ दूसरा पर्व

१ और तीसरे दिन जलील के काना में किसी का बिवाह

२ हुआ और ईसा की माता वहीं थी। ईसा और उसके

३ शिष्य भी उस बिवाह में बुलाये गयेथे। और जब दाख का रस थोड़ा रहा ईसा की माता ने उसको कहा कि उनके ४ पास दाख का रस नरहा। ईसा ने उसको कहा हे स्त्री तुम से मुझे क्या काम है मेरा समय अबलों नहीं आया। ५ उसकी माता ने सेवकन को कहा जो कुछ वुह तुम्हें कहे ६ तुम करियो। और वहां पत्थर के छः मटके यहूदिअन के पवित्र करने की रीतिके समान धरे थे हरएकमें दो अथवा ७ तीन मन की समाई थी। ईसा ने उन्हन को कहा कि ८ मटकन में जल भरो सो उन्हन ने उनको मुंहेमुंह भरा। फेर उसनें उन्हन को कहा अब निकालो और जेवनार के ९ प्रधान के पास लेजाओ सो वे लेगये। जब जेवनार के प्रधान ने उस जल को जो दाख का रस बनाथा चीखा और नजाना कि वुह कहां से था परंतु सेवकन जिन्हन ने जल को निकालाथा जानतेथे जेवनार के प्रधान ने दूलह १० को बुलाया। और उसको कहा कि हरएक मनुष्य पहिले अच्छा दाख का रस देतेहैं और जब लोग पीके छकतेहैं तब वुह जो घटती है पर तूने अच्छा दाख का रस अबलों ११ रखछोड़ाहै। यह प्रथम आस्चर्य कर्म ईसा ने जलील के काना में किया और अपना महिमा प्रगट किया और १२ उसके शिष्यन उसपर बिश्वास लाये। इसके पिछे वुह और उसकी माता और भाई और उसके शिष्य कफरनाहुम १३ में गये और वे वहां बहुत दिन नठहरे। तब यहूदिअन

के फसः का पर्व्व निकट था और ईसा यिरोशलीम को
१४ गया । और मंदिर में बैलन और भेड़न और कबूतरन के
१५ बेचनेहारन और सुरदिअन को बैठे पाया। तब उसने
रस्सी का कोड़ा बनाके उन सभन को बैलन और भेड़न
समेत मंदिर से बाहर निकाला और सुरदिन के टके को
१६ बिथरदिया और चौकिअन को उलटदिया । और
कबूतरन के बेचनेहारन को कहा इन बस्तुन को यहां से
१७ दूर करो मेरे पिता के घरको व्यापार का घर मतकरो। और
उसके शिष्यन ने चेत किया कि यह लिखाथा कि तेरे
१८ घर का ज्वलन मुझे निगलगया। तब यहूदिन ने उत्तर दिया
और उसको कहा तू हमको कौनसा आश्चर्य दिखावताहै जो
१९ यह कर्म करताहै। ईसा ने उत्तर दिया और उन्हन को
कहा कि इस मंदिर को ढादो और तीन दिन में मैं इसको
२० उठाओंगा । तब यहूदिअन ने कहा कि यह मंदिर
छियालीस बरस से बनरहाहै और क्या तू उसको तीन
२१ दिन में उठावेगा। परंतु उसने अपने देह के मंदिर की
२२ अवस्था में कहाथा । इसलिये जब वुह मृतकन मेंसे जी
उठा उसके शिष्यन ने चेत किया कि उसने उन्हन को यह
कहाथा और वे ग्रंथन पर और उस बचन पर जो ईसा ने
२३ कहाथा बिश्वास लाये। और जब वुह फसः के पर्व्व में
यिरोशलीम में था बहुतेरन ने जब उसके आश्चर्य कर्म को
२४ देखा वे उसके नाम पर बिश्वास लाये। परंतु ईसा ने अपने

को उन्हों पर न छोड़ा क्योंकि वुह सबको पहिचानताथा। २५ और आधीन नथा कि कोई मनुष्यन की अवस्था में साक्षी दे क्योंकि वुह जानताथा कि मनुष्यन में क्या था।

३ तीसरा पर्ब्ब

१ फरीसिअन में से एक मनुष्य जिसका नाम नीकूदीमूस था २ जो यहूदिअन का एक प्रधान था। रात को ईसा के पास आया और उसको कहा हे गुरु हम जानतेहैं कि तू ईश्वर की ओर से उपदेशक होके आया क्योंकि कोई मनुष्य यह आश्चर्य जो तू करताहै नहीं करसक्ता जबलों ईश्वर ३ उसके संग नहो। ईसा ने उत्तर दिया और उसको कहा मैं तुझ से सत्य सत्य कहता हों जबलों मनुष्य नयेसिर से जन्म नपावे वुह ईश्वर के राज्य को देख नहींसक्ता। ४ नीकूदीमूस ने उसको कहा कि मनुष्य जब बृद्ध होगया तो वुह क्योंकर उत्पन्न होसक्ताहै क्या वुह दूसरी बार अपनी माता के गर्भ में प्रवेश करके उत्पन्न होसक्ताहै। ५ ईसा ने उत्तर दिया कि मैं तुझ से सत्य सत्य कहताहों जो मनुष्य जल और आत्मा से उत्पन्न नहोवे तो वुह ईश्वर के ६ राज्य में प्रवेश नहीं करसक्ता। जो मांस से उत्पन्न हुआहै मांस है और जो आत्मा से उत्पन्न हुआ है आत्मा है। ७ आश्चर्य मत कर कि मैंने तुझसे कहा कि तुम्हें नयेसिरसे ८ उत्पन्न होना अवश्य है। पवन जिधर चाहताहै

चलताहै और तू उसका शब्द सुनताहै परंतु नहीं
जानता कि वुह कहां से आताहै और कहांको जाताहै
ऐसाही हरएक है जो आत्मा से उत्पन्न हुआहै।
९ नीकूदीमूस ने उत्तर दिया और उसको कहा ये बातें क्योंकर
१० होसक्तीहैं। ईसा ने उत्तर दिया और उसको कहा क्या
तू इसराईल का उपदेशक है और ये बातें नहीं जानता।
११ मैं तुससे सत्य सत्य कहताहों जिसे हम जानतेहैं हम
कहतेहैं और जिसे हमने देखाहै उसपर साक्षी देतेहैं
१२ और तुम हमारी साक्षी नहीं मानते। जब मैं ने तुम्हें
संसार की बातें कहीं और तुम प्रतीति नहीं करते तो जो
मैं तुम्हें स्वर्ग की बातें कहों तुम क्योंकर प्रतीति करोगे।
१३ और कोई मनुष्य स्वर्ग पर नहीं गया परंतु केवल वुह जो
१४ स्वर्ग से उतरा अर्थात मनुष्य का पुत्र जो स्वर्ग में है। और
जिसरीति से मूसाने बन में सर्प को ऊंचाई पर रखा उसी
रीति से अवश्य है कि मनुष्य का पुत्र भी उठायाजाय।
१५ कि जो कोई उसपर बिश्वास लावे नाश नहोवे परंतु अनंत
१६ जीवन पावे। इसलिये कि ईश्वर ने जगत पर ऐसा प्रेम
कियाहै कि उसने अपना एकलौता पुत्र दिया कि जो
कोई उसपर बिश्वास लावे नाश नहोवे परंतु अनंत जीवन
१७ पावे। क्योंकि ईश्वर ने अपने पुत्र को जगत में इसलिये
नहीं भेजा कि जगत को दोषी करे परंतु इसलिये कि जगत
१८ उसके कारण उद्धार पावे। वुह जो उसका बिश्वासी है

दाषी नहीं परंतु वुह जो बिश्वासी नहीं दोषी होचुका इसलिये कि वुह ईश्वर के एकलौते पुत्र के नाम पर
१९ बिश्वास नलाया। और दोष यही है कि उंजियाला जगत में आया और मनुष्यन ने अंधकार को उंजियाले से
२० अधिक प्रेम किया क्योंकि उन्हन के कर्म बुरे थे। इसलिये कि जो कोई बुरा करताहै उंजियाले से बैर रखताहै और उंजियाले लों नहीं आता नहो कि उसके कर्म प्रगट होवें।
२१ परंतु वुह जो सत्य करताहै उंजियाले के समीप आताहै कि उसके कर्म प्रगट होवें कि वे ईश्वर के मार्गपर
२२ कियेगयेहैं। इन बस्तुन के पिछे ईसा और उसके शिष्य यहूदियः के भूमि में आये और वुह वहां उन्हन के संग
२३ कुछ दिन ठहरा और स्नान दियाकिया। और यहिया भी सालीम के समीप ऐनून में स्नान देताथा क्योंकि वहां बहुत
२४ जल था और लोग आके स्नान पायाकिये। कि यहिया
२५ अवलों बंदीगृह में डाला नगयाथा। तब यहिया के शिष्यन और यहूदिन में पवित्र करने के बिषय में
२६ चर्चा हुई। और वे यहिया के पास आये और उसको बोले कि गुरु वुह जो अर्दन के पार तेरे संग था जिसपर तूने साक्षी दिई देख कि वुह स्नान देताहै और सब
२७ उसके समीप आवतेहैं। यहिया ने उत्तर देके कहा कि मनुष्य कुछ पाय नहीं सक्ता केवल उसके कि वुह उसको
२८ स्वर्ग से दियाजाय। तुम आपही मेरे पर साक्षी देतेहो कि

मैंने कहा मैं मसीह नहीं परंतु उससे आगे भेजागयाहों।
२९ जिसकी दूलहीन है वुह दूलह है परंतु दूलह
का मित्र जो खड़ा होके उसकी सुनताहै दूलह के
शब्द से बड़ा आनंद होताहै इसकारण मेरा यह आनंद
३० संपूर्ण हुआ। अवश्य है कि वुह बढ़े और मैं घटों।
३१ वुह जो ऊपर से आताहै सब से श्रेष्ट है वुह जो
पृथिवी का है पार्थिव है और पृथिवी की कहताहै
३२ वुह जो स्वर्ग से आवताहै सब से बड़ा है। और जो
कुछ उसनें देखा और सुनाहै उसीकी साक्षी देताहै
३३ और कोई मनुष्य उसकी साक्षी ग्रहण नहीं करता। जिसने
उसकी साक्षी ग्रहण किई है छाप कियाहै कि ईश्वर
३४ सत्य है। इसलिये कि जिसको ईश्वर ने भेजाहै वुह
ईश्वर की बातें कहताहै क्योंकि ईश्वर आत्मा परिमाण से
३५ नहीं देता। पिता पुत्र को प्यार करताहै और समस्त
३६ बस्तें उसके हाथ में दिई हैं। जो कि पुत्र पर बिश्वास
लावताहै अनंत जीवन उसका है और वुह जो पुत्र पर
बिश्वास नहीं लावता जीवन को न देखेगा परंतु ईश्वर का
क्रोध उस पर रहताहै

४ चौथा पर्ब्ब

१ और जब प्रभु ने जाना कि फरीसिअन ने सुना कि ईसा
यहिया से अधिक शिष्य करताहै और स्नान देताहै।

२ यद्यपि ईसा नहीं परंतु उसके शिष्य स्नान देतेथे। (३) तब वुह
४ यहूदियः को छोड़ के जलील को फिर गया। और अवश्य
५ था कि वुह सामरः में होके जाय। तब वुह सामरिया
की एक बस्ती में जो सोकर कहावतीहै आया उस भूमि
के निकट जो याकूब ने अपने पुत्र युसफ को दिईथी।
६ और याकूब का कूआं वहीं था सो ईसा चलने से थक के
उस कूआं पर योंही बैठगया यह दो पहर के निकट था।
७ तब सामरः की एक स्त्री पानी भरने को आई ईसा ने उसको
८ कहा कि मुझे पीने को दे। क्योंकि उसके शिष्य बस्ती में
९ गयेथे कि कुछ भोजन मोल लें। तब सामरः की उस
स्त्री ने उसको कहा कि तू यहूदी होके क्योंकर मुससे जो
सामरः की स्त्री हों पीनेको मांगताहै कि यहूदी
१० सामरियन से व्यवहार नहीं करते। ईसा ने उत्तर देके
उसको कहा जो तू ईश्वर के दान को जानती और उसको
जो तुझे कहताहै मुझे पीने को दे तू उससे मांगती और
११ वुह तुझे अमृत जल देता। स्त्री ने उसको कहा प्रभु
तेरे पासखैचने को कुछ नहीं और कूआं गहिरा है फेर
१२ तूने वुह अमृत जल कहां से पाया। क्या तू हमारे पिता
याकूब से बड़ा है जिसने हमन को यह कूआं दिया
और उसने आप और उसके बालकन ने और उसके पशुन
१३ ने उससे पीया। ईसा ने उत्तर दिया और उसको कहा
१४ जोकोई यह जल पीताहै फेर प्यासा होगा। परंतु

जो कोई वुह जल जो मैं उसे दों पीताहै कधी प्यासा नहोगा परंतु वुह जल जो मैं उसे देउंगा उसमें जल का
१५ सोता होजायगा जो अनंत जीवन लों बहतारहेगा। स्त्री ने उसको कहा कि हे प्रभु यह जल मुझे दे कि मैं प्यासी
१६ नहों और यहां भरनेको नआओं। ईसा ने उसको कहा कि जा और अपने पति को बुला और इधर आ।
१७ स्त्री ने उत्तर दिया और कहा कि मेरे पति नहींहै ईसा ने उसको कहा तूने अच्छा कहा कि मेरे पति नहींहै।
१८ इसलिये कि तू पांच पति करचुकीहै औरवुह जो तू अब रखतीहै तेरा पति नहीं तूने उसमें सत्य कहा।
१९ स्त्री ने उसको कहा कि मुझे सूझपड़ताहै कि तू
२० आगमज्ञानी है। हमारे पितरन ने इस पहाड़ में पूजा किई और तुम कहतेहो कि यिरोशलीम में वुह स्थान
२१ है जहां उचित है कि लोग पूजा करें। ईसा ने उसको कहा कि हे स्त्री मेरी बात की प्रतीति कर कि वुह समय आताहै कि तुमसब नइस पहाड़ में और नयिरोशलीम में
२२ पिता की पूजा करोगे। जिसे तुमसब नहीं जानते उसकी पूजा करतेहो हम जिसे जानतेहैं उसकी पूजा करतेहैं
२३ इसलिये कि उद्धार यहूदिअन मेंसे है। परंतु समय आताहै और अब है कि सच्चे पूजेरि आत्मा से और सच्चाई से पिता की पूजा करेंगे क्योंकि पिता ऐसे पूजेरीन
२४ को ढूंढताहै। ईश्वर आत्मा है और वे जो उसकी

पूजा करनेहैं अवश्य है कि आत्मा से और सच्चाइ से
२५ पूजा करें। उस स्त्री ने उसको कहा मैं जानती हों कि
मसीह जो खरसतूस कहावता है जब वुह आवेगा हमें सब
२६ वस्तुन का संदेश कहेगा। ईसा ने उसको कहा मैं जो
२७ तुझे कहता हों वही हों। और इतने में उसके शिष्य
आये और आश्चर्य किये कि वुह स्त्री से बात्ता करताथा
परंतु किसी ने नकहा कि तू क्या मांगताहै अथवा उससे
२८ किस लिये बात्ता करताहै। तब स्त्री ने अपने जलका
२९ घड़ा छोड़ा और नगर में जाके लोगन से कहा। इधर
आओ एक मनुष्य को देखो जिसने सब कर्म जो मैंने
३० किया मुझे कहा देखो क्या यह मसीह नहीं। तब वे नगर
३१ से निकलके उसके निकट आये। इतनेमें उसके शिष्यन
ने उसकी विनती करके कहा कि हे गुरु कुछ खाइये।
३२ परंतु उसने उन्हें कहा मेरे पास खानेको है जिसे तुम
३३ सब नहीं जानते। इसलिये शिष्यन ने अपुस में कहा
३४ क्या कोई मनुष्य उसके लिये भोजन लायाहै। ईसा ने उन्हें
कहा मेरा भोजन यह है कि उसके अभिप्राय को जिसने
मुझे भेजाहै पूरा करों और उसके कार्य को संपूर्ण करों।
३५ क्या तुमसब नहीं कहते कि चार महीने के पीछे लवने
का समय आवेगा देखो मैं तुम्हन से कहता हों अपनी
आंखे ऊपर करो और खेतन को देखो कि वे लवने को
३६ पकचुकेहैं। और वुह जो लवताहै बनी पावताहै और

अनंत जिवन के लिये फल संग्रह करताहै कि वुह जो बोताहै और वुह जो काटताहै दोनो के दोनो आनंद
३७ होवें। और उसपर यह बचन सत्य है कि एक बोताहै
३८ और दूसरा काटताहै। मैंने तुम्हें काटने को भेजाहै जिसमें तुमसब ने परिश्रम नहीं किया औरन ने परिश्रम किया और तुमसब उनके परिश्रम में प्रवेश
३९ किये। और उस नगर के बक्रतसे सामरी उसपर बिश्वास लाये उस स्त्री के कहने से जिसने साक्षी दिई कि जो
४० कुछ मैंने कभी किया उसने मुझे कहा। और उन सामरिअन ने उसके पास आके उसकी बिनती किई कि
४१ हमारे संग रह सो वुह दो दिन वहां रहा। उनसे अधिक और बक्रतेरे उसी के बचन के कारण बिश्वास
४२ लाये। और उस स्त्री को कहा कि अब हम केवल तेरे कहे से बिश्वास नहीं लावते इसलिये कि हमने आपही सुना और जानतेहैं कि यह ठीक जगत का
४३ उद्धारकरनिहार मसीह है। और वुह दो दिन के
४४ पीछे वहां से चलके जलील को गया। कि ईसा ने साक्षी दिई कि आगमज्ञानी अपने देश में आदर नहीं पावता।
४५ और जब वुह जलील में आया जलीलिअन ने उसका सिष्टाचार किया कि उन्हन ने समस्त जो उसने यिरोशलीम के बीच पर्व्व में कियेथे देखाथा क्योंकि वेभी पर्व्व में गयेथे।
४६ और ईसा फेर जलील के काना में जहां उसने जल को

दाख का रस बनायाथा आया और वहां एक प्रतिष्ठित
४७ मनुष्य था जिसका पुत्र कफरनाहूम में रोगी था। जब
उसने सुना कि ईसा यहूदियः से जलील में आया वुह
उसके पास गया और उसकी बिनती किई कि वुह आके
उसके पुत्र को चंगा करे क्योंकि वुह मरने पर था।
४८ तब ईसा ने उसको कहा जबलों तुम लक्षण और आश्चर्य
४९ न देखोगे तुम बिश्वास न लाओगे। उस प्रतिष्ठित मनुष्य ने
उसको कहा हे प्रभु मेरे बेटे के मरने के आगे आइये।
५० ईसा ने उसको कहा जा तेरा पुत्र जीवता है और उस
मनुष्य ने उस बचन पर जो ईसा ने उसको कहाथा निश्चय
५१ किया और चलागया। वुह मार्गही में था कि उसके
सेवकन उसे मिले और संदेश पहुंचाये कि तेरा बेटा
५२ जीवता है। तब उसने उन्हन को पूछा कि वुह किस घड़ी से
चंगा होनेलगा उन्हन ने उसको कहा कल सातवीं घड़ी से
५३ ज्वर उससे जातारहा। तब उसके पिताने जाना कि उसी
घड़ी में ईसा ने उसको कहाथा कि तेरा बेटा जीवता है
तब वुह आप और उसका सारा घर बिश्वास लाया।
५४ यही दूसरा आश्चर्य है जो ईसा ने यहूदियः से आके
जलील में दिखाया।

५ पांचवां पर्ब्ब

१ इसके पीछे यहूदिअन का एक पर्ब्ब आया और ईसा

२ यिरोशलीम को गया। और यिरोशलीम में भेड़न की हाट के निकट एक कुंड है जिसके पांच घाट हैं जो इब्री भाषा
३ में बैतिहसदा कहावताहै। उन्हन में दुर्बल अंधे लंगड़े और लूलन की एक बड़ी मंडली पड़ीथी जो जल के हिलने
४ की आशा में थी। इसलिये कि एक दूत किसी समय में उस कुंड में उतरके जल को हिलावताथा और जल के हिलने के पीछे जो कोई कि पहिले उसमें उतरताथा उस
५ रोग से जिससे वुह रोगी था चंगा होताथा। और
६ वहां एक मनुष्य था जो अठतीस बरस से रोगी था। ईसा ने उसे पड़ेहुए देखा और जाना कि वुह बहुत दिन से उस दशा में है तो उसको कहा कि क्या तू चाहताहै
७ कि चंगा होजाये। उस रोगी मनुष्य ने उसको उत्तर दिया कि हे प्रभु मेरे पास कोई मनुष्य नहीं कि जब यह जल हिले तो मुझे कुंड में डालदे और जबलों मैं आप
८ से आऊं दूसरा मुससे आगे उतरपड़ताहै। ईसा ने उस को कहा उठ और अपना बिछौना उठा और चलाजा।
९ और तुरंत वुह मनुष्य चंगा होगया और अपना बिछौना
१० उठाके चलनिकला और वुह बिश्राम का दिन था। इसलिये यहूदिअन ने उसको जो चंगा हुआथा कहा कि यह बिश्राम का दिन है तुझे उचित नहीं कि बिछौना
११ उठालेजावे। उसने उन्हन को उत्तर दिया कि जिसने मुझे चंगा किया उसीने मुझे कहा कि अपना बिछौना उठाके

१२ चलाजा। तब उन्हन ने उसको पूछा कि वुह कौन मनुष्य है जिसने तुझे कहा कि अपना बिछौना उठाके
१३ चलाजा। उसने जो चंगा हुआथा नजाना कि वुह कौन था इसलिये कि ईसा वहां से हटगयाथा क्योंकि उस स्थानमें
१४ एक भीड़ थी। इसके पीछे ईसा ने उसको मंदिर में पाया और उसको कहा कि देख तू चंगा हुआ फेर पाप नकरना
१५ नहोवे कि तू उससे अधिक बिपत्ति में पड़े। उस मनुष्य ने जाके यहूदिअन से कहा कि जिसने मुझे चंगा किया
१६ ईसा था। इसलिये सब यहूदी ईसा की घात में लगे और उसके पीछे पड़े कि मारडालें क्योंकि उसने ये कर्म
१७ बिश्राम के दिन में किये। परंतु ईसा ने उन्हें उत्तर दिया कि मेरा पिता अबलों कार्य करताहै और मैं भी कार्य
१८ करताहों और यहूदिअन ने उसे मारडालने की अधिक इच्छा किई क्योंकि उसने नकेवल बिश्राम के दिन का आदर नकिया परंतु ईश्वर को अपना पिता कहिके
१९ अपने को ईश्वर के तुल्य किया। तब ईसा ने उत्तर दिया और उन्हें कहा मैं तुम्हन से सत्य सत्य कहताहों कि पुत्र आप से कुछ नहीं करसक्ता परंतु जो कुछ कि वुह पिता को करते देखताहै करताहै क्योंकि जो कार्य कि वुह करताहै पुत्र भी उसी रीति से वही करताहै।
२० इसलिये कि पिता पुत्र को प्यार करताहै और जो कार्य कि आप करताहै उसे दिखावताहै और वुह उसको

इनसे भी बड़ा कार्य दिखावेगा कि तुमसब आश्चर्य मानोगे
२१ इसलिये कि जिस रीति से पिता मृतकन को उठावताहै
और जिलावताहै पुत्र भी जिन्हें चाहेगा जिलावेगा।
२२ क्योंकि पिता किसी मनुष्य का न्याव नहीं करता परंतु
२३ उसने समस्त न्याव पुत्र को सौंप दिया। कि सब जिस रीति
से पिता का आदर करतेहैं पुत्र काभी आदर करें वुह जो
पुत्र का आदर नहीं करता पिता का जिसने उसे भेजाहै
२४ आदर नहीं करता। मैं तुम्हन से सत्य सत्य कहताहों
कि जो कोई मेरा बचन सुनताहै और जिसने मुझे
भेजाहै उसपर बिश्वास लावताहै अनंत जीवन पाताहै
और दोष में नपड़ेगा परंतु मृत्यु से छूटके जीवन को
२५ पहुंचाहै। मैं तुम्हन से सत्य सत्य कहताहों कि समय
आवताहै और अब है कि मृतक ईश्वर के पुत्र का शब्द
२६ सुनेंगे और सुनके जीयेंगे। इसलिये कि जिस रीति से पिता
आप में जीवन रखताहै इसी रीति से उसने पुत्र को दियाहै
२७ कि आप में जीवन रखे। और उसको पराक्रम दियाहै
कि न्याव करे इसलिये कि वुह मनुष्य का पुत्र है।
२८ इससे आश्चर्य नमानो क्योंकि वुह समय आवताहै जिसमें
२९ वे सब जो समाधिन में हैं उसका शब्द सुनेंगे। और
निकल आवेंगे जिन्हन ने भलाई किईहै जीवन के लिये
जीउठेंगे और जिन्हन ने बुराई किईहै दंड के लिये
३० जीउठेंगे। मैं आपसे कुछ नहीं करसक्ता जैसा मैं सुनताहों

आज्ञा करताहों और मेरी आज्ञा ठीक है क्योंकि मैं अपनी इच्छा नहीं ढूंढता परंतु पिता की इच्छा जिसने
३१ मुझे भेजाहै। जो मैं अपने लिये साक्षी देउं तो मेरी
३२ साक्षी सत्य नहीं। दूसरा है जो मेरे लिये साक्षी देताहै और मैं जानताहों कि साक्षी जो वुह मेरे लिये
३३ देताहै सत्य है। तुम्हन ने यहिया के पास संदेश
३४ भेजा और उसने सच्ची साक्षी दिई। और मैं मनुष्य की साक्षी नहीं चाहता पर मैं यह कहताहों कि तुमसब
३५ उद्धार पाओ। वुह जलता और चमकता उंजियाला था और तुमसब थोड़े दिनलों चाहतेथे कि उसके उंजियाले
३६ में आनंद हो। परंतु मुझ पास यहिया की साक्षी से एक बड़ी साक्षी है इसलिये कि ये कार्म जो पिता ने मुझे संपूर्ण करने को दियाहै वही कर्म जो मैं करताहों
३७ मेरे लिये साक्षी देतेहैं कि पिता ने मुझे भेजाहै। और पिता ने जिसने मुझे भेजाहै मेरे लिये आप साक्षी दिईहै तुम्हन ने कभी उसका शब्द नहीं सुना और नउसका
३८ स्वरूप देखा। और उसका बचन तुम में स्थिर नहीं इसलिये कि जिसको उसने भेजा तुमसब उसका बिश्वास
३९ नहीं करते। पुस्तकन में ढूंढो क्योंकि तुमसब समुझतेहो कि उनमें तुम्हारे लिये अनंत जीवन है और वे हैं वे
४० जो मेरे लिये साक्षी देतेहैं। और तुम नहीं चाहते
४१ कि मेरे पास आओ कि अनंत जीवन पाओ। मैं मनुष्यन

४२ से आदर नहीं ग्रहण करता। और मैं तुम्हें जानताहों
४३ कि ईश्वर की प्रीति तुमसब में नहींहै। मैं अपने
पिता के नाम से आयाहों और तुमसब मुझे ग्रहण नहीं
करते जो दूसरा अपने नामसे आवे तुमसब उसे ग्रहण
४४ करोगे। तुम जो आपुस में एक एक की प्रतिष्ठा ग्रहण
करतेहो और वुह प्रतिष्ठा जो केवल ईश्वर से है नहीं
४५ ढूंढते क्योंकर बिश्वास लासक्तेहो। मत समुझो कि मैं
पिता के पास तुम्हें दोष देउंगा एकहै जो तुम्हें दोष
४६ देताहै अर्थात मूसा जिसपर तुम्हन का बिश्वास है। क्योंकि
जो तुमसब मूसा के बिश्वासी होते तुमसब मेरे बिश्वासी
४७ होते इसलिये कि उसने मेरी अवस्था में लिखाहै। परंतु
जब तुमसब उसके लिखे के बिश्वासी नहीं तो तुमसब
मेरे बचन पर कैसे बिश्वास लाओगे।

६ छठवां पर्ब्ब

१ इन बस्तुन के पीछे ईसा जलील के समुद्र के पार जो
२ तिबिरियास का है गया। और एक बड़ी मंडली उसके
पीछे होलिई क्योंकि उन्हन ने उसके आश्चर्य्यन को जो
३ उसने रोगिअन पर किया देखाथा। फेर ईसा पहाड़ पर
४ जाके अपने शिष्यन के संग बैठा। और फसः जो
५ यहूदिअन का पर्ब्ब है निकट था। फेर जब ईसा ने
आखें ऊपर किईं और देखा कि बड़ी मंडली उसके पास

आतीहै उसने फैलबूस को कहा कि हम कहां से रोटी
६ मोल लें कि ये खावें। परंतु उसने यह उसकी परीक्षा
के कारण कहाथा क्योंकि वुह आप जानताथा जो किया
७ चाहताथा। फैलबूसने उसे उत्तर दिया कि यद्यपि उन
में से हरऐक को ऐकी ऐक टुकड़ा देते चलेजायं तद्यपि
८ उनके लिये दोसौ चरन्नी की रोटी बस नहोगी। उस के
शिष्यन में से ऐक ने जो शमऊन पतरस का भाई अंद्र्यास
९ था उसको कहा। कि यहां ऐक छोकरा है जिसके पास
जव की पांच रोटिअन और दो मछलिअन हैं परंतु ये
१० इतने लोगन में क्या हैं। ईसा ने कहा कि लोगन को
बैठाओ अब उस स्थान में बहुत घास थी सो वे लोग
११ बैठगये जो गिनती में पांच सहस्र के प्रमाण थे। और ईसा
ने रोटिअन को लिया और स्तुति करके शिष्यन को दिया
और शिष्यन ने उन्हन को जो बैठे थे बांटी और उसीरीति
१२ से मछली के टुकड़े भी जितना वे चाहतेथे। जब वे
संतुष्ट हुऐ उसने अपने शिष्यन को कहा कि चूरचार जो
१३ बचरहे हैं ऐकट्ठे करो कि कुछ नष्ट नहोवे। सो उन्हन
ने ऐकट्ठे किये और जव की पांच रोटिअन के चूरचार से
जो उन जेवनहारिअन से बचरहेथे बारह टोकरियां भरीं।
१४ तब उन लोगन ने यह आश्चर्य जो ईसा ने दिखाया देखके
कहा कि सचमुच यह वही आगमज्ञानी है जो जगत में
१५ आवनिहार था। और ईसा ने जाना कि वे चाहतेहैं

कि आवें और उसे बरबस पकड़के राजा करें आप अकेला
१६ पहाड़ को फेर गया। और जब सांझ ऊई उसके शिष्य
१७ समुद्र पर गये। और नाव पर चढ़के समुद्र के पार कफ़रनाहूम
को चले उस समय अंधियार होचलाथा और ईसा उनके
१८ पास नआयाथा। और बड़ी आंधी के बहने के कारण से
१९ समुद्र उठनेलगा। जब वे पचीस अथवा तीस नल के खेउके
उन्हन ने ईसा को समुद्र पर चलते और नाव के समीप
२० आवते देखा और डरगये। तब ईसा ने उन्हें कहा कि मैं
२१ हों भय मतकरो। फेर उन्हन ने आनंद होके उसको नाव
पर लेलीया और तुरंत नाव तीर पर जिधर वे जातेथे
२२ जापऊंची। दूसरे दिन जब लोगन ने जो समुद्र के पार
खड़ेथे देखा कि वहां कोई दूसरी नाव नथी केवल वुह
एक जिसपर उसके शिष्य चढेथे और कि ईसा अपने
शिष्यन के संग उस नाव पर नगयाथा परंतु केवल उसके
२३ शिष्य चलेगयेथे। तिसपरभी और नावें तीबारयास से
उस स्थान के समीप जहां उन्हन ने प्रभु की स्तुति के
२४ पीछे रोटी खाईथी आईं। सो लोगन ने देखा कि ईसा
वहां नथा नउसके शिष्य वे भी नाव पर चढे और ईसा को
२५ ढूंढते कफ़रनाऊम में आये। और उन्हन ने उसको समुद्र
के पार पाके उसको कहा कि गुरुजी आप यहां कब
२६ आये। ईसा ने उन्हें उत्तर दिया और कहा कि मैं
तुम्हन से सत्य सत्य कहताहों तुम मुझे इसलिये नहीं ढूंढते

कि तुम्हन ने आश्चर्य्य कर्म देखा परंतु इसलिये कि तुमसब
२७ रोटीअन को खाके संतुष्ट हुये । नाशमान भोजन के लिये
परिश्रम मतकरो परंतु उस भोजन का खोज करो जो अनंत
जीवन लों ठहरताहै जिसे मनुष्य का पुत्र तुम्हें देगा
क्योंकि पिता ने जो ईश्वर है उस पर छाप कियाहै ।
२८ तब उन्हन ने उसको कहा कि हम क्या करें जिसतें हम
२९ ईश्वर के कार्यकारी हों । ईसा ने उत्तर दिया और उन्हन
को कहा ईश्वर का कार्य यह है कि तुम उसपर जिसे
३० उसने भेजा बिश्वास लाओ । तब उन्हन ने उसको कहा फेर
तू कौनसा आश्चर्य दिखावताहै कि हम देखें और तुझ
३१ पर बिश्वास लावें तू क्या कार्य करताहै । हमारे पितरन
ने बन में मन्न खाया जैसा कि लिखाहै उसने उन्हें स्वर्ग से
३२ रोटी खाने को दिई । तब ईसा ने उन्हन को कहा मैं
तुम्हन से सत्य सत्य कहताहों मूसा ने तुम्हें स्वर्गी रोटी
नहीं दिई परंतु मेरा पिता तुम्हें स्वर्ग से सच्ची रोटी देताहै ।
३३ इसलिये कि ईश्वर की रोटी वुह है जो स्वर्ग से
उतरती और संसार को जीवन देतीहै उन्हन ने उसको
३४ कहा हे प्रभु हम को नित नित यह रोटी दे ।
३५ ईसा ने उन्हें कहा जीवन की रोटी मैं हों वुह जो
मेरे पास आताहै कभी भूखा नहोगा और वुह जो मेरा
३६ बिश्वासी होताहै कभी प्यासा नहोगा । परंतु मैं ने तुम्हें
कहाहै क्योंकि तुमसब मुझे देखकेभी बिश्वास नहीं

३७ लावते। समस्त जो कि पिता ने मुझे दियाहै मुझ पास आवेगा और उसको जो मेरे पास आताहै मैं किसी भांति
३८ से निकाल नदेउंगा। क्योंकि मैं स्वर्ग पर से इसलिये नहीं उतरा कि अपनी इच्छा करों परंतु उसकी इच्छा जिसने
३९ मुझे भेजाहै। और पिता जिसने मुझे भेजाहै यह चाहताहै कि मैं उसमें से जो उसने मुझे दियाहै कोई बस्तु नखोओं
४० परंतु उसे पिछले दिन में फेर उठाओं। और जिसने मुझे भेजाहै उसकी इच्छा यह है कि हरएक जो पुत्र को देखे और उसका बिश्वासी होये अनंत जीवन पावे और
४१ मैं उसे पिछले दिन में उठाओंगा। तब समस्त यहूदी उस पर कुड़कुड़ाए इसलिये कि उसने कहा वुह रोटी जो स्वर्ग
४२ से उतरी मैं हों। और उन्हन ने कहा क्या यह ईसा युसफ का पुत्र नहीं है जिसके पिता और माता को हम जानतेहैं फेर वुह कैसे कहताहै कि मैं स्वर्ग से उतराहों।
४३ तब ईसा ने उत्तर दिया और उन्हन को कहा कि आपुस
४४ में मत कुड़कुड़ाओ। कोई मनुष्य मेरे पास आ नहींसक्ता परंतु अबलों पिता जिसने मुझे भेजाहै उसको खैंचलावे
४५ और मैं उसको पिछले दिन में उठाओंगा। आगमज्ञानिअन की पुस्तकन में लिखाहै कि वे सब ईश्वर से उपदेश पातेरहेंगे इसलिये हरएक मनुष्य जिसने पिता से सुना और सीखाहै
४६ मेरे पास आताहै। यह नहीं कि किसी मनुष्य ने पिता को देखाहै परंतु वुह जो ईश्वरसे है उसने पिता को देखाहै।

४७ मैं तुम्हन से सत्यसत्य कहताहों वुह जो मेरा बिश्वासी है
४८ अनंत जीवन पावताहै। जीवन की रोटी मही हों।
४९ तुम्हारे पितरन ने बनमें मन्न खाया और मरगये।
५० जो रोटी स्वर्ग से उतरतीहै वुह है कि मनुष्य उसे खाके
५१ नमरे वुह जीवती रोटी जो स्वर्ग से उतरी मैं हों जो कोई
मनुष्य इस रोटी को खाये सदा जीवता रहेगा और वुह
रोटी जो मैं देउंगा मेरा मांस है जिसे मैं जगत के जीवन
५२ के लिये देउंगा। तब यहूदी आपुस में बिवाद करनेलगे
कि यह मनुष्य हमें अपना मांस कैसे देसक्ता है कि खायें।
५३ ईसा ने उन्हन को कहा मैं तुम्हन से सत्य सत्य कहताहों
जों तुमसब मनुष्य के पुत्र का मांस नखाओ और उसका
५४ लोहू नपीओ तुम्हन में जीवन नहोगा। जो कोई मेरा मांस
खाताहै और मेरा लोहू पीताहै अनंत जीवन पावताहै
५५ और मैं उसको पिछले दिन उठाओंगा। कि मेरा मांस ठीक
५६ भोजन है और मेरा लोहू ठीक पान है। वुह जो मेरा मांस
खाताहै और मेरा लोहू पीताहै मुझ में स्थिर होताहै और
५७ मैं उसमें। जैसा कि जीवते पिता ने मुझे भेजाहै और मैं
पितासे जीवताहों उसी भांति से वुह जो मुझे खाताहै
५८ मुझसे जीवेगा। यह है वुह रोटी जो स्वर्ग से उतरी
नजैसा तुम्हारे पितरन ने मन्न खाया और मरगये वुह जो इस
५९ रोटी को खाताहै सदा जीवता रहेगा। उसने कफरनाऊम
में उपदेश करते ऊए किसी मंडली में ये बातें कहीं।

६० तब उसके शिष्यन मेंसे बहुतन ने सुनके कहा कि यह
६१ कठीन बचन है उसे कौन सुन सक्ताहै। ईसा ने आप में
जानकर कि उसके शिष्य आपुस में उस बात पर कुड़कुड़ातेहैं
उसने उन्हन को कहा क्या यह तुम्हन को उदास
६२ करतीहै। पर जों तुम मनुष्य के पुत्र को ऊपर जाते देखोगे
६३ जहां वुह आगेथा तो क्या होगा। आत्मा है वुह जो
जिलावताहै मांस गुण नहीं करता ये बचन जो मैं तुम्हें
६४ कहताहों आत्मा हैं और जीवन हैं। परंतु तुम्हन में
कितने हैं जो बिश्वास नहीं करते कि ईसा आरंभ से
जानताथा कि वे कौन हैं जो बिश्वास नकरेंगे और कौन
६५ उसे पकड़वावेगा। फेर उसने कहा इसलिये मैंने तुम्हें कहा
कि केवल उसको छोड़ जिसे मेरे पिता से यही दियागयाहै
६६ कोई मनुष्य मेरे पास नहीं आसक्ता। उसी घड़ी उसके
शिष्यन मेंसे बहुतेरे उलटे फिरगये और फेर उसके संग
६७ नचले। तब ईसा ने उन बारह को कहा क्या तुम भी
६८ चाहतेहो कि चलेजाओ। शमऊन पतरस ने उसको उत्तर
दिया कि हे प्रभु हम किसके पास जायेंगे अनंत जीवन
६९ के बचन तो तेरे पास हैं। और हम तो बिश्वास लायेहैं
और निश्चय जानतेहैं कि तू मसीह है जीवते ईश्वर का
७० पुत्र। ईसा ने उन्हन को कहा क्या मैंने तुम बारहन को
७१ नहीं चुना और तुम्हन में एक शयतान है। उसने
शमऊन के पुत्र यहूदा अस्करयूती की अवस्था में कहा

क्योंकि वुह् बारह् में से एक था जो चाह्ताथा कि उसको पकड़वादे।

७ सातवां पर्ब्ब

१ उन सबन के पीछे ईसा जलील में जहां तहां फिरकिया और इसलिये उसने नचाहा कि यहूदियः में फिरे क्योंकि
२ यहूदी उसे मारडालने की चिंता में थे। और यहूदिअन के
३ तंबुअन का पर्ब्ब निकट हुआ। तब उसके भाईअन ने उसको कहा यहां से चलके यहूदियः में जा कि उन कार्यन
४ को जो तू करताहै तेरे शिष्य भी देखें। क्योंकि ऐसा कोई नहीं जो कुछ कार्य छिपके करे और चाहे कि अपही प्रगट हो जो तू ये कार्य करताहै तो अपने को जगत को
५ दिखा। यह् इसलिये था कि उसके भाई भी उसके
६ बिश्वासी नहुएथे। तब ईसा ने उन्हें कहा कि मेरा समय अभी नहीं आया परंतु तुम्हारा समय नित है।
७ जगत तुम्हारा बैरी नहीं होसक्ता परंतु मेरा बैरीहै क्योंकि मैं उसपर साक्षी देताहों कि उसके कर्म बुरे हैं।
८ तुम उस पर्ब्ब में जाओ मैं अभी उस पर्ब्ब में नहीं जाता
९ कि मेरा समय अभी पूरा नहीं हुआ। वुह ये बातें कहिके
१० जलील में रहा। परंतु अपने भाइअन के जाने के पीछे वुह भी उस पर्ब्ब में गया प्रगट से नहीं परंतु चुपके से।
११ तब यहूदी पर्ब्ब में उसे ढूंढने और कहनेलगे कि वुह

१२ कहां है। और लोगन में उसके बिषय में बड़ा धूम मचाथा कितने कहतेथे कि वुह उत्तम मनुष्य है और कितने कहतेथे कि नहीं परंतु वुह लोगन को छल
१३ देताहै। तिसपरभी यहूदिअन के उरसे कोई मनुष्य उसकी
१४ अवस्था में खोलके नहीं कहताथा। और पर्ब्ब के मध्य
१५ में ईसा ने मंदिर में जाके उपदेश किया। तब यहूदी आस्चर्य से बोले कि यह मनुष्य बिना पढे पुस्तकन की
१६ बिद्या किस भांति से जानताहै। ईसा ने उन्हन को उत्तर देके कहा मेरा उपदेश मेरा नहीं परंतु उसका है जिसने
१७ मुझे भेजा। जो मनुष्य उसकी इच्छा पर चलाचाहे इस उपदेश को समुझेगा कि वुह ईश्वर से है अथवा कि मैं
१८ आपसे देताहों। वुह जो अपने पास से कुछ कहताहै अपनी बड़ाई चाहताहै परंतु वुह जो उसकी बड़ाई चाहताहै जिसने उसको भेजा वही सच्चाहै और उस में
१९ कुछ कपट नहीं। क्या मूसाने तुम्हें शास्त्र नहीं सौंपा परंतु कोई तुम्हन मेंसे शास्त्र पर नहीं चलता तुम मुझे मारडालने
२० की चिंता क्यों करतेहो। लोगन ने उत्तर दिया और कहा कि तेरे संग एक देव है कौन तुझे मारडालने की चिंता
२१ करताहै। ईसा ने उत्तर दिया और उन्हन को कहा मैंने
२२ एक कार्य किया और तुमसब आस्चर्य करतेहो। मूसा ने तुम्हें खतनः की आज्ञा दिईहै यद्यपि कि वुह मूसा से नहीं परंतु पितरन से है तुमसब बिस्राम के दिन में

२३ मनुष्य का खतनः करतेहो। जब कि बिश्राम के दिन मनुष्य का खतनः कियाजाताहै जिस में मूसा का शास्त्र भंग नहो तो क्या तुम इसलिये मुझ पर क्रोधितहो कि मैंने बिश्राम के दिन में ऐक मनुष्य को निधार चंगा किया।
२४ दृष्टि के समान बिचार मत करो परंतु ठीक बिचार करो।
२५ तब कितने यिरोशलीमिअन ने कहा क्या यह वुह नहीं
२६ जिसके पीछे वे पड़ेहैं कि मारडालें। परंतु देखो वुह तो निर्भय से बातें करताहै और वे उसको कुछ नहीं कहते क्या प्रधानन ने भी निश्चय किया कि ठीक यही मसीह है।
२७ परंतु हम जानतेहैं कि यह कहां से है पर जब मसीह
२८ आवेगा कोई नजानेगा कि वुह कहां से है। तब ईसा ने मंदिर में उपदेश करते ऊऐ यों पुकारा कि तुमसब मुझे पहिचानते और जानतेहो कि मैं कहांसे हों और मैं आपसे नहीं आयाहों परंतु ठीक मेरा ऐक भेजनिहार है
२९ जिसको तुमसब नहीं जानते। परंतु मैं उसको चीन्हताहों इसलिये कि मैं उसके ओर से हों और उसने मुझे भेजाहै।
३० तब उन्हन ने चाहा कि उसे पकड़लें पर किसी मनुष्य ने उसपर हाथ नडाला क्योंकि उसका समय अबलें नपऊंचाथा।
३१ और बऊतेरे उन लोगन में से उसपर बिश्वास लाये और बोले क्या जब मसीह आवेगा वुह इन्हन से जो इसने
३२ कियेहैं अधिक आश्चर्य दिखावेगा। जब फरीसिअन ने सुना कि लोगन में उनके बिषय में ऐसा धूम मचाहाथा

फरीसिअन और प्रधान याजकान ने प्यादन को भेजा कि
३३ उसे पकड़लें। तब ईसा ने उन्हें कहा अब थोड़ी बेरलों
मैं तुम्हारे संगहों और जिस ने मुझे भेजा उसके पास
३४ जाताहों। तुमसब मुझे ढूंढोगे और नपाओगे और जहां
३५ मैं हों तुमसब आ नसकोगे। उस समय यहूदिअन ने
आपुस में कहा कि वुह कहां जायगा कि हम उसे
नपावेंगे क्या वुह उन लोगन के पास जो यूनानिअन में
बिथरेहुए हैं जायगा और यूनानिअन को उपदेश करेगा।
३६ यह क्या बात है जो उसने कही कि तुमसब मुझे ढूंढोगे
३७ और नपाओगे और जहां मैं हों तुम आ नसकोगे। फेर
पर्ब्ब के दिनन में से पिछले दिन जो बड़ा दिन है ईसा
खड़ा हुआ और यह कहिके पुकारा जो कोई प्यासाहो तो
३८ मुझपास आवे और पीवे। वुह जो मुझपर बिश्वास रखताहै
जैसा धर्म ग्रंथ में लिखाहै उसके घटसे अमृत जलकी
३९ नदीं बहेंगी। उसने यह आत्मा की कही जीसे उसके
बिश्वास करनिहारे पावने पर थे क्योंकि धर्मात्मा अबलों
नहीं दियागया इसलिये कि ईसा अबलों अपने ऐश्वर्य्य लों
४० नपहुंचाथा। तब उन लोगन मेंसे बहुतेरन ने यह सुनकर
४१ कहा ठीक यह वुह आगमज्ञानी है। औरन ने कहा यह
मसीह है परंतु कितने बोले क्या मसीह जलील से
४२ निकलेगा। क्या ग्रंथन में नहीं लिखाहै कि मसीह दाऊद
के बंश से आताहै और बैतुल्लहम की बस्ती से जहां

४३ दाऊद था। सो लोगन में उसके लिये बिभाग हुआ।
४४ कितनन ने चाहाथा कि उसे पकड़लें परंतु किसी ने उसपर
४५ हाथ नडाला। तब प्यादे प्रधान याजकन और फरीसिअन
के पास आये और उन्हन ने उनको कहा तुम उसे क्यों
४६ नलाये। प्यादन ने उत्तर दिया कभी कोई मनुष्य ने इस
४७ मनुष्य के समान बचन नकहा। तब फरीसिअन ने उन्हें
४८ उत्तर दिया क्या तुमसब भी ठगेगये। क्या कोई प्रधान
४९ अथवा फरीसिअन में से उसपर बिश्वास लाया। परंतु ये
५० लोग जो शास्त्र को नहीं जानते स्रापित हैं। नीकूदिमूस
ने जो रात को ईसा के समीप आयाथा और एक उनमें
५१ से था उन्हन को कहा। क्या हमारा शास्त्र किसी पर उससे
पहिले कि उसकी सुनें और जाने कि वुह क्या करताहै
५२ आज्ञा करताहै। उन्हन ने उत्तर देके उसको कहा क्या
तू भी जलील का है ढूंढ और देख कि जलील से कोई
५३ आगमज्ञानी नहीं निकलता। फेर हरएक अपने अपने
घर को गया।

८ आठवां पर्ब्ब

१ तब ईसा जलपाई के पहाड़ को गया। (२) और
बिहान को तड़के वुह मंदिर में फेर आया और सब लोग
उसके समीप आये और उसने बैठके उन्हन को उपदेश
३ किया। तब अध्यापकन और फरीसिअन एक स्त्री को

जो ब्यभिचार में पकड़ीगईथी उसके पास लाये और उसे
४ मध्य में खड़ी करके। उसको बोले कि हे गुरु यह स्त्री
५ ब्यभिचार करतेही पकड़ीगई। अब मूसा ने तो शास्त्र में
हमन को आज्ञा किईहै कि ऐसी चाहिऐ कि पत्थरन से
६ मारीजाय परंतु तू क्या कहताहै। उन्हन ने उसकी
परीक्षा के लिये यह कहा कि वे उसपर दोष का कारण
पावें परंतु ईसा ने नीचे झुकके अंगुली से भूमि पर लिखा।
७ सो जब वे उसका प्रश्न करतेगयें उसने सीधे होकर उन्हें
कहा वुह जो तुम में निष्पाप है पहिले वही उसे पत्थर
८ मारे। और उसने फेर झुकके भूमि पर लिखा। (९) और
जिन्हन ने सुना मनहींमन में दोषी होके बृद्ध से लेके
पिछले लों ऐक ऐक करके चले गये और ईसा अकेला
१० रहिगया और वुह स्त्री मध्य में खड़ी रही। तब ईसा
ने सीधे होकर स्त्री को छोड़ किसी को नदेखा उसने उसे
कहा हे स्त्री तेरे दोष देनिहारे कहां हैं क्या किसी ने
११ तुझ पर आज्ञा नकिई। उसने कहा हे प्रभु किसी ने
नहीं ईसा ने उसको कहा मैं भी तुझ पर आज्ञा नहीं
१२ करता जा और फेर पाप मत कर। तब ईसा ने उन्हन को
कहा मैं जगत का उंजियाला हों वुह जो मेरे पीछे
चलताहै अंधियारे में नचलेगा परंतु जीवन का उंजियाला
१३ पावेगा। तब फरीसिअन ने उसको कहा तू अपने बिषय
१४ में साक्षी देताहै तेरी साक्षी ठीक नहीं। ईसा ने उत्तर

देके उन्हन को कहा यद्यपि मैं अपने बिषय में साक्षी देताहों मेरी साक्षी ठीक है क्योंकि मैं जानताहों मैं कहां से आयाहों और मैं कहां जाताहों परंतु तुम नहीं जानते
१५ मैं कहां से आताहों और कहां जाताहों। तुमसब शरीर की रीति पर बिचार करतेहो मैं किसी मनुष्य पर
१६ बिचार नहीं करता। और यद्यपि मैं बिचार करों मेरा बिचार ठीक है क्योंकि मैं अकेला नहीं हों परंतु मैं और
१७ पिता जिसने मुझे भेजा। तुम्हारे शास्त्र में भी यह लिखाहै
१८ कि दो मनुष्य की साक्षी ठीक है। एक तो मैं हों जो अपने बिषय में साक्षी देताहों और एक पिता जिसने मुझे
१९ भेजाहै मेरे लिये साक्षी देताहै। तब उन्हन ने उसको कहा तेरा पिता कहां है ईसा ने उत्तर दिया तुमसब मुझे नहीं जानते और नमेरे पिता को जो तुमसब मुझे जानते तो
२० मेरे पिता को भी जानते। ईसा ने मंदिर में उपदेश देतेऊए भंडार में ये बातें कहीं और किसी ने उसपर हाथ नडाला
२१ कि उसका समय अबलों नहीं आयाथा। ईसा ने फेर उन्हन को कहा मैं तो जाताहों और तुमसब मुझे ढूंढोगे और अपने पाप में मरोगे जहां मैं जाताहों तुमसब वहां
२२ नहीं आसक्ते। तब यहूदिअन ने कहा क्या वुह अपने को मारडालेगा जो कहताहै जहां मैं जाताहों तुमसब
२३ नहीं आसक्ते। फेर उसने उन्हन को कहा तुमसब तले से हो मैं ऊपर से हों तुम इस जगत के हो मैं इस जगत

२४ का नहीं। इसलिये मैंने तुम्हन को कहा कि तुमसब अपने पापन में मरोगे क्योंकि जो तुमसब बिश्वास नहीं करते
२५ कि मैं हों तुमसब अपने पापन में मरोगे। तब उन्हन ने उसको कहा तू कौन है ईसा ने उन्हन को कहा कि वही
२६ जो मैंने तुम्हें आरंभ से कहा। मुझ पास बजत बातें हैं कि तुम्हारी अवस्था में कहों और बिचार करों परंतु जिसने मुझे भेजाहै सत्य है सो मैं जगत को वे बातें कहताहों
२७ जो मैंने उससे सुनीहैं। वे नसमझे कि वुह उन्हन को
२८ पिता के बिषय में कहताथा। फेर ईसा ने उन्हन को कहा जब तुमसब मनुष्य के पुत्र को ऊपर उठाओगे तब तुमसब जानोगे कि मैं हों और मैं आप से कुछ नहीं करता परंतु जैसा कि मेरे पिता ने मुझे आज्ञा किई मैं वे
२९ बातें कहताहों। और जिसने मुझे भेजाहै मेरे संग है पिता ने मुझे अकेला नहीं छोड़ा क्योंकि मैं सदा आप से
३० कार्य्य करताहों जो उसको प्रसन्न पड़तेहैं। जब वुह ये
३१ बातें कहताथा बजतेरे उसपर बिश्वास लाये। तब ईसा ने उन यहूदिअन को जो उसपर बिश्वास लायेथे कहा जो तुमसब मेरे बचन पर स्थिर रहोगे तो तुमसब मेरे शिष्य
३२ ठीक होओगे। और तुम सत्य को जानोगे और
३३ सत्य तुम्हन को निर्बंध करेगा। उन्हन ने उसको उत्तर दिया कि हमसब इबराहीम के बंश हैं और कधीं किसी के बंधन में नथे तू कैसे कहताहै कि तुमसब

३४ निर्बंध कियेजाओगे। ईसा ने उन्हन को उत्तर दिया मैं तुम्हन से सत्य सत्य कहताहों जो कोई पाप करताहै वुह
३५ पाप का दास है। और दास सदा घर में नहीं रहता
३६ परंतु पुत्र सदा रहताहै। इसलिये जों पुत्र तुम्हन को
३७ निर्बंध करेगा तुमसब ठीक निर्बंध होओगे। मैं जानताहों कि तुमसब इबराहीम के संतान हो परंतु तुमसब मुझे मारडालने की इच्छा रखतेहो क्योंकि मेरा बचन तुम्हन में
३८ नहींहै। मैंने जो अपने पिता के संग देखाहै वही करताहों और तुमसब वुह जो अपने पिता के संग देखेहो
३९ करतेहो। उन्हन ने उत्तर दिया और उसको कहा हमारा पिता इबराहीम है ईसा ने उन्हन को कहा जों तुम इबराहीम के संतान होते तो तुम इबराहीम के कार्य
४० करते। परंतु तुमसब मुझे मारडालने चाहतेहो और मैं एक मनुष्य हों जिसने तुम्हें सत्य कहा जो मैंने ईश्वर से
४१ सुना इबराहीम ने यह नहीं किया। तुमसब अपने पिता के कार्य करतेहो तब उन्हन ने उसको कहा हमलोग ब्यभिचार से उत्पन्न नहीं ऊए हमारा पिता एक है ईश्वर।
४२ ईसा ने उन्हन को कहा जों ईश्वर तुम्हारा पिता होता तो तुम मुझे प्रेम करते क्योंकि मैं ईश्वर से निकला और आयाहों
४३ मैं आप से नहीं आया परंतु उसने मुझे भेजा। तुमसब मेरी बोली क्यों नहीं समुझते कि तुम मेरे बचन नहीं
४४ सुनसक्ते। तुमसब अपने पिता शैतान से हो और

कहतेहो कि अपने पिता की इच्छा के समान करो वुह तो आरंभ से बधिक था और सत्य में स्थिर नरहा क्योंकि उसमें सच्चाई नहीं जब वुह झूठ कहताहै वुह अपनेही का बोलताहै क्योंकि वुह झूठा है और झूठ का पिता है।
४५ पर इसकारण कि मैं सत्य कहताहों तुमसब मेरी प्रतीति
४६ नहीं करते। तुम्हन में कौन मुझ पर पाप ठहराताहै परंतु जो मैं सत्य कहताहों तुम मेरी प्रतीति क्यों नहीं
४७ करते। वुह जो ईश्वर का है ईश्वर की बातें सुनताहै तुमसब इसलिये नहीं सुनतेहो कि तुमसब ईश्वर के
४८ नहींहो। तब यहूदिअन ने उत्तर दिया और उसको कहा क्या हम अच्छा नहीं कहते कि तू सामरी है और
४९ तेरे संग देव है। ईसा ने उत्तर दिया कि मेरे संग देव नहीं परंतु मैं अपने पिता का आदर करताहों और तुमसब
५० मेरा अनादर करतेहो। और मैं अपना महिमा नहीं
५१ ढूंढता एक है जो ढूंढताहै और बिचार करताहै। और मैं तुम्हन से सत्य सत्य कहताहों जो कोई मनुष्य मेरा बचन
५२ धारण करे मृत्यु को किसी भांति से कभी नदेखेगा। तब यहूदिअन ने उसको कहा अब हमने जाना कि तेरे संग देव है इबराहीम और आगमज्ञानिअन मरगये और तू कहताहै जो कोई मेरा बचन धारण करे वुह कभी मृत्यु का
५३ स्वाद नचीखेगा। क्या तू हमारे पिता इबराहीम से जो मरगया बड़ा है सब आगमज्ञानिअन मरगये तू अपने को

भी फेर उससे पूछा कि तू ने किस रीति से अपनी दृष्टि पाई उसने उन्हन को कहा कि उसने मेरी आंखन पर गीली
१६ मिट्टी लगाई और मैं ने नहाया और देखताहों। तब कितनन ने फ़रीसिअन मेंसे कहा कि यह मनुष्य ईश्वर के ओर से नहीं क्योंकि वुह बिश्राम के दिन की प्रतिष्टा नहीं करता औरन ने कहा कि पापी मनुष्य ऐसे आश्चर्य
१७ कैसे करसक्तेहैं और उन्हन में बिभाग था। उन्हन ने उस अंधे मनुष्य को फेर कहा तू उसकी अवस्था में जिसने तेरी आंखें खोलीं क्या कहताहै उसने कहा वुह आगमज्ञानी
१८ है। परंतु यहूदिअ ने इस बात की प्रतीति नकिई कि वुह अंधाथा और अपनी दृष्टि पाई जबलों कि उन्हन ने उस मनुष्य के माता पिता को जिसने दृष्टि पाईथी बुलाया।
१९ और उन्हन से पूछा कि क्या यह तुम्हारा पुत्र है जिसे तुम कहतेहो अंधा उत्पन्न हुआथा फेर वुह अब क्योंकर
२० देखताहै। उसके माता पिता ने उन्हन को उत्तर दिया और कहा हम जानतेहैं कि यह हमारा पुत्र है और
२१ यह कि वुह अंधा उत्पन्न हुआथा। परंतु वुह अब किस रीति से देखताहै हम नहीं जानते अथवा उसकी आंखें किसने खोलीं हम नहीं जानते वुह तरुण है उसे
२२ पूछलो वुह अपनी आप कहेगा। उसके माता पिता ने यह कहा इसलिये कि वे यहूदिअन से डरतेथे क्योंकि यहूदिअन ने ठहराया था कि जो कोई अंगीकार करे कि

२३ तुह मसीह है मंडली से बाहर निकालाजाय। सो उसके माता पिता ने कहा कि बुह तरुण है उसी से पूछो।
२४ तब उन्हन ने उस मनुष्य को जो अंधा था फेर बुलाकर कहा कि ईश्वर की स्तुति कर हम जानतेहैं कि यह
२५ मनुष्य पापी है। उसने उत्तर देके कहा कि जो बुह पापी है मैं नहीं जानता एक बात मैं जानताहों कि मैं
२६ आगे अंधा था अब देखताहों। तब उन्हन ने उससे फेर पूछा कि उसने तुझे क्या किया उसने किस रीति से तेरी
२७ आंखें खोलीं। उसने उन्हन को उत्तर दिया कि मैं तो तुम्हन से अभी कहिचुका और तुम्हन ने नसुना क्या तुमसब फेर सुना चाहतेहो क्या तुम्हन भी चाहतेहो कि
२८ उसके शिष्य होओ। तब वे उसे दुर्बचन कहिके बोले
२९ कि तू उसका शिष्य है हम मूसा के शिष्य हैं। हम जानतेहैं कि ईश्वर ने मूसा से बार्त्ता किई पर हम नहीं
३० जानते कि यह कहां का है। उस मनुष्य ने उत्तर दिया और उन्हन को कहा यह आश्चर्य है कि तुमसब नहीं जानते बुह कहां का है और उसने मेरी आखें खोलीं हैं।
३१ हम तो जानतेहैं कि ईश्वर पापिअन की नहीं सुनता परंतु जोकोई ईश्वर का भक्त हो और उसकी इच्छा पर चलताहो
३२ बुह उसकी सुनताहै। जगत के आरंभ से कभी सुन्ने में नआयाथा कि किसीने एक की आंखें खोलीं हों जो अंधा
३३ उत्पन्न ज़आ। जो यह मनुष्य ईश्वर के ओर से नहोता

३४ तो कुछ नकरसक्ता। उन्हन ने उत्तर देके उसको कहा कि तू तो पाप में संपूर्ण उत्पन्न हुआ और तू हमन को
३५ सिखाताहै तब उन्हन ने उसे बाहर निकालदिया। ईसा ने सुना कि उन्हन ने उसे बाहर निकालदिया तब उसको पाके कहा क्या तू ईश्वर के पुत्र पर बिश्वास लाताहै।
३६ उसने उत्तर दिया और कहा हे प्रभु वुह कौन है कि
३७ मैं उसपर बिश्वास लाओं। ईसा ने उसको कहा तूने उसे देखाहै और वुह जो तेरे संग बोलताहै वही है।
३८ उसने कहा हे प्रभु मैं बिश्वास लाताहों और उसने
३९ उसको दंडवत किया। तब ईसा ने कहा कि मैं न्याय के लिये इस जगत में आयाहों कि वे जो नहीं देखतेहैं
४० देखें और वे जो देखतेहैं अंधे होवें। फरीसिअन ने जो उसके संग थे ये बातें सुनके उसको कहा क्या हमसब भी
४१ अंधेहैं। ईसा ने उन्हन को कहा जो तुमसब अंधे होते तो पापी नहोते परंतु तुम्हन तो कहतेहो कि हम देखतेहैं इसलिये तुम्हारा पाप धरहै।

१० दसवां पर्ब्ब

१ मैं तुम्हन से सत्य सत्य कहताहों जो कि द्वारसे भेड़शाला में प्रवेश नहीं करता परंतु दूसरे ओर से ऊपर चढ़जाताहै
२ चोर और बटमार है। परंतु वुह जो द्वार से प्रवेश करताहै
३ भेड़न का चरवाहा है। द्वारपाल उसके लिये खोलताहै औ

भेड़ें उसका शब्द सुनती हैं और वुह अपनी भेड़न को
४ नाम लेके बुलाताहै और उन्हें बाहर लेजाताहै। और
जब वुह अपनी भेड़न को बाहर निकालताहै वुह उनके
आगे आगे जाताहै और भेड़ें उसके पीछे पीछे चलती हैं
५ क्योंकि वे उसके शब्द पहिचानती हैं। और वे अनजान के
पीछे नहीं जातीं परंतु उससे भागती हैं इसलिये कि वे
६ अनजान के शब्द नहीं पहिचानतीं। ईसा ने यह दृष्टांत
उन्हें कहा परंतु उन्हन ने नहीं समुझा कि वुह उन्हें
७ क्या बातें कहताथा तब ईसा ने फेर उन्हें कहा मैं तुम्हन
८ से सत्य सत्य कहताहों भेड़न का द्वार मैं हों। सब जितने
मुझसे आगे आये चोर और बटमार हैं और भेड़न ने
९ उनकी नसुनी। वुह द्वार मैं हों जो कोई मुझसे प्रवेश
हो वुह उद्धार पावेगा और भीतर बाहर आये जायेगा
१० और चराई पावेगा। चोर नहीं आता परंतु केवल चोरी
करने और मारडालने और नाश करने को मैं आयाहों
कि वे जीवन पावें और कि वे अधिक बढ़ती पावें।
११ अच्छा चरवाहा मैं हों अच्छा चरवाहा भेड़न के लिये
१२ अपना प्राण देताहै। परंतु जो बनिहार है और चरवाहा
नहीं जिसकी अपनी भेड़ें नहीं हैं झुंड़ार को आते देखताहै
और भेड़न को छोड़के भागताहै और झुंड़ार उन्हें पकड़ताहै
१३ और भेड़न को छिन्न भिन्न करताहै। बनिहार भागताहै
इसलिये कि वुह बनिहार है और भेड़न के लिये चिंता

१४ नहीं करता। अच्छा चरवाहा मैं हों और अपनी को
१५ पहचानताहों और मेरी मुझे पहिचानती हैं। जिस रीति
से पिता मुझे जानताहै उसी रीति से मैं पिता को जानताहों
१६ और मैं भेड़न के लिये अपना प्राण देताहों। मेरी
और भी भेड़ें हैं जो इस झुंड की नहीं अवश्य है कि मैं
उन्हें भी लाओं और वे मेरा शब्द सुनेंगी और एक झुंड
१७ और एक चरवाहा होगा। पिता मुझे इसलिये प्यार करताहै
१८ कि मैं अपना प्राण देताहों कि मैं उसे फेरलेउं। कोई
उसको मुससे नहीं लेता परंतु मैं उसे आपसे देताहों मुझ
में सामर्थ्य है कि उसे देउं और मुझ में सामर्थ्य है कि
उसे फेरलेउं यही आज्ञा मैं ने अपने पिता से पाई।
१९ तब यहूदिअन में इन बातन के कारण फेर बिभाग हुआ।
२० और उन्हन में से बहुतन ने कहा कि उसके संग देव है
२१ और बौड़हा है तुम उसकी क्यों सुनतेहो। औरन ने
कहा कि देवग्रस्त की ये बातें नहीं हैं क्या देव अंधन की
२२ आंखें खोलसक्ताहै। और यिरोशलीम में संस्कार पर्व्व हुआ
२३ और जाड़े का समय था। तब ईसा मंदिर के बीच सुलेमान
२४ के ओसारे में फिरताथा। उस समय यहूदिअन ने उसके
आस पास आके उसको कहा कि तू कबलों हमारे मनको
अधर में रखेगा जो तू मसीह है हमको खोलके कहिदे।
२५ ईसा ने उन्हें उत्तर दिया मैं ने तो तुम्हें कहा और तुम्हन
ने बिश्वास नकिया जो कार्य मैं अपने पिता के नाम से

२६ करताहों वे मेरी साक्षी देतेहैं । परंतु तुमसब बिश्वास नहीं लावते क्योंकि जैसा मैं ने तुम्हें कहा तुमसब मेरी भेड़न
२७ में से नहीं । मेरी भेड़ें मेरा शब्द सुनतीहैं और मैं उन्हन
२८ को जानताहों और वे मेरे पीछे चलतीहैं । और मैं उन्हें अनंत जीवन देताहों और वे कभी नाश नहोंगी और
२९ कोई उन्हें मेरे हाथन से छीन नलेगा । मेरा पिता जिस ने उन्हें मुझे दियाहै सब से बड़ाहै और कोई सामर्थी नहीं
३० कि मेरे पिता के हाथन से छीन लेय । मैं और पिता
३१ एक हैं । तब यहूदिअन ने फेर पत्थर उठाये कि उसपर
३२ पथरवाह करें । ईसा ने उन्हें उत्तर दिया कि मैं ने अपने पिता के अनेक अच्छे कार्य तुम्हें दिखाएहैं उनमें से कौन से कार्य के लिये तुमसब मुझपर पथरवाह करतेहो ।
३३ यहूदिअन ने उसे उत्तर देके कहा कि हम तुझपर अच्छे कार्य के लिये नहीं पथरवाह करते परंतु पाषंडता के लिये और इसलिये कि तू मनुष्य होके अपने को ईश्वर
३४ बनाताहै । ईसा ने उन्हन को उत्तर दिया क्या तुम्हारे शास्त्र में यह नहीं लिखाहै कि मैं ने कहा तुमसब
३५ ईश्वर हो । उसने तो उन्हें जिनके पास ईश्वर का बचन आया ईश्वर कहा और यह अनहोनाहै कि धर्मग्रंथ
३६ खंडित हो । तुमसब उसको जिसे ईश्वर ने पवित्र किया और जगत में भेजा कहतेहो कि तू पाषंड बकताहै क्योंकि
३७ मैं ने कहा मैं ईश्वर का पुत्र हों । जो मैं अपने पिता के

३८ कार्य नहीं करता तो मेरी प्रतीति मत करो। परंतु जो मैं करताहों यद्यपि तुम मेरे बिश्वासी नहो कार्यन के बिश्वासी हो कि तुम जानो और निश्चय करो कि पिता मुझ में
३९ और मैं उसमें हों। तब उन्हन ने फेर चाहा कि उसे
४० पकड़ लें परंतु वुह उन्हन के हाथन से निकलगया। और अर्दन के उसपार वही स्थान में जहां यहिया पहिले
४१ स्नान देताथा फेर गया और वहां रहा। बहुतेरन ने उसके समीप आके कहा कि यहिया ने कोई आश्चर्य नदिखाया परंतु सब बातें जो यहिया ने उसके बिषय में
४२ कहीं सत्य हैं। और वहां बहुतसे उसके बिश्वासी हुए।

११ ग्यारहवां पर्ब्ब

१ अब लाज़र नाम एक रोगी था जो मरियम और उसकी
२ बहिन मरथा के गांव बैतऐना का बासी था। वही मरियम जिसने प्रभु को सुगंध तेल से मला और अपने बालन से उसके चरणन को पोंछाथा उसी का भाई लाज़र
३ रोगी था। इसलिये उसकी बहिनन ने उसे कहवाभेजा
४ कि हे प्रभु देख जिसे तू प्यार करताहै रोगी है। ईसा ने सुनके कहा यह मृत्यु का रोग नहीं परंतु ईश्वर के महिमा के लिये है कि उस कारण से ईश्वर के पुत्र की
५ स्तुति किईजाय। अब ईसा मरथा और उसकी बहिन

६ और लाज़र को प्यार करताथा। सो जब उसने सुना कि वुह रोगी है उसने दो दिन और भी उस स्थान में जहां
७ वुह था बास किया। फेर उसके पीछे अपने शिष्यन से
८ कहा कि आओ हम फेर यहूदियः में जायें। शिष्यन ने उसको कहा हे गुरु अभी तो यहूदिअन ने चाहाथा कि
९ तुझपर पथरवाह करें और तू वहां फेर जाताहै। ईसा ने उत्तर दिया कि क्या दिन में बारह घड़ी नहीं हैं जो कोई मनुष्य दिन को चले वुह ठोकर नहीं खाता क्योंकि
१० वुह इस जगत का उंजियाला देखताहै। परंतु जो कोई मनुष्य रात को चले वुह ठोकर खाताहै क्योंकि उसमें
११ उंजियाला नहीं। उसने ये बातें कहीं और फेर उन्हन से कहा कि हमारा मित्र लाज़र नींद में है मैं
१२ जाताहों कि उसे जगाओं। तब उसके शिष्यन ने कहा
१३ हे प्रभु जो वुह नींद में है तो चंगा होजायगा। ईसा ने तो उसके मृत्यु की कही परंतु उन्हन ने समुझा कि उसने नींद के
१४ चैन की कही। तब ईसा ने उन्हें खोलके कहा कि लाज़र
१५ मरगया। और मैं तुम्हारे लिये अपने वहां नहोने से आनंद हों क्योंकि तुम अब बिस्वास लाओगे आओ उसके
१६ पास जायें। तब थूमाने जो दुदमस कहावताहै अपने गुरुभाइअन से कहा आओ हमसब भी जायें कि उसके
१७ संग मरें। और ईसा ने आके पाया कि चार दिन हुए
१८ उसे समाधि में गाड़चुके। और बैतऐना यिरोशलीम से

१९ पंदरह नलके अंटकल पर था। और बहुत से यहूदिअन मरथा और मरियम के पास आयेथे कि उनके
२० भाई के कारण उन्हें शांति दें। सो मरथा ने जब सुना कि ईसा आताहै उसे आगे लेने को गई परंतु मरियम घर में
२१ बैठी रही। तब मरथा ने ईसा को कहा हे प्रभु जो तू
२२ यहां होता तो मेरा भाई नमरता। परंतु मैं जानतीहों कि
२३ अब भी जो कुछ तू ईश्वर से मगे ईश्वर तुझे देगा। ईसा
२४ ने उसे कहा तेरा भाई फेर उठेगा। मरथा ने उसको कहा मैं जानतीहों कि वुह पुनरुत्थान में पिछले दिन फेर उठेगा।
२५ ईसा ने उसे कहा पुनरुत्थान और जीवन मैं हों जो मुझ पर
२६ बिश्वास लावे यद्यपि वुह मरजाय तद्यपि जीएगा। और जो कोई जीताहै और मुझपर बिश्वास लावताहै कभी
२७ नमरेगा क्या तू यह निश्चय जानतीहै। उसने उसको कहा हे प्रभु मुझे निश्चय है कि तू मसीह ईश्वर का
२८ पुत्र है जो चाहिये था कि जगत में आवे। वुह यह कहिके चलीगई और चुपकेसे अपनी बहिन मरियम को बुलाके बोली कि गुरु आयाहै और तुझे बुलाताहै।
२९ जोहीं उसने सुना वुह तुरंत उठी और उस पास आई।
३० अबलों ईसा बस्ती में नपहुंचाथा परंतु उसी स्थान में था
३१ जहां मरथा उसे मिलीथी। तब यहूदिअन जो उसके संग घर में थे और उसे शांति देतेथे जब उन्हन ने मरियम को देखा कि वुह झपसे उठी और बाहर गई यह कहिके

उसके पीछे हो लिये कि वुह समाधि पर रोनेको जाती है।
३२ और जब मरियम वहां जहां ईसा था आई और उसे देखा
वुह उसके चरण पर गिरके बोली हे प्रभु जो तू यहां
३३ होता तो मेरा भाई नमरता। जब ईसा ने उसे देखा कि
रोती है और यहूदिअन को भी जो उसके संग आयेथे कि
३४ रोतेहैं मन में कुढ़के हाय किया। और कहा तुम्हन ने
३५ उसको कहां रखा उन्हन ने कहा प्रभु आ और देख। ईसा
३६ रोया। तब यहूदिअन ने कहा देखो वुह उसे कितना
३७ प्यार करताथा। उनमें से कितनन ने कहा क्या यह पुरुष
जिसने अंधे की आखें खोलीं नकरसका कि यह मनुष्य भी
३८ नमरता। तब ईसा अपने मन में फेर आह करताहुआ
समाधि पर आया वुह ऐक गड़हा था और उसपर ऐक
३९ पत्थर धराथा। ईसा ने कहा कि पत्थर को सरकाओ उस
मृतक की बहिन मरथा ने उसे कहा हे प्रभु वुह तो अब
४० बसाताहै क्योंकि उसको चार दिन हुऐ। ईसा ने उसे कहा
क्या मैं ने तुझे नहीं कहा कि जो तू बिश्वास लावे तो ईश्वर
४१ का महिमा देखेगी। तब उन्हन ने पत्थर को वहां से
जहां वुह मृतक पड़ाथा सरकाया और ईसा ने आंखें ऊपर
करके कहा हे पिता मैं तेरी स्तुति करताहों कि तू ने मेरी
४२ सुनीहै। और मैं ने जाना कि तू मेरी नित्य सुनताहै
पर उन लोगन के कारण जो आसपास खड़ेहैं मैं ने यह
४३ कहा कि वे बिश्वास लावें कि तूने मुझे भेजाहै। और

यह कहिके बड़े शब्द से चिल्लाया कि हे लाज़र बाहर
४४ निकल। तब वुह जो मरगयाथा समाधि के बस्त्र समेत
हाथ पांव बंधेहुए बाहर निकलआया और उसका मुंह
अंगोछा से लपेटाहुआथा ईसा ने उन्हें कहा कि उसे खोलो
४५ और जाने देओ। तब बहुतेरे यहूदिअन ने जो मरियम
कने आयेथे और ये कार्य जो ईसा ने कियेथे देखतेथे
४६ उसपर बिस्वास लाये। और उनमें से कितनन ने फरीसिअन
के समीप जाके उन कार्यन को जो ईसा ने कियाथा सुनाया।
४७ तब प्रधान याजकन और फरीसिअन ने एक सभा एकट्ठे
किई और कहा कि हमसब क्या करतेहैं क्योंकि यह
४८ मनुष्य बहुत आश्चर्य दिखावताहै। जो हमसब उसपर कुछ
नकरें तो सब उसपर बिस्वास लावेंगे और रूमी आवेंगे और
४९ हमारे देश और लोगन को भी लेलेंगे। और एक उनमें से
कायफास नाम जो उस बरस प्रधान याजक था उन्हन को बोला
५० कि तुमसब कुछ नहीं जानते। और चिंता नहीं करतेहो
हमारे लिये यह और भी अच्छा है कि एक पुरुष लोगन
की संती मरे और नहो कि समस्त लोग नाश होवें।
५१ उसने यह अपने ओर से नकहा परंतु इस कारण से कि
वुह उस बरस का प्रधान याजक था यह आगम कहा कि
५२ ईसा उन लोगन के कारण मरेगा। और केवल उन लोगन के
कारण नहीं परंतु इस कारण भी कि वुह ईश्वर के बालकन
५३ को जो छिन्न भिन्न हुए एकट्ठे करे। सो उन्हन ने उस

५४ दिन से एकमता किया कि उसे प्राण से मारें। इसलिये ईसा ने यहूदिअन में प्रगट में फिरना छोड़ा परंतु वहां से जाके बन के समीप एक नगर में जो अफराईम कहावताथा
५५ वहां वुह अपने शिष्यन के संग रहनेलगा। यहूदिअन के फसः का पर्ब्ब निकट था और बहुतेरे पर्ब्ब के पहिले उस देश
५६ से यिरोशलीम को गये कि अपने को पवित्र करें। और ईसा को ढूंढा और मंदिर में खड़े होके आपुस में कहा कि
५७ तुमसब क्या समुहते हो क्या वुह पर्ब्ब में नआवेगा। प्रधान याजकन और फरीसिअन ने भी आज्ञा किईथी कि जो कोई जानताहो कि वुह कहां है तो बतादे कि वे उसको पकड़लें।

१२ बारहवां पर्ब्ब

१ फेर पर्ब्ब से छःदिन आगे ईसा बैतऐना में आया जहां लाज़र रहताथा जो मरके उसकी आज्ञा से जीउठाथा।
२ वहां उन्हन ने उसके लिये बिआरी बनाई और मरथा सेवा करतीथी और उनमें से लाज़र एक था जो उसके संग
३ भोजन को बैठेथे। तब मरियम ने आध सेर अति मोल का निर्मल सुगंध तेल लेके ईसा के पावं पर मला और अपने बालन से उसके पांव पोछे और वुह घर उस तेल के सुगंध
४ से भरगयाथा। तब उसके शिष्यन मेंसे एक अर्थात यहूदा अस्कारयूती शमऊन का पुत्र जो उसको पकड़वाया चाहताथा

५ बोला। कि यह तेल तीन सौ पांनी को क्यों नहीं
६ बेचागया और कंगालन को नदियागया। उसने यह
इसलिये नहीं कहा कि वुह कंगालन पर दयावान था
परंतु इसलिये कि वुह चोर था और डेंड़ा पास रखताथा और
७ जो कुछ उसमें पड़ताथा उठालेताथा। तब ईसा ने कहा
कि उसे रहनेदे कि उसने मेरे गाड़ने के दिन के लिये यह
८ रखाथा। क्योंकि कंगालन को अपने संग तुमसब नित्य पाओगे
९ परंतु तुम मुझे नित्य नपाओगे। और यहूदिअन की बड़ी
मंडली ने जाना कि वुह वहां है और वे आयेथे केवल इसलिये
नहीं कि ईसा वहां था परंतु इसलिये भी कि वे लाज़र को
१० जिसे उसने मृत्यु से जिलाया देखें और प्रधान याजकन ने
११ एकमता किया कि लाज़र को भी मारडालें। क्योंकि उसके
कारण से बहुत यहूदी गये और ईसा पर बिश्वास लाये।
१२ दूसरे दिन बहुत लोग जो पर्ब्ब में आयेथे यह सुनिके कि
१३ ईसा यिरोशलीम में आताहै। खजूर की डारनको लेके
निकले कि उससे मिलें और पुकारे होशाना धन्य इसराईल
१४ का राजा जो प्रभु के नाम से आताहै। और ईसा एक
गदहे का बच्चा पाके उस पर चढ़ा जैसा कि लिखाहै।
१५ कि हे सैहून की पुत्री मत डर देख तेरा राजा गदहे के
१६ बच्चे पर चढ़के आताहै। उसके शिष्यन ने आरंभ में
ये बातें नसमुझीं परंतु जब ईसा अपने ऐश्वर्य्य को पहुंचा
तब उन्हन ने स्मरण किया कि ये बातें उसी की अवस्था

१७ में लिखीथीं और उन्हन ने उससे ये ब्यवहार किये। तब
उन लोगन ने जो उसके संग थे जब उसने लाज़र को समाधि
१८ से बाहर बुलाया और जिलाया साक्षी दिई। इस कारण
मंडली उससे मिलने को निकली क्योंकि उन्हन ने सुना कि
१९ उसने यह आश्चर्य दिखाया। फरीसिअन ने आपुस में
कहा तुम देखतेहो कि तुम्हन से कुछ नहीं बनपड़ता देखो
२० कि संसार उसके पीछे होचला। और उनमें जो पर्ब्ब में
२१ पूजा करने आयेथे कितने यूनानी थे। वे फैलबूस के
समीप जो जलील के बैतसैदा का था आये और उससे
बिनती किये कि हे महाशय हम चाहतेहैं कि ईसा को
२२ देखें। फैलबूस ने आके अंद्रयास को कहा और फेर
२३ अंद्रयास और फैलबूस ने ईसा को संदेश दिया। तब ईसा
ने उत्तर देके कहा कि घड़ी आपहुंची कि मनुष्य का पुत्र
२४ अपना ऐश्वर्य पावे। मैं तुम्हन से सत्य सत्य कहताहें
कि जबलों गेहूं का दाना भूमि में नगिरे और मर नजाय तो
अकेला रहताहे परंतु जो वुह मरे तो बहुतसा फल
२५ लावताहै। वुह जो अपने प्राण पर प्रेम रखताहै उसको
खोवेगा और वुह जो इस जगत में अपने प्राण का बैरी है
२६ उसे अनंत जीवन लों रखेगा। जो कोई मेरी सेवा करे
चाहिये कि मेरे पीछे चलाआवे और जहां मैं हों तहां
मेरा सेवक भी होगा जो कोई मेरी सेवा करताहै मेरा पिता
२७ उसकी प्रतिष्ठा करेगा। अब मेरा प्राण ब्याकुल है और मैं

क्या कहों कि हे पिता मुझे इस घड़ी से छुड़ा परंतु मैं तो
२८ इसी लिये इस घड़ी लों आयाहों। हे पिता अपने नाम का
महिमा कर वहीं स्वर्ग से शब्द आया कि मैंने महिमा
२९ कियाहै और फेर महिमा करोंगा। तब लोगन ने जो
समीप थे यह सुनके कहा कि मेघ गरजा औरन ने कहा
३० कि दूत ने उससे बार्त्ता किई। ईसा ने उत्तर देके कहा यह
३१ शब्द मेरे कारण नहीं अया परंतु तुम्हारे लिये आया। अब
इस जगत का न्याय है अब इस जगत का राजा निकाल
३२ दियाजायगा। और मैं जों भूमि से ऊपर उठायाजाऊं
३३ मैं सब को अपने ओर खींचेंगा। उसने यह कहिके पता
३४ दिया कि मैं किस मृत्यु से मरने पर हों। लोगन ने उत्तर
देके उसको कहा हमने तौरेत में सुनाहै कि मसीह
सर्बदा लों रहेगा फेर तू क्योंकर कहताहै कि मनुष्य का पुत्र
अवश्य है कि उठायाजावे यह मनुष्य का पुत्र कौन है।
३५ तब ईसा ने उन्हें कहा कि उंजियाला अभी थोड़ी बेर तुम्हारे
संग है जबलों कि उंजियाला तुम्हारे संग है चलो नहो
कि अंधियार तुम पर आपड़े और वुह जो अंधियारे में
३६ चलताहै नहीं जानता कि वुह किधर जाताहै। जबलों
उंजियाला तुम्हारे संग है उंजियाले पर बिश्वास करो कि
तुम उंजियाले के पुत्र हो ईसा ने ये बातें कहीं और जाके
३७ अपने को उन्हन से छिपाया। और यद्यपि उसने उन्हन
के सन्मुख इतने आश्चर्य दिखाये तद्यपि वे उसपर

३८ बिश्वास नलाये। तो कि यिशीया आगमज्ञानी का बचन जो उसने कहाथा पूरा होवे कि हे प्रभु हमारे समाचार पर किसने प्रतीति किई है और प्रभु का हाथ किसपर प्रगट हुआहै
३९ इस लिये वे बिश्वास नलासके कि यिशीया ने फेर कहा।
४० उसने उनकी आंखें अंधी कियां और उनके अंतःकरण कठोर कियेहैं नहोवे कि आंखन से देखें और अंतःकरण
४१ से समुझें और फिरजावें और मैं उन्हें चंगा करों। जब यिशीया ने उसका ऐश्वर्य देखा तब ये बातें उसके बिषय में
४२ कहीं। तिसपरभी प्रधानन से भी बहुतेरे उसपर बिश्वास लाये परंतु फरीसिअन के कारण उन्हन ने मान नलिया
४३ नहो कि वे मंडली से निकालेजायं। क्योंकि वे लोगन के आदर की स्तुति को ईश्वर के आदर से अधिक प्रेम करतेथे।
४४ ईसा ने पुकारा और कहा वुह जो मुझ पर बिश्वास लावताहै मुझ पर नहीं परंतु उसपर जिसने मुझे भेजा बिश्वास
४५ लावताहै। और वुह जो मुझे देखताहै उसको जिसने
४६ मुझे भेजा देखताहै। मैं जगत में उंजियाला आयाहों कि जो कोई मुझपर बिश्वास लावे अंधियारे में नरहे।
४७ और जो कोई मनुष्य मेरा बचन सुने और बिश्वास नकरे मैं उसका निर्णय नहीं करता क्योंकि मैं जगत को दोषी करने के लिये नहीं आया परंतु इसलिये कि जगत का
४८ उद्धार करों। जो कोई मेरी निंदा करताहै और मेरे बचन को नहीं मानता एक है जो उसे दोषी करेगा बचन

जो मैं ने कहा है वही पिछले दिन उसे दोषी करेगा।
४९ क्योंकि मैं ने तो आप से नहीं कहा परंतु पिता ने जिस ने
मुझे भेजा मुझे आज्ञा किई कि मैं क्या बोलों और मैं क्या
५० कहों। और मैं जानता हों कि उसकी आज्ञा अनंत जीवन
है सो जो कुछ मैं कहता हों जिस रीति से पिता ने मुझे
कहा उसी रीति से मैं कहता हों।

१३ तेरहवां पर्ब्ब

१ पासः के पर्ब्ब से पहिले ईसा ने जाना कि मेरा समय
आपहुंचा है कि इस जगत से पिता के पास जाऊं सो जैसा
वुह अपनन को जो जगत में थे आगे प्यार करता था वैसही
२ उसने अंत्य लों उस प्यार को निबाह दिया। और जब
बिआरी कर चुके शयतान ने शमऊन के पुत्र यहूदा
३ अस्करयूती के मन में डाला कि उसे पकड़वावे। ईसा यह
जानकर कि पिता ने समस्त बस्तें मेरे बश में दिई और
कि मैं ईश्वर से आया था और ईश्वर के पास जाता हों।
४ उसने बिआरी से सावकाश पाके अपने बस्त्र को उतार रखा
५ और एक अंगोछा लेके अपनी कमर में बांधा। उसके
पीछे उसने एक पात्र में जल डाला और शिष्यन के पांव
धोने लगा और उस अंगोछे से जो बंधा था पोछने लगा।
६ तब वुह शमऊन पतरस के समीप आया और पतरस ने
७ उसको कहा हे प्रभु तू मेरे पांव धोता है। ईसा ने उत्तर

देके उसको कहा वुह जो मैं करताहों तू अब नहीं जानता
८ परंतु इसके पीछे जानेगा। पतरस ने उसे कहा तू मेरा पांव
कधी नधोना ईसा ने उसको उत्तर दिया जो मैं तुझे नधोओं
९ मेरे संग तेरा भाग नहोगा। शमऊन पतरस ने उसे कहा
कि हे प्रभु केवल मेरे पांव नहीं परंतु हाथ और सिर भी।
१० ईसा ने उसको कहा वुह जो धोयागयाहै केवल पांव धोने
का प्रयोजन नहीं रखता परंतु संपूर्ण पवित्र है और तुम्हन
११ पवित्र हो परंतु सब नहीं। क्योंकि वुह जानताथा कि
कौन उसे पकड़वायेगा इसी लिये उसने कहा कि तुमसब
१२ पवित्र नहीं हो। जब वुह उन्हन का पांव धोचुका और
अपने बस्त्र को लिया फेर बैठके उन्हन को कहा क्या तुमसब
१३ जानतेहो मैं ने तुम्हन से क्या किया। तुमसब मुझे गुरु
और प्रभु की पदवी देतेहो और तुमसब ठीक कहतेहो
१४ क्योंकि मैं हों। सो जब कि मैं प्रभु और गुरु ने तुम्हारे
पांव धोये तुम्हें भी उचितहै कि एक दूसरे के पांव धोओ।
१५ इसलिये कि मैं ने तुम्हें एक दृष्टांत दिया कि जैसा मैं ने
१६ तुम्हन से किया तुमसब भी करो। मैं तुम्हन से सत्य सत्य
कहताहों कि सेवक अपने स्वामी से बड़ा नहीं नवुह जो
१७ भेजागयाहै अपने भेजनिहार से बड़ा है। जो तुमसब ये
१८ बातें समुझतेहो और उन्हें करतेहो तो धन्यहो। मैं
तुमसबन के बिषय में नहीं कहता मैं जानताहों जिन्हें
मैं ने चुना है परंतु इसलिये कि लिखाहुआ पूरा होवे

कि उसने जो मेरे संग भोजन करताहै मुझपर अपना
१९ लात उठायाहै। अब मैं तुम्हें आगे से कहताहों कि
जब यह पूरा होजावे तुमसब प्रतीति करियो कि मैं हों
२० हों। मैं तुम्हन से सत्य सत्य कहताहों वुह जो उसको
जिसे मैं भेजताहों ग्रहण करताहै मुझे ग्रहण करताहै
और वुह जो मुझे ग्रहण करताहै उसे जिसने मुझे भेजा
२१ ग्रहण करताहै। ईसा यों कहिके मन में व्याकुल
हुआ और साक्षी देके बोला मैं तुम्हन से सत्य सत्य
कहताहों कि एक तुम्हन में से मुझे पकड़वावेगा।
२२ तब शिष्यन ने एक दूसरे को देखके संदेह किया कि
२३ उसने किसके बिषय में कहा। अब उसके शिष्यन में से
एक जो उसकी छाती पर लेटाथा जिसको ईसा प्यार
२४ करताथा। तब शमऊन पतरस ने उसको सैन किया कि
२५ पूछे वुह कौनहै जिसके बिषय में उसने कहा। तब
उसने ईसा की छाती पर गिरके उसको कहा हे प्रभु वुह
२६ कौन है। ईसा ने उत्तर दिया जिसको मैं ग्रास भिगाके
देताहों वही है तब उसने ग्रास भिगाके शमऊन के पुत्र
२७ यहूदा अस्करयूती को दिया। और उस ग्रास के पीछे
शयतान उसमें पैठा तब ईसा ने उसको कहा जो कुछ कि
२८ तू करताहै झटसे कर। और उनमें जो खाने बैठेथे किसी
ने नजाना कि उसने क्या समुझके उसको यह कहा।
२९ तब कई एक ने बिचार किया यह इसलिये है कि झोड़

यहूदा के पास था कि ईसा ने उसको बह कहाया जो कुछ उस पर्ब्ब के लिये प्रयोजन है मोल ले अथवा कि वुह
३० कंगालन को कुछ देय। तब ग्रास पाके तुरंत बाहर गया
३१ और रात थी। जब वुह चलागया ईसा ने कहा कि अब मनुष्य के पुत्र ने ऐश्वर्य्य पाया और ईश्वर ने उसके कारण से
३२ ऐश्वर्य पाया। जो ईश्वर उससे ऐश्वर्य पावताहै तो ईश्वर
३३ उसको भी आपसे ऐश्वर्य देगा। हे छोटे बालक अब थोड़ी देर मैं तुम्हारे संग हों तुमसब मुझे ढूंढ़ोगे और जैसा कि मैंने यहूदिअन से कहा जहां मैं जाताहों तुमसब आ
३४ नहीं सक्ते वैसा अब मैं तुम्हें भी कहताहों। मैं तुम्हें ऐक नई आज्ञा देताहों कि तुम ऐक दूसरे को प्यार करो जैसा मैंने तुम्हें प्यार किया तुम भी ऐक दूसरे को प्यार
३५ करो। इससे सब जानेंगे कि तुमसब मेरे शिष्य हो जो
३६ तुम आपुस में प्रेम रखो। शमऊन पतरस ने उसको कहा हे प्रभु तू कहां जाताहै ईसा ने उसको उत्तर दिया जिधर मैं जाताहों तू अब मेरे पीछे आ नहीं सक्ता परंतु आगे
३७ को मेरे पीछे आवेगा। पतरस ने उसे कहा प्रभु मैं तेरे पीछे अब क्यों नहीं आ सक्ता मैं तेरे लिये अपना प्राण
३८ देउंगा। ईसा ने उसे उत्तर दिया क्या तू मेरे लिये अपना प्राण देगा मैं तुझसे सच सच कहताहों कि कुक्कुट शब्द नकरेगा जबलों तू तीनबार मुझसे नमुकरे।

१४ चौदहवां पर्ब्ब

१ ब्याकुल मत होओ तुम ईश्वर पर बिश्वास लावतेहो मुझ
२ पर भी बिश्वास लाओ। मेरे पिता के घर में बहुत से स्थान
हैं नहीं तो मैं तुम्हें कहता मैं जाताहों कि तुम्हारे लिये
३ स्थान ठीक करों। और जों मैं जाके तुम्हारे लिये स्थान
ठीक करों मैं फेर आओंगा और तुम्हें अपने संग लेउंगा
४ कि जहां मैं हों तुम्हन भी रहो। और जहां मैं जाताहों
५ तुमसब जानतेहो और मार्ग भी जानतेहो। थूमा ने उसे
कहा हे प्रभु हम नहीं जानते तू कहां जाताहै और हम
६ उस मार्ग को क्योंकर जानसकें। ईसा ने उसको कहा मार्ग
और सच्चाई और जीवन मैं हों कोई पिता के समीप मेरे
७ बिना नहीं आसक्ता। जों तुम मुझे जानते तो तुम मेरे पिता
को भी जानते और अब तुम उस को जानतेहो और उसे
८ देखेहो। फैलबूस ने उसको कहा हे प्रभु पिता को हमें
९ दिखा कि हम तृप्त होवें। ईसा ने उसको कहा हे
फैलबूस क्या इतने दिन से मैं तुम्हारे संग हों और तूने
अबलों मुझे नजाना जिसने मुझको देखाहै पिता को
देखाहै और तू कैसे कहताहै कि पिता को हमें दिखा।
१० क्या तू बिश्वास नहीं करता कि मैं पिता में और पिता
मुझ में है ये बातें जो मैं तुम्हें कहताहों मैं आप से
नहीं कहता परंतु पिता जो मुझ में रहताहै वुह यह
११ कार्य करताहै। मेरीबात को प्रतीति करो कि मैं पिता में

और पिता मुझ में है नहीं तो उन कार्यन के लिये मेरी
१२ प्रतीति करो। मैं तुम्हन से सत्य सत्य कहताहों वुह जो
मुझपर बिश्वास लावताहै ये कार्य जो मैं करताहों वुह भी
करेगा और उनसे अधिक बड़ा करेगा क्योंकि मैं अपने
१३ पिता के पास जाताहों और मेरे नाम से जो कुछ तुम मांगोगे
१४ मैं वही करोंगा जिसतें पिता पुत्र में ऐश्वर्य पावे। जो
१५ तुमसब मेरे नाम से कुछ मांगोगे मैं करोंगा। जो तुमसब
१६ मुझे प्रेम करतेहो मेरी आज्ञा को धारण करो। और मैं अपने
पिता से चाहोंगा और वुह तुम्हें दूसरा सुखदायक देगा जो
१७ सदालों तुम्हारे संग रहे। अर्थात सत्य का आत्मा जिसको
जगत ग्रहण नहीं करसक्ता क्योंकि उसको नहीं देखता और
नउसे जानताहै परंतु तुमसब उसे जानतेहो क्योंकि वुह
१८ तुम्हारे संग रहताहै और तुम में होवेगा। मैं तुम्हें
१९ अनाथ नछोड़ोंगा मैं तुम्हन के पास आओंगा। अब थोड़ी
देर है कि जगत मुझे फेर नदेखेगा परंतु तुमसब मुझे
देखतेहो और इसलिये कि मैं जीवताहों तुमसब भी
२० जीओगे। उस दिन तुमसब जानोगे कि मैं पिता में और
२१ तुमसब मुझमें और मैं तुम्हनमें हों। जिसके पास मेरी
आज्ञा हैं और उन्हें धारण करताहै वुह है जो मुझे
प्यार करताहै और वुह जो मुझे प्यार करताहै मेरे पिता
का प्यारा होगा और मैं उसको प्यार करोंगा और अपने को
२२ उसपर प्रगट करोंगा। यहूदा ने वुह नहीं जो अस्कारयूती

था उसको कहा कि हे प्रभु यह कैसा है कि तू आप को
२३ हमन पर प्रगट करेगा और जगत पर नहीं। ईसा ने
उत्तर देके उसको कहा जो कोई मुझे प्यार करताहै वुह
मेरे बचन को धारण करेगा और मेरा पिता उसको प्यार
करेगा और हम उसके पास आवेंगे और उसके संग बास
२४ करेंगे। जो मुझे प्यार नहीं करता मेरे बचन को धारण
नहीं करता और यह बचन जो तुमसब सुनतेहो मेरा
२५ नहीं परंतु पिता का है जिसने मुझे भेजाहै। मैंने ये
२६ बचन तुम्हारे संग होतेहुए तुम्हन से कहा। परंतु वुह
सुखदायक धर्मात्मा जिसको पिता मेरे नाम से भेजेगा वुह
तुम्हें सब बातें सिखावेगा और सब बातें जो कुछ कि मैंने
२७ तुम्हें कहीं हैं तुम्हें स्मरण करवेगा। शांति तुम्हें देजाताहों
अपनी शांति मैं तुम्हें देताहों जिस रीति से जगत
देताहै मैं तुम्हें नहीं देताहों अपने मनको व्याकुल मत
२८ होनेदो और भय मतकरो। तुमसब सुनचुकेहो कि मैंने
तुम्हन से कहा मैं जाताहों और तुम्हारे पास फेर आताहों
जो तुमसब मुझे प्यार करते तो तुम्हन मेरे इस कहने से
कि मैं पिता के पास जाताहों आनंद होते क्योंकि मेरा
२९ पिता मुझसे बड़ा है। और अब मैं ने तुम्हें उसके होने
से आगे कहा कि जब वुह होचुके तुमसब बिश्वास करो।
३० इसके पीछे मैं तुम्हन से बहुत बातें नकरोंगा इसलिये कि
इस जगत का राजा आताहै और उसकी कोई बस्तु मुझ

न नहीं परंतु कि जगत जाने कि मैं पिता को प्यार करताहों जिस रीति से पिता ने मुझे आज्ञा दिई वैसाही मैं करताहों उठो यहां से जायें।

१५ पंदरहवां पर्ब्ब

१ मैं दाख की सच्ची लता हों और मेरा पिता माली है।
२ जो डाली मुझ में फल नहीं लावती वुह उसे तोड़डालताहै और हरएक जो फल लावतीहै वुह उसे निर्मल करताहै
३ कि वुह अधिक फल लावे। अब तुमसब बचन के कारण
४ जो मैं ने तुम्हें कहाहै पवित्र हो। मुझ में मिले रहो और मैं तुम्हन में जिस रीति से कि डाली आपसे फल नहीं लासकी परंतु जब कि वुह लता में मिलीहो तुम्हन भी ला
५ नहींसको परंतु जब कि तुम मुझ में मिले रहो। दाख की लता मैं हों तुमसब डालियां हो वुह जो मुझमें मिला रहताहै और मैं उसमें वही बज्जत फल लावताहै इसलिये कि मुझसे अलगहोके तुमसब कुछ नहीं करसको।
६ जो कोई मुझमें मिला नहो वुह डाली के समान फेंकदियाजाता और सूखजाताहै और लोग उन्हें समेटतेहैं
७ और आग में झोंकते हैं और वे जलतीहैं। जो तुमसब मुझमें स्थिर रहो और मेरे बचन तुम्हन में स्थिर होवें तुमसब जो चाहोगे मांगोगे और तुम्हारे लिये वुह होगा।
८ मेरे पिता का महिमा उसीसे है कि तुमसब बज्जत फल

९ जाओ और तुमसब मेरे शिष्य होओगे। जैसा मेरे पिता ने मुझे प्यार किया वैसही मैं ने तुम्हें प्यार किया तुमसब मेरे
१० प्यार में स्थिर रहो। जो तुम मेरी आज्ञा को धारण करो मेरी प्यार में स्थिर रहोगे जैसा मैं ने अपने पिता की आज्ञा को
११ धारण किया और उसके प्रेम में ठहरहों। मैं ने ये बातें तुम्हें कहीं कि मेरा आनंद तुम्हन में स्थिरहो और तुम्हारा
१२ आनंद भरपूर हो। मेरी आज्ञा यह है कि तुम एक दूसरे
१३ को प्यार करो जैसा मैं ने तुम्हें प्यार कियाहै। कोई इससे अधिक मित्रता नहीं करता कि अपना प्राण अपने मित्रन
१४ के लिये देय। जो कुछ कि मैं ने तुम्हें आज्ञा किई जो
१५ तुम मानो तो तुम मेरे मित्र हो। इसके पीछे मैं तुम्हें सेवक नकहोंगा क्योंकि सेवक नहीं जानता कि उसका स्वामी क्या करताहै परंतु मैंने तुम्हें मित्र कहाहै क्योंकि सब बातें जो मैंने अपने पिता से सुनीहैं मैंने बतलाईं।
१६ मैं तुम्हन को नभाया परंतु तुमसब मुझे भाये और मैं ने तुम्हें ठहराया कि तुम जाओ और फल लाओ और तुम्हारा फल रहेगा कि जो कुछ तुम मेरा नाम लेके पिता से मांगो वुह तुम्हें
१७ देवे। ये बातें मैं तुम्हें आज्ञा करताहों कि तुम एक दूसरे को
१८ प्यार करो। जो संसार तुम्हन से बैरकरे तुम जानतेहो कि उसने
१९ तुम्हन से आगे मुससे बैर किया। जो तुमसब संसार के होते तो संसार अपने को प्यार करता पर इसलिये कि तुमसब संसार के नहीं परंतु मैंने तुम्हें संसार से चुन लिया इस कारण संसार

२० तुम्हन से बैर करताहै। इस बचन को जो मैंने तुम्हें कहा चेतकरो कि सेवक अपने स्वामी से बड़ा नहीं जब उन्हन ने मुझे सताया वे तुम्हें भी सतावेंगे जो उन्हन ने मेरा बचन
२१ धारण कियाहै वे तुम्हारा भी धारण करेंगे। परंतु ये ब्यबहार वे मेरे नाम के कारण तुम्हन से करेंगे क्योंकि वे
२२ उसे जिसने मुझे भेजाहै नहीं जानते। जो मैं आया नहोता और उन्हें नकहता उनका पाप नहोता परंतु अब
२३ उनके पाप का कुछ बहाना नहीं। वुह जो मुझसे बैर
२४ करताहै मेरे पिता से भी बैर करताहै। जो मैं उनमें ये कार्य जो किसी मनुष्य ने नहीं किये नकरता तो उनका कुछ पाप नहोता पर अब तो उन्हन ने मुझको और मेरे पिता को
२५ देखा और बैर किया। परंतु यह हुआ कि वुह बचन जो उन्हन के शास्त्र में लिखाहै संपूर्ण हो कि उन्हन ने मुझसे
२६ अकारथ बैर किया। परंतु जब कि वुह सुखदायक आवे जिसको मैं तुम्हारे लिये पिता के ओर से भेजूंगा अर्थात सत्य का आत्मा जो पिता से निकलताहै वुह मेरे
२७ लिये साक्षी देगा। और तुम्हन भी साक्षी देओगे क्योंकि तुमसब आरंभ से मेरे संग हो।

१६ सोलहवां पर्ब्ब

१ मैंने ये बातें तुम्हें कहीं कि तुमसब ठोकर नखाओ।
२ वे तुम्हन को मंडलिअन से निकालेंगे हां वुह समय

आताहै कि जो कोई तुम्हें मारडालताहै समझेगा कि वुह
३ ईश्वर की सेवा करताहै। और तुम्हन से ऐसे व्यवहार
करेंगे इसलिये कि वे नपिता को नमुझ को जानते हैं।
४ और मैंने ये बातें तुम्हें कहीं कि जब वुह समय आवे तो
तुमसब चेतकरो कि मैंने उनकी तुम्हें कहीं और मैंने आरंभ
५ में ये बातें नकहीं क्योंकि मैं तुम्हारे संग था। परंतु अब मैं
उसके पास जिसने मुझे भेजा जाताहों और तुम्हन में से
६ कोई मुझसे नहीं पूछता कि तू कहां जाताहै। परंतु
इसलिये कि मैं ने तुम्हें ये बातें कहीं तुम्हारा मन शोक
७ से भरगया। तिसपरभी मैं तुम्हें ठीक कहताहों कि
तुम्हारे लिये मेरा तो जाना सफल है क्योंकि जो मैं नजाऊं तो
सुखदायक तुम्हारे पास नआवेगा परंतु जो मैं जाऊं मैं उसको
८ तुम्हारे पास भेजदेऊंगा। और जब वुह आवे तो
जगत को पाप से और सच्चाई से और आज्ञा से दोषी
९ करेगा। पाप से इसलिये कि वे मुझपर बिश्वास नलाये।
१० सच्चाई से इसलिये कि मैं अपने पिता के पास जाताहों और
११ तुम मुझे फेर नदेखोगे। आज्ञा से इसलिये कि इस जगत के
१२ राजा पर आज्ञा किईगई है। अब भी बज्ञतसी बातें हैं कि
मैं तुम्हें कहों परंतु अब तुमसब उन्हें सहि नहींसके।
१३ पर जब वुह सत्य का आत्मा आवे वुह तुम्हें समस्त
सच्चाई का मार्ग बतावेगा इसलिये कि वुह अपनी नकहेगा
परंतु जो कुछ वुह सुनेगा सो कहेगा और वुह तुम्हें आगे

१४ का संदेश देगा। वुह मेरी स्तुति करेगा इसलिये कि वुह
१५ मेरे बस्तुन से पावेगा और तुम्हें दिखायेगा। समस्त बस्तें
जो पिता की हैं मेरी हैं इसलिये मैं ने कहा कि वुह मेरी
१६ बस्तुन से लेगा और तुम्हें दिखावेगा। थोड़ी बेर और तुमसब
मुझे न देखोगे और फेर थोड़ी बेर और तुमसब मुझे देखोगे
१७ इसलिये मैं पिता के पास जाताहों। तब उसके कितने शिष्यन
ने आपुस में कहा यह क्याहै जो वुह हमें कहताहै थोड़ी
बेर और तुम मुझे नदेखोगे और फेर थोड़ी बेर और तुम मुझे
देखोगे और यह इसलिये कि मैं पिता के पास जाताहों।
१८ फेर उन्हन ने कहा यह क्या है जो वुह कहताहै कि थोड़ी
१९ बेर हम नहीं जानते वुह क्या कहताहै। अब ईसा ने यह
जाना कि वे चाहतेहैं कि उससे पूछें उसने उन्हें कहा क्या
तुमसब आपुस में पूछतेहो जो मैं ने कहा कि थोड़ी बेर
और तुम मुझे नदेखोगे और फेर थोड़ी बेर और तुमसब मुझे
२० देखोगे। मैं तुम्हन से सत्य सत्य कहताहों कि तुमसब
रोओगे और बिलाप करोगे और जगत आनंद होगा और परंतु
तुमसब उदासीन होओगे परंतु तुम्हारी उदासी का फल
२१ आनंद होगा। जब स्त्री जन्ने लगतीहै तो उदासीन होतीहै
इसलिये कि उसका समय पहुंचा परंतु जोंवुह बालक जनी
फेर उस आनंद से कि जगत में एक मनुष्य उत्पन्न हुआ
२२ उस पीड़ा को नहीं सोचती। और अब तुमसब उदासीन हो
परंतु मैं तुम्हें फेर देखोंगा और तुम्हारा मन आनंद होगा

२३ और तुम्हारो आनंदता तुम्हन से कोई छीन नलेगा। और तुमसब उस दिन मुससे कुछ नपूछोगे मैं तुम्हन से सत्य सत्य कहताहों तुमसब मेरे नाम लेके जो कुछ पिता से
२४ मांगोगे वुह तुम्हें देगा अबलों तुम्हन ने मेरे नाम से कुछ नमांगा मांगो कि तुम पाओगे कि तुम्हारा आनंद संपूर्ण
२५ हो। मैंने ये बातें तुम्हे दृष्टांतन में कहीं पर वुह समय आताहै जब मैं तुम्हें दृष्टांतन में फेर नकहोंगा परंतु मैं
२६ पिता के बिषय में तुम्हें खोलके दिखाओंगा। उस दिन तुमसब मेरे नामसे मांगोगे और मैं तुम्हें नहीं कहता कि मैं
२७ तुम्हारे कारण पिता की प्रार्थना करोंगा। इसलिये कि पिता तो आपही तुम्हें प्यार करताहै क्योंकि तुम्हन ने मुझे प्यार किया और बिस्वास लायेहो कि मैं ईस्वर से निकलाहों।
२८ मैं पिता से निकलाहों और जगत में आयाहों फेर जगत
२९ को छोड़ताहों और पिता के पास जाताहों। उसके शिष्यन ने उसे कहा देख अब तू खोलके कहताहै और
३० दृष्टांत नहीं कहता। अब हम निस्चय करतेहैं कि तू समस्त बस्तें जानताहै और आधीन नहीं कि कोई तुससे पूछे इससे हमें निस्चय हुआ कि तू ईस्वर से निकलाहै।
३१ ईसा ने उन्हन को उत्तर दिया क्या तुम्हन को अब निस्चय
३२ हुआ। देखो घड़ी आतीहै हां अब आईहै कि तुम में हरएक छिन्नभिन्न होके अपना अपना मार्ग पकड़ेगा और मुझे अकेला छोड़ेगा तद्यपि मैं अकेला नहीं क्योंकि पिता

३३ मेरे संग है। मैं ने ये बातें तुम्हें कहीं कि तुमसब मुझ में कुशल पाओ जगत में तुमसब दुख पाओगे परंतु निश्चिंत रहो कि मैं ने जगत को जीताहै।

१७ सत्रहवां पर्ब्ब

१ ईसा ने ये बातें कहीं और स्वर्गके ओर दृष्टि करके कहा हे पिता समय पहुंचाहै अपने पुत्र को महिमा दे कि तेरा २ पुत्र भी तुझे महिमा देय। जैसा कि तूने उसे समस्त शरीरन पर पराक्रम दियाहै कि वुह उन सबन को जिन्हें ३ तूने उसे दिया अनंत जीवन देवे। और अनंत जीवन यह है कि वे तुझको अकेला सच्चा ईश्वर और ईसा ४ मसीह को जिसे तूने भेजाहै जानें। मैंने पृथिवी पर तेरा महिमा प्रगट कियाहै मैंने उस कार्य को जो तूने मुझे ५ करने को दियाहै समाप्त करचुका। और अब हे पिता तू मुझे अपने संग उस महिमा से जो मैं जगत के होने से ६ आगे तेरे संग रखताथा महिमा दे। मैंने तेरे नाम को उन लोगन पर जिन्हें तूने जगत मेंसे मुझे दिया प्रगट कियाहै वे तेरे थे और तूने उन्हें मुझे दियाहै और ७ उन्हन ने तेरे बचन को धारण कियाहै। अब उन्हन ने जाना कि समस्त बस्तें जो तूने मुझे दिईं तेरे ओर से हैं। ८ इसलिये कि वे आज्ञा जो तूने मुझे दिईं मैंने उन्हें दिईं हैं और उन्हन ने ग्रहण किया और निश्चय किया कि मैं

तुझसे निकला और वे बिश्वास लाये हैं कि तूने मुझे भेजा।
९ मैं उनके लिये प्रार्थना करताहों मैं जगत के लिये नहीं
परंतु उन्हन के लिये जिन्हें तूने मुझे दियाहै प्रार्थना
१० करताहों कि वे तेरे हैं। और समस्त मेरे तेरे हैं और
११ तेरे मेरे हैं और मैं उनमें ऐश्वर्यमान हों। मैं जगत
में आगे नरहोंगा परंतु ये जगत में हैं और मैं तेरे पास
आताहों हे पवित्र पिता अपनेही नाम से उन्हें जिन्हें
तूने मुझे दियाहै रक्षा कर कि वे हमारे समान एक
१२ होजायें। जबलों मैं उन्हन के संग जगत में था मैं
तेरे नाम से उन्हन की जिन्हन को तूने मुझे दिया रक्षा
करताथा मैंने उनकी रखवारी किई और उन मेंसे नाश के
१३ पुत्र को छोड़ कोई नष्ट नहुआ जिसतें ग्रंथ पूरा हो। और
अब मैं तेरे पास आताहों और मैं ये बातें जगत में कहताहों
१४ कि मेरा आनंद उनमें संपूर्ण होरहे। मैं ने तेरा बचन उन्हें
दिया और जगत ने उनसे बिरोध किया इसलिये कि वे
१५ जगत के नहीं जैसा मैं जगत का नहीं हों। मैं यह नहीं
चाहता कि तू उन्हें जगत में से उठाले परंतु यह कि तु
१६ उन्हें दुष्ट से बचाले। जैसा कि मैं जगत का नहीं हों वे
१७ जगत के नहीं। उन्हें अपनी सच्चाई से पवित्र कर तेरा
१८ बचन सच्चाई है। जिस रीति से तूने जगत में मुझे भेजा
१९ मैं ने भी उन्हें जगत में भेजाहै। उन्हन के कारण मैं अपने
को पवित्र करताहों जिस में वे भी सच्चाई से पवित्र हों।

२० मैं केवल उनके लिये नहीं परंतु उन्हन के लिये भी जो उनके बचन से मुझपर बिस्वास लावेंगे प्रार्थना करताहों।
२१ जिसतें वे सब ऐक होवें जैसा कि हे पिता तू मुझमें और मैं तुझमें कि वे भी हमन में ऐक हों कि जगत बिस्वास
२२ लावे कि तूने मुझे भेजाहै। और वुह महिमा जो तूने मुझे दियाहै मैं ने उन्हें दियाहै कि जिस रीति से हम
२३ ऐक हैं वे ऐक हों। मैं उनमें और तू मुझमें कि वे ऐक होके पहुंचके संपूर्ण होवें और जिसतें जगत जाने कि तूने मुझे भेजाहै और जिस रीति से मुझपर प्रेम किया उनपर भी प्रेम
२४ कियाहै। हे पिता मैं चाहताहों कि जिन्हें तूने मुझे दियाहै जहां मैं होओं वेभी मेरे संग होवें कि वे मेरे महिमा पर जो तूने मुझे दियाहै दृष्टि करें क्योंकि तूने
२५ मुझपर जगत की उत्पत्ति से आगे प्रेम कियाहै। हे सत्य पिता जगत ने तुझे नहीं जाना परंतु मैं ने तुझे जानाहै और
२६ उन्हन ने जानाहै कि तूने मुझे भेजा। और मैं ने तेरा नाम उन पर प्रगट किया और प्रगट करोंगा कि जिस प्रेम से तूने मुझपर प्रेम कियाहै वुह प्रेम उनमें हो और मैं उनमें हों।

१८ अठारहवां पर्ब्ब

१ ईसा यह बातें कहिके अपने शिष्यन के संग कादरून के नाले के पार गया वहां ऐक बाटिका थी उसमें वुह और उसके

२ शिष्यन ने प्रवेश किया। और यहूदा भी जिसने उसे पकड़वादिया वुह स्थान जानताथा कि ईसा बारंबार अपने
३ शिष्यन के संग वहां जायाकरताथा। तब यहूदा सिपाइअन की ऐक मंडली और प्रधान याजकन और फरीसिअन से प्यादे लेके पलीता और दीपकन और हथियारन के संग
४ वहां आया। और जैसा कि ईसा सब कुछ जो उसपर होनहार था जानताथा बाहर निकलके उन्हन से कहा
५ कि तुमसब किसको ढूंढ़तेहो। वे उत्तर देके बोले कि ईसा नासरी को ईसा ने उन्हें कहा कि मैं हों उस समय यहूदा भी जिसने उसे पकड़वाया उनके संग खड़ाथा।
६ ज्योंहीं उसने उन्हें कहा कि मैं हों वे पीछे हटे और
७ भूमि पर गिरपड़े। तब उसने उन्हन से फेर पूछा कि तुमसब किसको ढूंढ़तेहो वे बोले कि ईसा नासरी को।
८ ईसा ने उत्तर दिया मैं ने तो तुम्हें कहा कि मैं हों सो जो
९ तुमसब मुझे ढूंढ़तेहो इन्हन को जानेदो। यह इसलिये हुआ कि बचन जो उसने कहा पूरा हो कि जिन्हें तूने
१० मुझे दिया मैं ने उनमें से ऐक को नखोया। तब शमऊन पतरस ने खड्ग जो उसके पास था खींचा और प्रधान याजक के सेवक पर चलाया और उसका दहिना कान उड़ा दिया
११ उस सेवक का नाम मलकूस था। तब ईसा ने पतरस से कहा कि अपना खड्ग काठी में कर क्या वुह कटोरा जो मेरे पिता
१२ ने मुझे दिया मैं नपीओं। तब सिपाई और सेनापति और

यहूदिअन के प्यादन ने मिलके ईसा को पकड़ा और बांधा।
१३ और पहिले उसको हन्नान के पास लेगये वुह कायफा का
१४ ससुर था जो उस बरस का प्रधान याजक था। यह वही
कयाफा था जिस ने यहूदिअन को मंत्रणा दिई कि लोगन
१५ के लिये एक मनुष्य का मरना अतिभला है। तब शमऊन
पतरस दूसरे शिष्य के संग होके ईसा के पीछे होलिया वुह
शिष्य ईसा के साथ प्रधान याजक के सदन में गया कि
१६ वुह शिष्य प्रधान याजक का चीन्हाजाना था। परंतु
पतरस द्वार पर बाहर खड़ारहा तब वुह दूसरा शिष्य जो
प्रधान याजक का चीन्हाजाना था बाहर गया और द्वारपाली
१७ को कहिके पतरस को भीतर लेआया। तब उस दासी ने
जो द्वारपाली थी पतरस को कहा क्या तूभी इस मनुष्य के
१८ शिष्यन मेंसे नहीं वुह बोला कि मैं नहीं हों। और
सेवक और प्यादन ने कोइलन कि आग सुलगाकर जाड़े के
कारण से खड़ेहुए तापतेथे और पतरस उनके संग खड़ा
१९ तापरहाथा। तब प्रधान याजक ने ईसा से उसके शिष्यन
२० के और उसके उपदेश के बिषय में पूछा। ईसा ने उसको
उत्तर दिया मैंने संसार को प्रगट कहा मैने सदा मंडली में
और मंदिर में जहां यहूदिअन नित्य एकट्ठे होतेथे
२१ उपदेश किया और मैंने छिपके कुछ नकहा। तू मुझसे
क्यों पूछताहै जिन्हन ने मुझसे सुना उन्हन से पूछ कि
मैंने उन्हें क्या कहा देख कि वे जानतेहैं जो मैंने कहा।

२२ जब उस ने यों कहा प्यादन से एक ने जो समीप खड़ाथा ईसा को थपेड़ा मारके कहा कि क्यों तू प्रधान याजक को
२३ ऐसा उत्तर देताहै। ईसा ने उसको उत्तर दिया कि जो मैं ने बुरा कहा तो बुराई की साक्षीदे परंतु जो अच्छा
२४ कहा तू मुझे क्यों मारताहै। और हन्नान ने उसे बांधके
२५ कयाफा प्रधान याजक के पास भेजा। और शमऊन पतरस खड़ाहुआ तापरहाथा सो उन्हन ने उसको कहा क्या तूभी उसके शिष्यन मेंसे है वुह मुकरगया और बोला कि मैं
२६ नहींहों। प्रधान याजक के सेवकन मेंसे एक ने जो उसका जिसका पतरस ने कान काटा कुटुंब था कहा क्या मैं ने
२७ तुझे उसके संग बाटिका में नहीं देखा। और पतरस फेर
२८ मुकरगया और वहीं कुक्कुट ने शब्द किया। तब वे ईसा को कयाफा के पास से न्यायके स्थान में लाये और यह भोरका समय था और वे आप न्याय के स्थान में नगये कि अपवित्र
२९ नहों और फसः खांय। तब पिलातूस उनके पास निकल आया और बोला कि तुमसब इस मनुष्य पर क्या दोष
३० लगावतेहो। उन्हन ने उत्तर देके कहा जो यह अपराधी
३१ नहोता तो हमसब उसको तेरे पास नसौंपते। पिलातूस ने उन्हें कहा कि तुमसब उसे लेजाओ और अपने शास्त्र की रीति पर उसका न्याय करो तब यहूदिअन ने उसको कहा कि हमको यह उचित नहीं कि किसी का प्राण लें।
३२ यह इसलिये हुआ कि ईसा का बचन जो उसने कहाथा

३३ संपूर्ण होवे कि वुह किस रीति से मरेगा। तब पिलातूस न्याय के स्थान में फेर गया और ईसा को बुलाके कहा
३४ क्या तू यहूदिअन का राजा है। तब ईसा ने उसको उत्तर दिया क्या तू यह बात आपसे कहताहै अथवा कि औरन
३५ ने मेरे बिषय में तुससे कहाहै। पिलातूस ने उत्तर दिया क्या मैं यहूदी हों तेरही लोगन ने और प्रधान याजकन ने
३६ तुह को मुहे सैांपदिया तूने क्या कियाहै। ईसा ने उत्तर दिया कि मेरा राज्य इस जगत का नहीं जो मेरा राज्य इस जगत का होता तो मेरे सेवक लड़ाई करते कि मैं यहूदिअन
३७ को सैांपानजाता पर मेरा राज्य तो यहां का नहीं। तब पिलातूस ने उसको कहा फेर तू क्या राजा है ईसा ने उत्तर दिया तूही कहताहै मैं राजा हों कि मैं इसी लिये उत्पन्न हुआ और इसी लिये मैं जगत में आया कि सच्चाई पर सक्षी देउं
३८ जो कोई कि सत्य से है मेरा शब्द सुनताहै। पिलातूस ने उसको कहा कि सच्चाई क्या है और वुह यह कहिके फेर यहूदिअन के पास गया और उन्हें बोला कि मैं उसका
३९ कुछ दोष नहीं पावता। और तुम्हारा व्यवहार है कि मैं तुम्हारे लिये फसः में एक को छोड़देउं क्या तुमसब चाहते हो कि मैं तुम्हारे लिये यहूदिअन के राजा को छोड़देउं।
४० तब उन सबन ने फेर चिल्लाके कहा कि इस मनुष्य को नहीं परंतु बारब्बास को और बारब्बास बटमार था।

१९ उन्नीसवां पर्व्व

१ तब पिलातूस ने ईसा को कोड़े मारे। (२) और सिपाइअन ने कांटन का मुकुट सजके उसके सिर पर रखा और उसे ३ लाल बस्त्र पहिनाके कहा। कि यहूदिअन के राजा ४ प्रणाम। और उन्हन ने उसको थपेड़े मारे तब पिलातूस ने फेर बाहर आके उन्हें कहा कि देखो मैं उसको तुम्हारे पास बाहर लेआताहों कि तुमसब जानो कि मैं उसका ५ कुछ दोष नहीं पावता। तब ईसा कांटन का मुकुट रखे और लाल बस्त्र पहिनेहुए बाहर आया और उसने उन्हन ६ को कहा कि इस मनुष्य को देखो। जब प्रधान याजकन और प्यादन ने उसे देखा वे चिल्लाके बोले कि क्रूस पर खींच क्रूस पर खींच पिलातूस ने उन्हन को कहा तुमसब उसे लेओ और क्रूस पर खींचो क्योंकि मैं उसका कुछ दोष नहीं ७ पावता। यहूदिअन ने उसे उत्तर दिया कि हम शास्त्र रखतेहैं और हमारे शास्त्र की रीति से वुह मारडालने के योग्य है इसलिये कि उसने अपने को ईश्वर का पुत्र ८ ठहराया। जब पिलातूस ने यह बचन सुना वुह अधिक ९ डरगया। और न्याय के स्थान में फेर प्रवेश करके ईसा से कहा तू कहां का है परंतु ईसाने उसको कुछ उत्तर १० नदिया। तब पिलातूस ने उसे कहा कि तू मुझसे नहीं बोलता क्या तू नहीं जानता कि मैं पराक्रम रखताहों चाहों तो तुझे क्रूस पर मारों और चाहों तो तुझे छोड़देउं।

११ ईसा ने उत्तर दिया कि जो यह तुझे ऊपर से दिया नजाता तो मुझपर तेरा कुछ पराक्रम नहोता सो जिसने मुझको तुझे
१२ सौंपदिया उसका महा पाप है। उस समय से पिलातूस ने चाहा कि उसे छोड़देय पर यहूदिअन ने चिल्लाके कहा कि जो तू इस मनुष्य को छोड़देताहै तो तू कैसर का मित्र नहीं जो कोई कि अपने को राजा ठहराताहै कैसर
१३ का शत्रु है। पिलातूस यह बात सुनकर ईसा को बाहर लाया और उस स्थान में जो चबूतरा कहावताथा परंतु इबरी भाषा में गब्बतः कहावताहै बिचार के आसन पर
१४ बैठा। और यह फसः की बनाउरी का समय था और छठवीं घड़ी के निकट था और उसने यहूदिअन को कहा
१५ कि अपने राजा को देखो। तब वे चिल्लाये कि लेजा लेजा उसे क्रूस पर खींच पिलातूस ने कहा कि मैं तुम्हारे राजा को क्रूस पर खींचों प्रधान याजकन ने उत्तर दिया कि कैसर
१६ को छोड़ हमारा कोई राजा नहीं। तब उसने उसको उन्हें सौंपदिया कि क्रूस पर खींचाजाय और वे ईसा को पकड़के
१७ लेगये। वुह अपना क्रूस उठायेहुए उस स्थान लों गया जो खोपड़ी का कहावताहै जिसका अर्थ इबरी भाषा में गलगता
१८ है। वहां उन्हन ने उसे और उसके संग और दोको क्रूस पर खींचा हरएक ओर एक और ईसा को बीच में।
१९ और पिलातूस ने एक नामपत्र लिखके क्रूस पर लगादिया वुह लिखाहुआ यह था कि ईसा नासरी यहूदिअन का

२० राजा । इस नामपत्र को बज़ुतेरे यहूदिअन ने पढ़ा इसलिये कि वुह स्थान जहां ईसा क्रूस पर खींचागयाथा नगर के निकट था और वुह इबरी और यूनानी और
२१ लातीनी भाषा में लिखाथा । तब यक़ूदिअन के प्रधान याजकन ने पिलातूस को कहा कि यहूदिअन का राजा मत लिख यह लिख कि उसने कहा कि मैं यहूदिअन
२२ का राजाहूं । पिलातूस ने उत्तर दिया कि मैं ने जो लिखा
२३ सो लिखा । फेर जब सिपाइअन ने ईसा को क्रूस पर खींचचुके उसके बस्त्रन को लिया और चार भाग किये हर सिपाई को एक और उसके बागा को भी लिया और बागा
२४ बिनसीआ ऊपरसे नीचेलों बीनाज़ुआथा । इसलिये वे आपुस में बोले कि हम उसे नफाड़ें परंतु आओ उसपर चिट्ठी डालें कि यह किसे पज़ुंचताहै यह इसलिये ज़ुआ कि ग्रंथ जो कहताहै कि उन्हन ने मेरा बस्त्र बांटलिया और मेरे बागे के लिये चिट्ठी डाली संपूर्ण हो सो सिपाइअन
२५ ने ऐसही किया । तब ईसा के क्रूस के पास उसकी माता और उसकी माता की बहिन मरियम क्लोओपास की स्त्री और
२६ मरियम मजदलियः खड़ी थीं । ईसा ने अपनी माता को और उस शिष्य को जिसे वुह प्यार करता था समीप खड़ेज़ुए देखकर अपनी माता को कहा कि हे स्त्री यह तेरा पुत्र ।
२७ फेर उसने उस शिष्य को कहा यह तेरी माता और उस
२८ घड़ी से वुह शिष्य उसे अपने घर लेगया । इसके पीछे

ईसा ने जाना कि अब सब बातें पूरी होचुकीं ग्रंथ संपूर्ण
२८ होनेको कहा कि मैं प्यासा हों। अब वहां एक लोटा
सिरके से भरहुआ धरथा उन्हन ने बादल के टुकड़े को
सिरका में भिगाके जूफा में लपेटके नल पर रखा और
३० उसके मुंह में दिया। फेर ईसा ने जब सिरका पीया
तो कहा कि संपूर्ण हुआ और सिर झुकाके प्राण
३१ दिया। तब इसलिये कि वुह बनाउरी का समय था
यहूदिअन ने पिलातूस से चाहा कि उनकी टांगें तोड़ें
और उतारलेजांये कि लोथ बिश्राम के दिन में क्रूस पर
नरहिजायं क्योंकि वुह बड़ा बिश्राम का दिन था।
३२ तब सिपाहिअन ने आके पहिले और दूसरे की टांगें
३३ जो उसके साथ क्रूस पर खींचेगयेथे तोड़ीं। परंतु जब
उन्हन ने ईसा के ओर आके देखा कि वुह मरचुकाहै
३४ तब उसकी टांगें नतोड़ीं। परंतु सिपाहिअन में से एक ने
भाला से उसका पंजर छेदा और तुरंत उससे लोहू और
३५ पानी निकला। और जिस ने यह देखा साक्षी दिई
और उसकी साक्षी सत्य है और वुह जानताहै कि सत्य
३६ कहताहै कि तुमसब बिश्वास लाओ। इसलिये ये बातें
प्रगट हुईं कि लिखाहुआ संपूर्ण हो कि उसकी कोई
३७ हड्डी तोड़ी नजायगी। और फेर दूसरा ग्रंथ कहताहै
३८ कि वे उसपर जिसको उन्हन ने छेदा दृष्टि करेंगे। और
इसके पीछे अरिमतियाके यूसफ ने जो ईसा का शिष्य था

परंतु यहूदिअन के डरसे छिपके शिष्याई करताथा पिलातूस से चाहा कि ईसा के लोथ को लेजाय पिलातूस ने लेनेदिया
३९ सो वुह आया और ईसा की लोथको लेलिया। और नीकूदीमूस भी जो पहिले ईसा के पास रात को गयाथा आया और पचास सेर गंधरस और एलुआ मिलाके लाया।
४० तब उन्हन ने ईसा की लोथ को लेके सूती कपड़े में सुगंध के संग लपेटा जैसा कि यहूदिअन के गाड़ने की
४१ रीति है। और वहां जिस स्थान में उसे क्रूस पर खींचाथा एक बाटिका थी उस बाटिका में एक नई समाधि जिस में
४२ कोई धरा नगयाथा। सो उन्हन ने ईसा को यहूदिअन की बनाउरी के लिये वहीं रखा क्योंकि यह समाधि निकट थी।

२० बीसवां पर्ब्ब

१ अठवारे के पहिले दिन मरियम मजदलयः तड़के ऐसा कि अबलों अंधियार था समाधि पर आई और पत्थर को
२ समाधि से टालाहुआ देखा। तब वुह शमऊन पतरस और उस दूसरे शिष्य के समीप जिसे ईसा प्यार करताथा दौड़ीआई और उन्हें बोली कि प्रभु को समाधि से निकाललेगये और हम नहीं जानते कि उन्हन ने उसको
३ कहां रखा। फेर पतरस दूसरे शिष्य के संग होके
४ निकला और समाधि के ओर आनेलगा। सो वे दोनों

एकट्ठे दौड़े परंतु दूसरा शिष्य पतरस से आगे बढ़गया और
५ समाधि पर पहिले पज़ुंचा। उसने झुकके सूती कपड़े पड़े
६ देखे पर वुह भीतर नगया। फेर शमऊन पतरस उसके पीछे
पज़ुंचा और समाधि के भीतर पैठके सूती कपड़न को
७ पड़ाज़ुआ देखा। और वुह अंगोछा जिससे उसका सिर
बंधाथा कपड़े के संग नहीं परंतु लपेटाज़ुआ एक स्थान में
८ अलग पड़ा देखा। तब दूसरा शिष्य भी जो समाधि पर
पहिले आयाथा भीतर गया और देखके बिश्वास लाया।
९ क्योंकि वे अबलों ग्रंथ को नजानतेथे कि वुह अवश्य मरके
१० जीउठेगा। तब वे शिष्य अपने मित्रन के पास गये।
११ परंतु मरियम समाधि के समीप बाहर रोती खड़ीरही
१२ और रोतेज़ुए जेउं समाधि में झुकके दृष्टि किई। दो
दूतन को श्वेत बस्त्र में एक को सिरहाने और दूसरे को
१३ पैताने बैठे देखा जहां ईसा की लोथ रखीथी। उन्हन ने
उसे कहा हे स्त्री तू क्यों रोती है उसने कहा इसलिये कि
वे मेरे प्रभु को लेगये और मैं नहीं जानती कि उन्हन ने
१४ उसको कहां रखा। और उसने यों कहिके पीछे फिरकर
ईसा को खड़े देखा और नचीन्हा कि वुह ईसा है।
१५ ईसा ने उसे कहा हे स्त्री तू क्यों रोतीहै किसे ढूंढ़तीहै
उसने उसको माली जानके कहा हे महाराज जो तू उसको
वहां से उठायाहो तो मुझसे कह कि तूने उसको कहां
१६ रखाहै कि मैं उसे लेजाउंगी। ईसा ने उसको कहा कि

मरियम उसने फिरके उसे कहा रब्बूनी अर्थात हे गुरु। १७ ईसा ने उसको कहा मुझे मत छू क्योंकि मैं अबलों अपने पिता के पास ऊपर नहीं गया परंतु मेरे भाइअन के पास जा और उन्हन से कह कि मैं ऊपर अपने पिता और तुम्हारे पिता और अपने ईश्वर और तुम्हारे ईश्वर के पास १८ जाताहों। मरियम मजदलयः ने आके शिष्यन से कहा कि मैं ने प्रभु को देखा और उसने ये बातें मुझे कहीं। १९ फेर उसी दिन जो अठवारे का पहिला था संध्या के समय में जब उस स्थान के द्वार जहां सब शिष्य एकट्ठे हुएथे यहूदिअन के डर से बंद थे ईसा आया और मध्य में खड़ा हुआ और उन्हें बोला कि तुम्हन पर कुशल। २० और यों कहिके अपना हाथ और पंजर उन्हन को २१ दिखाया तब शिष्य प्रभु को देखके आनंद हुए। और ईसा ने फेर उन्हें कहा कि तुम्हन पर कुशल जिस रीति से पिता ने मुझे भेजाहै उसी रीति से मैं तुम्हें भेजताहों। २२ उसने यह कहिके उनपर फूंका और कहा कि तुमसब २३ धर्मात्मा को लेओ। जिनके पापन को तुमसब क्षमा करो उनके क्षमा कियेजातेहैं और जिनके तुम नछुड़ाओगे २४ वे नहीं छुड़ायेजातेहैं। और थूमा उन बारह में से एक जिसकी पदवी दीदमस थी ईसा के आवन के समय २५ उन्हन के संग नथा। तब और शिष्यन ने उसको कहा कि हमन ने प्रभु को देखाहै परंतु उसने उन्हें कहा

बिना उसके कि मैं उसके हाथन में कीलन के चिन्ह देखों और कीलन के चिन्ह में अपनी अंगुली करों और अपने हाथ उसके पंजर में डालों मैं प्रतीति नकरों।

२६ आठ दिन के पीछे जब उसके शिष्य भीतर थे और स्हूमा उन्हन के संग था द्वार बंद होते ऊए ईसा आया और

२७ बीच में खड़ा होके बोला तुम्हन पर कुशल। फेर उसने स्हूमा को कहा कि अपनी अंगली पासला और मेरे हाथन को देख और अपना हाथ पासला और उसे मेरे पंजर

२८ में कर और अबिस्वासी मत हो परंतु बिस्वासी हो। स्हूमा ने उत्तर देके उसको कहा हे मेरे प्रभु और हे मेरे ईस्वर।

२९ ईसा ने उसको कहा स्हूमा इसलिये कि तूने मुझे देखाहै तू बिस्वास लाया धन्य वे हैं जिन्हन ने नहीं देखा और

३० बिस्वास लाये। और बऊतेरे और आस्चर्य ईसा ने किये जो इस पुस्तक में नहीं लिखेगये अपने शिष्यन के सन्मुख

३१ दिखाये। परंतु ये लिखेगये कि तुमसब बिस्वास लाओ कि ईसा मसीह ईस्वर का पुत्र है और कि तुमसब बिस्वास लाके उसके नाम से अनंत जीवन पाओ।

२१ ऐकीसवां पर्ब्ब

१ और इसके पीछे ईसा ने फेर अपने को तिबीयास के समुद्र के समीप शिष्यन को दिखाई दिया और इस रीति से प्रगट

२ ऊआ। कि शमऊन पतरस और स्हूमा जो दोदमस

कहावता है और नासानाईल जो काना के जलील का है और ज़बदी के बेटे और उसके शिष्यन में से और दो
३ एकट्ठे थे। शमऊन पतरस ने उन्हन को कहा कि मैं मछली पकड़नेको जाताहों उन्हन ने कहा हम भी तेरे संग चलेंगे और निकलके तुरंत नाव पर चढ़े परंतु उस रात
४ कुछ नपकड़े। और जेउं बिहान हुआ ईसा तीर पर
५ खड़ाथा परंतु शिष्यन ने नजाना कि वुह ईसा है। तब ईसा ने उन्हन को कहा हे बालकन तुम्हारे पास कुछ
६ खानेको है उन्हन ने उसे उत्तर दिया कि नहीं। उसने कहा नाव के दहिनी ओर जाल डालो कि तुम पाओगे सो उन्हन ने डाला तब मछलिअन की बहुताई से वे उसे खींच
७ नसके। इसलिये उस शिष्य ने जिसको ईसा प्यार करताथा पतरस को कहा कि वुह प्रभु है जब शमऊन पतरस ने सुना कि वुह प्रभु है उसने अपने वस्त्र को कमर में बांधा क्योंकि वुह नंगा था और अपने को समुद्र में डालदिया।
८ अन्य और शिष्य नाव पर मछलिअन का जाल खींचतेआये
९ क्योंकि वे तीरसे दूर नथे परंतु एक दोसौ हाथ के। जेउं वे तीर पर आये उन्हन ने वहां कोइलन की आग और
१० उसपर मछली रखीहुई और रोटी देखी। ईसा ने उन्हें कहा उन मछलिअन मेंसे जो तुम्हन ने अभी पकड़ीं
११ लाओ। शमऊन पतरस ने जाके जाल को एक सौ तिरपन बड़ी मछलिअन से भराहुआ खींचा यद्यपि इतनी बहुत थीं

१२ तद्यापि जाल नफटा। ईसा ने उन्हें कहा आओ भोजन करो और शिष्यन में से किसी की शक्ति नहुई कि उसको पूछें कि तू कौन है क्योंकि वे जानतेथे कि वुह प्रभु है।
१३ तब ईसा ने आके रोटी लिई और उन्हें दिई और उसी
१४ रीति से मछली भी दिई। यह तीसरे बार था कि ईसा ने
१५ जीउठकर अपने को शिष्यन को दिखाया। और जब वे भोजन करचुके ईसा ने शमऊन पतरस को कहा हे यूना के पुत्र शमऊन क्या तू मुझे इन्हन से अधिक प्यार करताहै उसने उसे कहा हां हे प्रभु तू आपही जानता है कि मैं तुझे प्यार करताहों उसने उसे कहा मेरे मेम्नन को
१६ चर। उसने दूसरे बार उसे फेर कहा कि हे यूना के पुत्र शमऊन क्या तू मुझे प्यार करताहै उसने उसे कहा कि हां हे प्रभु तू तो जानताहै कि मैं तुझे प्यार करताहों उसने
१७ उसे कहा कि मेरी भेड़ें चर। उसनें उसको तीसरे बार कहा कि हे यूना के पुत्र शमऊन क्या तू मुझे प्यार करताहै तब पतरस उदासीन हुआ इसलिये कि उसने उसको तीसरे बार कहा कि तू मुझे प्यार करताहै तब उसने उसको कहा हे प्रभु तू तो सब कुछ जानताहै तू जानकार है कि मैं तुझे प्यार करताहों। ईसा ने उसको कहा तू मेरी भेड़ें चर।
१८ मैं तुस से सत्य सत्य कहताहों जबलों तू तरुण था तू अपनी कमर बांधताथा और जहां कहीं चाहताथा जाताथा परंतु जब तू बृद्ध होगा तू अपने हाथन को फैलायेगा

और दूसरा तेरी कमर बांधेगा और जहां तू नचाहे वहीं
१९ लेजायगा। उसने यह कहि के पताद्दिया कि वुह
कौनसी मृत्यु से ईश्वर का महिमा प्रगट करेगा और उसने
२० यों कहिके उसे कहा कि मेरे पीछे होले। तब पतरस ने
फिरके उस शिष्य को पीछे आते देखा जिसको ईसा प्यार
करताथा जिसने बिआरी के समय उसकी छाती पर लेटके
२१ पूछा कि हे प्रभु वुह जो तुझे पकड़वाताहै कौन है। पतरस
ने उसको देखके ईसा से कहा हे प्रभु इस मनुष्य का क्या
२२ होगा। ईसा ने उसको कहा जो मैं चाहों कि जबलों मैं
आओं वुह यहीं ठहरे तो तुझे क्या तू मेरे पीछे चलाआ।
२३ तब भाइअन में यह बात फैलगई कि वुह शिष्य नमरेगा
परंतु ईसा ने उसे नहीं कहा कि वुह नमरेगा परंतु यह
कहा कि जो मैं चाहों कि मेरे आवनेलों वुह ठहरे तो
२४ तुझे क्या। यह वुह शिष्य है जिसने इन कार्य्यन की
साक्षी दिई और उन बातन को लिखा और हमन को
२५ निश्चय है कि उसकी साक्षी सत्य है। और भी बहुत
से कार्य हैं जो ईसा ने किये कि जो वे अलग अलग
लिखेजाते तो मैं समुझताहों जो ग्रंथ लिखेजाते तो जगत
में भी नसमाते आमीन।